MAHIN 1.5

एम. ए. (हिंदी)

सत्र - I

राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण २०२० नुसार सुधारित अभ्यासक्रम

प्रश्नपत्र - VI

हिंदी पत्रकारिता

(JOURNALISM)

© UNIVERSITY OF MUMBAI

प्रा. रवींद्र कुलकर्णी
कुलगुरू,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

प्रा. डॉ. अजय भामरे
प्र-कुलगुरू,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

प्रा. शिवाजी सरगर
संचालक,
दूरस्थ आणि ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

प्रकल्प समन्वयक : **अनिल बनकर**
सहयोगी प्राध्यापक, कला व मानव्यविद्या शाखा प्रमुख,
दूरस्थ आणि ऑनलाईन शिक्षण केंद्र (सी. डी. ओ. ई),
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई - ४०००९८.

अभ्यासक्रम समन्वयक संपादक एवं लेखक : **डॉ. अनिल गोविंद चौधरी**
सहायक प्राध्यापक, दूर व ऑनलाइन शिक्षण केंद्र,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई - ४०००९८.

लेखक : **डॉ. सत्यवती चौबे**
सहायक प्राध्यापक, अध्यक्ष हिंदी विभाग,
विल्सन महाविद्यालय (स्वायत), चर्नी रोड, मुंबई

: **डॉ. महात्मा पाण्डेय**
सहायक प्राध्यापक, साठे महाविद्यालय, विलेपार्ले, मुंबई

: **डॉ. हनुमंत धायगुडे**
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई - ४०००९८.

: **डॉ. संध्या शिवराम गर्जे**
सहायक प्राध्यापक, दूर व ऑनलाइन शिक्षण केंद्र, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई - ४०००९८.

: **श्री. प्रमोद पब्बर यादव**
सहायक प्राध्यापक, दूर व ऑनलाइन शिक्षण केंद्र, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई - ४०००९८.

ऑगस्ट २०२४, प्रथम मुद्रण, ISBN No. - 978-93-6728-869-6

प्रकाशक
संचालक
दूरस्थ आणि ऑनलाईन शिक्षण केंद्र (सी. डी. ओ. ई), मुंबई विद्यापीठ, मुंबई - ४०००९८.

अक्षरजुळणी
मुंबई विद्यापीठ मुद्रणालय,
सांताक्रुझ, मुंबई

अनुक्रमणिका

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ क्रमांक
१.	पत्रकारिता : उद्भव और विकास	१
२.	हिंदी पत्रकारिता का विकास	१८
३.	हिंदी पत्रकारिता के स्वाधीनता पूर्व संपादक	३०
४.	संपादन : अवधारणा, उद्देश्य तथा सामान्य सिद्धांत	४०
५.	संपादक, उपसंपादक, संवाददाता और संपादकीय लेखन	५१
६.	समाचार लेखन	६७
७.	पत्रकारिता के प्रकार	८४
८.	इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता	९५
९.	समकालीन पत्रकारिता का महत्त्व एवं उपयोगिता	१३७

*****

NAME OF PROGRAM	M.A.(C.B.C.S).
NAME OF THE COURSE	M.A.(Hindi)
SEMESTER	I

PAPER NAME	**Journalism** **(**हिंदी पत्रकारिता)
PAPER NO.	**6**
COURSE CODE	**3350512**
LACTURE	**60**
INTERNAL ASSESSMENT	**50**
EXTERNAL ASSESSMENT	**50**
CREDITS & MARKS	**4 & 100**

Course outcomes:

क) पत्रकारिता के स्वरूप और महत्त्व से परिचित कराना.

ख) पत्रकारिता के विविध अंगों का परिचय एवं प्रशिक्षण.

ग) अपने वर्तमान के प्रति सजगता और विश्लेषण का विकास.

क) पत्रकारिता में रोज़गार की क्षमता विकसित करना.

MODULE I : (2 CREDITS)

Unit 1 :

क) पत्रकारिता : उद्भव और विकास

ख) हिंदी पत्रकारिता का विकास

ग) स्वाधीनतापूर्व हिंदी संपादक

Unit 2 :

क) संपादन : अवधारणा, उद्देश्य तथा सामान्य सिद्धांत

ख) संपादक, उपसंपादक और संवाददाता

ग) संपादकीय लेखन

MODULE II : (2 CREDITS)

Unit 3:

क) समाचार लेखन

ख) समाचार की भाषा

ग) फ़ीचर लेखन

Unit 4:

क) पत्रकारिता के प्रकार
ख) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता
ग) समकालीन पत्रकारिता : महत्त्व और प्रासंगिकता

References :

१. पत्रकार और पत्रकारिता - डॉ. रमेश जैन
२. आजादी के पचासवर्ष और हिंदी पत्रकारिता - डॉ. सविता चड्ढा
३. समाचार व्यवस्थापन - अनंत गोपाल शेवडे
४. पत्रिका : संपादन कला -डॉ. रामचंद्र तिवारी
५. मीडिया और साहित्य- सुधीश पचौरी
६. समाचार, फीचर लेखन और संपादन कला- डॉ. हरिमोहन
७. पत्रकारिता के मूल सिद्धांत -डॉ. नवीनचंद्र पंत
८. आधुनिक पत्रकारिता - डॉ. अर्जुन तिवारी
९.जनसंचार और पत्रकारिता - डॉ. अर्जुन तिवारी
१०.पत्रकारिता मिशन से मीडियातक - अखिलेश तिवारी
११. सूचना का अधिकार विष्णु राजगढ़िया, अरविंद केजरीवाल
१२. पत्रकारिता : नया दौर नए प्रतिमान - संतोष भारतीय
१३.समाचार संपादन- कमल दीक्षित, महेश दर्पण
१४. भेंटवार्ता और प्रेस कॉन्फ्रेंस -प्रो. नंद किशोर त्रिखा
१५.खेल पत्रकारिता - सुशील दोषी, सुरेश कौशल
१६.सूचना प्रद्योगिकी और समाचार पत्र - रवीन्द्र शुक्ला

१

पत्रकारिता : उद्भव और विकास

इकाई की रुपरेखा

१.१ इकाई का उद्देश्य

१.२ प्रस्तावना

१.३ पत्रकारिता का अर्थ

१.४ पत्रकारिता की परिभाषा

१.५ पत्रकारिता का उद्भव और विकास

१.६ भारत देश में पत्रकारिता का उद्भव और विकास

१.६.१ १८वीं शताब्दी में भारतीय समाज में पत्रकारिता

१.६.२ १९ वीं शताब्दी में भारतीय समाज में पत्रकारिता

१.६.३ स्वतंत्रताकाल में भारतीय समाज में पत्रकारिता

१.७ सारांश

१.८ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१.९ लघुत्तरी प्रश्न

१.१० संदर्भ पुस्तकें

१.१ इकाई का उद्देश्य

इस इकाई में 'पत्रकारिता के उद्भव और विकास का अध्ययन करेंगे | इकाई के माध्यम हम निम्न मुद्दों का अध्ययन करेंगे –

- पत्रकारिता का अर्थ जानेंगे |
- पत्रकारिता के सन्दर्भ में भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषा का अध्ययन करेंगे |
- पत्रकारिता का उद्भव और विकास को जानेंगे |
- भारत देश में पत्रकारिता का उद्भव और विकास के सन्दर्भ में जानेंगे |
- १८वीं शताब्दी में भारतीय समाज में पत्रकारिता का अध्ययन करेंगे |
- १९ वीं शताब्दी में भारतीय समाज में पत्रकारिता को जानेंगे |
- स्वतंत्रताकाल में भारतीय समाज में पत्रकारिता के विषय में जानेंगे |

१.२ प्रस्तावना

आज के युग में पत्रकारिता मानव जीवन के साथ अढ़िग रूप से जुड़ गई है |मानव की दैनिक दिनचर्या में पत्रकारिता का स्थान महत्वपूर्ण है | हर दिन प्रातःकाल ही हम अखबार का इंतजार करते हैं या आज के युगनुरूप मोबाइल पर विभिन्न ऐप द्वारा देश-विदेश की खबरे और सुर्खियों का जायजा लेते हैं |आज के तकनीकी युग ने हमें अनेकों साधन उपलब्ध करा दिए हैं जिनके माध्यम से हम विभिन्न जानकारी हासिल कर सके | रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट, सोशल मीडिया, समाचार पत्र, पत्रिकाएं आदि अनेक ऐसे माध्यम है जो २४ घंटे हमें जानकारियां देते हैं और साथ ही ये सभी माध्यम मनोरंजन के भी सशक्त साधन बने हुए हैं | इन माध्यमों ने एक व्यक्ति, समूह, समाज, देश से लेकर संसार तक को एक सूत्र में बांध दिया है इसके माध्यम से आज हम आंतरराष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व संस्कृति स्तिथि को समझ सके हैं और उससे प्रभावित हुए हैं।

१.३ पत्रकारिता का अर्थ

मानवीय स्वभाव जिज्ञासा और कुतूहल पूर्ण होता है जब भी एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से मिलता है तो उसका पहला प्रश्न होता है क्या हाल है ?या क्या समाचार है?दो व्यक्तियों के मिलने पर यह प्रश्न उत्तर सहज ही होता है लेकिन इस पर हम गौर करें तो पता चलेगा कि व्यक्ति एक दूसरे के विषय में जानने को कितना उत्सुक है| हम हमेशा अपने पड़ोसी, मित्र, रिश्तेदार, सहकर्मियों के विषय में जानना चाहते हैं और इसी के साथ मानव की यह सहज वृत्ति है कि वह अपने आसपास की घटनाओं और लोगों के बारे में जानकारी रखना चाहता है और यही जिज्ञासा पत्रकारिता का मूल तत्व है | विभिन्न जनसंचार माध्यमों के जरिए दुनिया में घटित घटनाओं की जानकारी हमें घर बैठे ही मिल जाती है | लेकिन एक विचार उस विषय पर भी करना जरूरी है कि जनसंचार माध्यम के विभिन्न घटकों में काम करने वाले पत्रकार का दायित्व है कि देश दुनिया में घटनाओं का व्यवस्थित प्रारूप बनाकर उसे समाचार के रूप में परिवर्तित कर हम तक पहुंचाएं इस संपूर्ण प्रक्रिया को ही पत्रकारिता कहते हैं |

पत्रकारिता शब्द का अर्थ:-

पत्रकारिता शब्द अंग्रेजी के जर्नलिज्म का हिंदी रूपांतरण है जर्नलिज्म शब्द की उत्पत्ति जनरल शब्द से हुई है जिसका अर्थ है दैनिक, दैनन्दिनी, रोजनामा इन शब्दों से हम तात्पर्य लगा सकते हैं कि रोजमर्रा के कार्यों का वर्णन इसके अंतर्गत होता है | आज के समय में पत्रकारिता के सम्बन्ध में 'जर्नल' शब्द प्रचलित है जो मैगजीन, समाचार पत्र, दैनिक अखबार का पर्यायवाची बन गया है | पत्रकारिता या जर्नलिज्म का अर्थ होता है समाचार पत्र - पत्रिका से जुड़े व्यवसाय में समाचारों का संकलन, लेखन, संपादन, प्रस्तुतीकरण, वितरण आदि करना|

पत्रकारिता शब्द में पत्र शब्द महत्वपूर्ण है | वृहत हिंदी शब्दकोश के अनुसार पत्र शब्द का अर्थ चिट्ठी या वह कागज जिस पर कोई बात लिखी या छपी हो लेकिन वह पत्र प्रमाणिक हो और किसी मुद्दे को प्रमाण सहित प्रस्तुत किया गया हो | पत्रकार शब्द का अर्थ समाचार पत्र

का संपादन या लेखन होता है और पत्रकारिता का अर्थ जिसमें पत्रकार का काम सम्मिलित है | साथ ही समाचार के संपादन, समाचार इकट्ठा करना, उनका प्रारूप तैयार करना और उसके विवेचन की संपूर्ण प्रक्रिया की विधा तैयार करना है |

१.४ पत्रकारिता की परिभाषा

किसी घटना की रीतिबद्ध रिपोर्ट समाचार है | जिसके द्वारा समाज, देश, दुनिया की खबरों से अवगत होता है | पत्रकारिता के स्वरूप को न सिर्फ भारतीय वरन पाश्चात्य विद्वानों ने भी परिभाषित किया है | इस संबंध में पहले हम पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषा जानेंगे |

पाश्चात्य विद्वान:

१. **बिल्वर श्रम:-** 'जनसंचार माध्यम दुनिया का नक्शा बदल सकता है |'

२. **सी.जी. मूलर:-** 'सामयिक ज्ञान का व्यवसाय ही पत्रकारिता है इसमें तथ्यों की प्राप्ति उनका मूल्यांकन एवं ठीक-ठाक प्रस्तुतीकरण होता है|'

३. **जेम्स मॅकडोनल्ड:-** 'पत्रकारिता को मैं रणभूमि से ज्यादा बड़ी चीज समझता हूँ | यह कोई पेशा नहीं वरन पेशे से ऊंची कोई चीज है | यह एक जीवन है जिसे मैंने अपने को स्वेच्छा पूर्वक समर्पित किया|'

४. **न्यू वेबस्टर्स डिक्शनरी:-** 'प्रकाशक संपादन लेखन एवं प्रसारण युक्त समाचार माध्यम का व्यवसाय ही पत्रकारिता है|'

इस प्रकार सभी पाश्चात्य विद्वानों ने पत्रकारिता को एक सशक्त माध्यम माना है |जो किसी भी प्रकार के बदलाव में कारगर सिद्ध हो सकता है | साथ ही इसके माध्यम से सामाजिक ज्ञान में वृद्धि होती है | यह एक युद्ध से बढ़कर है, व्यवसाय से बढ़कर है जिसमें पत्रकारिता के सभी तत्व सन्निहित है जैसे - प्रकाशक, संपादन, लेखन एवं प्रसारण युक्त समाचार माध्यम एक व्यवसाय रूप में भी पत्रकारिता को उल्लेखित कर सकते है |

भारतीय विद्वान:

१. **हिंदी शब्द सागर:-** 'पत्रकार का काम या व्यवसाय ही पत्रकारिता है|'

२. **डॉक्टर शंकर दयाल शर्मा:-** 'पत्रकारिता एक पेशा नहीं है बल्कि यह तो जनता की सेवा का माध्यम है |पत्रकारों को केवल घटनाओं का विवरण ही पेश नहीं करना चाहिए आम जनता के सामने उसका विश्लेषण भी करना चाहिए | पत्रकारों पर लोकतांत्रिक परंपराओं की रक्षा करने और शांति एवं भाईचारा बनाए रखने की भी जिम्मेदारी आती है|'

३. **इंद्र विद्या वाचस्पति :-** 'पत्रकारिता पांचवा वेद है जिसके द्वारा हम ज्ञान - विज्ञान संबंधी बातों को जानकर अपना बंद मस्तिष्क खोलते हैं|'

४. **डॉ अर्जुन तिवारी:-** 'ज्ञान और विचारों को समीक्षात्मक टिप्पणियों के साथ शब्द ध्वनि तथा चित्रों के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाना ही पत्रकारिता है | यह वह

विद्या है जिसमें सभी प्रकार के पत्रकारों के कार्यों, कर्तव्यों और लक्षण का विवेचन होता है | पत्रकारिता समय के साथ-साथ समाज की दिग्दर्शिका और नियामिका है|'

इस प्रकार पत्रकारिता को सभी भारतीय विद्वानों ने अलग-अलग शब्द रचना और अर्थ देकर परिभाषित किया है | यह परिभाषाएं पाश्चात्य चिंतकों से अधिक परिष्कृत जान पड़ती है हिंदी शब्द सागर में पत्रकारिता को व्यवसाय के रूप में डाला गया है वहीं सबसे महत्त्वपूर्ण बात डॉक्टर शंकर दयाल शर्माजी द्वारा दी गई परिभाषा में पत्रकारिता का विवेचन मनोविश्लेषणात्मक रूप से विस्तार से किया है उन्होंने पत्रकारिता को सेवा माना है ऐसी सेवा जो लोकतांत्रिक परंपराओं का निर्वाह करते हुए शांति और भाईचारा बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है | डॉक्टर तिवारी ने ज्ञान और विचारों की कलात्मक अभिव्यक्ति को पत्रकारिता माना है जिसका कार्य समाज का मार्गदर्शन करना है वही विद्या वाचस्पतिजी ने पत्रकारिता को वेदों की तरह ज्ञान अर्जन का उत्तम साधन माना है|

इन सभी परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि समाज में घटित किसी भी प्रकार की घटना को आकर्षक ढंग से पेश किया जाता है जो व्यक्ति, समूह, समाज, नगर देश से लेकर संपूर्ण विश्व को प्रभावित करने की कला ही पत्रकारिता है|

१.५ पत्रकारिता का उद्भव और विकास

जैसा कि हम जानते हैं प्राचीन काल में समाचार या खबर एक दूसरे तक पहुंचाने का माध्यम सिर्फ सुनी सुनाई बातों से होता था | राजा और सरदारों के राज में सार्वजनिक स्थलों पर खड़े होकर नगाड़े बजाकर जोर-जोर से उद्घोषणा करते थे और खबर आम जनता तक पहुंच जाती थी | भारतीय पौराणिक शास्त्रों में ऋषि नारद मुनि का वर्णन इस संदर्भ में हमें मिलता है जिन्हें आज के समय में हम रिपोर्टर कहेंगे नारद मुनि के विषय में कहा जाता है कि इस एक व्यक्ति के माध्यम से स्वर्ग लोक, पृथ्वी लोक, देवता, मानव, दानव सभी तक सूचना या खबर पहुंचाने का कार्य नारदजी अकेले संभाले हुए थे | इनकी एक खास बात यह थी कि यह सभी के मित्र थे | किसी से शत्रुता नहीं थी | जहां भी जाते सभी इनका आतिथ्य सत्कार करते और इनके सूचना देकर जाने के पश्चात कलह का कारण भी इन्हें ही माना जाता था | इनके हाथ में सदी वीणा इनके आने की आहट दे देती थी | राज दरबारों में भी खास ऐसे पद पर व्यक्ति नियुक्त होते थे जो राज दरबार भरते ही देश-विदेश की खबरों से राजा को अवगत कराते थे।प्राचीन काल में कबूतर पक्षी भी डाकिया का काम करते थे |इन पक्षियों के द्वारा चिट्ठी –पत्र एक स्थान से दुसरे स्थान पर भेजा जाता था | इस प्रकार प्राचीन काल में अपनी सुविधा के अनुसार पत्रकारिता का व्यवहार होता था |

इस पाठ में हम वैश्विक स्तर पर पत्रकारिता के उद्भव और विकास का अध्ययन करेंगे |वैश्विक स्तर पर भी पुरातन काल में यूरोप में भी खबरें मिलने का आधार सुनी सुनाई बातें ही थी | राजा और मंत्री भी अपने स्तर पर सूचना के स्रोत रखते थे | शहरी क्षेत्र में सामाजिक और स्थानीय हित संबंधी समाचारों की उद्घोषणा की जाती थी | राजाओं ने अपने स्तर पर दूत नियुक्त किए थे जो दूसरे राज्य में भ्रमण किया करते थे और समाचार पहुंचाते और लाते थे | युद्ध काल में भी इन्हीं दूतों के द्वारा जय - पराजय की सूचना मिलती थी | बदलते समय के साथ इन्हीं दूतों का उपयोग सौदागर और व्यापारिक कार्य में भी होने लगा साथ ही देश -

परदेश से जुड़ी घटनाओं को एकत्रित कर और उनमें चटपटी बातें जोड़कर सनसनी खेज का भी प्रयोग होने लगा था |

कुछ समय पश्चात् जब तकनीकि का दौर प्रारम्भ हुआ उस सन्दर्भ में हम सर्वप्रथम पोस्टर की परंपरा का उल्लेख करेंगे | माना जाता है कि इटली के वेनिस शहर में वर्ष१८६५ में सबसे पहला पोस्टर बना यह पोस्टर सार्वजनिक स्थलों पर चिपका दिए जाते थे और जो लोग यह पोस्टर पढ़ना चाहते थे उनसे कुछ मूल्य भी वसूला जाता था इन दीवारों पर चिपकाए जाने वाले समाचार पत्र या पोस्टर को गजेट कहा जाता था | आज भी हम इस शब्द का प्रचलन देख रहे हैं |उस समय यह गजेट बहुत प्रसिद्ध हुए | इटली के वेनिस शहर में जो पोस्ट प्रथम चिपकाए गए थे उसमें डाला मटिया के एक युद्ध का विवरण दिया गया था जो ३० खंडो में था | फ्लोरेंस के एक पुस्तकालय में आज भी इन पोस्टर को सुरक्षित रखा गया है| इसी श्रंखला में यूरोप का नाम दुसरे नम्बर पर आता है | यूरोप में भी समाचार पत्र के पूर्व कुछ खास खबरे पोस्टर बनाकर दीवारों पर चिपकाये जाते थे | पत्रों के लिए सर्वाधिक आवश्यकता थी कागज की। दूसरी शब्द शताब्दी में चीन में कागज तैयार किया गया | रिकॉर्ड के अनुसार चीन के सम्राट के परिवार का एक सदस्य कागज का प्रयोग करता था | ई. सन ८६८ में वांगचियेन ने सबसे पहले ब्लॉक बनाकर एक पुस्तक प्रकाशित की | इस पुस्तक की प्रति आज भी सुरक्षित है | चीनी मुद्रण कला का प्राचीन साक्ष्य डायमंड चित्र नामक एक बौद्ध धर्म ग्रंथ है | जिसे ई. सन ८६८ में प्रकाशित किया गया था | अक्षरों को कागज पर रोपने के लिए लकड़ी पर अक्षर उत्कीर्ण किए जाते थे | काजल, राल और गोंद को मिश्रित कर स्याही बनाई जाती थी | इस स्याही को ब्लॉक पर फैला कर कागज पर चिपका दिया जाता था |

कागज की उत्पत्ति के बाद प्रिंटिंग प्रेस की बात करें तो सर्वप्रथम यूरोप में जर्मनी निवासी जोहन्न ग्यूटेनबर्ग ने १५वीं शताब्दी के मध्य में मेंज शहर में ढलवाँ धातु की चल प्रिंटिंग मशीन बनाई गई केंट के विलियम काकस्टन ने १४७६ में इंग्लैंड में पहली प्रिंटिंग प्रेस स्थापित की |इसी दौरान समाचार पुस्तिकाओं का प्रकाशन हुआ | सर्वप्रथम वर्ष १५५७ में प्रकाशित समाचार पुस्तिका का शीर्षक था – 'वैलिएन्ट एक्स प्लाप्ट्स ऑफ सर फ्रांसिस ड्रेक' और एक अन्य समाचार पुस्तिका में फलोडन के उदय का विवरण किया गया है | जिसमें प्रमुख रूप से इंग्लैंड और स्कॉटलैंड के मध्य हुए युद्ध का विवरण दिया गया है जिसमें स्कॉटलैंड के राजा की हत्या कर दी गई थी उस खबर का वर्णन है | यह खबर बहुत लोकप्रिय हुई | सन १६२१ में लंदन में समाचार पत्र छोटे रूप में बिकने लगा | जिसे कोरेंटो कहा जाता था | इसका नियमित प्रकाशन नहीं हो पाया | शुरुआती दौर में कोरेंटो में विदेशी समाचारों का उल्लेख किया जाता था | २९ नवंबर १६४१ में पहली दैनिकी का प्रकाशन हुआ | जिसका नाम जॉन टॉमस था | इस प्रकार धीरे-धीरे यूरोप में समाचार पत्रों का दौरा आगे बढ़ता गया | विविध प्रकार के समाचार पत्र प्रकाशित हुए | समाचार पत्रों प्रकाशन और उसकी विविधता को चार चरणों में उल्लिखित किया जा सकता है-

१. पहला चरण:-

यूरोपीय भाषा में इसे रिलेशन अथवा 'रिलैशियन' नाम से जाना जाता है | इसे हम एकल कथा कह सकते हैं | इसमें घटना घटित होने के बहुत दिनों बाद लिखा जाता था व इनमें घटना के समय - वर्ष का वर्णन करना भी अनिवार्य नहीं था |

२.दूसरा चरण:-

दूसरे चरण में कोरैन्टो का नाम आता है जो रिलेशन की श्रृंखला में प्रकाशित होती थी | इसके विषय में कहा गया है कि यह ऐसी पहली साप्ताहिक पत्रिका थी जिसका प्रकाशन इटली, जर्मनी, हंगरी, बोहेमिया वह फ्रांस आदि देशों में होता था | इसके मुख्य पृष्ठ का शीर्षक हर सप्ताह बदलता था | एंथोनी स्मिथ ने इस विषय में कहा है -"कोरैन्टो की शुरुआत एवं प्रारंभिक महत्व की बात है क्योंकि उसने संपूर्ण विश्व की सूचनाओं उपलब्ध कराने का प्रयत्न किया और पाठकों को विश्व घटनाक्रमों की व्यापक जानकारी उपलब्ध कराने का बीड़ा उठाया |

३.तीसरा चरण:-

तीसरे चरण में दैनिक पत्रिकाएं आती हैं | जो हर दिन छपती थी इन दैनिक पत्रों में संसदीय खबरें अधिक छपती थी और घरेलू समस्याएं भी वृत्त पत्र में छपना प्रारंभ हो चुकी थी | इस समय इंग्लैंड गृह युद्ध की ओर अग्रसर हो रहा था | दैनिक पत्रिकाओं में दी गई घटनाओं के घटित होने के दिन व समय का वर्णन दिया जाता था|

४.चौथा चरण:-

यह चरण समाचार पुस्तिकाओं का माना जाता है इस मर्करी भी कहा जाता था |इसमें दी गई खबरें पत्रकारों के माध्यम से लिखी जाती थी | कोरैन्टो में पाठकों को आकर्षित करने के लिए आर्थिक और राजनीतिक लाभ का भी वर्णन होता था | इस चरण में समाचार पत्रिका के साथ-साथ इंटेलिजेंस का विकास हुआ जर्मनी में इसे 'इंटेलिजेंट ब्लॉट' कहा गया | यह दौर ऐसा था कि मनोरंजन की दृष्टि से भी पत्रकारिता को देखा जाने लगा था |

अब वह समय आ गया था जब पत्रकारिता के नए युग का सूत्रपात हुआ |इस समय वर्ष १६५५ में ऑक्सफोर्ड गजट प्रकाशित हुआ | जिसका संपादन मडडि मैंन ने किया इसे सप्ताह में दो बार छापा जाता था बाद में इसे लंदन गजट के नाम से जाना जाने लगा इसका प्रकाशन २०वी शताब्दी तक रहा|

१९ वीं शताब्दी में दैनिक समाचारों पत्रों का प्रकाशन शुरू हो चुका था | इस समय तकनीकि और प्रशासनिक रूप से पत्रकारिता संपन्न हो गई थी | समाचार पत्रों में अब सामाजिक, राजनीतिक मामलों के साथ भौगोलिक क्षेत्र की घटनाओं का भी वर्णन प्रारंभ हो गया था | अब समाचार का ऐसा दौर प्रारंभ हो गया था कि समाचार लाइसेंस के बिना समाचार पत्रों में कुछ भी नहीं छप सकता था | समाचार छपने और प्रकाशित करने को एक अलग महत्व प्राप्त हो गया था |

पहला दैनिक समाचार पत्र ११ मार्च १७०२ को लंदन में 'डेली कोवरेंट' के नाम से प्रकाशित हुआ लेकिन इस समाचार पत्र का प्रकाशन कुछ दिनों में ही बंद हो गया | कुछ समय बाद सेम्युएल बकले ने इस समाचार पत्र को फिर से प्रारंभ किया और इस समाचार पत्र को महत्वपूर्ण स्थान दिलाया | सेम्युएल बकले का मानना था कि "समाचार पत्र कोई अफवाह फैलाने वाला तंत्र नहीं है अपितु इसमें वास्तविक और तथ्य परख रचनाएं छपनी चाहिए न कि अपनी राय|" इसी भाव को सन्नहित कर उन्होंने समाचार जैसे थे वैसा ही उन्हें प्रस्तुत करने का यहां तक कि शब्द, अर्थ और नजरिया संबंधी किसी भी प्रकार के खिलवाड़ की गुंजाइश नहीं रखी | १८वीं शताब्दी में इंग्लैंड में महान लेखकों और पत्रकारों का युग आरंभ हुआ | जिनमें डेनियल डेफो चर्चित अंग्रेज पत्रकार थे इन्होंने 'साप्ताहिक रिव्यू' को मुद्रित और संपादित किया | इस प्रकार जब डाक सेवा मुद्रण क्षमता विकसित हो गई तब पत्रिकाएं सप्ताह में तीन बार या साप्ताहिकी या प्रतिदिन प्रकाशित होने लगी इस प्रकार पत्रकारिता को एक परिपक्व दर्जा प्राप्त हुआ |

१८ वीं शताब्दी में राजनीति लंदन के समाचार पत्रों पर हावी होने लगी अब वह समय भी आ गया था कि समाचार पत्र षड्यंत्र, भ्रष्टाचार और राजनीतिक पद्धति से गुटबाजी होने लगी थी |

वहीं समाचार पत्र धन अर्जन और रोजगार का माध्यम भी बन गए थे | समाचार पत्रों के माध्यम से संसद के अंदर के चर्चा सत्र का विचार - विमर्श बाहर भी होने लगा | राजनीतिक जीवन बहुत हद तक राजनीतिक विचारों के जरिए समाचार पत्र के प्रचार - प्रसार पर निर्भर हो गया | इस प्रकार १८वीं शताब्दी का अंत होते-होते इंग्लैंड में कई वाचनालय खुल गए | बाजार में समाचार पढ़ने हेतु शुल्क वसूला जाता था कई दुकानदार अपनी दुकान में ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए समाचार पत्र रखते थे | इस संबंध में मैनचेस्टर में जॉन डोहार्टी नामक सुधारवादी थे जिन्होंने कॉफी और न्यूज़ रूम बनाया जो सुबह से देर रात तक खुला रहता था इसे कॉफी हॉउस और न्यूज रूम नाम दिया गया था | यह नया नाम देने के कारण और रोज की खबरों की जानकारी यहाँ मिलने के कारण इस कॉफी हॉउस ने बहुत प्रसिद्ध पाई |दूसरी और पत्रकारिता के क्षेत्र में उद्भव और प्रगति के साथ इसकी छवि धूमिल होने का कार्य भी हुआ | सुव्यवस्थित नियम और पत्रकारिता के महत्व के जानकर व्यक्ति किसी भी प्रकार की खबरें समाचार पत्र में छपवा सकते थे अपने प्रतिद्वंदियों को मात भी दे सकते थे | इस प्रकार के वाकयुद्ध से राजनीतिक रिश्वतखोरी की समाचार पत्रों में दखलअंदाजी बढ़ गई| एसी कुछ नकारात्मक बातों को छोड़ दें तो १९ वीं शताब्दी के शुरू होने पर पत्रकारिता की तकनीक और समाचार पत्रों के निर्माण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण विकास का काल था |

१.६ भारत देश में पत्रकारिता का उद्भव और विकास

पत्रकारिता की संबंध में वैश्विक स्तर पर हमने पत्रकारिता का उद्भव और विकास के संबंध में जाना | अब आगे हम भारत में पत्रकारिता के उद्भव और विकास के संबंध में जानेंगे। भारत में मुद्रण कला का उदय सन १५५० ई में यूरोप से आए पुर्तगालियों द्वारा हुआ | यदि समाचार पत्र की बात करें तो इस क्षेत्र में पहला कदम 'जेम्स ऑगस्टस हिकी' ने उठाया |उन्होंने अपना पहला समाचार पत्र बंगाल गजट नाम से प्रकाशित किया | इस समाचार पत्र में उन्होंने प्रखरता से शासन व्यवस्था में चल रहे भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया और इसी कारण

सरकार ने हिकी द्वारा स्थापित मुद्रणालय को बंद कर दिया इसके बाद सन १७८० में 'इंडिया गजट' के नाम से नया समाचार पत्र निकाला | इसी दौर में आगे १८ वीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक भारत में विभिन्न महानगरों में समाचार प्रकाशित हो चुके थे | इनमें बंगाल से 'कोलकाता करियर', 'ओरिएंटल स्टार' एवं 'एशियाई मिरर' मुंबई से 'गजट' एवं 'हेराल्ड' और चेन्नई से 'मद्रास करियर', 'मद्रास गजट' आदि समाचार पत्र प्रकाशित हुए जिनका प्रमुख कार्य कंपनी के अधिकारियों, व्यापारियों और मिशनरी में चल रहे क्रियाकलापों पर नजर रखना था |

भारतीय भाषा में सर्वप्रथम बांग्ला भाषा में समाचार पत्र प्रकाशित हुआ सन १८१८ ईस्वी में जिसका नाम 'समाचार दर्पण' था उसके बाद गुजराती समाचार पत्र 'मुंबई समाचार' नाम से आया सन १८२२ई. में जो कि आज तक चल रहा है | इसके बाद का समय १८३५ ई. से १८५७ ई. तक का समय समाचार पत्रों का वृद्धि काल कहा जा सकता है क्योंकि इस समय काल में दिल्ली, आगरा, ग्वालियर, लाहौर आदि बड़े महानगरों में समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे थे |

१८६० ई. में भारत और ब्रिटेन के मध्य टेलीग्राफ संचार के आरंभ से भारत में प्रेस का विकास और विस्तार हुआ | ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने १८५८ ई. में 'बांग्ला साप्ताहिक' सोम प्रकाश बंकिम चंद्र चटर्जी ने मासिक समाचार पत्र 'बंग दर्शन' एवं अक्षय चंद सरकार ने 'साप्ताहिक सारनिधि' का संपादन करके राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया|

समय १८६१ ई. में मुंबई में 'टाइम्स ऑफ इंडिया', 'बाम्बे टाइम्स' का प्रकाशन रॉबर्ट नाइट द्वारा हुआ | मोतीलाल घोष ने 'अमृत बाजार' पत्रिका का संपादन किया | बांग्ला में छपने वाले इस समाचार पत्र में अंग्रेजों की चापलूसी का काम अधिक होता था इसी कारण यह पत्र १८९१ ई. में दैनिक पत्र बन गया | तत्कालीन समय की अन्य उल्लेखनीय पत्रिकाओं में 'मराठा और इंडिया', 'रिव्यू' उस समय क्रांति का बिगुल बजाने वाली पत्रिकाएं साबित हुई|

हिंदी भाषा की पत्रिका में साप्ताहिक पत्रिका का संपादन सर्वप्रथम बालमुकुंद ने किया इस पत्रिका का नाम 'भारत मित्र' था | वहीं हिंदी साहित्य की महान सत्कार मूर्ति भारतेंदु हरिश्चंद्र ने दो मासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन किया 'कवि वचन सुधा' और 'हरिश्चंद्र मैगजीन', महात्मा गांधी ने 'यंग इंडिया' और 'हरिजन पत्रिका' के माध्यम से अपने विचारों को उन्मुक्त किया | अन्य हिंदी की पत्रिकाओं में राजभक्ति और जन जागृति का भाव निहित था यही कारण था कि अंग्रेजों ने पत्रकारिता पर कई प्रतिबंध लगाए और कुछ हद तक उन्हें इस कार्य में सफलता भी मिली लेकिन कुछ अंग्रेज अफसर ऐसे भी थे जो प्रेस की स्वतंत्रता के पक्षधर थे इनमें लॉर्ड हेस्टिंग्स, चार्ल्स मेटकाफ, मैकाले आदि नाम प्रमुख है |

जब हम भारतीय पत्रकारिता की बात कर रहे हैं तो इसके उद्गम का श्रेय 'जेम्स ऑगस्टस हिकी' को जाता है |इन्हें भारतीय पत्रकारिता का जनक माना जाता है इन्होंने १७८० में कोलकाता में 'बंगाल गट' समाचार पत्र निकाला जिसे 'कोलकाता गजट' अथवा 'कोलकाता जनरल एडवरटाइजर' के नाम से भी जाना जाता है |इस समाचार पत्र में राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक क्षेत्र की खबरों के साथ विज्ञापन भी छपते थे |

१.६.१. १८ वीं शताब्दी में भारतीय समाज में पत्रकारिता:-

भारत में पत्रकारिता के आरंभ का श्रेय अंग्रेजों को जाता है क्योंकि जो पहली पत्रिका बंगाल में प्रकाशित हुई उसके प्रवर्तक, संपादक, प्रकाशक अंग्रेज ही थे |२९जनवरी सन १७८० को कोलकाता में 'बंगाल गजट' नाम से पत्र प्रकाशित हुआ | पत्र का आकार १२ इंच लंबा और चौड़ाई ८ इंच थी जो आकर में छोटा और मात्र दो पन्नों का था | इसका प्रकाशन 'जेम्स ऑगस्टस हिकी' अंग्रेज ने किया यही कारण है कि भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में यह पत्र की गजेट के नाम से जाना जाता है | यह समय अंग्रेजों की अधीनता का था | पत्रकारिता के जनक वही थे और पत्रकारिता को बंधन में बाधने वाले भी वही थे | पत्रकारिता के प्रारंभ होने के बाद लगभग १०८ वर्ष का कालावधि लग गया पत्रकारिता को चार कदम आगे बढ़ने और विकसित होने के लिए | भारतीय पत्रकारिता कई विरोधों, प्रतिकूल वातावरण को झेलते हुए भारत में अपने उद्देश्य में सफल हुई | यह समय ऐसा था कि देश में प्रेस संबंधी कोई कानून नहीं बना था | उस समय डाक विभाग में भी टिकिट के माध्यम से फीस अदा न होकर जिसके पास चिट्ठी भेजी जाती थी उससे फीस ली जाती थी| लेकिन कुछ समय में गवर्नर जनरल ने यह सुविधा भी बंद कर दी क्योंकि उन्हें डर था कि इस प्रकार के पत्र में व्यवहार से शासन के प्रति विरोध और रोष बढ़ सकता है लेकिन 'जेम्स ऑगस्टस हिकी' पत्रकारिता के प्रति निष्ठावान थे उन्होंने सरकार की नीतियों का विरोध किया | फल स्वरुप वह ऐसे पहले अंग्रेज थे जिन्हें कारागार जाना पडा। इतनी असुविधाओं के चलते 'जेम्स ऑगस्टस हिकी' द्वारा गजेट के बाद कोलकाता में और भी पत्रों का प्रकाशन होता रहा ऐसा नहीं है कि पत्रों का प्रकाशन बंगाल तक ही सीमित था | भारत के अन्य प्रदेशों में भी पत्रिका उगम पा रही थी | १२अक्टूबर १७८५ को मद्रास में रिचार्ज जॉनस्टन नामक अंग्रेज ने 'मद्रास करियर' नामक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन किया | मद्रास का प्रथम समाचार पत्र यही था | इस पत्र में सरकार का प्रशंसा नामा ही छपता था |इसके १० वर्ष पश्चात 'मद्रास गजेट' नामक पत्रिका प्रकाशित हुई | हंफ्रेश नामक अंग्रेज ने 'इंडिया हेराल्ड' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया | यह पत्रिका शासन विरोधी थी | हंफ्रेश ने सरकार के विरोध के बावजूद भी इस पत्रिका को जारी रखा लेकिन बाद में हंफ्रेश ने पत्रिका में इतनी आपत्तिजनक टिप्पणी की कि उन्हें इंग्लैंड वापस भेज दिया गया |

इस समय मुंबई शहर भी पत्र पत्रिकाओं से अछूता नहीं था | सन १७८९ में मुंबई में 'बोम्बे हेरल्ड' नामक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ तत्पश्चात 'बाम्बे करियर' पत्रिका प्रकाशित हुई और आगे चलकर यही पत्रिका 'टाइम्स आफ इंडिया' के नाम से प्रकाशित हुई जो आज भी आबाद चल रही है | इसके बाद 'मुंबई गजट' नाम से पत्रिका प्रकाशित हुई जो खूब प्रचलित हुई |

इस प्रकार १८वीं शताब्दी के अंतिम चरण में देश के प्रमुख तीन शहर में अंग्रेजी भाषा में साप्ताहिक मासिक पत्र प्रकाशित हुए | सन १७९९ में तत्कालीन वाइसराय लार्ड वेलेजली ने भारतीय पत्रकारिता की स्वतंत्रता का गला घोटने की कोशिश की | वहीं सन १७९९ में लार्ड वेलेजली द्वारा एक विधान बनाया गया जिसमें पत्रकारिता संबंधित निम्न नियम बनाए गए |

१. पत्र के मुद्रक हेतु पत्र के अंत में अपना नाम प्रकाशित करना अनिवार्य है |

२. पत्र के संपादक और मालिक के लिए यह जरूरी है कि वह अपने घर का पता सरकार के सेक्रेटरी को दे |

३. रविवार के दिन किसी भी पत्र का प्रकाशन न हो |

४. प्रकाशन के पूर्व हर एक पत्र का निरीक्षण सरकारी सेक्रेटरी द्वारा किया गया हो बिना निरीक्षण के पत्र प्रकाशित नहीं होगा |

इस प्रकार उक्त कानून द्वारा पत्रकारिता पर नियंत्रण करने की पूरी कोशिश की गई इन नियमों से जनसाधारण में पत्रों के माध्यम से जो जानकारी मिलती थी, ज्ञान प्रसार होता था, जन जागृति का यह माध्यम अवरुद्ध हो गया |१८ वीं शताब्दी में वेलेजली के शासनकाल में भारतीय पत्रकारिता का यही स्वरूप तय रहा|

१.६.२ १९वीं शताब्दी में भारतीय समाज में पत्रकारिता:-

लॉर्ड हेस्टिंग्स के शासनकाल में भारतीय पत्रकारिता में बहुत बदलाव हुए | उन्होंने पत्रकारिता संबंधित लागू किए गए कानून में सुधार किया उनमें प्रमुखतः सेंसर करने की प्रथा को समाप्त कर दिया गया और रविवार के दिन भी पत्र प्रकाशित करने की स्वतंत्रता दी गई | इस संबंध में अन्य नियम भी बने जो इस प्रकार हैं-

१. सरकारी विभागों में चल रही किसी भी प्रकार की कार्यवाही व निर्णय प्रकाशित न हो|

२. किसी भी पदासीन व्यक्ति के विषय में अपमानजनक उद्गार प्रकट न हो|

३. प्रजा को उकसाने वाले संदेश भय पैदा हो ऐसी कोई भी चर्चा पत्रों में न हो|

४. किसी की धार्मिक भावना आहत नहीं होनी चाहिए|

५. किसी व्यक्ति के विरुद्ध अपमानजनक बातें ना छापी जाए|

६. कोई ऐसी खबर ना छापे जिससे ब्रिटिश सरकार के पद व शक्ति कमजोर हो|

इस प्रकार के सुधारित नियमों से भारतीय पत्रकारिता को कुछ हद तक आगे बढ़ने का मौका मिला | पत्रकारिता के इतिहास में १८१८ ई. समय विशेष ध्यान में रखा जाता है क्योंकि राजा राममोहन राय जैसे व्यक्तित्व की उत्प्रेरणा से भारतीय पत्रकारिता को नई दिशा मिली | राजा साहब और उनके आत्मीय सभा के दो सदस्य उनके मित्र श्री हरचंद राय और गंगा किशन भट्टाचार्य के सहयोग से पहली बार भारतीय पत्र 'बंगाल गजट' सन१८१८ में प्रकाशित हुआ | यह पत्र बंगाली भाषा में था| यह पत्र उस समय का बहुत प्रचलित पत्र था | इसी समय भारत में इसाई मिशनरियां भी अस्तित्व में आई और इन मिशनरियों ने 'दिग्दर्शन' और 'समाचार दर्पण' नामक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया इनमें एक 'फ्रेंड ऑफ इंडिया' नाम का अंग्रेजी पत्र भी था लेकिन इसाई मिशनरियों द्वारा प्रकाशित पत्र का उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार प्रसार मात्र था|

लगभग यही समय था जब 'कोलकाता जर्नल' पत्र आया | इस पत्र ने पहली बार देश में प्रगतिशील एवं उदार नीति संपन्न पत्रकारिता को जन्म दिया | इस पत्र की प्रखर और स्पष्ट

वादित से लॉर्ड हेस्टिंग्स परेशान हो गए यहां तक की अंग्रेजी सत्ता सोचने लगी की पहले जो कानून पत्रकारिता के लिए बनाए गए थे वह वापस से लागू कर दिए जाएं लेकिन हेस्टिंग्स ने ऐसा नहीं किया | सन १८२० में राजा राममोहन राय ने 'संवाद कुमुदिनी' नामक एक और बंगाली सप्ताहिक की का प्रकाशन किया | उसके बाद 'ब्रह्मानिकल' मैगजीन प्रकाशित की जो अंग्रेजी और बांग्ला दोनों भाषा में थी| तत्कालीन समय में फारसी भाषा सर्वाधिक प्रचलित भाषा थी | इसके मुकाबले अंग्रेजी और बांग्ला भाषा का स्तर भी कम था अतः पत्रकारिता को और अधिक प्रबल बनाने के लिए फारसी भाषा में 'मिरातुल अखबार' प्रकाशित हुआ इस पत्रिका का खासा प्रभाव जनमानस पर पड़ा | इस प्रकार राजा राममोहन राय ने पत्रकारिता के क्षेत्र को निर्मित व्यापक और जनहिताय बना दिया लेकिन पत्रकारिता का यह स्वरूप अंग्रेजी शासन काल को चुभने वाला रहा | उस समय गवर्नर जनरल आदम थे | आदम ने सर्वप्रथम 'कोलकाता जर्नल' के संपादक जेम्स सिल्क बकिंघम पर कार्यवाही की उन्हें गिरफ्तार कर इंग्लैंड भेज दिया गया | वहीं भारतीय पत्रकारिता पर बंधन लगाने के हेतु से ४ अप्रैल सन १९२३ को पत्रकारिता संबंधी कुछ कानूनी नियम बनाए गए जो इस प्रकार थे-

१. किसी भी व्यक्ति या समूह को फोर्ट आबादी के क्षेत्र में ऐसा कोई भी पत्र, पत्रिका, समाचार पत्र, सप्ताहिक पत्र, पुस्तक आदि प्रकाशित करने की मंजूरी नहीं मिलेगी जिसमें सरकार की नीति, कार्य पद्धति और पदासीन व्यक्ति पर टीका टिप्पणी की गई हो |

२. पत्र की परवानगी हेतु जो प्रार्थना पत्र सरकार को दे उसमें प्रकाशक का नाम, पता व पूरी जानकारी दी गई हो और उसके साथ प्रेस की भी पूरी जानकारी हो |

३. बिना परवानगी के कोई पत्र - पत्रिका प्रकाशित होती है तो सरकारी दंड भरना होगा जो इस प्रकार होगा ₹४०० नगद जुर्माना और ४ महीने की कैद| इस सब के अतिरिक्त प्रेस के लिए भी परवाने की आवश्यकता होगी | बिना परवाना प्रेस खोलने वाले को ६ महीने का कारावास और सौ रुपए जुर्माना दंड भरना होगा |

ऐसे कठोर कानून के खिलाफ राजा राममोहन राय ने सर्वोच्च न्यायालय में गुहार लगाई पर कोई फायदा ना हुआ और इन नियमों का आघात सर्वप्रथम फारसी भाषा के अखबार 'मिरातुल अखबार' और बाद में 'कोलकाता जर्नल' के बंद के साथ हुआ यह नियम इतने कठोर थे कि परमिशन मिलने हेतु किसी भी भारतीय के लिए अंग्रेजी चौखट लांघना मुश्किल कार्य था | अब वह दौर था कि जब प्रगतिशील पत्रकारिता परतंत्रता की चौखट में आ चुकी थी | लेकिन यह स्थिति ज्यादा दिन नहीं रह सकी | अंग्रेजी शासन भार लॉर्ड विलियम बेंटिक ने संभाला | लॉर्ड विलियम बेंटिक उदार और प्रगतिशील शासक थे | वे भारत में ब्रिटिश शासन काल के सबसे उदार शासक के रूप में प्रसिद्ध हुए | बेंटिक ने शासन में सुव्यवस्था और सुशासन के लिए पत्रों की स्वतंत्र व्यवस्था को अनिवार्य माना | इस प्रकार स्वतंत्र और प्रगतिशील विचारों को पुनः उभरने का अवसर मिला | राजा राममोहन राय फिर आगे बढ़े उन्होंने अपने नेतृत्व में सन १९२९ में अंग्रेजी भाषा में 'बंगाल हेराल्ड' पत्रिका का प्रकाशन किया और इसी समय श्री नील रतन हालदार के संपादन में 'वंगदूत' पत्रिका प्रकाशित हुई | इस पत्र का प्रकाशन बांग्ला, हिंदी और फारसी भाषा में होता था | श्री नील रतन हालदार ने राजा राममोहन राय के सानिध्य में कार्य किया

पत्रकारिता के स्वतंत्रता के फलस्वरुप राजा जी को अन्य सहयोगी भी मिले इनमें कुमार द्वारिका नाथ टैगोर, कुमार प्रसन्न कुमार टैगोर प्रसिद्ध टैगोर परिवार के सदस्य थे | सभी ने पत्रकारिता की सेवा तन- मन- धन से की यहां तक की द्वारकानाथ जी ने अंग्रेजों के भी पत्र खरीद लिए |

इस प्रकार बेंटिंग के पदारोहण के पश्चात दो-तीन वर्ष में ही भारतीय पत्रिका मूल स्वरूप प्राप्त करने में कारगर हुई | भारतीय समाज में समाज सुधारकों का वर्ग उदित हुआ इसमें प्रमुख राजा राममोहन राय थे परिणाम स्वरूप बेंटिंग ने सती प्रथा की समाप्ति कानूनन कर दी | बेंटिंग के कार्यकाल में कई पत्रिकाएं अबाध गति से चलती रही | सन १८३१ में ईश्वर चंद्रगुप्त का 'संवाद प्रभाकर' प्रकाशित हुआ यह पत्र बहुत प्रसिद्ध हुआ | द्वारिका नाथ और देवेंद्र नाथ टैगोर के सहयोग से सन १८३६ में यह दैनिक वृत्तपत्र बन गया |यह बंगाली भाषा का पहला दैनिक पत्र था।

सन १८३० ई. में मुंबई में गुजराती भाषा में 'मुंबई वर्तमान पत्रिका' प्रकाशित हो चुकी थी | सन १८३५ में लॉर्ड बेटिंग ने अवकाश ले लिया और इसी के साथ भारतीय पत्रिका का माहौल फिर से शासंकित हो गया | बेंटिक ने के पश्चात चार्ल्स मेटकाफ भारत के गवर्नर जनरल बने | मेटकाफ की उदार नीतियों ने फिर से भारतीय पत्रकारिता को फलने - फूलने का अवसर दिया | इस समय काल में मुंबई मद्रास लुधियाना दिल्ली आगरा शिवरामपुर माल मीन आदि स्थानों पर यूरोपियन भारतीय पत्रों का प्रकाशन होने लगा। सन १८७५ का समय ऐसा था जब भारत में स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल बजा और इसका प्रभाव पत्रकारिता पर भी पड़ा |लॉर्ड केनिंग इस समय भारत के गवर्नर जनरल थे भारतीय पत्रों में खुले तौर पर अंग्रेजी शासन के विरोध के साथ भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों का विरोध देखने को मिलता है| अंग्रेजों के प्रति क्षोभ इस समय की पत्रिकाओं में साफ नजर आया | लार्ड केनिंग ने इस उत्तेजना को रोखने हेतु प्रेस संबंधी कानून बनाए लेकिन यह कानून एक वर्ष की अवधि के लिए ही बनाए गए थे| जो १ वर्ष पश्चात समाप्त हो गए| १८५७ से १८६७ तक की १० वर्ष की कालावधि में कई प्रसिद्ध पत्रों का उदय हुआ | जिनका प्रकाशन आज तक हो रहा है | जिसमें 'टाइम्स आफ इंडिया', 'पायोनियर', 'स्टेट्समैन' आदि प्रमुख हैं | अब पत्रकारिता का हेतु व स्वरूप बदल चुका था | सभी सच्ची खबरें वृत्त पत्रों में छपने लगी थी | इन्हीं दिनों एक भारतीय महिला पर अंग्रेज डिप्टी मजिस्ट्रेट के द्वारा किए गए बलात्कार का समाचार छपा यही कारण था कि मुद्रक एवं समाचार लेखक पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें दंड दिया गया |

सन १८७६ ई. में जब लॉर्ड लिटन भारत के वाइसराय बने उस समय तक पूरे भारत में पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ हो चुका था और कई भाषाओं में पत्रिकाएं छपने लगी थी| बंगाल, मुंबई और मद्रास के अतिरिक्त अवध, मध्य प्रदेश, पंजाब आदि क्षेत्रों तक पत्रकारिता का प्रसार पहुंच चुका था| हिंदी, उर्दू, फारसी, बांग्ला, तेलुगू, तमिल, मलयालम आदि भाषाओं में पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही थी| इसमें पंजाब के 'सिविल' और 'मिलिट्री गजट' एवं लाहौर के प्रसिद्ध पत्र 'ट्रिब्यून' की स्थापना भी इसी समय हुई| 'ट्रिब्यून' की प्रतिष्ठा जैसी शुरुआती दौर में थी वैसे ही आज भी है | अंग्रेजों के पत्रकारिता में पारदर्शक विरोधी नीति के बावजूद जन जागरण बढ़ रहा था | वर्नाक्युलर प्रेस राष्ट्रवादी और राष्ट्रीय स्वतंत्रता की समर्थक रही |१४ मार्च सन१८७८ ई. में वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट की घोषणा हुई |इस कानून

के तहत सभी प्रकाशकों को हिदायत दी गई कि पत्रों में ऐसी किसी बात का जिक्र न हो जिससे जनमानस में सरकार व सरकारी नीतियों के प्रति रोष व घृणा बड़े जो प्रकाशक इस नियम को नहीं मानेगा उसे पहली बार चेतावनी दी जाएगी और दूसरी बार यदि वह नियम का उल्लंघन करता है तो उसकी प्रेस जप्त कर ली जाएगी यदि प्रेस इस कानून खतरे से बचना चाहती है तो पत्र प्रकाशित होने के पूर्व समस्त स्तंभों का प्रूफ का सेंसर करा सकती है वह भी सरकार द्वारा |

उक्त कानून का परिणाम यह हुआ कि २१ मार्च को अर्थात कानून लागू किए जाने के ७ दिन बाद जो अंक प्रकाशित हुए वे अंग्रेजी भाषा के थे | इस कानून के तहत देसी भाषा की पत्रिकाएं छपना बंद हो गई

वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट का विरोध निरंतर चलता रहा जब भारत के वाइसराय लार्ड रिपन बने उनकी उदार नीतियों ने वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट को समाप्त कर दिया | ७ दिसंबर सन १९८१ ई. को यह घोषणा की कि सरकार की दृष्टि में वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट की कोई आवश्यकता नहीं है | इसके पश्चात ३ वर्षों के अंदर कई भारतीय पत्रों का उदय हुआ इनमें मद्रास में प्रसिद्ध 'हिंदू पत्रिका' की स्थापना१८७८ में हुई इसके अतिरिक्त थे 'नेटिव पब्लिक ऑपिनियन' और 'द मद्रास' नामक विशुद्ध भारतीय पत्र मद्रास से प्रसारित हो रहे थे | उधर बंगाल पत्रिकाओं के लिए पहले से ही अग्रेसर था यहां सुरेंद्रनाथ बंदोपाध्याय ने 'बंगाली' नामक साप्ताहिक प्रकाशित की | यह पत्रिका अपनी राष्ट्रीय हित नीति के कारण शीघ्र ही प्रसिद्ध हो गई | नतीजा यह हुआ कि सुरेंद्र बाबू पर मुकदमा चलाया गया और २ महीने सख्त कारावास की सजा उन्हें हुई इस दंड को स्वीकारते हुए उन्होंने कहा" मैं इसे अपने लिए गौरव की वस्तु समझता हूं क्योंकि सार्वजनिक कर्तव्य का पालन करते हुए जेल जाने का सौभाग्य प्राप्त करने वालों में मैं अपने युग का प्रथम भारतीय हूं|"

सुरेंद्र बाबू के इस प्रकार के नजरिया ने जन-जन में देशभक्ति का प्रसार कर दिया १९ वीं सदी के अंत तक कई साप्ताहिक का प्रकाशन हुआ जिनका प्रमुख उद्देश्य देश सेवा था | बंगाल में ने पत्रों का उदय हुआ अब पत्रों की कीमत भी कम थी जो कि जन सामान्य खरीद सकते थे | 'वंगवासी', 'संजीवनी' 'दासी', 'प्रदीप', 'प्रवासी', 'मॉडर्न रिव्यू', 'विशाल भारत' आदि पत्रिकाएं अस्तित्व में आई और प्रचलित रही | इस युग में दैनिक पत्रिकाओं का प्रारंभ हुआ इनमें नरेंद्र नाथ सेन का 'इंडिसन मिरर' प्रमुख दैनिक पत्र था। पुणे शहर में लोकमान्य तिलक ने 'केसरी' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जिसमें ब्रिटिश शासन के प्रति नाराजगी खुले तौर पर दिखी | इस समय मुंबई से 'इंडियन सोशल रिफॉर्मर' का प्रकाशन हुआ | सन १८९४ ई. में पटना से 'बिहार टाइम्स' का प्रकाशन हुआ इस प्रकार पत्रिकाओं में जागरूकता और जन पक्ष के प्रति पूर्ण समर्थन को हम स्पष्ट देख सकते हैं|

पत्र पत्रिकाओं में अब दैनंदिन की खबरें निर्भीक छपती थी सन १८९६ में जब मुंबई में प्लेग का प्रचंड प्रकोप हुआ पूरी जनता में आतंक छा गया | सरकार के उपाय कारगर सिद्ध नहीं हुए | जनता का आरोप और भी बढ़ गया तत्कालीन पत्र पत्रिका में इस विषय पर प्रतिदिन वाद होता रहा | सरकार यह विरोध बर्दाश्त ना कर सकी और नतीजा यह हुआ कि सरकार ने पत्रों का दमन करना प्रारंभ कर दिया | लोकमान्य तिलक स्वयं इस दमन के शिकार हुए 'केसरी' में लिखे गए एक लेख के कारण उन पर मुकदमा चलाया गया और डेढ़ वर्ष का

कारावास हुआ | सरकार की कुरीतियों के खिलाफ पत्र में वाद - संवाद और प्रति उत्तर में सरकारी दमन का दौर चलता रहा | परंतु अब भारतीय जनहित और मातृभूमि की रक्षा हेतु दृढ़ संकल्प ले चुके थे | उनका यह उत्साह आप किसी भी बंधन या दृढ़ संहिता से रुकने वाला नहीं था | इस प्रकार १९वीं सदी भारतीय जनमानस में जन जागृति और राष्ट्रीय हित का मंत्र देकर विलीन हुई |

१.६.३ स्वतंत्रता काल और भारतीय समाज में पत्रकारिता:-

२०वीं सदी के प्रारंभ से ही भारतीय पत्रकारिता में उत्तेज कायम था| लॉर्ड कर्जन की राष्ट्रहित को आघात पहुंचाने वाली नीति भारतीयों के सीने में शुल की तरह चुभ रही थी | जन सामान्य का यह क्रोध वृत्तपत्र में खुले आम व्यक्त हो रहा था | कहीं हद तक पत्रकारिता की पारदर्शकता का मूल स्वरूप परवान चढ रहा था | भारतीय जनमानस आजादी की चाहत और देशभक्ति के रंग में पूरी तरह रंग चुका था | और यह भाव जागृत करने में पत्र - पत्रिकाओं की भूमिका अहम थी | बंगाल के पत्रों में 'पत्रिका' और 'बंगाली' ने आंदोलन में और अधिक तेजी दिखाई यहां तक कि प्रेस और कार्यालय स्वतंत्रता सेनानियों के लिए केंद्र स्थल बन गए | इसी कारण से क्यों न हो जनता में भी पत्रों के प्रति अधिक आकर्षण था | यही कारण था कि सन १९०५ में एसोशिएट्स प्रेस की स्थापना हुई | इसके माध्यम से समाचार वितरण और संकलन करने का प्रथम संगठित एवं आधुनिकप्रयत्न इस संस्थान की स्थापना के पश्चात होने लगा | इस संस्थान के सदस्य के रूप में के. सी. राय भी थे जिन्हें भारतीय पत्रकारों एवं संवाद संकलन में आदरणीय स्थान है |

पत्रकारिता समय और कालानुरूप विकास की ओर अग्रसर थी |१९०९ ई. में मार्ले - मिंटो सुधारक भारत आए | जिनका व्यापक प्रभाव भारतीय पत्रकारिता पर पड़ा | अंग्रेज दोगली नीति को लेकर चलते थे एक तरफ गला घोट और दूसरी तरफ सुधार की बात करते थे| सुधारकों के कारण देश में राष्ट्रीय जन जागृति में मदद हुई लेकिन इस प्रकार की जागृति सरकार को हिलाने वाली थी | फलतः उन्होंने जन आंदोलन के साथ पत्रों का भी दमन किया | सन १९१० ई. में प्रेस एक्ट बनाया गया जिसके अनुसार कोई भी पत्र सरकारी नीति या सरकारी व्यक्ति पर कोई भी टिप्पणी करता है तो उसे ₹५००० का दंड वसूल किया जायगा | मार्ले मिंटो सुधार के अनुरूप जो कानून बनाया गया था उसमें यह कानून भी पेश किया गया इसका परिणाम यह हुआ कि 'अमृत बाजार' नामक पत्रिका में असम के सिलहट जिले के एक डिविजनल कमिश्नर की रिपोर्ट पर टिका होने के कारण ५००० की जमानत राशि मांगी गई | इस प्रकार समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर आघात लगा कई समाचार पत्रों पर यह कार्यवाही हुई | सन १९२२ ई. में तत्कालीन केंद्रीय व्यवस्थापक सभा ने प्रेस एक्ट की समाप्ति कर दी थी| प्रथम महायुद्ध के शुरू होने पर पत्रों की सीमा और स्वतंत्रता पर आघात लगा | किसी भी युद्ध के समय पत्रों का अवरोधन कर दिया जाता है | भारत तो फिर परतंत्र देश था | युद्ध के पश्चात एक और मोंटेग्यू चेम्सफोर्ड की चर्चा हुई और दूसरी ओर रोलेट बिल सदृश दमनात्मक विधान की रचना की चेष्टा की गई | अंततः जो कुछ सामने था उसके अनुसार मोंटेग्यू चेम्सफोर्ड के सुधार योजना में कोई दम नहीं था | और उसके उपरांत रोलेट एक्ट बिल को सार्थक लागू किया गया तब कहीं भारतीय जनता की आंखें खुली आम जनजीवन और भारतीय नेताओं में गहरा क्षोम पैदा हुआ| यह वह समय था जब भारतीय राजनीति में महात्मा गांधी के रूप में नई शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ|

रोलेट बिल के विरुद्ध उन्होंने सत्याग्रह का प्रस्ताव रखा इसी का परिणाम था कि ब्रिटिश शासन की पशुता खुलकर सामने आई जलियांवाला बाग में निहत्ते मासूम लोगों पर गोलियों की बौछारें हुई | अमृतसर की गोलियों में व्यक्तियों के पेट के बाल रेंगाया गया, खुले आम रास्ते पर लोगों पर कोधे से वार करना आदि दृश्य सामने आए अंग्रेजों के यह सब क्रिया कलाप लोगों पर नहीं उनकी आत्मा पर प्रहार कर रहे थे | महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय प्रवाह को नई दिशा दी सहयोग और सत्याग्रह की योजना के रूप में भारत की विद्रोही आत्मा सजीव हो उठी यही भावना भारतीय पत्रों में पल्लवित होती दिखी |भारतीय पत्रकारिता ने भारतीय विद्रोही ताकतों का डटकर विरोध किया स्वयं गांधी जी ने इस क्षेत्र में नया आदर्श स्थापित किया वे राजनीति के साथ पत्रकारिता क्षेत्र में भी इस लगनता के साथ अवतरित हुए उन्होंने दो पत्रों का प्रकाशन किया ‘यंग इंडिया’ और ‘नवजीवन’| यंग इंडिया में छपे तीन लेखों हेतु गांधी जी को ६ वर्ष कारावास भोगना पड़ा | उधर प्रयाग में स्वर्गीय पंडित मोतीलाल जी ने ‘इंडिपेंडेंट’ नामक पत्र का प्रकाशन किया लेकिन जल्दी ही सरकार ने इसका प्रकाशन रोक दिया इस घटना ने सत्याग्रह का रूप धारण किया | महीनों तक यह पत्रिका हाथ से लिखकर साइक्लोस्टाइल पर छाप कर ‘इंडिपेंडेंट’ प्रकाशित होता रहा और खुले आम इसकी बिक्री चलती रही फलतः सरकार ने ‘इंडिपेंडेंट’ की खरीदी, विक्री, प्रशासन को अपराध घोषित कर दिया | पत्रिका को बेचने खरीदने वालों को पुलिस गिरफ्तार कर प्रताड़ित करती थी |

सन १९३० और १९३२ में देश में जो व्यापक आंदोलन हुए उनमें भारतीय पत्रों का अहम स्थान था| यही कारण है कि तत्कालीन वाइसराय लॉर्ड अरविन ने सन १९३० में प्रेस ऑर्डिनेंस की रचना की | बाद में प्रेस ऑर्डिनेंस को ‘प्रेस इमरजेंसी एक्ट’ के नाम से स्थायी कानून के रूप में लागू किया गया| इस कानून के अनुसार सरकार के खिलाफ अनुचित वक्तव्य होने पर प्रेस से ₹२००० जप्त जमानत के रूप में वसूले जाएंगे यदि यह गलती दूसरी बार होती है तो १००० से १०००० तक का दंड वसूला जा सकता है | इस बीच प्रेस को भी जप्त करने का अधिकार सरकार को है| इस कालावधि में लगभग सभी पत्र असुरक्षितता के साए में आ गए | राष्ट्रवादी पथक ने इन नियमों का विरोध किया क्योंकि उनके अनुसार ऐसा जीवन जीना निरर्थक है | उनका मानना था कि यदि इस समय राष्ट्रीय हित में पत्र न टिक सका तो यह जीवन बनाएं रखना व्यर्थ होगा | देखते-देखते अधिकांश राष्ट्रीय पत्रों ने अपना प्रकाशन बंद कर दिया|

सन १९३५ में भारत शासन विधान के अनुरूप कई प्रान्तों में सरकार की स्थापना हुई | अधिकांश प्रान्तों में कांग्रेसी मंत्रिमंडल चुने गए इन मंत्री मंडलों ने समाचार पत्रों को पूरी तरह स्वतंत्रता दे दी | ब्रिटिश शासन काल में यह पहला अवसर था जब पत्रकारिता को स्वच्छंद अवसर मिला लेकिन कांग्रेस मंत्रिमंडल की अवधि केवल ढाई वर्ष ही थी इसी कालावधी में स्वतंत्रता का गैर फायदा उठाकर कुछ सांप्रदायिक पत्रों ने राष्ट्रीय हित और राष्ट्रीय जीवन को क्षति पहुंचाई फिर भी कांग्रेस मंत्रिमंडल ने पत्रकारिता के आदर्श को अक्षुण्ण रखा |

द्वितीय महायुद्ध सन १९३९ ई. में छिड़ गया | जिसके परिणाम स्वरूप कांग्रेसी मंत्रिमंडल बर्खास्त हो गया और पत्रों की स्वतंत्रता भी समाप्त हो गई | उसके बाद स्वतंत्रता प्राप्ति तक जो पत्रकारिता का हाल हुआ उसका वर्णन करना कठिन है | स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई अंग्रेजों की उच्चशृंखळता से पूरे देश में जो वातावरण निर्मित हुआ उसमें देशभक्ति का

जज्बा सर्वोपरि था | और सभी पहलुओं को हिंदुस्तानी जनता नजरअंदाज कर चुकी थी फिर वह पत्रकारिता ही क्यों ना हो |

सन १९४६-४७ भारत देश के लिए महत्वपूर्ण बदलाव का काल था जो सुख और आन्दोत्साह से परिपूरित था क्योंकि देश लगभग ३०० वर्षों की परतन्त्रता से मुक्त हुआ था अब देश की स्थिति बदल चुकी थी विदेशी शासन समाप्त हो गया | और उसके साथ उनके लगाए हुए सभी प्रतिबंध दमनकारी कानून भी मृत प्राय हो गए | १९४६ में कई प्रान्त में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बने उन्होंने युद्ध कालीन प्रतिबंधों को हटा दिया| तत्पश्चाप केंद्र में भी जनता सरकार की स्थापना हुई लेकिन प्रेस संबंधी कोई नया कानून नहीं बना | भारतीय पत्रकारिता अब पूरी तरह स्वतंत्र थी और है लेकिन त्रुटि यह है कि कुछ पत्रों ने स्वतंत्रता का गैर फायदा उठाया |उससे देश और समाज में सांप्रदायिकता का विष फैलाया गया | समाज में आम जनता के बीच इन गलत खबरों की व्याप्ति के कारण सरकार को कुछ पत्रों पर कार्यवाही करनी पड़ी | लेकिन कुल मिलाकर अब भारतीय पत्रकारिता स्वच्छंद विचरण कर रही है जो देश समाज और जनमानस के अंतर्मन तक व्याप्त हो चुकी है | सभी के जनजीवन में पत्रकारिता का स्थान अहम बन चुका है |

१.७ सारांश

पत्रकारिता का विकास और भारतीय पत्रकारिता के विकास के संबंध में जो भी अध्ययन किया है | वह विद्वानों के शोध और लेखो के आधार पर हुआ है क्योंकि पत्रकारिता के इतिहास को रीतसर लेखनीबद्ध नहीं किया गया है | भारतीय पत्रकारिता के विकास में हिंदी पत्रकारिता का वर्णन करना अनिवार्य है | हिंदी पत्रकारिता का विकास का संपूर्ण वर्णन हम अगले अध्याय में करेंगे |

१.८ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१. पत्रकारिता का अर्थ, परिभाषा समझाते हुए पत्रकारिता के विकास समझाईए |

२. पत्रकारिता का उद्भव और विकास को विस्तार से समझाईए |

३. भारत देश में पत्रकारिता का उद्भव और विकास का वर्णन कीजिए |

१.९ लघुत्तरी प्रश्न

१. वृहत हिंदी शब्दकोश के अनुसार पत्र शब्द का अर्थ क्या है ?

उत्तर - वृहत हिंदी शब्दकोश के अनुसार पत्र शब्द का अर्थ चिट्ठी या वह कागज जिस पर कोई बात लिखी या छपी हो|

२. 'पत्रकारिता पांचवा वेद है जिसके द्वारा हम ज्ञान - विज्ञान संबंधी बातों को जानकर अपना बंद मस्तिष्क खोलते हैं|' पत्रकारिता के सन्दर्भ में उक्त परिभाषा किसने दी है|

उत्तर - इंद्र विद्या वाचस्पति

३. पहली प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना कहाँ हुई व किसने की ?

उत्तर- केंट के विलियम काकस्टन ने १४७६ में इंग्लैंड में पहली प्रिंटिंग प्रेस स्थापित की |

४. भारत में मुद्रण कला का उदय कब और किनके द्वारा हुआ |

उत्तर - भारत में मुद्रण कला का उदय सन १५५० ई में यूरोप से आए पुर्तगालियों द्वारा हुआ |

५. भारत में पहला समाचार पत्र किसने प्रकाशित किया और कहाँ से प्रकाशित किया?

उत्तर - यदि समाचार पत्र की बात करें तो इस क्षेत्र में पहला कदम 'जेम्स ऑगस्टस हिकी' ने उठाया |उन्होंने अपना पहला समाचार पत्र बंगाल गजट नाम से प्रकाशित किया|

१.१० संदर्भ पुस्तकें

१. पत्रकारिता के विविध आयाम – डॉ यु.सी.गुप्ता

२. पत्रकारिता विश्वकोश - डॉ यु.सी.गुप्ता

*****

२

हिंदी पत्रकारिता का विकास

इकाई की रुपरेखा

२.१ इकाई का उद्देश्य

२.२ प्रस्तावना

२.३ हिंदी पत्रकारिता के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान

२.४ सारांश

२.५ दीर्घोत्तरी प्रश्न

२.६ लघुत्तरी प्रश्न

२.७ संदर्भ ग्रंथ

२.१ इकाई का उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- हिंदी पत्रकारिता के विकास को समझेंगे।
- हिंदी पत्रकारिता में कौन-कौन से पत्र-पत्रिकाओं का महत्व है, उसकी जानकारी प्राप्त होगी।
- हिंदी पत्रकारिता के विकास में पत्र-पत्रिकाओं के संघर्ष की गाथा को समझ जाएंगे।
- हिंदी पत्रकारिता के विकास में किन-किन विद्वानों का योगदान है, उसकी विस्तार से जानकारी प्राप्त होगी।

२.२ प्रस्तावना

पत्रकारिता समाज का प्रतिबिम्ब रहा है जो समाज तथा देश विदेश में हो रही घटनाओं का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है। भारतीय पत्रकारिता में हिंदी पत्रकारिता भी यह कार्य बखूबी से निभाती आ रही है। परंतु पत्रकारिता का कार्य केवल समाज को आईना दिखाना नहीं है बल्कि समाज में जागरूकता लाने के साथ-साथ देश को आगे बढ़ाने का कार्य करना महत्वपूर्ण रहा है । पत्रकारिता का अतीत भारतीय पत्रकारिता से काफी पुरातन है । जब संसार का एक देश दुनिया पर राज करते हुए पत्रकारिता के क्षेत्र में सम्पूर्ण विकास की अवस्था में था उस समय भारत में हिंदी पत्रकारिता नवजात शिशु की अवस्था में थी। इसी समय हिंदी पत्रकारिता का सूर्य 'उदन्त मार्तण्ड' का उदय हुआ है। पत्रकारिता का उद्देश्य कोरी सूचना देना ही नहीं अपितु समाज को समय के साथ-साथ कदमताल करने हेतु तत्पर

रहना है। जो समाज में जनचेतना का विकास करने से ही संभव है। जिस समय हिंदी पत्रकारिता का उदय हुआ उस समय देश में राष्ट्रीय चेतना की आवश्यकता थी। समाज में देशप्रेम की भावना विकसित करने की आवश्यकता थी। देशकाल के आधार पर पत्रकारिता का उद्देश्य परिवर्तित होता रहता है। पत्रकारिता में भाषा परिवर्तन भी देशकाल के आधार पर होता है। स्वाधीनता आन्दोलन के समय जनचेतना का विकास राष्ट्रीय चेतना को जागृत करना था। देशवासियों में जनचेतना का विकास समाज में प्रचलित भाषा के आधार पर तीव्रता से एवं अधिकाधिक लोगों में हिंदी भाषा के द्वारा ही संभव था। अंत: हिंदी पत्रकरिता एक आवश्यकता के रूप में अवतरित हुई और कालांतर में समाज के मध्य इसने अपनी स्थिति सुदृढ़ की। साहित्यिक हिंदी से हुई शुरुआत वर्तमान में आम बोलचाल की भाषा पर आकर ठहरी। आज हम हिंदी पत्रकारिता के गौरवमयी इतिहास से गौरवान्वित हो सकते हैं। हिंदी पत्रकारिता के माध्यम से समाज में जो जनचेतना का विकास हुआ और कुछ अपवादों को छोड़कर जैसे की मीडिया का बिकाऊपन, टीआरपी के लिए बेवजह की सूचनाओं को स्थान देने को छोड़कर स्वर्णिम युग की तरफ बढ़ रहे है। हिंदी पत्रकारिता द्वारा ही समाज में जनचेतना का प्रसार हुआ वह अतुलनीय है। हिंदी पत्रकारिता के माध्यम से ही शहर हो या गाँव हर तरफ समस्त सूचना व जागरूकता समाज में पहुँच पाती है।

२.३ हिंदी पत्रकारिता के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान

हिंदी पत्रकारिता का इतिहास एक दिन का होता है। नवम्बर १९३१ के प्रथम अंक तक लोगों की यह धारणा थी की हिंदी का पहला पत्र ‘बनारस अख़बार’ है, जिसका प्रकाशन राजा शिवप्रसाद की सहायता से सन १८४५ ई. में बनारस से हुआ था। परंतु बंगाल के प्राचीन पत्रों के अन्वेषी और उद्धारक ब्रजेन्द्रनाथ बन्दोंपाध्याय को हिंदी के कुछ प्राचीन पत्र मिले जिनसे हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में एक नया आयाम जुड़ गया। नवम्बर १९३१ के ‘विशाल भारत’ में हिंदी समाचार पत्रों की प्रारम्भिक कथा लिखकर श्री. बन्दोंपाध्याय ने इतिहासकारों की पुरानी धारणा को निराश किया और ‘उदन्त मार्तण्ड’ अख़बार की सूचना देकर हिंदी का पहला पत्र बताया। हिंदी के आरम्भिक समाचार पत्रों के बारे में और भी कई सूचनाए उन्होंने दी थी। और ‘विशाल भारत’ मार्च, १९३१ में ‘हिंदी का प्रथम समाचार पत्र’ शीर्षक से लेख लिखकर ‘उदन्त मार्तण्ड’ की विस्तृत चर्चा की गई। उसमें अनेक महत्वपूर्ण स्थल उद्धृत किए गए और उसके उदय-अस्त की पूरी कहानी लिखी। अब तक इसी को हिंदी का प्रथम पत्र के रूप मान्यता प्राप्त हो चुकी है। हिंदी पत्रकारिता के विकास में पत्र-पत्रिकाओं के योगदान को निम्नप्रकार से देख लेते है।

२.३.१ उदन्त मार्तण्ड :

हिंदी पत्रकारिता की चर्चा करते है तो सबसे पहले ‘उदन्त मार्तण्ड’ का नाम आता है। ४ अप्रैल, १८२३ को ब्रिटिश सरकार ने समाचार पत्र और मुद्रण से संबंधित नए कानून की व्यवस्था बनाई। और इस नए कानूनों को क्रियान्वित किया गया। इस कानून के तहत समाचार पत्र प्रकाशित करने के लिए पूर्व संचालक को भारत सरकार से पत्र-प्रकाशन के लिए अनुमति लेनी पड़ती थी। पंडित युगल किशोर शुक्ल ने सन १८२६ ई. में ‘उदन्त मार्तण्ड’ नामक एक हिंदी साप्ताहिक पत्र निकालने के लिए भारत सरकार से इजाज़त माँगी। भारत सरकार ने १६ फ़रवरी, १८२६ ई. को अख़बार निकालने के लिए अनुमति प्रदान

की। और उन्हें अखबार निकालने की अनुज्ञा मिल गयी। 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रथम अंक ३० मई, १८२६ में प्रकाशित किया गया था। उसके मुख पृष्ठ पर 'उदन्तमार्तण्ड' शीर्षक के नीचे संस्कृत में एक पंक्ति लिखी थी –

उदन्तमार्तण्ड

अर्थात

दिवाकांत कान्ति विनाध्वान्तं
न चाप्नोति तद् वज्जगत्यज्ञ लोक: ।
समाचार सेवामृते ज्ञत्वमाप्तुं
न शक्नोति तस्मात् करोमीति यत्नं ॥

यह लिखा हुआ मिलता है | इसका अर्थ है – 'सूर्य के प्रकाश के बिना जिस तरह अंधेरा नहीं मिटता उसी तरह समाचार-सेवा के बिना अज्ञ जन जानकार नहीं बन सकते। इसलिए मैं यह (समाचारपत्र-प्रकाशन रूपी) प्रयन्त कर रहा हूँ।' 'उदन्त-मार्तण्ड' का शाब्दिक अर्थ है – समाचार सूर्य। अर्थात हिंदी पत्रकारिता के आदि पुरुष को पत्रकार के प्रथम कर्तव्य की बड़ी सही और स्पष्ट पहचान थी। इससे यह स्पष्ट होता है कि एक महत् इच्छा और ऊँचे आदर्श को लेकर हिंदी के इस प्रथम पत्र का प्रकाशन हुआ था। इस पत्र का मूल उद्देश्य भारतवासियों में राष्ट्र-प्रेम और सर्वांगीण विकास हेतु जागृति का भाव पैदा करना था। परंतु प्रति मंगलवार प्रकशित होने वाला आर्थिक कठिनायों के कारण अधिक दिनों तक चल न सका और ४ दिसम्बर, १८२७ को यह पत्र बंद कर देना पड़ा। १९ दिसम्बर १८२७ के (७९वें) अंतिम अंक में संपादक ने लिखा था –

"आज दिवस लौ उग चुक्यौ मार्तण्ड उदन्त
अस्ताचल को जाता है दिनकर दिन अब अन्त।"

डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र लिखते हैं कि "कहना न होगा कि पं. युगल किशोल शुक्ल ने ये पंक्तियाँ बड़ी व्यथा के साथ लिखी होंगी। यह भी कुछ विचित्र संयोग है कि हिन्दी पत्रकारिता के उदय के साथ ही आर्थिक संकट का अशुभ गृह उसके साथ लग गया जिसकी कुदृष्टि हिन्दी पत्रकारिता पर सदैव लगी रही।" किन्तु हमें भूलना नहीं चाहिए कि पत्रकारिता का मार्ग भी इसी पत्र द्वारा प्रशस्त हुआ। मार्तण्ड भले ही स्वयं अस्त हो गया किन्तु अपने अवसान के बाद एक अन्य उज्ज्वल पत्रकारिता के सूर्य के लिए इस पत्र ने व्यापक सम्भावनाओं से भरी राह दिखा दी।

२.३.२ बंगदूत :

उदन्त मार्तण्ड के बाद राजा राममोहन राय द्वारा सम्पादित 'बंगदूत' पत्रिका का नाम ले सकते है। यह साप्ताहिक पत्र १० मई, १८२९ को प्रकाशित हुआ था। इस पत्रिका में बंगला, फारसी, अंग्रेजी और हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाता था। इसके प्रथम संपादक नीलरतन हालदार थे। यह हर रविवार को प्रकाशित होता था और इसका मासिक मूल्य एक रूपया था। इस पत्रिका का उद्देश्य सिर्फ देश-विदेश के राजनीतिक, व्यापारिक और शिक्षा संम्बधी समाचारों को प्रकाशित करना था। 'बंगदूत' पत्रिका के भाषा के संदर्भ में आ.

रामचंद्र शुक्ल जी कहते है, "राजा साहब की भाषा में एक-आध जगह कुछ बंगलापन जरुर मिलता है, पर उसका रूप अधिकांश में वही है, जो शास्त्रज्ञ विद्वानों के व्यवहार में आता था।" 'बंगदूत' के हिंदी अंश के ऊपर एक छंद रहता था –

"दूतनिकी यह रीति बहुत थोरे में भाषैं।
लोगनि को बहुलाभ होय याही ते लाखैं॥
बंगालाको दूत पूत यहि वायु को जानौ।
होय विदित सब देश क्लेश को लेश न मानौ॥"

२.३.३ बनारस अखबार :

'बनारस अख़बार' को हिंदी का पहला साप्ताहिक पत्र माना जाता रहा, जब तक 'उदन्त मार्तण्ड' को सर्वप्रथम पत्र होने का दावा प्रगट नहीं हुआ था। इसे जनवरी, १८४५ में काशी से राजा शिवप्रसाद सितारे 'हिन्द' ने प्रकाशित किया। यह साप्ताहिक पत्र मराठी भाषी श्री. गोविंद नारायण थत्ते के संपादन में निकाला। इसकी देवनागरी लिपि थी परंतु इस पत्र में उर्दू भाषा का प्रयोग होता था। राजा शिवप्रसाद सितारे 'हिन्द' उर्दू के समर्थक थे। इस पत्र में अधिकतर अरबी, फारसी शब्दों की भरमार होती थी। 'बनारस अख़बार' के मुख्य पृष्ठ पर छपता था –

"सुबनारस अख़बार यह शिवप्रसाद आधार।
बुद्धि विवेक जन निपुन को चित्त हित बारम्बार॥
गिरजापति नगरी जहाँ गंग अमल जलधार।
नेत शुभाशुभ मुकुर को लखो विचार विचार॥"

'बनारस अख़बार' के प्रकाशन के बाद कलकत्ते से ११ जून, १८४६ को 'मार्तण्ड' नामक पत्र सम्पादित हुआ। १८४८ में कलकत्ते से ही 'जगदीश भास्कर' तथा इंदौर से 'मालवा' अख़बार प्रकाशित हुआ।

२.३.४ सुधाकर :

श्री. तारामोहन मैत्रेय नामक बंगाली व्यक्ति ने सन १८५० में 'सुधाकर' पत्र का प्रकाशन किया। यह पत्र साप्ताहिक और बंगाली के साथ साथ हिंदी में भी प्रकाशित होता था। भाषा की दृष्टि से देखा जाए तो यह पत्र उत्तर प्रदेश का पहला हिंदी पत्र कहना योग्य रहेगा। इस पत्र के मुद्रक पण्डित रत्नेश्वर तिवारी थे। इस पत्र में ज्ञान और मनोरंजन की पर्याप्त साधन-सामग्री रहती थी।

२.३.५ बुद्धिप्रकाश :

सन १८५२ में 'बुद्धिप्रकाश' का प्रकाशन आगरे से हुआ था। इस पत्र के संपादक मुंशी सदासुखलाल थे। यह पत्र नुरुल बसर प्रेस से प्रकाशित होता था। इसकी भाषा शैली की दृष्टि से विशेष महत्व रखता था। इसमें भूगोल, शिक्षा, गणित, इतिहास आदि विषयों पर लेख प्रकाशित होते थे। इसकी प्रशंसा आ. रामचंद्र शुक्ल और अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ने की है।

२.३.६ समाचार सुधावर्षण :

'समाचार सुधावर्षण' हिंदी का प्रथम दैनिक पत्र था । तो 'उदन्तमार्तण्ड' हिंदी का पहला साप्ताहिक पत्र था । सन १८५४ में इसका संपादन कलकत्ता से श्यामसुंदर सेन करते थे । इसमें सम्पादकीय टिप्पणियाँ, लेख और महत्वपूर्ण समाचार हिंदी भाषा में लिखे जाते थे । बाद में बंगला भाषा में व्यापर से संबधित समाचार, विज्ञापन आदि प्रकाशित किए जाते थे । इस पत्रिका को अपनी निर्भीकता और प्रगतिशीलता के कारण ब्रिटिश सरकार का कोपभाजन बनना पड़ा ।

२.३.७ पयामे आज़ादी:

सन १८५७ में स्वातंत्रता आंदोलन के नेता अजीमुल्ला खाँ ने दिल्ली से 'पयामे आज़ादी' का प्रकाशन किया था । प्रथम यह पत्रिका हिंदी और उर्दू में निकलती थी, परंतु बाद में इसका प्रकाशन सिर्फ हिंदी में निकलने लगा । यह एक ऐसा शोला था जिसने अपनी प्रखर एवं तेजस्वी वाणी से जनता में स्वंतंत्रता का स्वर फूककर जनता में जोश पैदा करता था । इस वातावरण से ब्रिटिश घबरा उठी और इस पत्र को बंद कराने के कोई कसर नहीं छोड़ी । जिसके पास इस पत्र की प्रतियाँ चली जाती थी उन्हें ब्रिटिश अनेक प्रकार यातनाएँ देते थे । इस पत्र ने तत्कालीन स्थितियों पर खुलकर लिखा तथा सरकार की नीतियों की निर्भीकता से आलोचना की । इसलिए यह पत्र भी ब्रिटिशों की नीतियों के विरुद्ध जाने के कारण शीघ्र बंद कर दिया गया ।

इस पत्रिका के बाद अनेक पत्र - पत्रिकाएँ प्रकाश में आयी । जिसमें नाम ले सकते है – धर्मप्रकाश, सूरज प्रकाश, सर्वोपकारक, लोकमत, ज्ञान प्रकाश, प्रजाहितैषी, सज्जन कीर्ति सुधाकर आदि कई पत्र-पत्रिकाओं का नाम ले सकते है ।

२.३.८ कविवचन सुधा:

१५ अगस्त, १८६७ में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'कविवचन सुधा' नामक मासिक पत्र निकाला और हिंदी पत्रकारिता के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया । प्रारंभ में इस पत्रिका में प्रसिद्ध कवियों की कविताओं को प्रकाशित किया जाता था । इस पत्रिका में देव का 'अष्टयाम', दीनदयाल गिरि का 'अनुराग वासु', चंद्र का 'रासौ', जायसी कृत 'पद्मावत', कबीर की 'साखी', गिरिधरदास कृत 'नहुष' नाटक आदि का प्रकाशन प्रत्रिका के माध्यम से हुआ है। भारतेंदु इस पत्रिका के माध्यम से भारतीय जनता को हिंदी कविताओं की नई परम्पराओं से परिचित कराना चाहते थे । यह पत्रिका कुल सोलह पृष्ठों में छपती थी । इसमें प्रकाशित राजनितिक तथा सामाजिक लेखों ने एक विशिष्ट और व्यापक पाठक वर्ग तैयार किया है । इसी पत्रिका से हिंदी पत्रकारिता के नये युग का आरम्भ माना जाता है ।

२.३.९ हरिश्चन्द्र मैगजीन:

१५ अक्टूबर, १८७३ को काशी से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ही 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' पत्रिका निकाली और यह पत्रिका मासिक थी । इस पत्रिका में अधिकत्तर पुरातत्व, उपन्यास, कविता, आलोचना, ऐतिहासिक, राजनीतिक, साहित्यिक तथा दार्शनिक लेख, कहानियाँ एवं व्यंग्य आदि प्रकार का साहित्य प्रकाशित होता था । इसकी कुल ५०० प्रतियाँ निकलती

थी। जब इसमें देशभक्तिपूर्ण लेख निकलने लगे तो इसे बन्द कर दिया गया। बाद में इसका नाम बदलकर 'हरिश्चन्द्रिका' कर दिया।

२.३.१० बालबोधिनी:

'बालबोधिनी' पत्रिका ९ जनवरी, १८७४ को भारतेन्दु ने निकाली। इसके संपादक और मुद्रक एवं प्रकाशक भारतेंदु हरिशंद्र जी रहे। यह पत्रिका महिलाओं की मासिक पत्रिका थी। इसकी पृष्ठ संख्या ८ से १२ तक होती थी। पत्रिका के निवेदन में छपा है – 'मेरी प्यारी बहनों मैं एक तुम्हारी नई बहन 'बाल बोधिनी' आज तुम लोगों से मिलने आई हूँ और यही इच्छा है कि तुम लोगों से सब महीनों में एक बार मिलूं, देखों मैं तुम सब लोगों से अवस्था में कितनी छोटी हूँ, क्योंकि तुम सब बड़ी हो चुकी हो और मैं अभी जन्मी हूँ, और इस नाते से तुम सबकी छोटी बहन हूँ।' इस प्रकार का निवेदन प्रथम पृष्ठ पर छपता था। यह निवेदन नारी जागरण की दृष्टि से तो महत्वपूर्ण है ही, साथ ही उसकी भाषा – शैली और अभिव्यक्ति की दृष्टि से उल्लेखनीय है।

२.३.११ हिंदी प्रदीप:

भारतेंदु मंडल के पण्डित बालकृष्ण भट्ट ने सन १८७७ में 'हिंदी पत्रिका' नामक मासिक पत्रिका प्रयाग से प्रकाशित की। भारतेन्दु जी ने इस पत्र का उद्घाटन किया था। 'हिंदी प्रदीप' यह पत्रिका साहित्यिक पत्रिका थी। हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि की समर्थक थी। पत्रकारिता की दृष्टि से 'हिन्दी प्रदीप' का जन्म हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक क्रान्तिकारी घटना रही है। हिन्दी पत्रकारिता को एक नयी दिशा प्रदान की है। इसका स्वर राष्ट्रीय निर्भीकता तथा तेजस्विता का था, अतः ब्रिटिश सरकार इस पर कड़ी नजर रखती थी। इस मासिक पत्रिका में विविध विषयों से सम्बन्धित सामग्री जैसे नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजनीति आदि सम्बन्धी खबरें भरी रहती थीं। प. बालकृष्ण भट्टजी 'हिन्दी प्रदीप' पत्रिका के लिए रचनाएँ मंगाने के लिए पद्य का भी प्रयोग करते थे। 'जरा सोचो तो लोग बम क्या है' पं. माधव शुक्ल की कविता प्रकाशित हुई। इस पर ब्रिटिश सरकार ने जमानत मांगी परंतु भट्ट जी जमानत नहीं दे सके। यह पत्रिका घोर संकट के बावजूद भी ३५ वर्षों तक चली।

२.३.१२ भारत मित्र:

'भारत मित्र' पत्रिका का प्रकाशन १७ मई, १८७८ को कलकत्ता से हुआ है। इसके संस्थापक संपादक पंडित छोटूलाल मिश्र तथा पंडित दुर्गाप्रसाद मिश्र थे। यह पाक्षिक पत्रिका थी। इस पत्रिका प्रथम पृष्ठ पर एक वाक्य छपता था –

'ज्योऽस्तु सत्य निष्ठांना थेषां सर्वे मनोरथा:।'

अर्थात सत्यनिष्ठ लोगों की जय हो और उनके मनोरथ सिद्ध हो। बालमुकुन्द गुप्त ने लगभग ८ वर्ष तक भारत मित्र का संपादन किया। भारत मित्र पत्रिका की यह ८ वर्ष की अवधि एक प्रकार उसका स्वर्ण युग था। इस अवधि में 'भारतमित्र' ने जितना अधिक यश प्राप्त किया था वह हिंदी पत्रकारिता के लिए गौरव काल था। गुप्त जी के निधन के बाद पंडित अमृतलाल शर्मा, शिवनारायण सिंह, पंडित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, पंडित विष्णु पराड़कर, पंडित

लक्ष्मणनारायण गर्दे आदि द्वारा सम्पादित होता रहा । यह पत्र राजनीतिक, साहित्यिक, धार्मिक व सामाजिक आन्दोलनों का खुला ब्यौरा छापता था । हिन्दी का यह पहला पत्र था जो हजारों की संख्या में छपता था । सन् १९३५ में यह बन्द हो गया ।

२.३.१३ सार सुधानिधि:

'सार सुधानिधि' नामक पत्रिका कलकत्ते से १३ अप्रैल, १८७९ को प्रकाशित हुआ । यह 'सार सुधानिधि' पत्रिका पं. सदानंद जी के सम्पादन में निकला । इसके संयुक्त सम्पादक पं. दुर्गाप्रसाद, गोविन्द नारायण मिश्र और पं. शम्भूनाथ थे । 'सार सुधानिधि' एक राष्ट्रीय-चेतना प्रधान पत्र था । इस पत्र का उद्देश्य जनता में राजनीतिक चेतना को जागृत करना था। यह पत्र राजनीति का ही नहीं, अन्य विषयों का भी आलोचक था । इसकी भाषा संस्कृत मिश्रित हिन्दी थी, अतः कुछ कठिन होती थी । लेख अच्छे व गम्भीर होते थे । यह उस समय का बड़ा ही तेजस्वी पत्र था जो अपनी उग्रवाणी के कारण सरकार की कोपदृष्टि का शिकार हुआ । फलतः यह पत्र बारह वर्षो के बाद सन् १८९० में बन्द हो गया ।

२.३.१४ उचित वक्ता:

हिन्दी पत्रकारिता के महान उन्नायक पं. दुर्गाप्रसाद मिश्र जी ने ७ अगस्त, १८८० ई. में कलकत्ता से 'उचित वक्ता' नामक पत्र प्रकाशित किया । यह पत्र पं. दुर्गाप्रसाद मिश्र का अपना पत्र था, इसलिए वे स्वेच्छा से और पूरी स्वतंत्रता से प्रकाशित किया करते थे । इस पत्रिका में राष्ट्रीय चेतना की बातों को बड़ी निर्भीकता कहा जाता था । सरकार का विरोध भी किया जाता था । देश की दरिद्रता और जनता के शोषण के लिए अंग्रेज सरकार को दोषी ठहराया । 'उचित वक्ता' पत्रिका के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जगाने, स्वदेशी आन्दोलन के माध्यम से देशी वस्तुओं को महत्ता बनाने, हिंदी भाषा को बढ़ावा देने और देश की स्वंतंत्रता के संघर्ष में बहुत बड़ा योगदान रहा है । लगभग यह पत्रिका १५ वर्ष तक प्रकाशित होती रही।

२.३.१५ आनंद कादम्बिनी:

'आनंद कादम्बिनी' यह हिंदी की उत्कृष्ट मासिक पत्रिका थी । इस पत्रिका का प्रकाशन सन १८८१ में हुआ था । इसके संपादक पंडित बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' है । इस पत्रिका का प्रथम अंक बनारस लाइट यन्त्रालय में गोपनीय पाठक द्वारा मुद्रित हुआ । पत्रिका के प्रकाशन में पंडित बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा । उनके पास अपना प्रेस नहीं था । इसीलिए इस पत्रिका को अनेक प्रेसों का सहारा लेना पड़ा। यह पत्रिका साहित्यिक थी, उसमें अनेक कविताओं को प्रकाशित किया जाता था । इसी के साथ अन्य प्रकार के लेख भी इस पत्रिका में छपे हुए मिलते थे । राष्ट्रीय चेतना जगाने में इस पत्रिका की महत्वपूर्ण भूमिका रही है ।

२.३.१६ ब्राह्मण:

१५ मार्च, १८८३ में 'ब्राह्मण' नामक पत्रिका का प्रकाशन कानपूर से हुआ । इस पत्रिका का संपादक पंडित प्रतापनारायण मिश्र थे । यह पत्र सामान्य जन का और स्वाभिमानी पत्र था । यह पत्र किसी की परवाह न करते हुए बड़ी निर्भीकता से लोकमत को सरकार तक पहुँचाने

में समर्थक था। पाठकों में गहराई से बात करता था। उसकी मुहावरेदार भाषा भारतेंदु-युग के किसी अन्य पत्र में दिखाई नहीं पड़ती। इसलिए हिंदी गद्य को सहज, सुगम और प्राणवत स्वरुप प्रदान करने में 'ब्राह्मण' का अधिक योगदान है। 'ब्राह्मण' पत्रिका में मुख्य रूप से मिश्र जी की रचनाये छपती थी। प्रथम अंक में प्रकाशन के दिन यह सूचना मिलती थी कि "जन्म हमारा फागुन में हुआ और हो की पैदाइस प्रसिद्ध है। कभी कोई हँसी कर बैठे, क्षमा कीजिएगा।"

२.३.१७ पीयूष प्रवाह:

'पीयूष प्रवाह' पत्रिका का प्रकाशन १५ फ़रवरी, १८८४ में काशी से हुआ। यह मासिक पत्रिका थी। लगभग दो वर्ष के प्रकाशन के बाद यह पत्रिका बंद हो गयी।

२.३.१८ हिन्दोस्थान:

'हिन्दोस्थान' इस पत्रिका का प्रकाशन काँग्रेस की स्थापना से एक माह पूर्व हुआ। अर्थात सन १८८५ में राजा रामपालसिंह लंदन से कालाकांकर ले आए और यहाँ पर हिंदी-अंग्रेजी में इसका प्रकाशन होने लगा। यह उत्तर प्रदेश से पं. मदममोहन मालवीय जी के नेतृत्व में सम्पादित हुआ। इसके अतिरिक्त इस पत्रिका को प्रतापनारायण मिश्र, गोपालराम गहमरी जैसे वरिष्ठ पत्रकारों का सहयोग मिलता रहा। इस पत्रिका में सरकारी अफसरों की कटु आलोचना की जाती थी। पत्रकारिता जगत में नए प्रतिमान स्थापित किए और भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को भी गतिशील बनाया। 'हिन्दोस्थान' अपने जीवन के प्रारम्भिक दस वर्षों में विशुद्ध भारतीय विचारधारा तथा जातीय स्वर को उजागर करने वाला पत्र था। एक और वह हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि का संवर्धन कर रहा था, तो दूसरी और हिंदू और हिंदुस्थान की समस्या को उजागर करने तथा देश की स्वंतंत्रता दिलाने के लिए भी प्रयन्तशील था। 'हिन्दोस्थान' ने अपने २७ वर्ष के जीवन में हिंदी, उर्दू, हिंदुस्तान की सेवा कर पत्रकारिता को नई दिशा दी और साथ ही हिंदी प्रदेश को प्रथम हिंदी दैनिक समाचार पत्र का गौरव प्रदान किया।

२.३.१९ सुगृहिणी:

'सुगृहिणी' पत्रिका का प्रकाशन रतलाम से सन १८८८ में हुआ। इस पत्रिका की संपादिका-प्रकाशक श्रीमती हेमंत कुमारी देवी थी। यह नारी के लिए प्रसिद्ध पत्रिका थी। इस पत्रिका के प्रथम अंक में नारी जाति को संबोधित करते हुए कहाँ है – "हे प्यारी बहनों। द्वार खोल देखो तुम्हारें यहां कौन आई। तुम लोग क्या इसे पहचानती हो। यह भी तुम्हारी तरह एक भगिनी है। इसका नाम सुगृहिणी है। तुम्हारे दुखों को देखकर, तुम्हें अज्ञानता और पराधीनता में बद्ध देखकर तुम्हारी यह बहिन तुम्हारे द्वार पर आई है। बहिनों आज आओ सब एक मन से इस नवागता बहिन का शुभागमन करने इसे आशीर्वाद करो। परमात्मा तुम्हारे सुगृहिणी के सहायक हो।" 'सुगृहिणी' पत्रिका के उपरोक्त संबोधन से उसके उद्देश्य की जानकारी स्पष्ट हो जाती है। नारी को पराधीनता से मुक्ति दिलाकर उसे अपना व्यक्तित्व प्रदान करना 'सुगृहिणी' का लक्ष्य था। 'सुगृहिणी' नारी-जगत की प्रगतिशील पत्रिका थी। बाल-विवाह और अशिक्षा का विरोध इस पत्रिका के माध्यम से किया जाता था। साथ ही

लड़कियों को उच्च शिक्षा देने का आह्वान भी किया था। इस पत्रिका में नारी उत्थान से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के विषयों का चयन कर उसे प्रकाशित किया जाता था।

२.३.२० नागरी नीरद:

सन १८९२ में 'आनंद कादम्बिनी' के संपादक प्रेमघन जे ने 'नागरी नीरद' नाम का साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया। यह पत्रिका चार साल तक प्रकाशित होती रही। प्रेमघन जी घन या बादल के बड़े प्रेमी थे, इसलिए उन्होंने अपना उपनाम 'प्रेमघन' रखा था। उन्होंने 'नागरी नीरद' के अंकों और संख्याओं के स्थान पर वर्षा और बिंदु जैसे शब्दों का प्रयोग किया। बाद में यह मासिक पत्र हो गया। इस पत्रिका में साहित्यिक सामग्री के साथ-साथ देश-विदेश की खबरें भी छपती थीं। नागरी नीरद में हास्य-व्यंग्य की रचना और प्रेमघन जी की मौलिक रचनाएँ भी छपती थीं।

२.३.२१ नागरी प्रचारिणी पत्रिका:

काशी में नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना १६ जुलाई १८९३ में हुई थी। इसी के माध्यम से हिंदी भाषा के उन्नयन और प्रतिष्ठा तथा हिंदी साहित्य की समृद्धि के लिए सन १८९६ में नागरी प्रचारिणी पत्रिका का प्रकाशन काशी से हुआ। इसके संपादक बाबू श्यामसुंदर दास, महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी, कालीदास और राधाकृष्ण दास थे। पत्रिका के संदर्भ में आ. रामचद्र शुक्ल कहते हैं "इसका उद्देश्य यह था कि इसके द्वारा 'हिंदी में गद्य साहित्य की कमी दूर हो' और 'ऐसे लेखों की संख्या बढ़ती रहे जिनका लक्ष्य न केवल पाठकों का मनोरंजन करना वरन हिंदी बोलने वालों के विचारों को कुछ बढ़ाना और उनकी दृष्टि को कुछ और दूर तक फैलाना हो।" प्रारंभ में यह त्रैमासिक पत्रिका थी। बाद में यह सम्पादित पत्रिका सन १९०८ में मासिक पत्रिका हो गयी। फिर से यह पत्रिका सन १९२० में त्रैमासिक हो गई। इस नागरी प्रचारिणी पत्रिका के प्रकाशन से हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के इतिहास का स्वर्ण-युग आरम्भ होता है। इस पत्रिका में शुरू से ही साहित्य, समालोचन, इतिहास, समाजशास्त्र आदि विषयों से संबंधित लेखों को प्रकाशित किया जाता था।

२.३.२२ सरस्वती:

नागरी प्रचारिणी सभा की गतिविधियों से प्रभावित होकर प्रयाग से इंडियन प्रेस ने 'सरस्वती' मासिक पत्रिका का सन १९०० में प्रकाशन हुआ। यह एक युगांतकारी पत्रिका रही है। इस पत्रिका के संपादक मंडल में जगन्नदास, कार्तिकप्रसाद खत्री, राधाकृष्ण दास, किशोरी लाल गोस्वामी और श्यामसुंदर दास थे। इसके देखरेख में 'सरस्वती' पत्रिका का आरम्भ हुआ। जनवरी, १९०३ से 'सरस्वती' के संपादक का भार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को दिया गया। इसका मुख्य उद्देश्य हिंदी रसिकों के मनोरंजन के साथ-साथ भाषा के सरस्वती भंडार की अंगपुष्टि, वृद्धि और पूर्ति करना था। इसमें पद्य, काव्य, गद्य, नाटक, उपन्यास, चंपू, इतिहास, जीवन-चरित्र, पत्र, हास-परिहास, कौतुक, विज्ञान, पुरातत्व, आलोचना आदि शीर्षक होते थे। इसी के साथ उन्होंने हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया हैं। उनके नेतृत्व में हिंदी पत्रकारिता का भी विकास होता गया।

'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता में नये युग का शुभारम्भ होता है। बीसवीं सदी में कविता, कहानी या हिंदी भाषा से संबंधित संपादन से हिंदी पत्रकारिता को समृद्ध किया है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने सन १९१६ तक 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन किया। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' के माध्यम से राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना जागृत करने का प्रयास किया। द्विवेदी जी ने सरस्वती के माध्यम से लेखन, कवि और साहित्यकार तैयार किए। इस पत्रिका ने समकालीन लेखकों को प्रोत्साहित कर लेखक बनाने में योगदान दिया। द्विवेदी जी लेखकों को उसकी सम्पादित कॉपी वापिस कर उसे पुनः नये ढंग से लिखवाकर वापस माँगते थे। इस तरह उन्होंने हिन्दी में अच्छे लेखकों की बड़ी संख्या तैयार की।

यह सरस्वती हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका थी और सन १९६२ तक प्रकाशित होती रही। यह भाषा तथा साहित्य की युगान्तकारी पत्रिका थी। सरस्वती पत्रिका १९०० से १९८२ तक बराबर निकलती रही। इस पत्रिका का सम्पादन करीबन ३० लोगों के माध्यम से हुआ है।

२.३.२३ समालोचक:

पंडित चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' के नेतृत्व में जयपुर से सन १९०२ में 'समालोचक' पत्रिका का संपादन हुआ। यह उस समय राजस्थान की सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका थी। इसमें पुस्तक-सार, अनुवाद एवं निबंध प्रकाशित होते थे।

२.३.२४ नृसिंह:

पंडित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी के संपादन में यह पत्र सन १९०७ में प्रकाशित हुआ। यह पत्र न्याय और औचित्य का रक्षक था। कांग्रेस के गरम दल को 'राष्ट्रीय' और नरम दल 'धृतराष्ट्रीय' इस पत्रिका में कहा जाता था। प्रत्येक अंक पृष्ठ ४० पन्नों का होता था। प्रत्येक अंक में एक चित्र अवश्य रहता था। इस पत्रिका में डॉ. रासबिहारी घोष, बाल गंगाधर तिलक, पं. ब्रह्मबान्धव उपाध्याय और लाला लजपतराय आदि विद्वान तथा महापुरुषों के चित्र निकाले थे।

२.३.२५ प्रताप:

९ नवम्बर, १९१३ में गणेश शंकर विद्यार्थी के संपादक में कानपूर से प्रकाशन आरम्भ हुआ। यह पत्र साप्ताहिक था। 'प्रताप' यह हिंदी पत्र तेजस्वी राष्ट्रीय और राजनीतिक विचारधारा का था। इसलिए इस पत्र का यश कुछ ही दिनों में चारों ओर फैल गया। यह पत्र देश को परतंत्रता की बेडी से मुक्त कराने के लिए बलिदान करने के लिए भी तैयार था। 'प्रताप' ने अपने उद्देश्य के बारे में कहा था – "समस्त मानव जाति का कल्याण हमारा परमोद्देश्य है और इस उद्देश्य की प्राप्ति का एक बहुत बड़ा और जरुरी साधन हम भारतवर्ष की उन्नति समझते है। उन्नति से हमारा अभिप्राय देश की कृषि, व्यापार, कला, वैभव, मनोबल, सदाचार, सच्चरित्रता की वृद्धि से है। स्वंतंत्रता और निष्पक्षता को छोड़ देने की भीरुता दिखावे, वह दिन हमारे जीवन का सबसे अभागा दिन होगा। और हम चाहते हैं कि हमारी उस नैतिक मृत्य के साथ ही हमारे जीवन का भी अंत हो जाये।" यह एक क्रान्तिकारी विचारधारा की पत्रिका थी। इस पत्रिकाने हिंदी पत्रकारिता को एक नई दिशा देने का काम किया है।

२.३.२६ कर्मवीर:

१७ जनवरी, १९१९ में श्री. विद्यार्थी के सहयोगी श्री. माखनलाल चतुर्वेदी जी के संपादक में 'कर्मवीर' पत्र निकला। इसके प्रधान संपादक माधवराव सप्रे थे। यह पत्र साहित्यिक और राष्ट्रीय भावनाओं से अभिभूत राजनीति पत्र तो था परतु यह एक विचार पत्र भी था। जनता का 'कंठहार' भी था। स्वंतंत्रता संग्राम में माखनलाल चतुर्वेदी जी की व्यक्तित्व जुझारू बन गया था। उनके द्वारा लिखी हुई पंक्तियाँ आज भी देशभक्तों के कर्ण-कुहरों में अनुगूँजित है –

"मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फैंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएँ वीर अनेक।।"
यह उनकी पंक्ति राष्ट्रीयता से ओतप्रोत थी।

२.४ सारांश

इस प्रकार से हम देख सकते है कि आज़ादी के पहले की पत्रकारिता ने पूँजी और राज्य के नियंताओं को स्वंय पर हावी नहीं होने दिया। इसीकारण पत्रकारिता के क्षेत्र में उनका उल्लेखनीय कार्य रहा है। सन १८२६ में हिंदी का प्रथम पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' की यात्रा आरम्भ हुई और अनेक विघ्न-बाधाओं के साथ आर्थिक संघर्ष के जूझती हुई विकास के पथ पर निरंत्तर आगे बढ़ते हुई दिखाई देती है। इसमें कई पत्र-पत्रिकाओं का योगदान रहा है। हिंदी पत्रकारिता से समाज को नई दिशा तथा राष्ट्रीयता के विकास में नया मार्ग मिला है।

२.५ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१. हिंदी पत्रकारिता के विकास की विस्तार से चर्चा कीजिए।

२. हिंदी की महत्वपूर्ण पत्रिकाओं को रेखांकित कीजिए।

३. पत्रकारिता के क्षेत्र में किन-किन महत्वपूर्ण पत्रिकाओं ने राष्ट्रीय चेतना को जगाने का कार्य किया है, उस पर प्रकाश डालिए।

४. स्वंतंत्रता संग्राम में हिंदी पत्रकारिता के योगदान को रेखांकित कीजिए।

२.६ लघुत्तरी प्रश्न

प्रश्न १. हिंदी समाचार पत्र 'प्रताप' के संपादक का नाम क्या है?

उत्तर : गणेश शंकर विद्यार्थी

प्रश्न २. माखनलाल चतुर्वेदी ने किन पत्रों का संपादन किया?

उत्तर : कर्मवीर प्रभा और प्रताप

प्रश्न ३. 'प्रजा हितैषी' समाचार पत्र का संपादन किसने किया?

उत्तर : राजा लक्ष्मण सिंह

प्रश्न ४. उदंत मार्तंड के संपादक कहां के निवासी थे?

उत्तर : कानपुर

प्रश्न ५. माखनलाल चतुर्वेदी किसकी प्रेरणा से पत्रकारिता में आए?

उत्तर : माधवराव सप्रे

प्रश्न ६. बंगदूत के संपादक कौन थे?

उत्तर : राजा राममोहन राय

२.७ संदर्भ ग्रंथ

१. आजादी के पचास वर्ष और हिन्दी पत्रकारिता – डॉ. सविता चड्डा

२. पत्रकारिता: नया दौर नये प्रतिमान – संतोष भारतीय

३. पत्रकार और पत्रकारिता – डॉ. रमेश जैन

४. भारतीय पत्राकारित कोश (१७८०-१९००) (खण्ड – एक) – विजयदत्त श्रीधर,

५. भारतीय पत्राकारित कोश (१९०१-१९४७) (खण्ड – दो) – विजयदत्त श्रीधर,

*****

३

हिंदी पत्रकारिता के स्वाधीनता पूर्व संपादक

इकाई की रूपरेखा

३.० इकाई का उद्देश्य

३.१ प्रस्तावना

३.२ पत्रकारिता का स्वरूप एवं विकास

३.३ हिंदी पत्रकारिता के स्वाधीनता पूर्व संपादक

३.४ सारांश

३.५ लघुत्तरीय प्रश्न

३.६ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

३.७ संदर्भ ग्रन्थ

३.० इकाई का उद्देश्य

- विद्यार्थियों में हिंदी पत्रकारिता के स्वरूप की जानकारी।
- विद्यार्थियों में हिंदी समाचार पत्रों के संपादकों की जानकारी।
- विद्यार्थियों में हिंदी समाचार संपादकों की भूमिका स्पष्ट होगी।
- विद्यार्थियों में भारतीय आंदोलन के प्रति हिंदी पत्रकारिता की भूमिका स्पष्ट होगी।

३.१ प्रस्तावना

मोटे तौर पर बात करें तो पत्रकारिता का संबंध सूचनाओं को संकलित और संपादित करके आम पाठकों तक पहुंचाने से है। लेकिन पत्रकारिता में हर सूचना को समाविष्ट ही किया जाए यह जरूरी नहीं। पत्रकारिता में पत्रकार कुछ ही घटनाओं समस्याओं और विचारों को समाचार के रूप में पेश करते हैं। किसी घटना के समाचार बनने के लिए उसमें कुछ तत्वों का होना जरूरी है यथा नवीनता, जनरुचि, निकटता, प्रभाव इत्यादि। पत्रकारिता अपने मूल रूप में अंग्रेजी उपनिवेशवाद के दौर में ही अपने पैर जमाना शुरू कर दी थी। हिंदी साहित्य के भारतेंदु युग में इस विधा का पल्लवन हुआ। भारतेंदु युग के लगभग जितने भी साहित्यकार थे वह किसी ने किसी पत्र से अवश्य जुड़े थे, आगे चलकर द्विवेदी काल आता है जिसमें इसने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । भारतीय हिंदी पत्रकारिता के युगांतर प्रतीक के रूप में भारतेंदु हरिश्चंद्र जी को माना जाता है। वैसे अगर मान जाए तो पत्रकारिता का आरंभ भारतेंदु जी से पहले शुरू हो चुका था हिंदी का पहला समाचार पत्र उदंत मार्तंड

३० में १८२६ को कानपुर निवासी पंडित युगल किशोर शुक्ल के संपादकत्व में कोलकाता से निकलता था। पत्रकारिता ने स्वाधीनता की लड़ाई,सामाजिक सरोकार में, सामाजिक उद्बोधन इत्यादि में अपना लोहा मनवाया जिनकी चर्चा हम यहां करेंगे।

३.२ पत्रकारिता का स्वरूप एवं विकास

पत्रकारिता के इतिहास में उदंत मार्तंड एक चेतना भर थी। यह अपने प्रसार संख्या में कम होने के बावजूद प्रभावी तरीके से कम कर रही थी। शुरुआत से ही भारतीय पत्रकारिता घटना केंद्रित न होकर जन जागरण का कार्य किया। एक तरह से यही इसकी महानता है। भारतीय हिंदी पत्रकारिता या कहे अन्य भाषा की पत्रकारिता अपने शुरुआती समय में समाज और धर्म को केंद्रित करते हुए आगे बढ़ रही थी। धर्म में ही राष्ट्र राष्ट्र का हित इसका उद्देश्य रहा। राष्ट्र की परिकल्पना कभी भी संस्कृति और धर्म के प्रतिकूल नहीं रही है। इसीलिए महात्मा गांधी ने कहा है की समाचार पत्र का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओं विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है और इसके अलावा सार्वजनिक उद्देश्यों को निर्भयता पूर्वक प्रकट करना चाहिए। भारत की आजादी के आंदोलन के समय भारत में अनेक स्थानों से विविध भाषाओं में समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा था। और इन प्रकाशनों का संचालन अलग-अलग क्षेत्र से जुड़े देशभक्ति जैसे साहित्य जगत, समाज सुधारक, मनोचिंतक, दार्शनिक इत्यादि ने किया। हिंदी पत्रकारिता की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता की कहानी मानी जाती है। हिंदी पत्रकारिता के आदि उन्नायक जातीय चेतना युगबोध एवं अपने महत्वपूर्ण दायित्व के प्रति पूर्ण सचेत थे। इसी कारण लगभग विदेशी सरकार की दमन नीति का सामना भी करना पड़ा। उसके नृशंस व्यवहार की यातना झेलनी पड़ी थी। १९वीं शताब्दी में हिंदी गति निर्माण की कोशिश और हिंदी प्रचार आंदोलन अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में भयंकर कठिनाइयों का सामना करते हुए भी कितना तेज और पुष्ट था, इसका प्रमाण सन १८७८ में 'भारत मित्र' इसके अलावा १८७९ में 'सार सुधानिधि' और १८८० में 'उचित वक्ता' के पुराने पन्नों पर देखा जा सकता है। भारत में हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में हिंदी भाषा का अखबार उदंत मार्तंड ३० में १८२६ को शुरू किया गया इस दिन को हिंदी पत्रकारिता दिवस के रूप में भी मनाया जाता है क्योंकि इसने हिंदी भाषा में पत्रकारिता की शुरुआत को चिन्हित किया था। आज हम देखते हैं की हिंदी पत्रकारिता ने अंग्रेजी पत्रकारिता के दबदबे को खत्म कर दिया है। पहले देश-विदेश में अंग्रेजी पत्रकारिता का दबदबा था लेकिन आज हिंदी भाषा का झंडा चारों दिशाओं में लहरा रहा है ३० में को हिंदी पत्रकारिता दिवस के रूप में मनाया भी जाता है। भारत में आधुनिक ढंग की पत्रकारिता का जन्म १८वीं शताब्दी के चतुर्थ चरण में कोलकाता मुंबई और मद्रास में हुआ। १७८० में प्रकाशित ही १७८० ईस्वी में कोलकाता से निकलने वाला है 'हीकी गैजेट' कुछ समय बाद 'कोलकाता गजट' हो गया।

भारत में मीडिया का विकास हमें तीन चरणों में होता हुआ दिखाई देता है। पहले चरण की नई १९वीं साड़ी में उसे वक्त पड़ी जब औपनिवेशिक आधुनिकता के संपर्क और औपनिवेशिक हुकूमत के खिलाफ असंतोष की अंतर्विरोधी छाया में हमारे सार्वजनिक जीवन की रूपरेखा तैयार हो रही थी। इस प्रक्रिया के तहत मीडिया लगभग दो ध्रुवों में बंट गया। उसका पहला ध्रुव औपनिवेशिक शासन का समर्थन करता था और दूसरा ध्रुव स्वतंत्रता का झंडा बुलंद करने वालों का। राष्ट्रवाद बनाम उपनिवेशवाद का यह दौर १९४७ तक चलता

रहा इस दरम्यान अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ भारतीय भाषाओं में भी पत्र पत्रिकाओं के प्रकाशन की समृद्ध परंपरा पड़ी। इसके साथ ही साथ अंग्रेजों ने अपने नियंत्रण में रेडियो प्रसारण की शुरुआत की। दूसरे चरण ने आजादी मिलने के साथ मीडिया के प्रसार और गुणवत्ता को जबरदस्त बढ़ोतरी दिलवाई। इसी दौर में लगभग टीवी का आगमन हुआ और मुद्रित मीडिया मुख्यत: निजी क्षेत्र के हाथों में और रेडियो टीवी की लगाम सरकार के हाथों में चली गई।

३.३ हिंदी पत्रकारिता के स्वाधीनता पूर्व संपादक

१) पंडित जुगल किशोर शुक्ल:

पंडित जुगल किशोर शुक्ल कानपुर के रहने वाले थे। इन्होंने 'उदंत मार्तंड' (३० मई १८२६) के संपादक और प्रकाशक के रूप में अपनी भूमिका निभाई। पेशे से पंडित जी अधिवक्ता थे। उस समय भारत की राजधानी कोलकाता हुआ करती थी इसी कारण उन्होंने अपने इस कार्य को अंजाम देने के लिए वहां चले गए। वहां रहकर उन्होंने अपने पत्र के माध्यम से हिंदुस्तानियों के हित के लिए आवाज़ उठाने का संकल्प किया और इसी संकल्प के तहत उदंत मार्तण्ड की शुरुआत की। पंडित जी द्वारा निकाला गया हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में पहले समाचार पत्र को अपनी आर्थिक तंगी के कारण १९ दिसंबर १८२६ को ही बंद करना पड़ा। यह समाचार पत्र कोलकाता से प्रकाशित होता था और हिंदी भाषी प्रदेशों तक पहुंचने में डाक टिकट का खर्च अधिक लग जाता था। इसके अलावा ब्रिटिश सरकार द्वारा डाक खर्च पर रियायत की अनुमति न मिलने के कारण पंडित जी इस समाचार पत्र को अधिक दिनों तक चल नहीं पाए। इस पत्र को बंद करने के अंतिम अंक में पंडित जी ने एक नोट छापा-

"आज दिवस लौं उग चुक्यौ मार्तंड उद्धन्त ।

अस्ताचल को जात है दिनकर दिन अब अंत ।।"

२) राजा राममोहन राय:

राजा राममोहन राय जी ने 'बंगदूत' समाचार पत्र का संपादन किया। इस साप्ताहिक पत्र के प्रथम वर्ष के संपादक नील रतन हालदार जी थे। यह समाचार पत्र प्रति रविवार को 'हिंदू हेरल्ड' प्रेस से प्रकाशित होता था। इस समाचार पत्र का पहला अंक १० मई १८२९ को निकाला गया था। यह समाचार पत्र भी कोलकाता से प्रकाशित होता था। यह हिंदी के अलावा बांग्ला, उर्दू और बनारसी में भी छपने वाली पत्रिका थी। अंग्रेज़ी में इसका संस्करण 'हिंदू हेराल्ड' के नाम से छपता था। राजा राममोहन राय जी ३० जुलाई से इस समाचार पत्र से अलग हो गए इसलिए बंगदूत की यात्रा ३० जुलाई को समाप्त हो गई। कुल मिलाकर बंगदूत १०-१२ संख्याओं तक ही सीमित रहा।

३) गोविंद नारायण थत्ते:

बनारस अखबार का प्रकाशन जनवरी १८४५ में हुआ। इस समाचार पत्र के संपादक गोविंद नारायण थत्ते जी थे, इन्होंने यह समाचार पत्र का संपादन उत्तर प्रदेश से किया। राजा

शिवप्रसाद सितारे हिंद जी ने 'बनारस अखबार' के संचालक के रूप में अपनी भूमिका निभाई। हिंदी प्रदेश के प्रकाशित होने वाले पत्रों में बनारस अखबार का पहला नाम आता है। इसके संपादक गोविंद रघुनाथ जी मराठी भाषी थे और वे हिंदी वैसे ही जानते थे जैसी बनारस में रहने वाले अन्य भाषाभाषी लोग जानते थे। इसके बावजूद अगर समाचार पत्र में कोई गड़बड़ी हो जाया करती थी तो उसका पूरा दायित्व अखबार के मालिक शिवप्रसाद सितारे हिंद अपने ऊपर ले लिया करते थे। भाषा को लेकर यदि पत्र में कोई प्रयोग किया जाता है तो उसकी पूरी जिम्मेदारी शिवप्रसाद जी अपने ऊपर लिया करते थे। संपादक थत्ते जी पर यह आरोप लगाना कि उन्होंने जानबूझकर भाषा को कुरूप किया यह सरासर ग़लत होगा।

४) लाला सदासुखलाल:

समाचार पत्र 'बुद्धि प्रकाश' का संपादन लाला सदासुखलाल जी ने किया। यह समाचार पत्र १८५२ में इन्होंने आगरा से निकालना शुरू किया। उनके ही नाम से एक और प्रसिद्ध व्यक्ति हुए उनका नाम मुंशी सदासुखलाल 'नियाज' था। कई बार इन दोनों नाम में संशय हो जाया करता है कि इस समाचार पत्र के असली संपादक कौन हैं निराकरण के लिए हम यह जानकारी रख सकते हैं कि मुंशी सदासुखलाल 'नियाज' जी १७९३ में अंग्रेज कंपनी के अधीन चुनार ईस्ट में कार्यरत थे। और वे १८२४ में परलोकवासी हुए। 'बुद्धि प्रकाश' के संपादक लाला सदासुखलाल जी के भाषा पर रामचंद्र शुक्ल जी का कथन है कि- "वास्तव में उनकी भाषा के जो नमूने हमें मिलते हैं उनमें हम भी उनकी भाषा अच्छी ही कह सकते हैं"।"

५) राजा लक्ष्मण सिंह:

राजा लक्ष्मण सिंह का नाम उनके अनुवाद रचना शकुंतला और मेघदूत से अमर है। शाकुंतल की भूमिका से पता चलता है कि जब वे १८६१ में इटावा में डिप्टी कलेक्टर थे तब उन्होंने इसका अनुवाद किया था। राजा साहब ने कदाचित पहले 'अभिज्ञान शाकुंतल' और उसके बाद 'मेघदूत' का अनुवाद किया। उनके लेखन से तो नहीं पता चलता है कि उन्होंने कभी किसी समाचार पत्र का प्रकाशन किया होगा लेकिन तासी के आधार पर पता चलता है कि वह 'प्रजाहितैषी' नामक पत्र के जन्मदाता थे। यह समाचार पत्र उन्होंने १८५५ में निकला था। यह उन दिनों की बात है जब कोई भी सरकारी कर्मचारियों को पत्र प्रकाशन का निषेध था। हिंदी साहित्य के इतिहास में इस पत्र का प्रकाशन १८६१ इंगित है। कुछ हद तक संभव है कि उन्होंने यह पत्र १८५५ में निकला हो लेकिन १८५७ के विद्रोह के बाद कुछ समय के लिए बंद हो गया हो और फिर से १८६१ में इसे निकाला गया हो।

६) श्यामसुंदर सेन:

१८५४ में कोलकाता से हिंदी और बांग्ला में एक बंगाली सज्जन जिनका नाम श्याम सुंदर सेन था उन्होंने 'समाचार सुधावर्षण' नामक एक दैनिक पत्र निकाला। इन्हें कई बार अपने निर्भीकता एवं प्रगतिशीलता के कारण अंग्रेजी सरकार का कोपभाजन भी बनना पड़ा। समाचार सुधावर्षण द्विभाषीय समाचार पत्र था यह हिंदी के अलावा बांग्ला में भी छपता था।

७) पं. केशवराम भट्ट:

कोलकाता के मानिकतल्ला स्ट्रीट से इन्होंन 'बिहारबंधु' नामक समाचार पत्र निकाला। यह पत्र अपने शुरुआती समय में बंगाल से प्रकाशित होता था, लेकिन कालांतर में कई लोगों को लगता था कि यह पत्र पटना से निकलता है। यह समाचार पत्र राज्य का पहला साप्ताहिक पत्र है। १८७२ में निकले इस पत्र का मुद्रण पुरण प्रकाश प्रेस कोलकाता से होता था। पत्र के संपादक केशव राम भट्ट बिहार के ही रहने वाले थे।

८) पंडित धर्मनारायण:

सन १८४९ में इंदौर से प्रकाशित होने वाला पहला समाचार पत्र 'मालवा अखबार' के संपादक के रूप में जाने जाते हैं। मध्य प्रदेश का पहला साप्ताहिक और भारत का तीसरा साप्ताहिक पत्र के रूप में इसको मान्यता मिली है। पंडित धर्म नारायण ने इसके प्रकाशन का एक तरह से जिम्मेदारी ली। काफी दिनों तक इन्होंने इसके संपादन का कार्य संभाला। तत्पश्चात पंडित प्रेम नारायण इसके संपादक हुए। इस समाचार पत्र की एक बहुत बड़ी खासियत थी कि एक ही पृष्ठ पर दो भाषाएं उर्दू और हिंदी में खबरें प्रकाशित की जाती थी।

९) भारतेंदु हरिश्चंद्र:

भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म १८५० में होता है और इन्होंने १५ अगस्त १८६७ को वाराणसी में एक समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू किया जिसका नाम कविवचन सुधा रखा। भारतेंदु जी द्वारा किया गया यह कार्य एक क्रांतिकारी घटना के रूप में जानी जाती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने समाचार पत्र के अलावा भारतीय साहित्य की जीवन भर अनवरत सेवा करते रहे। उन्होंने लगभग साहित्य की हर विधा में अपना योगदान दिया विशेषत: नाटक विधा में उनके योगदान को भुलाया नही जा सकता है |

१०) बालकृष्ण भट्ट:

७ सितंबर १८७७ को बालकृष्ण भट्ट द्वारा एक मासिक समाचार पत्र निकाला गया जिसका नाम 'हिंदी प्रदीप' था। इस समाचार पत्र में कुल १६ पृष्ठ हुआ करते थे। इसमें लेखो के अतिरिक्त नाटक वगैरा भी प्रकाशित होते थे। आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद यह पत्र लगभग ३५ वर्षों तक निरंतर चलता रहा। बालकृष्ण भट्ट द्वारा संपादित इस समाचार पत्र को पत्रकारिता के नजरिए से हिंदी साहित्य के इतिहास में क्रांतिकारी घटना के रूप में जानी जाती है। राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में भारतेंदु द्वारा संपादित कवि वचन सुधा के बाद हिंदी प्रदीप का ही स्थान आता है। सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं पर आज़ादी से अपने विचार छप पाने के कारण यह पत्र अत्यंत महत्वपूर्ण घोषित हुआ।

११) बनारसीदास चतुर्वेदी:

सन १९२८ में कोलकाता से प्रकाशित होने वाला समाचार पत्र 'विशाल भारत' के संपादक की भूमिका बनारसी राज चतुर्वेदी ने निभाई। बनारसी दास चतुर्वेदी इस समाचार पत्र के सबसे पहले संपादक के रूप में कार्य किया और उन्होंने सन १९२८ से १९३७ तक अपने

इस कार्य से समाचार पत्र का मान बढ़ाया। बनारसीदास चतुर्वेदी का यह समाचार पत्र 'सरस्वती पत्रिका' के बाद सबसे अधिक ख्याति प्राप्त करने वाला समाचार पत्र रहा।

१२) मदन मोहन मालवीय:

मदन मोहन मालवीय जी का पत्रकारिता के क्षेत्र में उनका उद्देश्य हमेशा राष्ट्र के स्वतंत्रता को लेकर ही रहा। वे जीवन भर इसके लिए प्रयास करते रहे। उन्होंने १९०७ के बसंत पंचमी के दिन 'अभ्युदय' नामक समाचार पत्र की शुरुआत की। मदन मोहन मालवीय जी ने अभ्युदय समाचार पत्र के लिए जिस प्रकार की संपादकीय नीति गठित की उसके मूल में स्वराज ही था। इस समाचार पत्र में कई क्रांतिकारी विशेषांक को प्रकाशित किया गया। इनमें 'भगत सिंह अंक', 'सुभाष चंद्र बोस अंक' जैसे अंक समाविष्ट किए गए हैं। मालवीय जी ने संपादक के रूप में कृष्णकांत मालवीय जी को नियुक्त किया था। किंतु अधिकतर कार्य मालवीय जी के ही जिम्मे था। पंडित मदन मोहन मालवीय ने मध्य प्रदेश के कालाकांकर के देशभक्ति राजा रामपाल सिंह के निवेदन पर १८८७ में स्थापित हिंदी और अंग्रेजी समाचार पत्र 'हिंदुस्तान' का संपादन करके लगभग दो ढाई साल तक भारतीय जनता को जगाने का कार्य किया।

१३) गणेश शंकर विद्यार्थी:

गणेश शंकर विद्यार्थी का अग्रणी पत्रकारों और स्वतंत्रता सेनानियों में नाम गिना जाता है। इनका जन्म १८९० में इलाहाबाद जिले में हुआ। वे क्रांतिकारी हिंदी समाचार पत्र 'प्रताप' के संस्थापक और संपादक बने। सन १९१३ में गणेश शंकर विद्यार्थी जी ने ऐतिहासिक साप्ताहिक पत्रिका 'प्रताप' का प्रकाशन आरंभ किया। इस समाचार पत्र को उन्होंने अपने मित्र शिवनारायण मिश्र और नारायण प्रसाद अरोड़ा की मदद से निकला। प्रताप के माध्यम से उत्तर प्रदेश के कानपुर ज़िले से निकलने वाले 'प्रताप' के माध्यम से गणेश शंकर विद्यार्थी ने उत्तर भारत में आजादी की लड़ाई में जान फूंकने का कार्य किया।

१४) माखनलाल चतुर्वेदी:

पत्रकारिता के क्षेत्र में पितृ पुरुष माधवराव सप्रे की प्रेरणा से १७ जनवरी १९२० के दिन जबलपुर से कर्मवीर नामक समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू हुआ इसके संपादक पद का निर्वाह माखनलाल चतुर्वेदी जी ने किया। पंडित माखनलाल चतुर्वेदी के संपादन में निकले इस समाचार पत्र में ऐसा महसूस किया जा सकता है कि कैसे उन्होंने अपनी संपूर्ण जीवन यात्रा आत्मसमर्पण के खिलाफ लड़ने वाले संपादक की यात्रा की है। माखनलाल चतुर्वेदी जी हमेशा असंतोष और मानवीय पीड़ाबोध को अपनी पत्रकारिता में जगह दी। माखनलाल चतुर्वेदी जी आम जनमानस के बीच से निकले हुए पत्रकार थे। उनका कहना था कि एक पत्रकार को हमेशा किसी भी कार्य के परिणाम पर नजरें लगी रहनी चाहिए। इसके अलावा माखनलाल चतुर्वेदी जी ने देश में एक पत्रकारिता विद्यापीठ खोलने का सपना देखा था। इसके अलावा माखनलाल चतुर्वेदी ने प्रभा और प्रताप का भी संपादन किया। पंडित माखनलाल चतुर्वेदी ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों में गिने जाते हैं, जिन्होंने अपनी पूरी प्रतिभा को राष्ट्रपति आजादी के लिए न्योछावर कर दिया हो। इन्होंने पत्रकारिता और साहित्य दोनों को आजादी की लड़ाई में, उसके आंदोलन में हथियार बनाया। वैसे देखा जाए तो

माखनलाल चतुर्वेदी का मुख्य क्षेत्र साहित्य ही रहा है लेकिन एक लेख प्रतियोगिता ने उन्हें पत्रकारिता की ओर आकर्षित कर लिया। वे मध्य प्रदेश के महान हिंदी प्रेमी स्वतंत्रता सेनानी पंडित माधवराव सप्रे के समाचार पत्र हिंदी केसरी का प्रकाशन कर रहे थे। उसे समय हिंदी केसरी ने एक लेख प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसका विषय था 'राष्ट्रीय आंदोलन और बहिष्कार। उसे लेकर प्रतियोगिता में माखनलाल चतुर्वेदी ने भाग लिया और प्रथम स्थान प्राप्त किया। उसे आलेख को पढ़कर पंडित माधवराव सप्रे माखनलाल चतुर्वेदी से मिलने के लिए खंडवा तक पहुंच गए। उन्होंने माखनलाल चतुर्वेदी को लिखते रहने की प्रेरणा देते रहे।

१५) पद्मसिंह शर्मा:

पंडित पद्म सिंह शर्मा का जन्म १८७६ ई दिन रविवार को बिजनौर के चांदपुर रेलवे स्टेशन से १२ किलोमीटर उत्तर की ओर नायक नंगला नमक छोटे से गांव में हुआ । इनके पिता का नाम श्री उमराव सिंह था। वे परोपकारी प्रतिष्ठित प्रतिभाशाली पुरुष थे और गांव के मुखिया भी। जमींदारी उनके परिवार में पहले से थी और उनके घर की स्थिति आर्थिक रूप से सुखमय थी। इनके पिता आर्य समाज विचारधारा के थे पिता की श्रद्धा अधिकतर स्वामी दयानंद सरस्वती के प्रति थी। यही श्रद्धा शर्मा जी को उनकी विशेष रुचि संस्कृत की और रही। यही कारण वे स्वतंत्र रूप से अनेक स्थानों से संस्कृत का अध्ययन किया। बचपन से ही इन्हें इनके घर अध्यापन का कार्य अध्यापकों द्वारा कराया जाता रहा। यह सारा कुछ इनके १० और ११ वर्ष की अवस्था में कराया गया। शर्मा जी का संपर्क १९०९ में जब ज्वालापुर महाविद्यालय से हुआ तो उन्होंने वहां से 'भारतोदय' नामक समाचार पत्र का संपादन कार्य किया। इस कार्य को वह बखूबी निभाते चले गए लेकिन जब १९१७ में इनके पिता की मृत्यु हुई, तब वह महाविद्यालय छोड़कर घर आ गए। इस प्रकार कुल मिलाकर यह महाविद्यालय को अपनी ९ वर्ष की सेवा देते रहे।

१६) बाबूराव विष्णु पराड़कर:

५ सितंबर १९२० को वाराणसी से 'आज' समाचार पत्र की स्थापना शिव प्रसाद गुप्त ने की थी। श्री प्रकाश इसके मुख्य संपादक के रूप में कार्य किये। इनके बाद प्रसिद्ध पत्रकार बाबूराव विष्णु पराडकर जी ने इसके संपादक के रूप में अपनी भूमिका निभाई। इनका जन्म १६ नवंबर १८८३ और इनका निधन १२ जनवरी १९५५ है। बाबूराव विष्णु पराड़कर की हिंदी के जाने-माने पत्रकार, साहित्यकार एवं हिंदी सेवी के रूप में कार्य किया। भारत की आजादी के आंदोलन में इन्होंने इस समाचार पत्र को एक तलवार की तरह उपयोग किया। उनकी पत्रकारिता का मुख्य विषय क्रांतिकारी ही था। इन्होंने एक मिशन के तौर पर पत्रकारिता का कार्य किया। बाबूराव विष्णु पराड़कर जी को आधुनिक हिंदी पत्रकारिता का जनक भी कहा जाता है।बाबूराव विष्णु पराड़कर जी सन १९०६ में पत्रकारिता जगत में प्रवेश किया और अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक इसी कार्य में लग रहे। इस क्षेत्र की लगभग सभी विधाओं के बारे में उनकी जानकारी और विश्लेषण बहुत ही गहराई तक था इसी कारण इन्हें पत्रकारिता का भीष्म पितामह भी कहा जाता है। पत्रकारिता के क्षेत्र के साथ-साथ ये एक महान क्रांतिकारी भी थे। अंग्रेजी शासन को अपने लेख द्वारा खुली चुनौती देने का कार्य करते थे साथ ही साथ नए पत्रकारों और स्वाधीनता सेनानियों को प्रेरित करते

रहते थे उनके लेखन का महत्वपूर्ण स्थान देश के राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक नवजागरण से संबंधित रहा है। सन १९२५ में वृंदावन में हिंदी साहित्य सम्मेलन के पहले सत्र की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने एक भविष्यवाणी की थी जो आज भी प्रासंगिक और प्रत्यक्ष हो रही है उन्होंने कहा था कि आजादी के बाद समाचार पत्रों में विज्ञापन और पूंजी का प्रभाव बढ़ेगा और इस क्षेत्र में धन का ही बोलबाला रहेगा। पराड़कर जी ने यह सारा कुछ दूर दृष्टि से देख लिया था। आज हमारे सामने यह देखने में आता है कि किस तरह सभी भाषाओं के पात्रों का स्तर गिरता चला जा रहा है इन सब में हिंदी जगत की दुर्दशा तो सबसे खराब है। पराड़कर जी ने 'बंगवासी', 'हितवार्ता', 'भारत मित्र', 'आज', 'कमला' और 'संसार' का संपादन करके देश साहित्य और संस्कृति की बड़ी सेवा की है।

१७) पूर्णचंद्र गुप्त:

पूर्णचंद्र गुप्त का जन्म २ जनवरी १९१२ और इनका निधन १६ सितंबर १९८६ को हुआ। इन्होंने हिंदी भाषा के समाचार पत्र 'दैनिक जागरण' की स्थापना की। दैनिक जागरण भारत का सबसे लोकप्रिय समाचार पत्र है। और इस उपलब्ध के कारण इन्हें २०१२ के भारतीय डाक टिकट पर भी स्थान दिया गया। गुप्ता जी का जन्म उत्तर प्रदेश के कालपी में हुआ और उनकी शिक्षा दीक्षा भी कालपी और वाराणसी में हुआ। सन १९४० में इन्होंने एक राष्ट्रवादी साप्ताहिक समाचार पत्र की स्वतंत्र रूप से शुरुआत की लेकिन अंग्रेजी शासन ने इस समाचार पत्र को मानता नहीं दी। इस कारण इसे उन्हें झांसी ले जाना पड़ा। इस प्रकार वहां से सन १९४२ में दैनिक समाचार पत्र जागरण की शुरुआत की। सन १९४७ में इसी का नाम बदलकर दैनिक जागरण किया।

१८) महात्मा गांधी:

महात्मा गांधी ने सन १९३३ में अपने विचारों को व्यक्त करने और सत्याग्रह के बारे में लोगों को बताने के लिए दो पत्रिकाओं का उपयोग किया। पहली पत्रिका यंगइंडिया दूसरी नवजीवन और यह अंग्रेजी हिंदी और गुजराती में क्रमशः हरिजन, हरिजन सेवक, हरिजन बंधु नाम से प्रकाशित होती थी। इसके अलावा भी महात्मा गांधी ने लगभग १९०३ और १९०४ के आसपास इंडियन ओपिनियन नामक समाचार पत्र की स्थापना की यह उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में श्वेत शासन की नस्लीय असहिष्णुता के ख़िलाफ़ भारतीयों की भावनाओं को एक प्रभावी तरीके से व्यक्त करने के लिए इस अख़बार की शुरुआत की थी और इसका अस्तित्व लगभग १० सालों तक रहा। दक्षिण अफ्रीका में स्थापित समाचार पत्र इंडियन ओपिनियन हिंदी में भी निकलता था। गांधी जी के प्रेस संबंधी विचार आज सभी पत्रकारों के लिए बेहद महत्वपूर्ण साबित हो रहे हैं। वे रिपोर्टर और फोटोग्राफरों को छोड़कर लगभग प्रत्येक व्यक्ति की समानता पर विश्वास रखने वाले व्यक्ति थे। उनका कहना था की प्रेस की स्वतंत्रता एक मूल्यवान विशेषता अधिकार है जिसका त्याग कोई देश नहीं कर सकता। एक पत्रकारिता का वास्तविक कार्य क्या होता है या गांधी के विचारों को पढ़कर पता चलता है उनका मानना था कि यह कार्य जनमानस को शिक्षित करना है ना कि जनमानस को आवश्यक अनावश्यक विचार भंडार बनाना १८ अगस्त १९४६ के हरिजन पत्र में उन्होंने लिखा था कि पत्रकारिता मेरा प्रोफेशन नहीं है और वह अपने विचारों को प्रसारित करने के लिए इसका उपयोग करते हैं।

३.४ सारांश

१८२६ ई से हिंदी पत्रकारिता का युग शुरू होता है १८७३ ईस्वी में भारतेंदु द्वारा निकाली गई हरिश्चंद्र मैगजीन यह १ वर्ष बाद हरिश्चंद्र चंद्रिका नाम से जानी गई। वैसे तो भारतेंदु जी का कवि वचन सुधा पत्र १८६७ में ही आ गया था और उसे पत्र ने पत्रकारिता के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया लेकिन भाषा शैली का परावर्तन १८७३ ईस्वी में हरिश्चंद्र मैगजीन से ही हुआ इसके बीच अधिकांश समाचार पत्रों में इसका प्रयोग होता रहा। इन समाचार पत्रों में कुछ मासिक कुछ साप्ताहिक पत्र। अगर दैनिक पत्र की बात करें तो सिर्फ समाचार सुधाकर्षण था जो दो भाषाओं में कोलकाता से प्रकाशित होता था बांग्ला और हिंदी। यह दैनिक समाचार पत्र लगभग १८७१ तक चलता रहा। इनमें से अधिकांश समाचार पत्रों का प्रकाशन आगरा से ही होता था क्योंकि वही उन दिनों एक बड़ा शिक्षा केंद्र था। यह सारे समाचार पत्र लगभग विद्यार्थी समाज की आवश्यकताओं को पूर्ति करने वाले थे। कुछ समाचार पत्र ब्रह्मसमाज, सनातन धर्म और मिशनरियों के प्रचार कार्य से संलग्न थे। अधिकतर समाचार पत्र द्विभाषीय थे जो हिंदी और उर्दू में प्रकाशित होते थे। और तो कुछ पंचभाषिय तक थे। हिंदी प्रदेशों में शुरुआती समय में 'बनारस अखबार' जो १९४५ में प्रकाशित हुआ काफी पकड़ बना चुका था और लोगों पर इसका अच्छा प्रभाव भी था। बनारस अखबार समाचार पत्र की भाषा नीति के विरोध में १८५० में तारा मोहन मित्र ने काशी से साप्ताहिक 'सुधाकर' और १८५५ में राजा लक्ष्मण सिंह ने आगरा से 'प्रजा हितैषी' समाचार पत्र का संपादन शुरू किया। भाषा शैली के क्षेत्र में भी विविध समाचार पत्रों का तालमेल नहीं था। राजा शिवप्रसाद का बनारस अखबार अपनी उर्दू भाषा शैली को आगे बढ़ा रहा था तो वहीं दूसरे पत्र पंडिताऊ तत्सम प्रधान शैली की ओर आकर्षित थे। २०वीं सदी की पत्रकारिता तुलनात्मक रूप से हमारे समीप दिखाई देती है। और उसमें से कुछ समाचार पत्र पिछले युग की पत्रकारिता का ही स्वरूप लिए हुए था। १९वीं साड़ी के पत्रकारों को भाषा शैली के क्षेत्र में काफी सामना करना पड़ता है क्योंकि उन्हें एक और अंग्रेजी और दूसरी ओर उर्दू के पात्रों के सामने हमने अपनी वस्तु रखनी पड़ती है। हिंदी अपने आप को संवार रही थी, और वह बहुत छोटी थी। धीरे-धीरे समय बदला और हम हिंदी पत्रों को साहित्य और राजनीति के क्षेत्र में नेतृत्व करते देखे हैं। लगभग इसी समय देश में तरह-तरह के आंदोलन सुधार वगैरा शुरू हो चुके थे राष्ट्रीय चेतना अपने पूरे वेग से आगे बढ़ रही थी। इन सभी के बीच में एक घटना यह भी याद करने योग्य है। हिंदी अपने आप को स्टैंडर्ड बना रही थी। और धीरे-धीरे हिंदी में अपना स्थान प्राप्त किया और समाचार पत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करती चली गई |

३.५ लघुत्तरीय प्रश्न

प्रश्न १. हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत किस समाचार पत्र से मानी जाती है?

उत्तर : उदंत मार्तंड

प्रश्न २. पंडित जुगल किशोर का समाचार पत्र किस जगह से प्रकाशित होता था?

उत्तर : कोलकाता

प्रश्न ३. बनारस अखबार के संपादक का नाम क्या है?

उत्तर : गोविंद नारायण थते

प्रश्न ४. आधुनिक हिंदी पत्रकारिता का जनक किसे कहा जाता है?

उत्तर : बाबूराव विष्णु पराड़कर

३.६ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

प्रश्न १. हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप एवं विकास की चर्चा कीजिए।

प्रश्न २. हिंदी पत्रकारिता में संपादकों की भूमिका स्पष्ट कीजिए ।

प्रश्न ३. हिंदी पत्रकारिता में बाबूराव विष्णु पराड़कर के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ४. हिंदी पत्रकारिता में भारतीय राजनीतिक वातावरण की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न ५. स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

३.७ संदर्भ ग्रन्थ

१. समाचार पत्रों का इतिहास – अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी

२. हिंदी पत्रकारिता का इतिहास - जगदीशप्रसाद वाजपेयी

३. हिंदी पत्रकारिता - कृष्णबिहारी मिश्र

*****

४

संपादन : अवधारणा, उद्देश्य तथा सामान्य सिद्धांत

इकाई की रूपरेखा

४.० उद्देश्य

४.१ प्रस्तावना

४.२ संपादन की अवधारणा

४.३ संपादन का उद्देश्य

४.४ संपादन के सामान्य सिद्धांत

४.५ सारांश

४.६ दीर्घोत्तरी प्रश्न

४.७ लघुत्तरी प्रश्न

४.८ संदर्भ ग्रंथ

४.० उद्देश्य

सम्पादन का सीधा सादा अर्थ है- 'काम पूरा और ठीक तरह से करना' और 'पुस्तक या सामयिक पत्र को क्रमानुसार हर तरह से ठीक करके उसे प्रकाशित करना"। सम्पादन वस्तुतः एक कला है जो समाज के व्यापक वर्ग की अदम्य ज्ञान पिपासा को शांत करने का प्रभावकारी माध्यम है। अतः वर्तमान काल में जनमानस के मस्तिष्क को प्रभावित करने, उसे दिशा देने, जनरुचि का परिष्कार करने की दिशा में एक कुशल सम्पादन योजना का अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान है। कुशल सम्पादन विचारों को स्पष्टता और प्रभावशीलता के साथ प्रस्तुत करने में सहायक है। यह न केवल लेखक की विचारशीलता को बढ़ाता है, बल्कि पाठकों को भी उसके संदेश को समझने में मदद करता है। यह एक ऐसा माध्यम है जो लेखक और पाठकों के बीच एक संवाद की स्थापना करता है और लेखन को उच्चतम स्तर पर पहुंचाने में सहायक होता है। अतः इस इकाई का मुख्य उद्देश्य है :

१) विद्यार्थियों को सम्पादन की अवधारणा और उद्देश्य बताना।

२) विद्यार्थियों को सम्पादन के सामान्य सिद्धांत समझाना।

३) विद्यार्थियों को सम्पादन कला का महत्त्व बताना।

४.१ प्रस्तावना

एक समय था जब पत्रकारिता का लक्ष्य राष्ट्र निर्माण एवं समाज सुधार करना था, लेकिन जब से पत्रकारिता एक व्यवसाय या उद्योग के रूप में स्वीकार किया गया, तब से सम्पादन

और सम्पादक का दायित्व अलग से अपनी पहचान बनाने लगा। सुविधा की दृष्टि से सम्पादन का अर्थ स्पष्ट करना चाहें तो यही कहा जा सकता है कि किसी समाचार, रचना, कृति अथवा आलेख का त्रुटिरहित, सुचारू एवं कलात्मक रूप में मुद्रित करके प्रस्तुत करना सम्पादन की प्रथम प्रक्रिया है और दूसरी ओर उसके कला-व्यंजक प्रस्तुतीकरण को मुद्रित परिणाम देना ही सम्पादन है। किसी भी समाचार पत्र-पत्रिका में विभिन्न समाचार स्रोतों से समाचार एकत्रित कर उसे पाठकों के लिए पठनीय बनाना सम्पादन है। सम्पादन के अन्तर्गत किसी भी मुद्रित सामग्री के प्रस्तुत रूप का चयन, परीक्षण एवं नियंत्रण किया जाता है और इस प्रकार सम्पादन का अर्थ काम ठीक तरह से, पूरी तरह से प्रतिपादित करना ही है। संपादन से तात्पर्य किसी समाचार पत्र या किसी पत्रिका या पुस्तक में छपने वाली सामग्री को छपने से पहले उसकी जाँच पड़ताल करना एवं परखना, उसकी प्रमाणिकता की पुष्टि करना, उसमें से अनावश्यक बातों को निकालना, त्रुटियों को दूर करना और सभी तथ्यों की जाँच करके सामग्री को प्रकाशन के लिये भेजना ताकि पाठकों तक सही जानकारी पहुँचे। कुल मिलाकर उसे जिस रूप में प्रस्तुत करना हो, उसे अंतिम रूप देना ही सम्पादन कहलाता है।

सम्पादन वस्तुतः एक कला है जो समाज के व्यापक वर्ग की अदम्य ज्ञान पिपासा को शांत करने का प्रभावकारी माध्यम है। वर्तमान काल में जनमानस के मस्तिष्क को प्रभावित करने, उसे दिशा देने, जनरुचि का परिष्कार करने की दिशा में एक कुशल सम्पादन योजना का अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान है।

सम्पादन एक विशेष कौशल है जो लेखक के ज्ञान, विचारों की गंभीरता, स्पष्टता, वाकपटुता, प्रवाहमय भाषा शैली आदि को प्रकट करता है। सम्पादन का प्रमुख उद्देश्य ही है लेख के सामर्थ्य, प्रभावोत्पादकता, सहजता, स्पष्टता और गुणवत्ता को बढ़ाना। एक विशुद्ध, संपन्न सम्पादन प्रक्रिया सम्पादक के विचारों को सफलतापूर्वक स्थापित करने और प्रस्तुतियों को पाठकों के साथ साझा करने के लिए एक सशक्त माध्यम होती है। उत्तम सम्पादन, उन्हें लेखक के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाने, जागरूक बनाने के साथ ही समर्थ और संवेदनशील संवाद का अवसर प्रदान करता है। अतः सम्पादन का उद्देश्य न केवल लेखक के विचारों को बेहतर ढंग से प्रस्तुत करना है, बल्कि उसकी बात को पाठकों तक सही और प्रभावशाली ढंग से पहुंचाना है। एक अच्छे सम्पादन के बिना, एक लेख अपना उद्देश्य नहीं प्राप्त कर सकता है और लेखक की मेहनत व्यर्थ हो जाती है।

४.२ संपादन की अवधारणा

सम्पादन, सत्यान्वेषण है, विश्वसनीय तथ्यों का शुद्ध सटीक प्रकाशन है। सम्पादन की अवधारणा अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह विभिन्न विषयों के लेख को उसके उद्देश्य के अनुसार संशोधित करता है। सम्पादन लेखक के सोच-विचारों को ध्यान में रखते हुए उन्हें बेहतरीन तरीके से प्रस्तुत करने में मदद करता है। सम्पादन की प्रक्रिया में विभिन्न विषयों के लेख के मुख्य पहलुओं में उसकी भाषा, वाक्य रचना, अर्थ और तार्किक संवाद पर विचार कर उसमें संशोधन किया जाता है। एक योग्य सम्पादक की मौजूदगी में, लेखक का संदेश पाठकों के साथ सही और प्रभावशाली ढंग से साझा होता है।

सम्पादन, लेखक और पाठकों के बीच संवाद का सशक्त माध्यम है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें लेखक अपने द्वारा लिखे गए लेख को सुधारकर उसे संशोधित करता है ताकि उसका संदेश पाठकों तक सही और प्रभावशाली ढंग से पहुंचे। सम्पादन का उद्देश्य लेख के सारांश को स्पष्ट एवं प्रभावी बनाना है।

सम्पादन की प्रक्रिया चार मुख्य चरणों में संरचित होती है। पहला चरण है सम्पादन की प्रस्तावना, जिसमें सम्पादक लेख के प्रमुख विषयों और उसके संरचनात्मक विन्यास को समझता है। दूसरा चरण है पाठ संपादन, जिसमें सम्पादक भाषा, व्याकरण और अर्थ की सुधार करता है। तीसरा चरण है प्रमुख संपादन, जिसमें सम्पादक लेख की संपूर्ण व्यवस्था और भूमिका को मूल्यांकन करता है। अंत में, चौथा चरण है अंतिम संपादन, जिसमें सम्पादक अंतिम संदर्भ, वाक्य रचना और त्रुटियों की जांच करता है। एक उत्कृष्ट सम्पादन की प्रक्रिया लेखक एवं पाठक के बीच संवाद स्थापित करती है और सम्पादक को अधिक संवेदनशील और समर्थ लेखक बनाती है। उनके लेखन की गुणवत्ता को सुनिश्चित करते हुए उन्हें अपने सांदर्भिक और सम्पादकीय उद्देश्य को प्राप्त करने में सहायक होती है।

सम्पादन का अभ्यास और सम्पादकीय मानकों की समझ लेखक के लिए एक अनिवार्य तत्व है जो उनके लेखन को सुधारने और प्रस्तुत करने में सहायक सिद्ध होती है। इसके माध्यम से, वे अपने लेखन स्तर को उच्चतम स्तर पर ले जा सकते हैं और पाठकों को एक उत्कृष्ट और उपयुक्त अनुभव प्रदान कर सकते हैं, इसलिए सम्पादन की अवधारणा लेखकों की रचनाधर्मिता के लिए एक आवश्यक और अविभाज्य अंग है जो उन्हें उनके लेखन की गुणवत्ता और प्रभाव को बढ़ाने में सहायक है।

४.३ संपादन का उद्देश्य

सम्पादन का मुख्य उद्देश्य लेख को सुधारना और संपादित करना होता है ताकि उसका संदेश पाठकों तक सही और प्रभावशाली ढंग से पहुंच सके। इसके साथ ही, यह लेखक की शैली, विचारधारा और व्यक्तित्व को उजागर करने में मदद करता है। सम्पादन के उद्देश्य को निम्नलिखित बिंदुओं में देखा जा सकता है:

१. **संदेश की स्पष्टता:** सम्पादन का प्रमुख उद्देश्य लेख के संदेश को सरल, सहज, स्पष्ट, सारगर्भित और अर्थपूर्ण बनाना है।

२. **भाषा और व्याकरण की सुधार:** सम्पादन का लक्ष्य भाषा, वाक्य रचना और व्याकरण की गलतियों को पहचानकर, उनमें सुधार करके लेख को पाठकों के लिए अधिक आकर्षक और सहज बनाना है।

३. **व्यापकता और प्रासंगिकता का ध्यान:** सम्पादन का उद्देश्य विभिन्न विषयों के लेख की व्यापकता और प्रासंगिकता का ध्यान रखना है।

४. **प्रतिक्रिया का समीक्षण:** सम्पादन का उद्देश्य पाठकों के विचारों और प्रतिक्रियाओं की समीक्षा कर उसमें संशोधन करना है।

५. **पाठकों की रुचि और आकर्षण:** सम्पादन लेख को पाठकों के लिए रुचिकर और आकर्षक बनाता है।

६. **तार्किक संवाद को बढ़ावा:** सम्पादन लेख को तार्किक एवं संवादपूर्ण बनाता है।

७. **उच्चतम स्तर की गुणवत्ता:** सम्पादन लेख की गुणवत्ता को मानक, उच्चतम स्तर पर ले जाता है।

८. **अंश और संरचना का समीक्षण:** यह लेख के अंशों और संरचना को समीक्षा कर उन्हें बेहतर बनाता है।

९. **संगठन का समीक्षण:** सम्पादन संगठन की समीक्षा करके लेख को अधिक संवादपूर्ण बनाता है।

१०. **लेखक के साथ सहयोग:** सम्पादन लेखक के साथ सहयोग करके उन्हें सुझाव देता है और उनकी विचारधारा और लेखन को गहराई से प्रकट करता है।

११. **संदर्भों की समीक्षा:** सम्पादन संदर्भों की समीक्षा करता है और उन्हें सुधारता है।

१२. **अभिव्यक्ति की शुद्धि:** सम्पादन लेख की अभिव्यक्ति को शुद्ध करने में सहायता करता है।

१३. **विचारों का विकास:** यह लेख के विचारों का विकास करता है और उन्हें अधिक प्रभावी बनाता है।

१४. **लेख की नैतिकता:** सम्पादन लेख की नैतिकता को ध्यान में रखता है।

१५. **प्रेरणा और शिक्षा:** सम्पादन पाठकों को प्रेरित करता है और उन्हें शिक्षा देता है।

१६. **साहित्यिक मानकों का पालन:** सम्पादन साहित्यिक मानकों का पालन करता है।

१७. **व्यक्तिगत और सांगठनिक लक्ष्यों का प्राप्त करना:** सम्पादन व्यक्तिगत और सांगठनिक लक्ष्यों को प्राप्त करता है।

१८. **सही और प्रभावी प्रस्तुतिकरण:** सम्पादन लेख को सही और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है।

१९. **लेख के सामर्थ्य और सहजता:** सम्पादन से लेख के सामर्थ्य और सहजता में सुधार होता है, जो पाठकों के लिए लेख को पढ़ने में अधिक रुचिकर बनाता है।

२०. **सांदर्भिक और पेशेवर उद्देश्य प्राप्त करना:** सम्पादन का मुख्य उद्देश्य लेखकों को सांदर्भिक और पेशेवर उद्देश्य प्राप्त कराना है।

२१. **बेहतर लेखक बनाना:** सम्पादन लेखक को उत्कृष्ट रचनाकार, अनुभवी और समझदार बनाता है, जो उन्हें लेखन के क्षेत्र में ऊँचाई प्रदान करता है।

इस प्रकार, सम्पादन का मुख्य उद्देश्य लेख के सामर्थ्य, सहजता, स्पष्टता, गुणवत्ता और प्रभावोत्पादकता को बढ़ाना है। इसके द्वारा, लेखक के विचारों को अधिक गहरा, गंभीर, तर्कपूर्ण और पाठकों के लिए अधिक आकर्षक बनाना है। लेखकों को उनके विचारों को संवादपूर्ण और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने में मदद करना है। यह पाठकों को एक स्पष्ट, संगठित, सारगर्भित और संदर्भित लेख प्रदान करता है। यह लेखक के संदेश को बिलकुल सटीक ढंग से पाठकों तक पहुँचाता है।

४.४ संपादन के सामान्य सिद्धांत

१) सम्पादन की परिभाषा :

'सम्पादन' का अर्थ एक विचार, एक लेख, या किसी अन्य प्रकार की वस्तु को संशोधितकर, सुधारकर पुनः संरचित करना है। 'सम्पादन' एक विशेष कौशल है जो लेखक के ज्ञान, विचारों की गंभीरता, स्पष्टता, वाकपटुता, प्रवाहमयता और भाषा शैली आदि को प्रकट करता है। सम्पादन का प्रमुख उद्देश्य ही है लेख के सामर्थ्य, प्रभावोत्पादकता, सहजता, स्पष्टता और गुणवत्ता को बढ़ाना। इस प्रक्रिया में संपादक, लेखक द्वारा लिखे गए लेख या तैयार किये गए रिपोर्ट या लेखन सामग्री की पड़ताल करता है, ताकि वह पाठकों के समझने के लिए अधिक योग्य, सटीक, स्पष्ट और प्रभावीशाली हो सके। सम्पादन की प्रकिया के दौरान अभिव्यक्ति, व्याकरण की शुद्धता, वाक्य रचना, भाषा की संप्रेषणीयता और अन्य महत्त्वपूर्ण पहलुओं का मूल्यांकन करके उसमें सुधार किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य लेख की गुणवत्ता, प्रभावोत्पादकता, पाठकों के सम्पर्क में सरलता और संदेश की स्पष्टता को बनाए रखना है।

संपादन किसी संदेश या जानकारी को संप्रेषित करने के लिए किसी व्यक्ति या संस्था द्वारा उपयोग की जाने वाली लिखित, दृश्य, श्रव्य या सिनेमाई सामग्री को चुनने तैयार करने और संशोधित करने की प्रक्रिया है।

२) संपादन के सामान्य सिद्धांत :

संपादन के सामान्य सिद्धांत, उन मौलिक नियमों और दिशा-निर्देशों की ओर संकेत करते हैं जो संपादन प्रक्रिया को निर्देशित करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि लिखित सामग्री को उत्तम रूप में प्रस्तुत किया जाय, इसे सटीक, सारगर्भित, सुसंगत, सुपाठ्य और व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध बनाया जाय। संपादन के ये महत्त्वपूर्ण सिद्धांत, लेखकों, संपादकों और पाठकों को दिशा-निर्देश प्रदान करते हैं जो एक उत्कृष्ट और प्रभावी लेखन सामग्री बनाने में सहायक होते हैं। यहाँ संपादन के कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धांत नीचे दिए गए हैं:

१. **संदर्भितता (Relevance):** संपादन का पहला सिद्धांत संदर्भितता है। लिखित सामग्री को संपादित करते समय, लेखक और संपादक को सामग्री के संदर्भ में विचार करना चाहिए, ताकि यह पाठकों के लिए महत्त्वपूर्ण और रुचिकर बने। लिखित सामग्री को लेखक के उद्देश्य और पाठक की आवश्यकताओं के आधार पर प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

२. **स्पष्टता (Clarity):** संपादन में स्पष्टता एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। संपादन के द्वारा लिखित सामग्री को अधिक स्पष्ट और सुसंगत बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। शब्दों का उपयोग, वाक्य संरचना और विचार के प्रस्तुतिकरण में स्पष्टता का महत्त्वपूर्ण किया जाना चाहिए।

३. **स्थिरता या सुसंगति (Consistency):** संपादन में सुसंगति या स्थिरता बनाए रखने के लिए लिखित सामग्री की विषयवस्तु, रूपरेखा, भाषा, शैली आदि की प्रस्तुति में निरंतर बखूबी ध्यान रखा जाना चाहिए।

४. **संक्षिप्तता (Conciseness):** संपादन की लिखित सामग्री को संक्षिप्त और सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया जाना अनिवार्य है। इसका लक्ष्य पाठकों को अधिक अवधारणात्मक और प्रभावी बनाए रखना होना चाहिए।

५. **शुद्धता (Accuracy):** संपादित लिखित सामग्री की शुद्धता, सत्यता और प्रमाणिकता का संरक्षण किया जाना चाहिए। इससे लेखक और पाठकों के बीच विश्वसनीयता का स्तर बना रहता है।

६. **उत्कृष्टता (Excellence):** संपादन का उद्देश्य लिखित सामग्री की गुणवत्ता को उत्कृष्ट बनाना होना चाहिए। यह लेखक के विचारों को सर्वोत्तम रूप से प्रस्तुत करते हुए पाठकों को बौद्धिक स्तर पर सहज, समझदार बनाता है।

७. **संवेदनशीलता (Sensitivity):** संपादन के दौरान, संपादक को लिखित सामग्री के संवेदनशील और विषयसंगत पहलुओं को ध्यान में रखना चाहिए। विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, और नैतिक मुद्दों को समझकर ही लिखित सामग्री को संपादित किया जाना चाहिए।

८. **विशेषता (Specificity):** संपादित लिखित सामग्री को विशिष्ट, समर्थक और प्रमाणिक उदाहरणों के साथ प्रस्तुत करना चाहिए। यह पाठकों को लिखित सामग्री के प्रति ध्यान आकर्षित और उसे समझने में सहायक होना चाहिए।

९. **अभिव्यक्ति (Expression):** संपादित लिखित सामग्री को यथोचित भाषा, शैली और भावात्मकता के साथ प्रस्तुत किया जाना चाहिए। अभिव्यक्ति में संप्रेषणीयता पर सबसे अधिक बल दिया जाना चाहिए।

१०. **समीक्षा (Review):** संपादन की प्रक्रिया में समीक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। समीक्षा के द्वारा अपने द्वारा किए गए कार्य को पुनः जांचा-परखा जाना चाहिए। उसमें आयी अशुद्धियों या त्रुटियों आदि में सुधार अनिवार्य रूप से होना चाहिए।

ये सामान्य सिद्धांत संपादन की प्रक्रिया में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, सामग्री को सजीव और प्रभावी बनाने में सहायक होते हैं, संपादन प्रक्रिया को दिशा देते हैं और उसे समृद्ध बनाते हैं।

३) संपादन के तत्व :

संपादन के तत्व, इसके वे मौलिक सिद्धांत और तकनीक हैं जिसके माध्यम से लिखित सामग्री को संपादित किया जाता है। ये तत्व संपादन प्रक्रिया को निर्देशित करते हैं और उसे अधिक उत्तम बनाने में सहायक होते हैं। इन तत्वों के यथोचित उपयोग से लिखित सामग्री को अधिक रोचक, प्रभावोत्पादक और सुपाठ्य बनाया जा सकता है। संपादन के तत्व निम्नलिखित हैं:-

१. **सामग्री का चयन:** संपादन के प्रारंभिक चरण में, सामग्री का चयन बहुत महत्त्वपूर्ण है। अच्छी सामग्री का चयन करने के लिए, संपादक को लेखक के उद्देश्य, पाठकों की आवश्यकताओं और संदर्भ का विचार करना चाहिए। इसमें लिखित सामग्री की गुणवत्ता, महत्त्वपूर्णता और स्थिरता का मूल्यांकन किया जाता है।

२. **संरचना और व्यवस्था:** लिखित सामग्री को संरचित करने के लिए उपयुक्त ढंग से व्यवस्थित किया जाता है। यह सामग्री के विषय, विचार और तथ्यों को सुसंगत रूप में प्रस्तुत करने में सहायक है। संरचना के रूप में अनुच्छेद, खंड और सांख्यिकीय डेटा का उपयोग किया जा सकता है।

३. **भाषा और शैली:** संपादन में सही भाषा, शैली का उपयोग किया जाता है ताकि लिखित सामग्री पाठकों के लिए समझने में आसान हो। यह उचित शब्द, वाक्य संरचना और वाणी का उपयोग करता है।

४. **संदर्भ और स्रोतों का प्रयोग:** लिखित सामग्री को संपादित करते समय उसके समर्थन के रूप में उचित संदर्भ और स्रोतों का प्रयोग किया जाता है। यह सामग्री की प्रमाणितता को बढ़ाता है और पाठकों को विश्वसनीयता प्रदान करता है।

५. **समर्थकता और व्याख्या:** लिखित सामग्री को समझने के लिए विषय के समर्थन में दिये गये विवरण और व्याख्या का उपयोग किया जाता है। इसमें विशेषज्ञता, विवरण और उदाहरण आदि का प्रयोग किया जाता है ताकि सम्पादन में स्पष्टता और विषय की गंभीरता हो।

६. **अधिकृत प्रस्तुति:** लिखित सामग्री को संपादित करने के बाद उसे उचित रूप में प्रस्तुत किया जाता है जिसमें लेखन और प्रस्तुति के नियमों का पालन करना आवश्यक है।

७. **समीक्षा और सुधार:** संपादन के अंतिम चरण में लिखित सामग्री की ध्यानपूर्वक समीक्षा की जाती है और उसमें त्रुटियों को सुधारा जाता है। यह सामग्री की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने में सहायक है।

संपादन के इन तत्वों का उपयोग करते हुए लिखित सामग्री को शुद्ध, सारगर्भित, विवेकपूर्ण, प्रभावशाली और गुणवत्तायुक्त बनाकर प्रस्तुत किया जा सकता है जो पाठकों को आकर्षित करती है, प्रेरित करती है।

४) संपादन की प्रक्रिया :

समाचार प्रस्तुति हेतु संपादन एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। उत्कृष्ट सामग्री को तैयार करने के लिए इसके सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए इसे सटीक रूप से संगठित किया जाता है। यह प्रक्रिया लेखकों, संपादकों और प्रकाशकों के बीच आवश्यक संचार को सुनिश्चित करती है ताकि लिखित सामग्री को उत्तम रूप से प्रस्तुत किया जा सके। संपादन की प्रक्रिया कई चरणों में विभाजित होती है, जिनमें निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:

१) सामग्री का चयन

२) संरचना और योजना

३) संपादन

४) समीक्षा और सुधार

५) अंतिम प्रस्तुति

६) प्रतिक्रिया और प्रकाशन

१. सामग्री का चयन: संपादन प्रक्रिया के प्रारंभिक चरण में लेखन सामग्री का चयन किया जाता है। इसमें लेखकों द्वारा लिखी गई सामग्री का मूल्यांकन किया जाता है, उसकी महत्ता, गुणवत्ता और उपयोगिता का मूल्यांकन किया जाता है।

२. संरचना और योजना: सामग्री को संपादित करने से पहले एक विस्तृत संरचना और योजना तैयार की जाती है। इसमें सामग्री के विभाजन, विषयों की व्यवस्था और प्रारंभिक लेखन के अनुसार निर्देशित किया जाता है।

३. संपादन: इस चरण में संपादक सामग्री को संपादित करते हैं। यह भाषा, वाक्य संरचना, व्याकरण और सामग्री की स्पष्टता की जांच का समय होता है।

४. समीक्षा और सुधार: संपादन प्रक्रिया के इस चरण में संपादित लिखित सामग्री की ध्यानपूर्वक समीक्षा की जाती है और उनकी त्रुटियों को सुधारा जाता है।

५. अंतिम प्रस्तुति: संपादित सामग्री को अंतिम रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें लेखन और प्रस्तुति के नियमों का पालन किया जाता है।

६. प्रतिक्रिया और प्रकाशन: इसके माध्यम से सम्पादक, उपसंपादक की प्रतिक्रिया को स्वीकार किया जाता है और आवश्यकतानुसार संपादित सामग्री में संशोधन करके उसको उचित माध्यम से प्रकाशित किया जाता है।

इस प्रकार, संपादन की प्रक्रिया के द्वारा लिखित सामग्री को लेखकों की अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

४.५ सारांश

सम्पादन का सीधा सादा अर्थ है- 'काम पूरा और ठीक तरह से करना' और 'पुस्तक या सामयिक पत्र को क्रमानुसार हर तरह से ठीक करके उसे प्रकाशित करना"। सम्पादन वस्तुतः एक कला है जो समाज के व्यापक वर्ग की अदम्य ज्ञान पिपासा को शांत करने का प्रभावकारी माध्यम है। अतः वर्तमान काल में जनमानस के मस्तिष्क को प्रभावित करने, उसे दिशा देने, जनरुचि का परिष्कार करने की दिशा में एक कुशल सम्पादन योजना का अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान है। कुशल सम्पादन विचारों को स्पष्टता और प्रभावशीलता के साथ प्रस्तुत करने में सहायक है। यह न केवल लेखक की विचारशीलता को बढ़ाता है, बल्कि पाठकों को भी उसके संदेश को समझने में मदद करता है। यह एक ऐसा माध्यम है जो लेखक और पाठकों के बीच एक संवाद की स्थापना करता है और लेखन को उच्चतम स्तर पर पहुंचाने में सहायक होता है।

किसी भी समाचार पत्र-पत्रिका में विभिन्न समाचार स्रोतों से समाचार एकत्रित कर उसे पाठकों के लिए पठनीय बनाना सम्पादन है। सम्पादन के अन्तर्गत किसी भी मुद्रित सामग्री के प्रस्तुत रूप का चयन, परीक्षण एवं नियंत्रण किया जाता है और इस प्रकार सम्पादन का अर्थ काम ठीक तरह से, पूरी तरह से प्रतिपादित करना ही है। संपादन से तात्पर्य किसी समाचार पत्र या किसी पत्रिका या पुस्तक में छपने वाली सामग्री को छपने से पहले उसकी जाँच पड़ताल करना एवं परखना, उसकी प्रमाणिकता की पुष्टि करना, उसमें से अनावश्यक बातों को निकालना, त्रुटियों को दूर करना और सभी तथ्यों की जाँच करके सामग्री को प्रकाशन के लिये भेजना ताकि पाठकों तक सही जानकारी पहुँचे। कुल मिलाकर उसे जिस रूप में प्रस्तुत करना हो, उसे अंतिम रूप देना ही सम्पादन कहलाता है।

सम्पादन वस्तुतः एक कला है जो समाज के व्यापक वर्ग की अदम्य ज्ञान पिपासा को शांत करने का प्रभावकारी माध्यम है। वर्तमान काल में जनमानस के मस्तिष्क को प्रभावित करने, उसे दिशा देने, जनरुचि का परिष्कार करने की दिशा में एक कुशल सम्पादन योजना का अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान है।

सम्पादन का मुख्य उद्देश्य लेख के सामर्थ्य, सहजता, स्पष्टता, गुणवत्ता और प्रभावोत्पादकता को बढ़ाना है। इसके द्वारा, लेखक के विचारों को अधिक गहरा, गंभीर, तर्कपूर्ण और पाठकों के लिए अधिक आकर्षक बनाना है। लेखकों को उनके विचारों को संवादपूर्ण और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने में मदद करना है। यह पाठकों को एक स्पष्ट, संगठित, सारगर्भित और संदर्भित लेख प्रदान करता है। यह लेखक के संदेश को बिलकुल सटीक ढंग से पाठकों तक पहुँचाता है।

संपादन के सामान्य सिद्धांत, उन मौलिक नियमों और दिशा-निर्देशों की ओर संकेत करते हैं जो संपादन प्रक्रिया को निर्देशित करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि लिखित सामग्री को उत्तम रूप में प्रस्तुत किया जाय, इसे सटीक, सारगर्भित, सुसंगत, सुपाठ्य और व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध बनाया जाय। संपादन के कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धांत हैं– संदर्भितता, स्पष्टता, स्थिरता या सुसंगति, संक्षिप्तता, शुद्धता, उत्कृष्टता, संवेदनशीलता, विशेषता, अभिव्यक्ति, समीक्षा आदि। संपादन के ये महत्त्वपूर्ण सिद्धांत, लेखकों, संपादकों और पाठकों

को दिशा-निर्देश प्रदान करते हैं जो एक उत्कृष्ट और प्रभावी लेखन सामग्री बनाने में सहायक होते हैं।

संपादन के तत्व, इसके वे मौलिक सिद्धांत और तकनीक हैं जिसके माध्यम से लिखित सामग्री को संपादित किया जाता है। इसके तत्व हैं- सामग्री का चयन, संरचना और व्यवस्था, भाषा और शैली, संदर्भ और स्रोतों का प्रयोग, समर्थकता और व्याख्या, अधिकृत प्रस्तुति, समीक्षा और सुधार। ये तत्व संपादन प्रक्रिया को निर्देशित करते हैं और उसे अधिक उत्तम बनाने में सहायक होते हैं। इन तत्वों के यथोचित उपयोग से लिखित सामग्री को अधिक रोचक, प्रभावोत्पादक और सुपाठ्य बनाया जा सकता है।

समाचार प्रस्तुति हेतु संपादन एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। उत्कृष्ट सामग्री को तैयार करने के लिए इसके सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए इसे सटीक रूप से संगठित किया जाता है। यह प्रक्रिया लेखकों, संपादकों और प्रकाशकों के बीच आवश्यक संचार को सुनिश्चित करती है ताकि लिखित सामग्री को उत्तम रूप से प्रस्तुत किया जा सके। संपादन की प्रक्रिया कई चरणों में विभाजित होती है जैसे कि सामग्री का चयन, संरचना और योजना, संपादन, समीक्षा और सुधार, अंतिम प्रस्तुति, प्रतिक्रिया और प्रकाशन आदि।

४.६ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१) संपादन की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।

२) संपादन का उद्देश्य लिखिए।

३) संपादन के सामान्य सिद्धांत पर प्रकाश डालिए।

४) संपादन के तत्व एवं प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

५) संपादन की अवधारणा को बताते हुए उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

४.७ लघुत्तरी प्रश्न

१) संपादन क्या है ?

उत्तर : सत्यान्वेषण

२) संपादन का पहला सिद्धांत क्या है ?

उत्तर : संदर्भितता

३) संपादन के तत्वों का प्रमुख आधार क्या है ?

उत्तर : मौलिक सिद्धांत और तकनीकी

४) संपादन प्रक्रिया में मुख्य रुप से कितने चरण हैं?

उत्तर : छः

४.८ संदर्भ ग्रंथ

१. डॉ. अर्जुन तिवारी, आधुनिक पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, २०१०.

२. डॉ. रामचन्द्र तिवारी, पत्रिका सम्पादन कला, १९७७, आलेख, दिल्ली.

३. डॉ. सुषमा, चतुर्वेदी, जनसंचार एवं पत्रकारिता, ज्योति प्रकाशन, जयपुर, २००६.

४. डॉ. अम्बादास देशमुख, प्रयोजनमूलक हिंदी: अधुनातम आयाम, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, २००९.

५. डॉ. काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर, समाचार और संवाददाता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, २००५.

६. डॉ. कृष्णचिहारी मिश्र, हिन्दी पत्रकारिता.

******

५

संपादक, उपसंपादक, संवाददाता और संपादकीय लेखन

इकाई की रूपरेखा

५.० इकाई का उद्देश्य

५.१ प्रस्तावना

५.२ संपादक

५.३ उपसंपादक

५.४ संवाददाता

५.५ संपादकीय लेखन

५.६ सारांश

५.७ दीर्घोत्तरी प्रश्न

५.८ लघुत्तरी प्रश्न

५.९ संदर्भ-ग्रन्थ

५.० इकाई का उद्देश्य

सम्पादन, सत्य का अन्वेषण है, विश्वसनीय तथ्यों का शुद्ध सटीक प्रकाशन है। यह विभिन्न विषयों के लेख को उसके उद्देश्य के अनुसार संशोधित करता है। सम्पादन लेखक के सोच-विचारों को ध्यान में रखते हुए उन्हें बेहतरीन तरीके से प्रस्तुत करने में मदद करता है। सम्पादन की प्रक्रिया में विभिन्न विषयों के लेख के मुख्य पहलुओं में उसकी भाषा, वाक्य रचना, अर्थ और तार्किक संवाद पर विचार कर उसमें संशोधन किया जाता है। एक योग्य सम्पादक की मौजूदगी में, लेखक का संदेश पाठकों के साथ सही और प्रभावशाली ढंग से साझा होता है। सम्पादक वह व्यक्ति होता है जो सामग्री को संपादित करता है, इसे प्रकाशित करने के लिए तैयार करता है। वह सामग्री की गुणवत्ता, विश्लेषण और व्याख्यान को मानकों के अनुसार सुनिश्चित करता है ताकि वह तथ्यात्मक हो, वास्तविक मुद्दों को उद्घाटित करता हो और पाठकों के समक्ष यथोचित संदेश प्रेषित करे। संपादन का कार्य करने वाला व्यक्ति संपादक कहलाता है। इस इकाई का उद्देश्य है –

१. विद्यार्थियों को संपादक, के कर्तव्य और दायित्व से अवगत करना।

२. विद्यार्थियों को उपसंपादक के कर्तव्य और दायित्व से अवगत करना।

३. विद्यार्थियों को संवाददाता के कर्तव्य और दायित्व से अवगत करना।

४. विद्यार्थियों को संपादकीय लेखन के विषय में जानकारी प्रदान करना।

५.१ प्रस्तावना

जब से पत्रकारिता आधुनिक उद्योग के रूप में स्वीकार कर लिया गया है तब से सम्पादन और सम्पादक का दायित्व अलग से रेखांकित मैं रखा जाने लगा है। सुविधा की दृष्टि से सम्पादन का अर्थ स्पष्ट करना चाहें तो यही कहा जा सकता है कि किसी समाचार, रचना, कृति अथवा आलेख का सुचारु रूप से, दोषरहित एवं कलात्मक रूप में मुद्रण के लिए प्रस्तुत करना सम्पादन कला की प्रथम प्रक्रिया है और दूसरी ओर उसके कला-व्यंजक प्रस्तुतीकरण का मुद्रित परिणाम देना ही सम्पादन है। वैसे सम्पादन के अन्तर्गत किसी भी मुद्रित सामग्री के प्रस्तुत रूप का चयन एवं नियंत्रण किया जाता है और इस प्रकार सम्पादन का अर्थ 'काम पूरा और ठीक तरह से प्रतिपादित करना' ही है, इसीलिए सम्पादक का महत्त्व सामग्री के प्रकाशन, प्रक्रिया में अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है। सम्पादक सामग्री को संवेदनशीलता, गुणवत्तायुक्त और रुचिकर बनाने के लिए जिम्मेदार होता है, साथ ही वह सामग्री को संपादित करके उसे पाठकों तक पहुँचाने के लिए उत्तरदायी होता है और इस प्रक्रिया में वह अनेक कार्यों को संचालित करता है।

सम्पादन कार्य करने वाला व्यक्ति सम्पादक होता है। कारण यह है कि समाचार पत्र जैसे व्यापक क्षेत्र पर दृष्टि डालें तो अकेला सम्पादक कोई भी समाचार पत्र नहीं निकाल सकता। सम्पादक वह महत्त्वपूर्ण व्यक्ति होता है जो लिखित सामग्री को संपादित करता है, इसे प्रकाशित करने के लिए तैयार करता है। वह सामग्री की गुणवत्ता, विश्लेषण और व्याख्यान को मानकों के अनुसार सुनिश्चित करता है ताकि वह तथ्यात्मक हो, वास्तविक मुद्दों को उद्घाटित करता हो और पाठकों के समक्ष यथोचित संदेश प्रेषित करे। इस कार्य में सम्पादक अकेला नहीं होता है। वह कभी अकेला हो ही नहीं सकता है क्योंकि सम्पादन कार्य एकांगी और अकेले व्यक्ति का नहीं होकर समूह (टीम) का ही होता है। सम्पादक के साथ उपसंपादक और संवाददाता की एक संगठित टीम होती है जो सामग्री के संपादन और प्रकाशन कार्य में सहायक होते हैं और उसे पाठकों के लिए उपयोगी बनाते हैं। इन तीनों के मिलन से सामग्री की उत्कृष्टता, प्रभाव और समर्थकता को सुनिश्चित किया जा सकता है।

सम्पादकीय लेखन के विषय में गहरी चर्चा करने से पहले, हमें सम्पादकीय लेखन का अर्थ समझना महत्वपूर्ण है। सम्पादकीय लेखन एक प्रकार का पत्रकारिता है जिसमें लेखक अपने विचारों और राय को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, या वैज्ञानिक विषयों पर प्रस्तुत करता है। इस लेखन का मुख्य उद्देश्य पाठकों को समाज में चल रहे महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में सूचित करना, उन्हें विचारों के आधार पर आत्मसात करना और उन्हें सोचने पर प्रेरित करना होता है।

सम्पादकीय लेखन का प्रारंभिक विकास मीडिया के साथ हुआ, जब पत्रकारिता में राजनीतिक और सामाजिक विषयों पर स्थितिगत लेखकों के स्थान पर सम्पादकों और संपादकों की आवश्यकता महसूस की गई। सम्पादकीय लेखन के तहत, संपादक अपनी राय को प्रकट करते हैं, लेकिन इसे संपादित किया जाता है और उसे सामाजिक, नैतिक मानकों के अनुसार संशोधित किया जाता है।

५.२ संपादक

सम्पादन कार्य करने वाला व्यक्ति सम्पादक होता है। वह कभी अकेला हो ही नहीं सकता है क्योंकि सम्पादन कार्य एकांगी और अकेले व्यक्ति का नहीं होकर समूह (टीम) का ही होता है। कारण यह है कि समाचार पत्र जैसे व्यापक क्षेत्र पर दृष्टि डालें तो अकेला सम्पादक कोई भी समाचार पत्र नहीं निकाल सकता। फिर भी सम्पादक की अपनी परिभाषा हो सकती है-

प्रेस एक्ट के अनुसार - समाचार-पत्र में प्रकाशित होने वाली सामग्री के चयन पर अंकुश रखने वाला व्यक्ति ही सम्पादक होता है।

पाश्चात्य विद्वान् एस. थामस के अनुसार - सम्पादक सभ्यता का प्रकाश-स्तंभ है क्योंकि सम्पादक का चिंतन उन समसामयिकों की सोच को प्रभावित करता है, जिनके कार्यकलापों से इतिहास की रचना होती है।

कार्लाइल के शब्दों में – संपादक सच्चा सम्राट और धर्मोपदेशक होता है।

भारतीय सम्पादक-प्रवर माखनलाल चतुर्वेदी के शब्दों में- संपादक सत्य के प्रति समर्पित रहता है। उसकी कलम में देश की धड़कन और जन-जन की संवेदनाएँ छिपी रहती हैं।

पं. माखनलाल चतुर्वेदी के मतानुसार- सम्पादक बनकर हम एक प्रकार से एक व्यक्ति से लेकर सम्पूर्ण समाज और गाँव से लेकर पूरे प्रदेश और देश की सेवा का व्रत लेते हैं, जो केवल तप, त्याग और बलिदान की भावना से ही पूर्ण हो सकता है।

पूर्व संपादक स्वर्गीय अक्षय कुमार जैन के अनुसार - पाठक वर्ग सम्पादक को अपना मित्र, नेता और परामर्शदाता मानता है।

विष्णुदत्त शुक्ल के अनुसार - जिस प्रकार प्रधान सेनापति अपनी सेना का संचालन करता है, उसी प्रकार सम्पादक अपने पत्र का संचालन करता है। जिस प्रकार एक योग्य सेनापति सेना के चलने फिरने, खाने-पीने लड़ने-भिड़ने आदि पर अपनी निगाह रखता है। उसी प्रकार सम्पादक सेनापति अपनी रिपोर्टर सेनार्थी अपनी सेना पर नजर रखता है।

इस तरह, यह कहा जा सकता है कि समाचार-पत्र अथवा पत्रिका में प्रकाशित की जाने वाली लिखित सामग्री का निश्चय करने वाला व्यक्ति सम्पादक होता है। सम्पादक ही समाचार-पत्र के समस्त सम्पादन विषयक कार्यों का निर्देश एवं व्यवस्था करता है तथा उसमें प्रकाशित सभी प्रकार की सामग्री के लिए उत्तरदायी होता है। समाचार, विचारयुक्त एवं प्रचारात्मक रचनाओं और रुचि-विशेष पर तैयार लिखित सामग्री को शुद्ध एवं उचित रूप में पाठक समुदाय के समक्ष पाठकीय रुचि के अनुरूप प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति सम्पादक कहलाता है।

अतः ऐसी स्थिति में यह कहना सर्वथा उपयुक्त है कि "संपादक न किसी जाति, वर्ग, सम्प्रदाय का प्रतिनिधि होता है और न सत्ता के मद में चूर और सामंतशाही का प्रतिनिधि, वह आम जन का हितैषी और हितैषिता के प्रति अपने दायित्व की पूर्ति करने वाला एक ऐसा प्रबंधक होता है जो अपने पूरे संपादकीय परिवार एवं परिजनों का पोषक होता है, राष्ट्रीयता और लोकतंत्रीय भावधारा का प्रसारक और उन्नायक होता है।"

समाचार-पत्र का सम्पादक अकेला और व्यक्ति न होकर संस्था या समूह होता है जो अपने सहयोगियों और सहायकों की बैठक बुलाकर नवीनतम घटनाक्रम का विश्लेषण करता है तथा सम्पादकीय की विषयवस्तु और टिप्पणियों का निर्णय करता है और सहायक सम्पादकों की विशेष अभिरुचि या अध्ययन क्षेत्र के अनुरूप सम्पादकीय लेखन का दायित्व सौंपता है। अपने कार्य की तुलना वह अन्य समाचार-पत्रों के आधार पर करता है।

सम्पादक वस्तुतः एक ऐसे व्यक्तित्व से सम्पन्न होता है जिसमें एक ही साथ नेता और राजनीतिज्ञ, संत और लेखक, अध्यापक और वकील, उपदेष्टा और व्यवसायी, कलाकार एवं आलोचक सभी के गुण केन्द्रीभूत हो जाते हैं। तभी उसका पत्र या पत्रिका अपनी स्वतंत्र नीति का न्यायसंगत आधार ग्रहण कर पाठकीय स्नेह और विश्वास प्राप्त करने में भी सफल रहती है। इन्हीं गुणों के कारण सम्पादक सदैव असाधारण व्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति ही नहीं अपितु अपने आप में एक ऐसी संस्था बन जाता है जिसमें जनमानस का असंदिग्ध विश्वास जमा होता है क्योंकि वह अपने गहन ज्ञान, तत्त्व विवेचन, कुशाग्र-बुद्धि, दूरदर्शिता तथा भावी घटना के समझने में सक्षम होकर अपने जागरूकतापूर्ण दायित्व का प्रतिपादन करता है तथा समाज को शिक्षित एवं सजग बनाता है।

सम्पादक के आदर्श :

पत्रकारिता व्यवसाय ही नहीं, लोक शिक्षण का उद्देश्यपरक साधन और सेवाभावी संस्थान है जो अपने दुहरे कर्त्तव्य-बोध से परिपूर्ण रहता है। एक ओर वह निर्भय, एकनिष्ठ एवं पक्षपातविहीन अनुभवों की अभिव्यक्ति करता है तथा सोद्देश्य लेखन क्षमता और तत्सम्बन्धी नीतियों के उत्कर्ष का प्रतिपादन करता है; दूसरी ओर वह राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए परिस्थितियों के साथ, कर्त्तव्य एवं दायित्वों का सामंजस्य इस प्रकार करता है कि जनमानस में अपनी ईमानदारी, निर्भीकता, नैतिकता, शिष्टता इत्यादि का सही समीकरण प्रतिपादित हो सके। अतः सम्पादकों के लिए मान्य आठ आदर्श गुण होते हैं – उत्तरदायित्व, स्वतंत्रता, निर्भीकता, ईमानदारी, निष्पक्षता, नैतिकता, सत्यता, शिष्टता।

(१) उत्तरदायित्त्व:

सम्पादक को निःस्वार्थ भाव से लोकहित की भावना से प्रेरित होकर ही कार्य सम्पादन करना चाहिए। उन्हें अपने उत्तरदायित्व के प्रति उसे सतर्क रहना आवश्यक है।

(२) स्वतंत्रता:

संमाचार पत्र की स्वतंत्रता ही सम्पादक या पत्रकार की स्वतंत्रता का आधार है क्योंकि स्वतंत्रता मानव का महत्त्वपूर्ण सर्वमान्य अधिकार है। अतः उसे अपने पत्र में सभी विषयों का बेहिचक विवेचन करने तथा बिना किसी दबाव के अपनी बात कहने की स्वतंत्रता का वैधिक अधिकार है।

(३) निर्भीकता:

सम्पादक को स्वतंत्र विवेचन के साथ ही निर्भीकता के साथ अपने विचार प्रकट करना और लिखना चाहिए। निर्भीक सम्पादक ही निष्पक्ष होकर विचार प्रकट कर पाता है।

(४) ईमानदारी:

सम्पादक को अपने पाठकों के प्रति ईमानदार होना आवश्यक है। एक ईमानदार सम्पादक या पत्रकार ही पाठक वर्ग में विश्वसनीयता प्राप्त करता है।

(५) निष्पक्षता:

सम्पादक किसी भी जाति, धर्म, सम्प्रदाय से सम्बन्धित क्यों न हो और उसकी कोई भी राजनीतिक विचारधारा क्यों न बनी रहे, उसे अपने पत्र की नीति के अनुरूप ही समाचार प्रकाशन या विषय प्रस्तुतीकरण में किसी विशेष से प्रभावित हुए बिना बिलकुल निष्पक्ष रूप में ही अपना कार्य सम्पादन करना चाहिए।

(६) नैतिकता:

सम्पादक का यह दायित्व है कि वह अपने व्यावहारिक स्तर पर नैतिक आचरण प्रस्तुत करे और कोई ऐसी सामग्री प्रकाशित नहीं करे जिसमें किसी व्यक्ति के चरित्र पर आक्षेप लगाया गया हो। यदि कभी कारणवश इस तरह की सामग्री प्रकाशित हो जाती है तो सम्पादक का कर्त्तव्य है कि वह ऐसे अप्रिय और आक्षेपपूर्ण समाचार के सम्पादन पर पाठकों से भूल-सुधार के रूप में क्षमायाचना करे।

(७) सत्यता:

सम्पादक के लिए यह भी आवश्यक है कि जो भी समाचार विशेष वह प्रकाशित करने जा रहा है उसके सम्बन्ध में जाँच-परख कर उसकी सत्यता से स्वयं संतुष्ट हो ले, तभी उसे प्रकाशित करे।

(८) शिष्टता:

सम्पादक की आचार संहिता के अन्तर्गत यह भी आवश्यक है कि समाचार या विचार कैसे भी क्यों न हों, बिना अपनी शिष्टता खोए, बिना किसी आवेग के वशीभूत हुए ही वह उनका प्रकाशन करे। ऐसा करने पर ही उसके पत्र की प्रतिष्ठा बढ़ती है तथा पाठक वर्ग उस पत्र की शिष्टता से प्रभावित होता है।

सम्पादक के दायित्व :

सम्पादक की महत्ता के साथ उसके दायित्व भी बहुत व्यापक होते हैं क्योंकि किसी समाचार-पत्र, साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक की प्रतिष्ठा कभी-कभी पत्र-पत्रिका की सामग्री से अधिक उसके सम्पादक के साथ जुड़ी होती है। सर्वश्री गणेश शंकर विद्यार्थी, बनारसीदास चतुर्वेदी, श्रीराम शर्मा, निराला, इलाचन्द जोशी, प्रेमचन्द, पं. हरिशंकर शर्मा, बांकेबिहारी, भटनागर, धर्मवीर भारती, कमलेश्वर, खुशवन्तसिंह, कर्पूरचन्द कुलिश, राजेन्द्र माथुर, उदयन शर्मा, अज्ञेय, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, नामवरसिंह, मनोहर श्याम जोशी आदि ऐसे सम्पादक रहे, जो पत्रिका के लिए नहीं जाने गये, अपितु पत्रिकाएँ इनके नामों से समादृत रही हैं। सम्पादक का यश और प्रतिष्ठा-निर्माण उसके निरन्तर दायित्व बोध के सकारात्मक स्वरूप से होता है। अतः सम्पादक के दायित्व निम्नलिखित हैं -

१. नीति-निर्धारण

२. नीति-क्रियान्वयन

३. नीति-निर्देशन

१. नीति-निर्धारण:

सम्पादक का मुख्य कार्य निर्धारित नीति के अनुसार पत्र-पत्रिका का संचालन करना है। सम्पादक और संचालक अथवा संचालक मण्डल के सदस्य पत्र-पत्रिका की नीति सुनिश्चित करते हैं। अतः नीति-निर्धारण में सम्पादक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। निर्धारित नीति के अनुकूल ही सम्पादक उसका क्रियान्वयन इस प्रकार करता है कि पत्र या पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति करे। सम्पादक सजग और चौकन्ना सूत्रधार बनकर अपना दायित्व निर्वाह करता है।

२. नीति-क्रियान्वयन

नीति-निर्धारण में संचालक मण्डल का सहयोग सम्पादक को अवश्य मिलता है, पर नीति के क्रियान्वयन का पूरा दायित्व सम्पादक पर होता है, ऐसी स्थिति में सम्पादक को अपनी निष्ठा का समीकरण नीति और उसकी क्रियान्विति के बीच करना होता है, क्योंकि सम्पादक की निष्ठा तीन वर्गों के प्रति सक्रिय रहती है-

(क) संचालक मण्डल के प्रति निष्ठा:

जो भी नीति निर्धारित की जाती है उसके क्रियान्वयन में सम्पादक की प्रथम निष्ठा का सम्बन्ध संचालक मण्डल के प्रति अपने नैतिक दायित्व की पूर्ति करना है क्योंकि संचालक मण्डल ने उसे कार्य सौंप दिया है। अतः उनके हितों और उनके द्वारा संचालित पत्र के हित के विरुद्ध कोई भी कार्य सम्पादक नहीं कर सकता। वह सदैव जागरूक और सचेत रहता है क्योंकि इस निष्ठा के साथ ही उसकी प्रतिष्ठा का सह-संबंध है।

(ख) सम्पादकीय विभाग के प्रति निष्ठा:

सम्पादक की दूसरी निष्ठा का नैतिक दायित्व अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि उसे अपने कार्य सम्पादन के लिए सम्पादकीय विभाग का प्रबन्धन एवं निर्देशन करना होता है। अतः दूसरी निष्ठा की कसौटी पर वह अपने सम्पादकीय विभाग के प्रति पूर्णतः उत्तरदायी होता है। सम्पादकीय विभाग की नियुक्तियों के सम्बन्ध में आवश्यक परामर्श देने से लेकर किसी भी समय अपने सहयोगी के विरुद्ध संचालक मण्डल के अथवा बाहरी आक्रमणों से रक्षा करने का दायित्व सम्पादक को ही उठाना होता है तथा सदैव उसे अपने सहयोगियों के हितों की रक्षा के लिए भी तत्पर रहना होता है।

(ग) पाठकों के प्रति निष्ठा:

सम्पादक का तीसरा दायित्व पाठकों के प्रति निष्ठा है क्योंकि उसे अपने पाठक वर्ग की अपेक्षाओं, उनकी माँगों, रुचियों आदि के विषय में सतर्क रहना होता है। पाठकों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण सहज व्यवहार, शिष्टतापूर्ण व्यवहार होना चाहिए क्योंकि पाठकवर्ग बहुत ही संवेदनशील होता है।

३. नीति-निर्देशन:

सम्पादक, अपना दायित्व निभाने में नीति-निर्धारण, नीति-क्रियान्वयन के साथ ही नीति निर्देशन के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। सम्पादक का यह दायित्व भी होता है कि संचालक मण्डल की नीति चाहे कुछ भी हो, समाचार पत्र या पत्रिका किसी एक दल का नेतृत्व या दासत्व स्वीकार नहीं करे। अपनी नीति का निर्देशन कुशलतापूर्वक करते हुए राजनीतिक दबावों और प्रभावों से तटस्थ बने रहना सम्पादक की सफल रणनीति होती है। इस प्रकार अपने सहयोगियों को भी नीति क्रियान्वयन में सही और उचित मार्ग चयन करने के लिए गतिशील बनाने का दायित्व भी सम्पादक पर आता है। यही नहीं, सन्तुलित सामग्री से सम्पन्न बनाकर अपने पत्र-पत्रिकादि को अधिकाधिक जनोपयोगी बनाने का काम भी उसके नीति-निर्देशक कार्यों का ही अंग है।

सम्पादक के कर्त्तव्य:

सम्पादक का दायित्व अत्यन्त व्यापक होता है। अतः उसके कर्तव्यों में विविधता होती है। सामान्यतः सम्पादक के निम्नलिखित सोलह कर्तव्य दृष्टव्य हैं-

(१) प्रेस कानून का ज्ञान:

सम्पादक का प्रेस कानून जानना ही प्रथम कर्तव्य है ताकि मानहानि, कृति स्वाम्य तथा न्यायालय की अवमानना से बचा जा सके।

(२) भारतीय दण्ड संहिता का ज्ञान:

सम्पादक को भारतीय दण्ड संहिता या इण्डियन पेनल कोड तथा इसके इतर सामान्य संवैधानिक कानून के नियम-उपनियम आदि का ज्ञान रखना भी कर्त्तव्य का प्रमुख अंग है ताकि किसी सामग्री के चयन के अवसर पर ही कानून का उल्लंघन न हो सके।

(३) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का ज्ञान:

सम्पादक का यह कर्त्तव्य है कि वह भारतीय संविधान में प्रेस की स्वतंत्रता की सीमा का अभिज्ञान रखे। अतः पत्र की नीति और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बीच पूरा सामंजस्य बनाये रखने का प्रधान कर्त्तव्य सम्पादक का होता है। प्रेस की स्वतंत्रता की मर्यादा का पालन करना तथा संचालक मण्डल द्वारा कराया जाना उसका ही कर्त्तव्य है।

(४) विशेषाधिकारों का सम्मान:

संसद लोकसभा और विधानसभा को कुछ विशेषाधिकार प्राप्त हैं, वे सभी विशेषाधिकार उनके सभी सदस्यों- सांसद एवं विधायकों, संसदीय समिति एवं उनके सदस्यों के लिए भी सुरक्षित एवं संरक्षित होते हैं। अतः सम्पादक को यह देखना बहुत आवश्यक कर्त्तव्य है कि उसके संसदीय विधायी पत्रकार उन विशेषाधिकारों का सम्मान करें।

(५) जन शिक्षण:

सम्पादक का कर्त्तव्य यह भी है कि वह अपने पाठकों के लिए जन-शिक्षण जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराये, जिससे जनरुचि का परिष्कार होने के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धन भी हो सके। सम्पादक का कर्तव्य एक प्रकार की वह समाज सेवा है जिसके माध्यम से घटनाओं, विचारों एवं लोकहित के विविध कार्यों की सम्यक् आलोचना करके सम्पादक सुधीपाठक वर्ग की शिक्षा का नेतृत्व करता है।

(६) विचाराभिव्यक्ति और लेखन की निर्भीकता:

सम्पादक का कर्त्तव्य है कि वह अपने पाठक को स्वतंत्र विचाराभिव्यक्ति से परिचित कराये तथा उसके लेखन में किसी दल विशेष की राजनीति का रुझान न हो। बिल्कुल निर्भीकता से लेखन कार्य करे।

(७) ज्ञान-क्षितिज के विस्तार के प्रति जागरूक:

सम्पादक का यह भी कर्तव्य है कि वह जनसाधारण के ज्ञान-क्षितिज के विस्तार के प्रति जागरूक रहकर अपने मुद्रण माध्यम या समाचार-पत्र या पत्रिका में ऐसी सामग्री का चयन, सम्पादन एवं प्रकाशन करे, जो व्यापक रूप से समाज को सुव्यवस्थित बनाने और मानव-कल्याण की लक्ष्य-पूर्ति, लोकमंगल के हित साधनार्थ उन्हें प्रेरित करें। इस दृष्टि से सम्पादक को सहज सुलभ साधनों, सन्दर्भों, विचारों का सही-सही आकलन, चयन, सम्पादन करना चाहिए।

(८) भावी का निर्णायक:

सम्पादक का कर्त्तव्य है कि वह वर्तमान घटित घटनाओं का गहन अध्ययन करता है। वर्तमान राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों और गतिविधियों पर विश्लेषणात्मक दृष्टि रखता है और उससे भविष्य में होने वाले प्रभावों को जनसाधारण के समक्ष स्पष्ट करता है, भावी के प्रति अपने निर्णयों से अवगत कराता है।

(९) समाचार-विश्लेषण:

सम्पादक को यह पूरी स्वतंत्रता है कि वह प्रतिदिन के समाचारों का विश्लेषण करे तथा यह देखे कि वे कौन से कारण अथवा परिस्थितियाँ हैं जिनके कारण सरकारी नीति में परिवर्तन आया है अथवा किस प्रकार से इस नई नीति का प्रभाव समाज के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन पर पड़ सकता है। इस प्रकार के समाचार विश्लेषण तक ही उसका कर्त्तव्य समाप्त नहीं हो जाता अपितु उस विश्लेषण का परिचय देते हुए वह अपने पाठक को वस्तुस्थिति और परिस्थितिगत संक्रमणताओं का महत्त्व एवं अर्थ समझा सकता है।

(१०) मार्गदर्शन:

सम्पादक का कर्त्तव्य है कि वह जनसाधारण या पाठक वर्ग का मार्गदर्शन करे। वह या उसका सम्पादकीय विभाग इस स्थिति में होता है कि आसन्न समस्याओं, नवनिर्धारित नीतियों,

योजनाओं के प्रति तार्किक दृष्टिकोण अपनाकर हर पहलू से व्यापक विश्लेषण कर समाज का मार्गदर्शन करे।

(११) निःस्वार्थ एवं निष्पक्ष:

सम्पादक किसी भी परिस्थिति में अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से प्रेरित और प्रभावित न होकर निःस्वार्थ और निष्पक्ष रहकर अपना मत प्रकट करना चाहिए।

(१२) पत्र की नीति के प्रति प्रतिबद्धता:

सम्पादक सदैव पत्र की नीति से प्रतिबद्ध रहकर ऐसे सभी कार्य पूरे करता है जो नीतिसम्मत हों तथा सम्पादक की अपने सहयोगियों एवं पाठक वर्ग की निष्ठा पर किसी प्रकार का आघात नहीं आने देते हों। नीति की प्रतिबद्धता में रहकर सम्पादक ऐसे सिद्धान्तों का प्रतिपादन करता है जो उसे या उसके सम्पादक विभाग के सभी सहयोगियों द्वारा स्वीकृत और पालन किए जाते हैं।

(१३) प्रभावशाली सम्पादकीय लेखन:

समाचार-पत्र की पूरी व्यवस्था देखने के साथ-साथ प्रभावशाली सम्पादकीय लेखन भी सम्पादक का ही प्रधान कार्य है। सामान्यतः सम्पादकीय ही सम्पादक के स्वभाव, रुचि, चरित्र एवं व्यक्तित्व की छाप छोड़ता है और पत्र की रीति-नीति का परिचायक होता है। सम्पादकीय लम्बा नहीं होना चाहिए। कम से कम शब्दों में अपनी बात इतनी स्पष्ट और बोधगम्य रूप में कहे कि दो-तीन मिनट का समय देने वाला पाठक ऊबकर पढ़ना न छोड़े।

(१४) समग्रता बोध:

सम्पादक जो भी लिखे उसमें उसका गहन अध्ययन, सतत चिन्तन एवं वैचारिक मनन परिलक्षित हो, उसका विश्लेषण राष्ट्रहित में हो। यदि समग्रता बोध सम्पादक के चिन्तन-विश्लेषण की कसौटी है तो सामान्य से लेकर बौद्धिक वर्ग का पाठक तक उसे अपना अनौपचारिक नेता मानकर उससे दिशा बोध ग्रहण कर सकता है।

(१५) पूर्वाग्रह मुक्त:

सम्पादक का कर्त्तव्य है कि वह पत्र की रीति-नीति से निबद्ध होकर भी हर प्रकार के पूर्वाग्रह से मुक्त हो, पूर्वाग्रह से मुक्त रहकर मुक्त चिन्तन-मनन और विश्लेषण करे।

(१६) समाचार-लेखन:

छोटे या मध्यम वर्ग के समाचार-पत्रों में कई बार सम्पादक को ही समसामयिक घटनाक्रम पर समाचार लिखना होता है। यह समाचार-लेखन उनके लिए प्राथमिक कार्य का ही दूसरा पक्ष है। ऐसे में सम्पादक का कर्त्तव्य है कि समाचार के स्रोतों को वास्तविकता, सत्यता, वस्तुपरकता और यथार्थमूलक कसौटी पर कस कर समाचार लेखन करें।

५.३ उपसंपादक

लन्दन की प्रेस एसोसिएशन के पत्रकार एल. जे. डिकर के अनुसार- "उप सम्पादक सदैव किसी भी समाचार को सही जानकारी (इन्फार्मेशन), अभिप्राय (इण्टेंशन), प्रणाली (मैथड), प्रबन्ध (एडमिनिस्ट्रेशन) तथा उसके अन्तः संचार की स्थिति परखने के बाद ही प्रेस में भेजता है।" सम्पादकीय विभाग में संपादक के सहायक के रूप में अनेक उप संपादक होते हैं जो उनके निर्देशन में काम करते हैं। ऐसी स्थिति में एक मुख्य उप सम्पादक होता है जिसके अंतर्गत अनेक उप सम्पादक कार्यरत होते हैं। इन्हें हम निम्न विन्दुओं से समझ सकते हैं-

मुख्य उपसम्पादक:

सम्पादकीय विभाग में मुख्य उप सम्पादक अलग-अलग अपनी पालियों का नेतृत्व करने वाला ऐसा व्यक्ति होता है जो दैनिक समाचारों का वर्गीकरण करता है, उन्हें उप सम्पादकों में वितरित करता है, उप सम्पादकों की लिखी कॉपी जाँचने, उपयुक्त शीर्षक लगाने, पत्र के लीड (सर्वप्रमुख) समाचार और अन्य समाचारों का क्रम तथा पृष्ठ विशेष का निर्धारण करता है, साथ ही प्रथम पृष्ठ की डमी के साथ सामग्री प्रेस में देता है। यही नहीं, उसे यह भी ध्यान रखना आवश्यक होता है कि कोई महत्त्वपूर्ण समाचार छूट न जाए। वह मशीन पर जाने से पूर्व तक ताजा से ताजा समाचार या 'लेटेस्ट न्यूज' देने का प्रयत्न करता है तथा प्रत्येक पृष्ठ का प्रस्तुतीकरण (डिस्पले) और पृष्ठ निर्माण (मेकअप) का पूरा ध्यान रखता है।

उप सम्पादक:

समाचार पत्र के सम्पादकीय विभाग में उप सम्पादक का कार्य मुख्य उप सम्पादक के सम्पादकीय विभाग एवं सम्पादकीय-लेखन परामर्श के अनुसार सारी सामग्री या समाचारों से समाचार पत्र का कलेवर पूरा करता है। यह कहा जा सकता है कि इसमें समाचारों के विवरण एकत्र कर, उनमें कांट-छांट करना, उनकी भाषा ठीक करना, शीर्षक लगाकर प्रकाशन योग्य बनाकर उन्हें प्रेस भेजना आदि सभी कार्य सम्मिलित होते हैं। समाचार-पत्र जितना बड़ा होता है, उसमें उतने ही उप सम्पादकों की संख्या अधिक होती है। उप सम्पादक, विभिन्न स्त्रोतों से आये संवादों का चयन, अनुवाद और सम्पादित कर प्रेस को भेजते समय कई स्त्रोतों से प्राप्त समाचारों का संगीकरण भी करते हैं।

अतः उप सम्पादकों को द्विभाषी या त्रिभाषी अर्थात अंग्रेजी और हिन्दी या क्षेत्रीय भाषा ज्ञान होना आवश्यक होता है। उप सम्पादक अज्ञातनामा योद्धा होता है। तभी के. पी. नारायणन का कथन सटीक लगता है कि "जनता सम्पादक को जानती है, वह समाचार-पत्र संवाददाताओं को भली-भाँति जानती है, किन्तु वह उस उप सम्पादक को बहुत कम जानती है जो रात को जब संसार के सारे लोग निद्रालीन होते हैं, पाठकों को पढ़ने के लिए प्रातःकालीन समाचार-पत्र तैयार करने के लिए परिश्रम से जुटा रहता है।

५.४ संवाददाता

संवाददाता वास्तव में समाचार प्रेषक या रिपोर्टर के लिए एक रूढ़ शब्द हो गया है। संवाददाता अपनी नियुक्ति के स्थान विशेष से और अपने विभिन्न क्षेत्रों की विभिन्न

गतिविधियों के समाचार संकलित कर डाक या फोन, सोशल मीडिया (जैसी सुविधाएं उन्हें प्राप्त हैं) से समाचार-पत्र कार्यालय भेजते हैं। खेल, वाणिज्य, कला, संगीत, फिल्म, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समारोहों सम्बन्धी गतिविधियों के समाचार सम्प्रेषण के लिए अलग-अलग संवाददाता होते हैं। संवाददाताओं के भेद निम्न प्रकार हैं- (अ) विदेश संवाददाता, (आ) विशेष संवाददाता, (इ) निजी संवाददाता, (ई) कार्यालय संवाददाता, इसके अंतर्गत मुख्य कार्यालय संवाददाता और वरिष्ठ या उप मुख्य कार्यालय संवाददाता आते हैं।

विदेश स्थित संवाददाता वहाँ रहकर देश के लिए महत्त्वपूर्ण समाचार संकलन करता है और अपने पत्र के लिए उन्हें प्रेषित करता है। कई बार समाचार-पत्र समूह ही विदेश में अपना संवाददाता नियुक्त करते हैं। कभी-कभी दूसरे समाचार-पत्र समूह के लिए कार्य करने वाले संवाददाता को ही अपने पत्र के लिए समाचार प्रेषण हेतु अनुबन्धित कर लिया जाता है। विशेष संवाददाता अधिमान्यता प्राप्त किए हुए केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकार अथवा किसी स्थान विशेष पर नियुक्त किया जाता है। पत्रकारिता के क्षेत्र में संवाददाता की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है जिन्हें निम्न विन्दुओं में देखा जा सकता है-

१. संवाददाता सामग्री के लेखक होते हैं, जिन्हें संपादकों और उपसंपादकों के साथ सामग्री के विवाद, स्वरूप और अन्य विषयों पर संवाद करना होता है। वे सामग्री के तथ्यों को प्रस्तुत करते हैं और उसे पाठकों के साथ साझा करते हैं।

२. संवाददाता की भूमिका समाज में बहुत महत्त्वपूर्ण है। वे समाचार और मीडिया के माध्यम से विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करते हैं और लोगों को सही जानकारी प्रदान करते हैं। उनका काम लोगों को सोचने पर विवश करने के साथ ही समाज के विभिन्न मुद्दों पर चिंतनशील बनाना है।

३. संवाददाता लोगों के बीच विभिन्न विषयों पर बातचीत का माध्यम होते हैं। वे समाज के विभिन्न पहलुओं जैसे कि सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और वैज्ञानिक इत्यादि मुद्दों पर विचार करते हैं। उनका काम समाज में चर्चा करके लोगों को सोचने हेतु प्रेरित करना है।

४. संवाददाता अक्सर विभिन्न मीडिया प्लेटफार्मों पर काम करते हैं जैसे कि अखबार, पत्रिकाएँ, वेबसाइट, टीवी चैनल, रेडियो आदि। उनका काम लोगों को सही जानकारी प्रदान करना और समाज में घटित हो रही विभिन्न घटनाओं के बारे में सटीक जानकारी देना है।

५. संवाददाता अपने लेखों के माध्यम से सामाजिक बदलाव को लेकर लोगों को सचेत करते हैं। वे अपने लेखों के माध्यम से जनता का सही दिशा में मार्गदर्शन करते हैं और उन्हें उनके अधिकारों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।

६. संवाददाता का काम अधिकांश विषयों पर शोध (रिसर्च) करना, लोगों का साक्षात्कार (इंटरव्यू) लेना और अपने विचारों को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करना है।

इस प्रकार, संवाददाता की भूमिका विभिन्न तरह के लोगों के लिए अलग-अलग होती है। वे समाज के मार्ग दर्शक होते हैं। समाज को एक साथ लाने और उसे एकत्रित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

५.५ संपादकीय लेखन

सम्पादकीय लेखन के विषय में गहरी चर्चा करने से पहले, हमें सम्पादकीय लेखन का अर्थ समझना महत्त्वपूर्ण है। सम्पादकीय लेखन, पत्रकारिता का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, जो जनता को जागरूक करने, सोचने पर प्रेरित करने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह लेखन समाज में समर्थन और सहयोग का एक माध्यम है जो सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन को प्रोत्साहित करता है।

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट १८६८ के अनुसार किसी भी समाचार पत्र में जो कुछ छपता है उसका निश्चित निश्चय करने वाला सम्पादक होता है। किसी भी समाचार पत्रिका में प्रकाशित पाठ्य सामग्री का सम्पूर्ण दायित्व सम्पादक पर ही होता है। वह सम्पादकीय विभाग टीम का मुखिया होता है। यही समाचार पत्र की रीति-नीति तय करता है और उसे विभिन्न स्तरों पर लागू करता है। एक तरफ से वह प्रबंध तंत्र का अंग होता है, इस मायने में वह समाचार पत्र प्रतिष्ठान के मालिक, संचालक या प्रबन्धक द्वारा तय की गयी नीतियों का संवाहक भी होता है। वह अपनी संस्थान की हितों का ख्याल रखता है। सम्पादक वह डोरी होता है जिस पर पूरा समाचार-पत्र सन्तुलित तरीके से घूमता रहता हैं। समाचार की सफलता, लोकप्रियता, श्रेष्ठता, बहुत कुछ सम्पादक की प्रतिभा, योग्यता, कुशलता पर आधारित होती है। सम्पादकीय लेखन एक ऐसा वातायन है जिससे समाचारपत्र के व्यापक प्रांगण की गतिविधियाँ दृष्टिगत होती हैं। सम्पादकीय लेखन समाचार पत्र के स्तर और श्रेष्ठता की कसौटी है। सम्पादकीय लेखन के सम्बन्ध में प्रसिद्ध पत्रकार खुशवंतसिंह ने कहा है कि वस्तुतः समाचार पत्र का इकलौता भाग वह सम्पादकीय पृष्ठ होता है जिस पर सम्पादक अपनी व्यक्तिगत मोहर लगा सकता है। सम्पादक अपनी कल्पनाशीलता और सृजनशीलता के जरिये अपने समाचार पत्र में कुछ न कुछ नया देने की कोशिश करता है, ताकि वह चर्चा में रहे। सम्पादक की नजर एक तरफ प्रेस सम्बन्धी कानून पर रहती है। दूसरी तरफ पाठकों की रुचि पर, एक तरफ संस्थान के हितों पर रहती है, दूसरी तरफ पाठकों की रुचि पर, एक तरफ प्रबन्ध की व्यवस्था होती है, दूसरी तरफ सहयोगियों की हितों पर, एक पारस्परिक मूल्यों पर रहती है, दूसरी तरफ बदलते समाज और मूल्यों के अनुरूप प्रयोगशीलता पर। इस प्रतियोगिता और स्पर्धा के दौर में एक प्रयोगशील सम्पादक ही अपने समाचार पत्र को जिन्दा रख सकता है।

समाचार के प्रति अन्तिम जबावदेही सम्पादकीय होती है। उसकी सफलता खुद की कुशलता के साथ ही इस बात पर भी निर्भर करती है कि अपने कर्तव्यबोध के प्रति वह कितना सजग है, कितना व्यवहार कुशल है तथा उसके अन्दर नेतृत्व और प्रकाशन की क्षमता कितनी अधिक है, इसके साथ ही साथ उसमें कार्यालय के कर्मचारियों की समस्याओं को हल करने की क्षमता होनी चाहिए। समाचारों या घटनाओं के पूर्व अनुमान एवं उसके विश्लेषण की सूक्ष्म दृष्टि एक सफल सम्पादक की विशेषता होती है। समाचारपत्र,

पथभ्रष्ट लोगों को सावधान करने के साथ ही ज्ञान और घटनाओं का नियंत्रक और संचालक भी है, उसे इस उत्तरदायित्त्व को वहन करने की क्षमता सम्पादक ही देता है।

सम्पादकीय लेखन का क्षेत्र व्यापक होता है। इसके क्षेत्र में अग्रलेख, फीचर, विशेष लेख, विभिन्न समीक्षाएं, टिप्पणियाँ आदि विविध लेखन आते हैं, पर सम्पादकीय लेखन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप सम्पादकीय या अग्रलेख होता है।

सम्पादकीय लेखन प्रायः समाचार पत्र के मध्यवर्ती पृष्ठ पर होता है। सम्पादकीय लेखन का विषय मानव जीवन से सम्बन्धित कोई भी क्षेत्र हो सकता है। सम्पादकीय लेखन विविध विषयों से सम्बन्धित विविध मतों का स्पर्श करती उनका विवेचन, विश्लेषण करती हैं। समाचार पत्र की नीति तथा विचारधारा से सम्बद्ध सम्पादकीय आलेखन सजग तथा सतर्क पाठकों के आकर्षण का केन्द्र बनते हैं। गम्भीर मनोवृत्ति के पाठक सम्पादकीय लेखन से विशेष रूप से जुड़ते हैं, क्योंकि इसमें समसामयिक परिवेश की समस्याओं का सटीक, सार्थक, विवेचन, विश्लेषण होता है। समाचार पत्रों में प्रमुख सम्पादकीय उस विषय पर होना चाहिए जो सबसे महत्त्वपूर्ण हो, इसके लिए सम्पादक अथवा अग्रलेख लिखने वाले में पूर्ण ज्ञान, वेग तथा प्रवाहमयता की आवश्यकता होती है, जिससे वह तत्काल निर्णय ले सके कि उस दिन की घटनाओं अथवा समस्याओं में से इस पर अग्रलेख लिखना उचित है। इसके लिए उसे उस दिन के सारे समाचारों को देखना चाहिए। यदि कई महत्त्वपूर्ण घटनाओं का समाचार के सामने आ जायें, तो सम्पादक में ऐसी सूझबूझ होनी चाहिए कि वह निर्णय ले सके कि इनमें से किस समाचार अथवा घटना का तात्कालिक महत्त्व है और कौन से समाचार का स्थायी महत्त्व है। इसके लिए सम्पादक में आकस्मिक स्थिति को तुरन्त समझने का सामान्य व्यावहारिक ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

सम्पादकीय विभाग या सम्पादकीय टीम के द्वारा निर्मित यह लेखन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी या किसी अन्य विषय वस्तु की उन्नतियों और चुनौतियों के बारे में हो सकता है, इन्हें सामाजिक माध्यमों (सोशल मीडिया) जैसे कि अखबार, पत्रिकाएँ, ब्लॉग और वेबसाइटों में प्रकाशित किया जा सकता है।

समाचार-पत्र की पूरी व्यवस्था देखने के साथ-साथ प्रभावशाली सम्पादकीय लेखन भी सम्पादक का ही प्रधान कार्य है। सामान्यतः सम्पादकीय ही सम्पादक के स्वभाव, रुचि, चरित्र एवं व्यक्तित्व की छाप छोड़ता है और पत्र की रीति-नीति का परिचायक भी होता है। छोटे समाचार-पत्रों में सम्पादक स्वयं ही संपादकीय लिखता है जबकि बड़े पत्रों में प्रतिदिन सुबह सम्पादकीय लेखकों की बैठक होती है जिसमें विषय एवं सहयोगी तय किए जाते हैं तथा विषय प्रतिपादन के लिए अपनायी जाने वाली नीति तय की जाती है।

प्रभावशाली संपादकीय लिखने में सम्पादक का कर्त्तव्य यह हो जाता है कि सम्पादकीय लम्बा नहीं होना चाहिए। सामान्यतः श्रेष्ठ सम्पादकीय पांच सौ से सात सौ शब्दों तक ही उपयुक्त होता है। कुछ लोगों का विचार है कि सम्पादकीय साढ़े सात सौ से एक हजार शब्दों की सीमा में होना चाहिए। आकार कितना हो इसका निश्चय प्रायः सम्पादक को करना होता है कि कम से कम शब्दों में अपनी बात इतनी स्पष्ट और बोधगम्य रूप में कहे कि दो-तीन मिनट का समय देने वाला पाठक ऊबकर पढ़ना न छोड़े। इस लेखन का मुख्य उद्देश्य पाठकों को समाज में चल रहे विभिन्न महत्त्वपूर्ण एवं ज्वलंत मुद्दों के बारे में सूचित करना,

अद्यतन जानकारी देना, जागरूक करना, उन्हें विचारों के आधार पर आत्मसात करना और सोचने पर प्रेरित करना है।

इस प्रकार, सम्पादकीय लेखन का मुख्य उद्देश्य पाठकों को सजग, जागरूक, तर्कसम्मत, जानकार, समझदार बनाना, समसामयिक परिस्थितियों को समझाना और संदेश देना होता है। इस लेखन में सामान्यत: गंभीरता, विश्वसनीयता, सत्यता, तथ्यता, व्यावसायिकता, शुद्धता और सुस्पष्टता का ध्यान रखना परम आवश्यक है। सम्पादकीय लेखन में लेखकों की राय, विचार और विशेषज्ञता का उपयोग किया जाता है, लेकिन उसे संपादकों द्वारा अच्छी तरह से संवादित, संवेदनशील और उत्कृष्ट बनाया जाता है। आकर्षक शीर्षक, स्पष्ट और संयंत्रित संरचना, तार्किकता पर आधारित विचार, सटीक समापन और सुझाव, संपादकीय दृष्टिकोण आदि कुछ मुख्य विशेषताएँ सम्पादकीय लेखन के लिए महत्त्वपूर्ण हैं जो इसे प्रभावशाली बनाती हैं।

५.६ सारांश

पत्रकारिता के क्षेत्र में संपादक, उपसंपादक और संवाददाता तीनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है जो किसी प्रकाशन के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संपादक, उपसंपादक और संवाददाता तीनों एक साथ एक संगठित टीम बनाते हैं जो सामग्री के संपादन और प्रकाशन में सहायक होते हैं और उसे पाठकों के लिए उपयोगी बनाते हैं। इन तीनों के मिलन से सामग्री की उत्कृष्टता और प्रभाव को सुनिश्चित किया जा सकता है।

सम्पादक वह व्यक्ति होता है जो सामग्री को संपादित करता है, इसे प्रकाशित करने के लिए तैयार करता है। वह सामग्री की गुणवत्ता, विश्लेषण और व्याख्यान को मानकों के अनुसार सुनिश्चित करता है ताकि वह तथ्यात्मक हो, वास्तविक मुद्दों को उद्घाटित करता हो और पाठकों के समक्ष यथोचित संदेश प्रेषित करे। सम्पादक वह महत्त्वपूर्ण व्यक्ति होता है जो लिखित सामग्री को संपादित करता है, इसे प्रकाशित करने के लिए तैयार करता है। वह सामग्री की गुणवत्ता, विश्लेषण और व्याख्यान को मानकों के अनुसार सुनिश्चित करता है ताकि वह व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध हो, तथ्यात्मक हो, वास्तविक मुद्दों को उद्घाटित करता हो और पाठकों के समक्ष यथोचित संदेश प्रेषित करे। इस कार्य में सम्पादक अकेला नहीं होता है। वह कभी अकेला हो ही नहीं सकता है क्योंकि सम्पादन कार्य एकांगी और अकेले व्यक्ति का नहीं होकर समूह (टीम) का ही होता है। सम्पादक के साथ उपसंपादक और संवाददाता की एक संगठित टीम होती है जो सामग्री के संपादन और प्रकाशन कार्य में सहायक होते हैं और उसे पाठकों के लिए उपयोगी बनाते हैं। इन तीनों के मिलन से सामग्री की उत्कृष्टता, प्रभाव और समर्थकता को सुनिश्चित किया जा सकता है।

एक सम्पादक को विचारशील, नैतिक और संवेदनशील होने की आवश्यकता होती है, जिससे वह अपने कार्य को पूरा कर सकें और समाज में सकारात्मक प्रभाव डाल सकें। साथ ही समझदारी और विवेकशीलता, सम्मोहनशील व्यक्तित्व, संगठन क्षमता, संवेदनशीलता, कला की समझ, बाजार संवेदना, सहनशीलता, संवाद कौशल, न्यायप्रियता, विश्वसनीयता, संगठन क्षमता, कार्य के प्रति समर्पण, सूक्ष्म दृष्टि आदि ऐसे मानवीय गुण है जो उनके सम्पादकीयता को उत्कृष्ट बनाते हैं।

समाचार पत्र के सम्पादकीय विभाग में उप सम्पादक का कार्य मुख्य उप सम्पादक के सम्पादकीय विभाग एवं सम्पादकीय-लेखन परामर्श के अनुसार सारी सामग्री या समाचारों से समाचार पत्र का कलेवर पूरा करता है। यह कहा जा सकता है कि इसमें समाचारों के विवरण एकत्र कर, उनमें कांट-छांट करना, उनकी भाषा ठीक करना, शीर्षक लगाकर प्रकाशन योग्य बनाकर उन्हें प्रेस भेजना आदि सभी कार्य सम्मिलित होते हैं। समाचार-पत्र जितना बड़ा होता है, उसमें उतने ही उप सम्पादकों की संख्या अधिक होती है। उप सम्पादक, विभिन्न स्त्रोतों से आये संवादों का चयन, अनुवाद और सम्पादित कर प्रेस को भेजते समय कई स्त्रोतों से प्राप्त समाचारों का संगीकरण भी करते हैं।

इस तरह, उपसंपादक संपादक के सहायक होते हैं और उनके निर्देशन में काम करते हैं। उनका काम संपादक के साथ ग्राहकों, लेखकों और अन्य टीम सदस्यों के साथ संवाद में रहना होता है, सामग्री की संरचना और गुणवत्ता का पुनरीक्षण करना और संपादक को प्रतिद्वंदी कार्य में सहायता करना आदि। उपसंपादक की भूमिका मीडिया उद्योग में महत्त्वपूर्ण होती है। एक अच्छे उपसंपादक के लिए समझदारी, आदर्श व्यक्तित्व, संगठन क्षमता, संवेदनशीलता, समय प्रबंधन कौशल, सूक्ष्म दृष्टि , संवाद कौशल, समस्या समाधान और निर्णय लेने की क्षमता, सृजन कौशल और अनुभव आदि कुछ ऐसे अहम् गुण हैं जो उपसंपादक को एक नयी पहचान देने के साथ ही पत्र–पत्रिका को भी उत्कृष्ट बनाते हैं।

संवाददाता वास्तव में समाचार प्रेषक या रिपोर्टर के लिए एक रूढ़ शब्द हो गया है। संवाददाता अपनी नियुक्ति के स्थान विशेष से और अपने विभिन्न क्षेत्रों की विभिन्न गतिविधियों के समाचार संकलित कर डाक या फोन, सोशल मीडिया (जैसी सुविधाएं उन्हें प्राप्त हैं) से समाचार-पत्र कार्यालय भेजते हैं। खेल, वाणिज्य, कला, संगीत, फिल्म, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समारोहों सम्बन्धी गतिविधियों के समाचार सम्प्रेषण के लिए अलग-अलग संवाददाता होते हैं।

संवाददाता सामग्री के लेखक होते हैं, जिन्हें संपादकों और उपसंपादकों के साथ सामग्री के संदर्भ में सलाह-परामर्श, वाद-विवाद, स्वरूप पर चर्चा और अन्य विषयों पर संवाद करना होता है। वे सामग्री के तथ्यों को प्रस्तुत करते हैं और उसे पाठकों के साथ साझा करते हैं, जिससे सामग्री का प्रभावित रूप से प्रस्तुत किया जा सके। एक संवाददाता के लिए समझदारी, न्यायप्रियता, संवेदनशीलता, क्रियाशीलता, साहसिकता, संवाद कौशल, सूक्ष्म दृष्टि, जागरूकता, सहयोगिता, संवाददाता कौशल आदि अनेक महत्त्वपूर्ण गुण होते हैं जो उन्हें एक अच्छे पत्रकार के रूप में उभारते हैं।

सम्पादकीय लेखन, पत्रकारिता का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, जो जनता को जागरूक करने, सोचने हेतु प्रेरित करने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन को प्रोत्साहित करता है। सम्पादकीय लेखन का मुख्य उद्देश्य पाठकों को सजग, जागरूक, तर्कसम्मत, जानकार, समझदार बनाना, समसामयिक परिस्थितियों को समझाना और संदेश देना होता है। इस लेखन में सामान्यत: गंभीरता, विश्वसनीयता, सत्यता, तथ्यता, व्यावसायिकता, शुद्धता और सुस्पष्टता का ध्यान रखना परम आवश्यक है।

इस तरह संपादक, उपसंपादक और संवाददाता तीनों एक साथ, एक संगठित टीम बनाकर निरंतर अपने उत्तम सम्पादकीय लेखन से पत्रकारिता को नयी दिशा, नयी गति प्रदान करते हैं।

५.७ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१. संपादक को परिभाषित करते हुए उसके आदर्श गुणों को लिखिए।

२. संपादक के दायित्व के विषय में संक्षेप में लिखिए।

३. सम्पादक के सोलह कर्त्तव्यों का उल्लेख कीजिए।

४. उपसंपादक का परिचय देते हुए उसके कार्य का विश्लेषण कीजिए।

५. समाचार पत्र में संवाददाता की भूमिका बताते हुए उसके गुणों पर प्रकाश डालिए।

६. संपादकीय लेखन का विश्लेषण कीजिए।

५.८ लघुत्तरी प्रश्न

१) समाचार के प्रति अंतिम जबाबदेही कौन होता है?

उत्तर : सम्पादक |

२) प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट १८६८ में क्या लिखा है ?

उत्तर : समाचार में जो कुछ छपता है उसका निश्चय करने वाला सम्पादक होगा |

३) सम्पादकीय लेखन समाचार पत्र में कहाँ होता है?

उत्तर : प्रायः मध्यवर्ती पृष्ठ |

४) लोगों के बीच विभिन्न विषयों पर बातचीत का माध्यम कौन होता है?

उत्तर : संवाददाता |

५.९ संदर्भ ग्रन्थ

१. डॉ. अर्जुन तिवारी, आधुनिक पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, २०१०

२. डॉ. रामचन्द्र तिवारी, पत्रिका सम्पादन कला, १९७७, आलेख, दिल्ली

३. डॉ. सुषमा चतुर्वेदी, जनसंचार एवं पत्रकारिता, ज्योति प्रकाशन, जयपुर, २००६

४. डॉ. अम्बादास देशमुख, प्रयोजनमूलक हिंदी: अधुनातम आयाम, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, २००९

५. काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर, समाचार और संवाददाता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, २००५

६. डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र, हिन्दी पत्रकारिता

*****

६

समाचार लेखन, समाचार की भाषा, फीचर लेखन

इकाई की रुपरेखा

६.० इकाई का उद्देश्य

६.१ प्रस्तावना

६.२ समाचार लेखन

६.३ समाचार लेखन की प्रक्रिया

६.४ समाचार लेखन की भाषा शैली

६.५ 'समाचार-लेखन' की विशेषताएँ

६.६ फीचर लेखन

६.७ सारांश

६.८ दीर्घोत्तरी प्रश्न

६.९ लघुत्तरी प्रश्न

६.१० संदर्भ सूचि

६.० इकाई का उद्देश्य

- समाचार लेखन की संपूर्ण प्रक्रिया का अध्ययन करना।
- समाचार लेखन शैलियों को विस्तार से समझना।
- समाचार लेखन की विशेषताओं का अध्ययन करना।
- समाचार का अर्थ, स्वरूप, तत्त्व, एवं परिभाषाओं का अध्ययन करना।
- समाचार लेखन के महत्व को अधोरेखित करना।
- समाचार लेखन' लेखन छात्रों के लिए रोजगार के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण उपलब्धि है इससे उन्हें अवगत करना।

६.१ प्रस्तावना

अज्ञेय ने कहा है, "शब्द ब्रम्ह का रूप है। इसे नष्ट न करें और कम शब्दों में अधिक बात कहने की कला सीखें।" अर्थात कम शब्दों में बेहतर एवं गहरी बात को, किसी घटना को स्पष्ट करना भी समाचार लेखन है। समाचार लेखन पत्रकारिता का महत्वपूर्ण अंग है।

पत्रकारिता में समाचार लेखन को विद्या यानी कथा के समान महत्व रहा हैं। पत्रकारिता में पत्रकार की सफलता अच्छे एवं सच्चे समाचार लेखन पर ही निर्भर है। समाचार लेखन पत्रकार के कला की सशक्त अभिव्यक्ति है। किसी घटना अथवा प्रसंग का समाचार लेखन करते समय क्रमबद्ध अनुकरण बहुत महत्वपूर्ण है। अधिक से अधिक सत्यता, भाषा की स्पष्टता, विषय से सुसंगत एवं सरलता। कहने अथवा लिखने की पद्धति प्रभावी होनी चाहिए। समाचार लेखन की सबसे महत्वपूर्ण बात है, विषय की संक्षिप्तता और नयापन।

समाचार लेखन:

समाचार लेखन कला में पत्रकार के मन में विषय को लेकर विविध प्रश्न होते हैं। इन प्रश्नों के आधार पर ही समाचार लेखन किया जाता है। समाचार लेखन, समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविजन आदि के लिए किया जाता है।

६.२ समाचार लेखन

'समाचार लेखन' सैद्धांतिक कला है। 'समाचार- लेखन' में विषय की तथ्यता, जिज्ञासा, प्रमाण, जानकारी, और वैचारिक आधार का समन्वय होता है। 'समाचार लेखन' विभिन्न विषयों पर किया जाता है। जैसे पर्यटन क्षेत्र, किसी सामाजिक घटित घटना पर, पर्यावरण पर, राजनीति, अर्थनीति आदि पर। समाचार लेखन कम-से-कम शब्दों और प्रभावी रूप में पाठकों तक पहुँचाया जाता है और यही प्रमुख उद्देश्य भी है। 'समाचार लेखन' पाठकों के अनभिज्ञ विषय की पूर्तता करता हैं। 'समाचार लेखन में पाठकों के मन में विषय के प्रति अभिरूचि बनी रहे और उत्तम संप्रेषण साध्य हो इस पर ध्यान दिया जाता है। ज्यादा से ज्यादा तत्वों का निर्वहन करते हुए पाठकों के लिए किसी भी विषय को लेकर पत्रकार प्रभावी 'समाचार लेखन' करते हैं। आज समाचार लेखन एक सैद्धांतिक कला बनी है। जिनके समाचार लेखन में संपूर्ण तत्वों का अवलोकन है वे ही समाचारपत्र एवं पत्रकार सफल रहते हैं। समाचार लेखन को समझने के लिए हमें समाचार के अर्थ, स्वरूप, विशेषताएँ एवं तत्व को समझना होगा।

६.२.१ समाचार का अर्थ:

नयी तकनीकी में समाचार को प्राप्त करना और समझना बहुत आसान हुआ है। एक दौर था जब हम केवल चंद संसाधनो के माध्यम से समाचार को समझते थे। जैसे रेडियो, दूरदर्शन या किसी समाचार पत्र से। लेकिन आज इंटरनेट के कारण कई संसाधनों के माध्यम से हम समाचार की जानकारी प्राप्त सकते हैं। टेलिफोन, ईमेल, मोबाईल, फैक्स, इन्स्टाग्राम, व्हॉटसअप, ट्विटर आदि के माध्यम से हमें समाचार की जानकारी मिलती है। जैसे-जैसे समाचार संसाधनों में नयापन आता गया वैसे-वैसे समाचार के स्वरूप में अधिक स्पष्टता आ गयी। आज समाचार एवं प्रसार का महत्व अधिक बढ़ गया है। एक समय था जब किसी विषय या घटना की जानकारी संपूर्ण रूप से पाठकों तक नहीं पहुँचती थी। आज नयी तकनीकी के कारण विषय हो अथवा घटना का विवरण तस्वीरों के साथ अथवा लाइव स्तर पर दिखाई देता है। इंटरनेट के कारण समाचार-पत्र हो या टीव्ही चैनल हमें चौबीस घंटे खबरें देखने को मिल रही है।

आधुनिक परिवेश में समाचार लेखन का प्रभाव और फायदा हमारे देश के हित में बहुत हुआ हैं। देश के स्वतंत्रता आंदोलन में समाचार लेखन का काफी महत्त्व रहा है। देश की आजादी के लिए पत्रकारो नें आम जनता को समझ में आये इस तरह के समाचारों का लेखन किया। जिससे देश का स्वतंत्रता आंदोलन तीव्र हुआ। आज आजादी के अमृत महोत्सवी वर्ष में भी समाचार लेखन का महत्त्व उतना ही है जितना पहले था। इसी के दृष्टीकोण से समाचार लेखन के अर्थ को समझना होगा।

समाचार का अर्थ बहुत विस्तृत है। समाचार लेखन के विभिन्न अंगों को समझकर ही सही अर्थ में समाचार क्या है यह समझा जा सकता है। जन-जीवन की शुरुआत ही समाचार से शुरू होती है। समाचार को पढ़े बगैर दिनचर्या की शुरुआत असंभव है। समाचार को अंग्रेजी में न्यूज (NEW) कहा गाता है। मराठी भाषा में बातमी या वार्ता कहा जाता है। अंग्रेजी के न्यु शब्द से अनेक वचन न्यूज शब्द बना है। इस शब्द की शुरुआत न्यू अर्थात नये से होती है। जो नया है वही न्यूज है। दूसरे अर्थ में NEWS शब्द के एन यानी नॉर्थ, इ यानी इस्ट, डब्ल्यु यानी वेस्ट और एस यानी साऊथ है। इस से यह स्पष्ट होता है कि चारो दिशाओं की खबर-बात ही न्यूज है। पूर्व से पश्चिम और दक्षिण से उत्तर नयी गतिविधियों का, घटनाओं का, सूचनाओं का तत्काल अवलोकन समाचार है। अर्थात जिस विषय से जनता अनभिज्ञ है उस विषय को सहज, सरल और आसान रूप देकर उजागर करना 'समाचार लेखन' है। समाचार को लिखने के लिए स्थान, घटना, विषय निश्चित किया जाता है। समाचार लिखने की पृष्ठभूमि तैयार होने पर योजना के अनुसार शैली का उपयोग करके समाचार लिखा जाता है। समाचार लेखन के अर्थ या स्वरूप को समझने के लिए उपर्युक्त बातों का आकलन बहुत जरूरी है। समाचार शब्द 'वृत्तान्त', 'खबर', 'संवाद', 'विवरण', 'सूचना' आदि शब्दों से भी अवगत है।

६.२.२ 'समाचार लेखन' की परिभाषा:

'समाचार लेखन' के अर्थ को समझाते हुए विभिन्न विचारकों ने तथा पत्रकारों ने 'समाचार' को परिभाषित करने का प्रयास किया है। उक्त परिभाषाओं से 'समाचार लेखन' के स्वरूप को अधिक स्पष्ट रूप में समझने के लिए मदद मिलेगी। समाचार लेखन की परिभाषाओं को दो वर्ग में विभाजित किया जाता है।

१) पाश्चात्य विशेषज्ञ

२) भारतीय विशेषज्ञ कई विद्वानों ने 'समाचार-लेखन', को परिभाषित करने का प्रयास किया है किंतु सौ प्रतिशत शुद्ध परिभाषा नही बन पाई है। समाचार नयी अथवा परिवर्तित घटनाओं के प्रत्येक दिन के सूचनाओं का आदान-प्रदान है। यह आदान-प्रदान का स्वरूप निरंतर बदलता है। इसलिए समाचार को विशिष्ट परिभाषा में परिभाषित करना असंभव है। इस विचार को कई विशेषज्ञों ने भी स्वीकार किया है।

पाश्चात्य विद्वान:

विलियम एम. माल्सवाई:- "किसी समय मे होने वाली उन महत्त्वपूर्ण घटनाओं के सही और पक्षपात रहित विवरण को, जिसमें उस पत्र के पाठकों की अभिरुचि हो, उसे समाचार कहते हैं।"

जे. जे. सीलडर : 'पर्याप्त संख्या में मनुष्य जिसे जानना चाहे वह समाचार है। शर्त यह है कि सुरुचि तथा प्रतिष्ठा के नियमों का उल्लंघन न करें।'

एम. लाइस स्पेंसर: ''वह सत्य घटना या विचार जिसमें बहुसंख्य पाठकों की अभिरूचि ही समाचार हैं।''

प्रो. विलियम ब्लेयर: ''अनेक व्यक्तियों की अभिरूचि जिस सामयिक बात में हो वह समाचार है। सर्वश्रेष्ठ समाचार वह है जिसमें बहुसंख्यकों की अधिकतम रुचि हो।''

जॉर्ज एच. मोरिस: '' समाचार जल्दी में लिखा गया इतिहास है।''

विलियम एल, रिवर्स: ''समाचार घटना का वर्णन है। घटना स्वयं समाचार नहीं है। घटनाओं, तथ्यों और विचारों की सामयिक रिपोर्ट समाचार है जिसमें पर्याप्त लोगों की रूची हो।

रा.र. खांडेलकर - "दुनिया में कही भी, किसी समय कोई छोटी-मोठी घटना या परिवर्तन हो उसका शब्दों में जो वर्णन होगा उसे समाचार कहते हैं।"

भारतीय विद्वान अंबिका प्रसाद वाजपेयी ने समाचार के परिभाषा को अत्यंत विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने समाचार के परिभाषा को क्यो? कब? क्या? कहां? किसलिए? प्रश्नों को मध्यंतर रखते हुए कई उदाहरणों के साथ अभिव्यक्त किया है। उन्होंने कहा है- "हर घटना समाचार नहीं है, सिर्फ वही घटना समाचार- बन सकती है जिसका उद्देश्य सार्वजनिक हित हो, अस्पतालों में लोग भर्ती होते रहते हैं, अच्छे होते हैं और मरते भी हैं। लेकिन कोई मरीज इसलिए मर जाए कि अस्पताल पहुँचने पर उसे देखनेवाला कोई नहीं थी, या डॉक्टर की गैर-हाजिरी में कंपाउंडर ने उसका गलत इलाज कर दिया, या नर्स ने एक मरीज की दवा दूसरे मरीज को दे दी?, या ऑपरेशन करते समय कोई औजार पेट में रह गया और पेट सी दिया गया, ये सब समाचार हो सकते हैं। इस तरह कोई नवीनतम ऑपरेशन हो, जैसे हृदय परिवर्तन, उसे भी समाचार कहते हैं।"

के. पी. नारायणन : "समाचार किसी सामयिक घटना की महत्वपूर्ण तथ्यों का परिशुद्ध तथा निष्पक्ष विवरण होता है, जिसमें उस समाचारपत्र में पाठकों की रुचि होती है जो इस विवरण को प्रकाशित करता है।" पत्रकार नंदकिशोर लिखते है - "समाचार को सदैव नया, दिलचस्प, मनोरंजक और महत्वपूर्ण होना चाहिए।"

ऊपर दिए गये विभिन्न परिभाषाओं के आधार पर यह कहना उचित होगा कि हर वह जानकारी, सूचना, नयी घटना, नया विचार या वृत्तांकन से जुड़े विभिन्न पहलू 'समाचार लेखन' है। समाचार लेखन के माध्यम से नवीनता तथा विलक्षण बातों की जानकारी प्राप्त होती हैं। इन बातों में लोगों की अधिक रूचि होती है। हर घटना में कुतुहल, नया उद्दीपन, नयी सोच के द्वारा समानता की या परिवर्तन की जानकारी प्राप्त होती हो वो हर लेखन समाचार लेखन हैं।

६.२.३ समाचार लेखन का स्वरूप:-

उपर्युक्त विभिन्न परिभाषाओं से हम समझ सकते हैं कि समाचार लेखन का स्वरूप स्पष्ट एवं सरल होना आवश्यक है। समाचार लेखन की भाषा शैली लोगों को समझने वाली अर्थात सुस्पष्ट और सीधी होनी चाहिए। समाचार लिखते समय नए शब्दों का प्रयोग नहीं करनी चाहिए। वाक्य रचना अधिक विस्तीर्ण एवं कठिन शब्दों से भरी नही होनी चाहिए | समाचार लेखन मुख्यतः संक्षिप्त, सुसंगत और प्रभावशाली होना चाहिए। (समाचार लेखन की सफलता विभिन्न प्रश्नों पर आधारित होती है। जैसे कैसे ? कहाँ ? कब? किसलिए? किसको? किसने ? क्यों ? इन प्रश्नों को माध्यम बनाकर समाचार लिखना सफल होता है। इन प्रश्नों के माध्यम से)

समाचार की घटना आशय, स्थान और समस्या को सबसे पहले बताया जाता है। समाचार को अधिक प्रभावी बनाना है तो समाचार लेखन को कालनुक्रमानुसार के साथ-साथ महत्त्वपूर्ण अंश और तथ्य की सूचना से शुरुवात करनी चाहिए। संक्षिप्तता समाचार लेखन का अहम अंग है। समाचार के विषय के अनुसार कम से कम स्थान और प्रभावी शब्दों में प्रस्तुत करना अच्छे समाचार लेखन की पहचान है। अनावश्यक विवरण एवं व्यर्थ शब्द संग्रह से बचना आवश्यक है। जैसे देश के प्रधानमंत्री का संपूर्ण भाषण अखबार में देना संभव नही केवल 'सारांश' ही देना जरूरी है।

समाचार लेखन में सत्य स्थिति और यथार्थता पर मुख्य ध्यान होना चाहिए। रोचकता के बल पर समाचार को लोकप्रिय बनाया जा सकता है। प्रभावहीन शीर्षक, विस्तीर्ण विवरण, नीरस और अधिकांश बातें पाठक को निराश कर देती है। समाचार लेखन की रोचकता तथ्यहीन नही होनी चाहिए। इसमें अतिशयोक्ति नही बल्कि वस्तुस्थिति होनी चाहिए। 'न्यूयार्क टाइम्स' के भूतपूर्व संपादक के शब्दों में कहे तो- 'दुनिया में होने वाली घटनाओं के संबंध में समाचार लिखते समय इस तरह बुद्धिसंगत रूप से मानव जिज्ञासा का उपयोग करना चाहिए। जिससे सच्चाई और ईमानदारी के सिद्धान्तों की अवहेलना न हो।''

हमारे देश में समाचार लेखन लोकतंत्र के प्रमुख स्तंभ का मुख्य आधार है। लोक-हित के सुरक्षा की जिम्मेदारी भी है। समाचार लेखन चाहे किसी भी घटना से जुड़ा हो जिसमें संपादक की भूमिका लोक – हित की ही होती है। जनहित के समाचार को निडरता से लिखना जरूरी है। जहाँ किसी घटना के सच्चे समाचार का लिखने से जन का अहित होता हो तो उस समाचार को लिखने में संयम रखना जरूरी है।

६.३ समाचार लेखन की प्रक्रिया

समाचार लिखना समाचार लेखन में सर्वोत्तम गुण है। इस लेखन कला में विज्ञान का भाव होना बहुत जरूरी है। कला समाचार लेखन इस दृष्टिकोण से मानी जाती है, क्योंकि इस अभिव्यक्ति में भाषा का प्रभुत्व एवं प्रभावशाली विवरण अधिक मायने रखता है। ज्यादा से ज्यादा विषयों का ज्ञान हो, सर्वसाधारण पाठकों के लिए जो समाचार लेखन हो, उसमें उत्सुकता, कुतूहल निर्माण करना भी एक कला है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसलिए है, क्योंकि 'समाचार लेखन में सही विश्लेषण और यथार्थ स्थिति की जानकारी होती है| इसलिए 'समाचार लेखन में प्रमुखतः से शीर्षक, आमुख विषय विवरण निष्कर्ष आदि बिंदुओं का

श्रृंखलाबद्ध क्रम होता है। इसे मध्यनजर रखते हुए 'समाचार लेखन के विविध पहलुओं को समझना होगा।'

६.३.१ शीर्षक की आवधारणा :-

'समाचार लेखन की शुरुआत सबसे पहले शीर्षक की अवधारणा से शुरू होती है। समाचार का प्रभाव पाठक के मन पर शीर्षक से ही पडता है। शीर्षक प्रभावहीन हो तो आगे समाचार पढना निराशमयी होता है। इसलिए 'समाचार लेखन' का शीर्षक प्रभावशाली, आकर्षक होना चाहिए। अन्यथा सारा परिश्रम व्यर्थ होता है। शीर्षक पढ़ते ही समाचार पढ़ने की इच्छा तीव्र होनी चाहिए। शीर्षक की सार्थकता पर ही समाचार की सफलता निर्भर करती है। शीर्षक छोटा, सहज भाषा से प्रयुक्त और सरल होना जरूरी है।

६.३.२ आमुख का उपयोग :-

आमुख को समाचार लेखन का अंश या भूमिका कहना गलत नही होगा। इस क्रम में समाचार के संपूर्ण जानकारी का संक्षिप्त विवरण मात्र दो-तीन पंक्तियों में प्रस्तुत किया जाता है। आमुख में मुख्य समाचार के बारे में केवलं निर्देश होते है जानकारी नहीं । मुख्य विषय का आभास होने के कारण पूरा विवरण पढने की पाठक की इच्छा होती है। मुख्य क्रम के कम से कम क्रमों का अंश आमुख में होना बहुत जरूरी है।

६.३.३ समाचार का विश्लेषण:

१) 'समाचार लेखन' में शीर्षक एवं आमुख के उपरांत समाचार के मुख्य स्वरूप को विश्लेषित किया जाता है। इसमें समाचार के संपूर्ण घटना का ब्योरा विस्तृत रूप में दिया जाता है। विश्लेषण में समाचार के विवरण को दो या तीन अनुच्छेद में प्रस्तुत किया जाता है। लगातार एक ही श्रृंखला में विवरण देना गलत है। एक ही अनुच्छेद होता है तो पढने में निराशा एवं उत्सुकता का अभाव रहता है। 'समाचार लेखन' में समाचार को छोटे-छोटे अनुच्छेद में प्रस्तुत करने से स्पष्टता आती है और उत्सुकता बढ़ती है आखरी अनुच्छेद में पत्रकार या संपादक लोक-हित पर पड़ने वाले जानकारी का प्रभाव अथवा अनुमान भी दर्शाते है। पाठकों को के लिए कई प्रश्नों को निर्माण करते हैं इसलिए पाठक अपना मत भी तैयार करते हैं। निष्कर्ष रूप से समाचार लेखन के अंतिम पड़ाव को समाप्त करने से समाचार की उपयुक्तता सिद्ध होती है (कोरोना की महामारी, बारिश से हुआ भूस्खलन, हवामान का अंदाज, इलेक्ट्रॉल बॉन्ड की खबर) आदि । अर्थात समाचार लेखन में पत्रकार घटना के साथ-साथ क्षेत्रों की भी जानकारी देते हैं।

६.४ समाचार लेखन की भाषा शैली

'समाचार लेखन' की भाषा विभिन्न प्रकार की हो सकती है। 'समाचार लेखन' की भाषा शैली में विवादास्पद शब्दों का प्रसार प्रचुर मात्रा में हो रहा है। यही कारण है कि शब्दों की समझ न होना, विषयों का या क्षेत्रों का अज्ञान होना यह लेखन कौशल का अभाव है। अगर संपादक या समाचार लिखने वाला पत्रकार भाषा संबंधी उचित ज्ञान, विषय की रचनात्मक नीति और अनुभव का सही उपयोग करे तो 'समाचार-लेखन' की भाषा में सहजता ला सकता है। समाचार-लेखन कला अविष्कार होने के कारण इसमें भिन्नता हो सकती है। हमारे देश में

विभिन्न प्रकार के समाचारपत्र कई भाषाओं में प्रकाशित होते हैं। हर एक समाचारपत्र की भाषा शैली अलग-अलग है। 'नवभारत टाईम्स' और 'लोकमत-समाचार' के अंक में एक ही समाचार भिन्न भाषा अंग्रेजी समाचार और उर्दू समाचार की भाषा शैली भी भिन्न हो सकती है।

भाषा शैली में लिखा हुआ दिखाई देगा वाणिज्य समाचार की भाषा और क्रीड़ा समाचार की भाषा में काफी अंतर होता है। राजनीतिक चुनाव प्रचार संबंधी 'समाचार-लेखन' की भाषा जो होगी वही भाषा ऐतिहासिक, सांस्कृतिक संबंधी 'समाचार लेखन' की नहीं हो सकती। अर्थात 'समाचार-लेखन' की भाषा शैली में भिन्नता होना अनिवार्य है।

शीर्षक की भाषा में और आमुख या विवरण की भाषा में भेद हो सकता है। इसलिए समाचार-लेखन की भाषा शैली के कोई नियम नहीं है।

किंतु समाचार-लेखन की भाषा सहज-सरल और आसान होना जरूरी है। समाज के हर वर्ग के पाठकों तक सच्ची जानकारी पहुँचाना 'समाचार-लेखन' का महत्वपूर्ण उद्देश्य होना चाहिए। समचार चाहे किसी भी घटना से संबंधित हो उसकी भाषा हर एक व्यक्ति के समझ में आनी चाहिए। राजनीति, विज्ञान, साहित्य, सिनेमा या वैश्विक स्तर का समाचार हो वो हर पाठक के मन मे रोचकता, जिज्ञासा निर्माण करने वाला होना चाहिए। समाचार पढ़ने में हर एक की रुचि बने रहना आवश्यक है। सरलता या रोचकता के नाम पर अधिकतम विवरण, भद्दापन, अश्लील शब्दों का प्रयोग 'समाचार-लेखन' में अस्वीकार है। 'समाचार-लेखन' में अलंकारिक या फिर लाक्षणिक भाषा शैली को भी स्थान नहीं होता है। पाठक को सहज एवं आसान शब्दों में और छोटे-छोटे वाक्यों में सारी जानकारी मालूम होना अच्छा लगता है। यथार्थ स्थिति को समझकर समाचार लिखने वाली अगर अपनी भाषा शैली के माध्यम से पाठक के मन में कुतूहल या जिज्ञासा निर्माण करता है तो वह शैली अवश्य उच्च समाचार लेखन शैली कही जायेगी।

'समाचार -लेखन' मे विशिष्ट संख्या आंकड़ो में न लिखकर शब्दों में लिखना आवश्यक है। जैसे, (१, २) नहीं एक, दोन संक्षिप्त नामों का जिक्र नहीं करना चाहिए। 'प्रधानमंत्री नमो' लिखने से अधिक उचित है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लिखना। इस तरह की भाषा शैली से पाठको की कोई भी समस्या नही होगी। 'समाचार-लेखन', ही का मुख्य उद्देश्य और वस्तुस्थिति स्पष्ट हो जाती है।

६.५ 'समाचार-लेखन' की विशेषताएँ

१) 'समाचार-लेखन' में यथास्थिति के सच्चाई को रोचकता के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

२) 'समाचार-लेखन' की शुरूआत आकर्षक शीर्षक से होनी चाहिए। शीर्षक में संपूर्ण समाचार को समझने की कला होनी चाहिए।

३) 'समाचार-लेखन' के विवरण में महत्वपूर्ण बातों काही जिक्र होना चाहिए। अवांतर बातों को टालना जरूरी है।

४) 'समाचार-लेखन' भी भाषा सीधी, सरल, आसाना होनी चाहिए।

५) समाचार-लेखन में कठिन, अपरिचित एवं अनजान भाषा के शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

६) 'समाचार-लेखन' अत्यंत प्रभावशाली, सुस्पष्ट, समझने में आसान और संक्षिप्त होना चाहिए।

इस प्रकार से 'समाचार-लेखन' में आकर्षक शीर्षक से लेकर निष्कर्ष तक क्रमबद्ध सोपान रहता है। समग्र नियमों का निर्वाहन करते हुए रोचक एवं कुतूहल से परिपूर्ण समाचार लेखन बहुत ही उपयुक्त होता है।

(ख) समाचार की भाषा:

नित्य नूतन घटना की यथार्थ जानकारी ही समाचार है। हेरंब मिश्र समाचार को चार वर्गों में विभाजित करते हैं।

१) स्थानीय समाचार

२) प्रान्तीय- समाचार

३) समग्र देशज के समाचार

४) अंतरराष्ट्रीय समाचार

समाचार के इन स्तरों में भाषा का प्रभाव समाचार की सफलता को दर्शाता है। प्रत्येक वर्ग की समाचार की भाषा क्षेत्र के अनुरूप होना बहुत जरूरी है। प्रत्येक कोस वाणी बदलने के जैसे ही समाचार के स्थान के अनुसार भाषाई प्रयोग परिवर्तनीय होता हैं। समाचार की भाषा में नवीनता, सत्यता, निकटता, सुरुचिपूर्णता, वैयक्तिकता, विशिष्ट आकार एवं संभावित रहस्यता जरूरी होती है। उपर्युक्त तत्व समाचार की भाषा में अधिक मायने रखते हैं।

मानवी संप्रेषण एवं संचार का प्रमुख माध्यम भाषा ही है। हर व्यक्ति संवेदना, विचार, ज्ञान जिज्ञासा को भाषा के द्वारा ही समझता है। विभिन्न सामाजिक जनसंचार के माध्यमों का प्रमुख आधार केवल भाषा ही है। समाचार-पत्र में मुद्रित शब्द भी भाषा के प्रभाव को प्रकट करते हैं। समाचार में प्रेषित अर्थपूर्ण जानकारी भाषा में ही होती है। समाचार की सफलता एवं असफलता केवल भाषा के प्रयोग पर निर्भर होती है। इसलिए समाचार की भाषा क्षेत्र के या क्षेत्र के अनुसार उचित होनी चाहिए। समाचार में भाषा को व्यावहारिक तथा प्रकार्यक के अनुरूप निरंतर नये रूप में और संरचना में प्रस्तुत करना चाहिए। समाचार में संपादक तथा पत्रकार को साधारण व्यक्ति से लेकर सुधिजन तक के सभी वर्गों के लोगों की रुचि, स्तर का विचार करके भाषा का प्रयोग करना पड़ता है।

समाचार की भाषा का निश्चित मानदंड नहीं हो सकता। समाचार की भाषा में तत्सम और तद्भव शब्दों के साथ-साथ विदेशी शब्दों का प्रयोग स्वीकार्य है। जैसे की समाचार में अब कलम या लेखनी के बजाय पेन का प्रयोग होता है। इमारत के बजाय बिल्डिंग शब्द का प्रयोग होता है। सही सरल भाषा से समाचार की वाक्य रचना अधिक प्रभावी बनती है। आज

इक्कीसवीं सदी की पत्रकारिता में नये परिवर्तित शब्दों की काफी जरूरत है। मोबाईल, इंटरनेट, नेटवर्क, चार्ज, मेमरी, एलईडी, ओटीटी, आदि नये शब्द अब समाचार की भाषा में प्रचलित हुए हैं। समाचार का स्वरूप चाहे सांस्कृतिक हो दार्शनिक हो, धार्मिक हो या राजनीतिक। हर प्रकार के समाचार में उससे संबंधित शब्दों का उपयोग हो रहा है। राजनीति में नमो, सपा, एनसीपी, आदि शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है। मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, विकसित भारत जैसे नये शब्दों से समाचार लिखे जा रहे है।

६.५.१ संप्रेषण तथा संपर्क की भाषा :-

समाचार-पत्रों का कार्य सच्ची जानकारी एवं समझदारी का बहुत अधिक जन-समूह तक पहुंचाना है। इसलिए समाचार की भाषा का आधार जन-समूह के अनुरूप ही होता है। अर्थात जिस क्षेत्र की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली या समझने वाली भाषा हैं उसी भाषा में। कामकाज की भाषा, सृजन की भाषा, विशिष्ट समूह की भाषा सीमित होती है। 'समाचार-लेखन' की भाषा सर्वश्रुत होती है। समाचार की भाषा में विभिन्न रूपों का अविष्कार होता है। इससे अधिक से अधिक जन-समूह और पाठकों तक समाचार पहुंचे और समझ में आये। समाचार की भाषा किसी साधारण की या विशेष की भाषा न होकर सबकी भाषा होती है। जिसमें सबके लिए संदेश होता है। सबकी भाषा ही संप्रेषण एवं संपर्क की भाषा (comman Language) बनती है।

६.५.२ जन-समूह की भाषा :-

समाचार की भाषा का विशिष्ट स्वरूप होता है। इस भाषा के स्वरूप का आधार कम से कम तथा उच्च शिक्षित पाठक है। सीधे कहें तो समाचार को पढ़ने वाला अधिकतर मध्यमवर्ग है। मध्यमवर्गीय जन-समूह की भाषा मानक-भाषा होती है। इसलिए समाचार की भाषा का रूप भी मानक-भाषा जैसा होना अनिवार्य है। समाचार की भाषा और साहित्यिक सृजन की भाषा में काफी अंतर होता है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की भाषा का स्वरूप शिक्षित-अशिक्षित, उच्च, मध्य, एवं निम्न वर्ग के लोगों के लिए एक जैसा समान होता है। समाचार की भाषा इससे पूर्णतः भिन्न होती है।

समाचार-पत्र का भाषिक रूप:

'लिखित भाषा' या मुद्रित भाषा रुप है। इसलिए समाचार में भाषा के साथ-साथ चित्र तथा विभिन्न आकृतियों के द्वारा भाषा को आकर्षक बनाया जाता है। अन्य तकनीकी संचार माध्यमों में 'ध्वनिगुणों' की सहायता से जानकारी रोचक बनायी जाती है। 'समाचार-पत्र' में भाषा 'शब्दगुण' का अधिक प्रयोग होता है। संप्रेषण प्रक्रिया शब्दों के प्रभाव पर ही आधारित होती है। इसलिए 'समाचार-पत्र' की भाषा जनसमूह के अनुकूल या निर्धारित स्वरूप की होती है। -

६.५.३ घटना के अनुकूल :

समाचार में 'अर्थपूर्ण संदेश' सबसे बड़ा-तत्व होता है। घटना के अनुकूल संदेश पहुंचाने का प्रयोजन भाषा पर निर्भर होता है। 'समाचार-पत्र' में ज्ञान तथा सूचना प्रदान करने के साथ-साथ शिक्षा, मनोरंजन, सामाजिक एवं राजनैतिक जागरण का भाव भाषा प्रयोग में होता है।

राष्ट्र प्रेम की भाषा से देश प्रेम का संचार होना स्वाभाविक गुण है। 'समाचार-पत्र' की भाषा उद्देश्यों से अनुकूल जानकारी के प्रयोजन के लिए होती है। भाषा के स्वरूप में समाचार के घटना के अनुरूप भिन्नता स्वाभाविक है।

६.५.४ विधा की भाषा :-

संचार माध्यमों में विभिन्न विधायें होती है। इन विधाओं में आज भी सबसे प्रभावशाली 'समाचार' विधा है। दूरदर्शन, रेडियो, कई मीडिया चैनलों की भाषा एक जैसी नहीं होती है। हर विधा की भाषा का स्वरूप भिन्न है। इसलिए 'समाचार-पत्र' भी संचार माध्यम की सबसे महत्वपूर्ण विधा है जिसकी भाषा अन्य से भिन्न है। भाषा के माध्यम से ही समाचार में विविधता लायी जाती हैं।

६.५.५ समय एवं सीमा की प्राथमिकता :-

समाचार की भाषा का निश्चित काल रहता है। निश्चित समय में संभावित एवं प्रभावित शब्दों में समाचार को लिखना जरूरी होता है। 'समाचार पत्र' में अगर विज्ञापन देना है तो विज्ञापन की सीमा और शब्दों की मर्यादा तय होती है। कुछ सूचनाओं को विशिष्ट अवधि में ही प्रेषित करना होता हैं। इसलिए उचित शब्दों का चयन वाक्य विधान का सही रूपांतरण करना जरूरी होता है। पिछले कुछ घंटों में घटित घटनाओं को ही (सबसे जरूरी एवं महत्वपूर्ण) 'समाचार-पत्र' में स्थान दिया जाता है। इन समाचारों का स्थान, समय एवं शब्द मर्यादा विहित नियमों में ही देना पड़ता है। निर्धारित नियमों का प्रभाव समाचार के भाषिक संरचना में होता है। समाचार पत्र में जो अग्रलेख की भाषा होती है वो समाचार की नहीं। अग्रलेख में आलोचना एवं ज्ञान का विवेचन है तो समाचार में संदेश है। भाषा के सब रूप में अंतर तो आयेगा ही इसलिए समाचारपत्र में समय-सीमा के अलावा भाषा को भी महत्व दिया जाता है।

६.५.६ बोधगम्य एवं कलात्मक :-

समाचार में भाषा का बोध होना सबसे अनिवार्य होता है। समाचार की भाषा सबके समझ में आना जितना जरूरी होता है उतनीही उसमें कलात्मकता होना भी। अगर समाचारों के भाषा में बोधगम्यता नहीं है तो समाचार-पत्र का आकर्षण समाप्त होने की संभावना होती है। समाचार में बोधगम्यता के लिए वही शब्दों का क्रमशः प्रयोग होता है, जो आंचल या क्षेत्र में प्रयुक्त होते हैं। जो प्रचलित और संपूर्ण भाषा में सामायिक होते हैं। ऐसे शब्दों के प्रयोग से भाषा में कलात्मकता एवं लचीलापन आता है। यदि तद्भव एवं नये शब्दों का प्रयोग हो तो उसका बोधार्थ आम शब्द जैसा बन जाए इस तरह से प्रयोग में लाया जाता है। भाषा की बोधगम्यता के लिए सरल, शब्दावली, सहजता, संक्षिप्तता तथा पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। तकनीकी शब्द साक्षर लोगों के लिए दुर्बोध और अर्थ में बाधा निर्माण करने वाले होते है। फिर भी समाचार में इन शब्दों का प्रयोग सावधानी से और कलात्मक रूप से होता है। कृत्रिम एवं बेजोड शब्दों को पत्रकार नजरअंदाज करे तो अधिक बेहतर होता है। इससे बचना ही समाचार की सार्थकता है।

६.५.७ आधुनीक आयामों का अनुकरण :

'समाचार-पत्र' निरंतर नव निर्माण का स्त्रोत रहे हैं। बदलते जीवन परिणामों तथा शैली को समाचारों से रू-ब-रू होना नित्यक्रम बन गया है। समाचार पत्र जनसमूह तक नयी सूचनाओं को एवं गतिविधियों के परिवर्तन की जानकारी पहुंचाते हैं। इस स्थिति में नवनिर्माण से अवगत करने की सशक्त जानकारी भाषा में ही होती हैं। इसलिए समाचारपत्र में नित नये भाषा एवं शब्दों का प्रयोग होता है। इसमें आधुनिक आयामों की सबसे महत्वपूर्ण बात होती है। इस अनुकरण में नये-नये शब्दों को बार-बार दोहराया जाता है। इससे पाठक अभिभूत हो जाते हैं और नये विषयों से परीचित भी।

६.६ फीचर लेखन

इक्कीसवी सदी तक आते-आते मनुष्य ने जमीन से लेकर अंतराल के हर कोना छूने का प्रयास किया है। इस तरह आज की पत्रकारिता भी हर दृष्टीकोण से लबालब हैं। प्रत्येक विषय को छूकर समाचार लिखे जा रहे हैं। पिछले २० साल पूर्व के समाचारों में और आज के समाचार में हर तत्व में परिवर्तन नजर आ रहा है। पहले समाचार में अत्याचार, व्यभिचार अपहरण, लूटमार को अधिक महत्व दिया जाता था। आज समाचारपत्र ने सामाजिक प्रबोधन लोकतंत्र का पक्ष राजनीति जैसे विभिन्न् मुद्दों को निर्धारित किया जाता है। इस श्रृंखला में फीचर लेखन आज समाचारपत्र का प्रमुख अंग बन गया है। फीचर लेखन को पढ़ने वाले पाठकों की संख्या अन्य की तुलना में अधिक है।

फीचर लेखन विविध विषयों के रूप को समाचार-पत्र आकर्षक बना रहा है। विशेषत: प्रासंगिक कई विषयों में फीचर लेखन हो रहा है। 'समाचार के मध्य फीचर शब्द' आज बहुत लोकप्रिय हैं। ब्रेननिकोलस ने "फीचर्स" को समाचार पत्र की आत्मा कहा हैं।

इस समय फीचर लेखन से विभिन्न विषयों में समाचार-पत्र के विशेषांक सज रहे हैं। बहुआयामी फीचर लेखन हो रहा है। वास्तूशास्त्र से लेकर फैशन डिजाइन तक और करियर से लेकर अर्थनीति तक के विषयों में फीचर लेखन हो रहा है। फीचर शब्द लॅटीन के 'factura' से बना है। डॉ. राजीव भानावत के फिचर वस्तुतः भावनाओं का सरस मधुर और अनुभूतीपूर्ण वर्णन है। अर्थात फिचर लेखन में सबसे महत्वपूर्ण ...... है तो पाठकों की भावनाओं का। फीचर लेखन केवल मात्र जानकारी नहीं है बल्कि अतीत से लेकर भविष्य के संभावनाओं का दिशा निर्देशन है।

६.६.१ फीचर लेखन की परिभाषा :-

१) डॉ. विवेकीराय

"वह समाचारों अथवा सूचनाओं का वैचारिक कोण से स्वस्थ्य दृष्टिकोण है। वह पत्रकार द्वारा सम्पन्न ऐसा साहित्यिक कार्य है जो सृजनात्मक मूल्यों से जुड़ा होता है| फीचर में सूचनात्मकता से भावनात्मकता का पुट देकर ऐसा प्रस्तुत किया जाता है कि मुख्य तथ्य की विश्वसनीयता और पुष्ट होती चलती है।"

२) डॉ. हरिमोहन:

'यह विधा सर्जनात्मक साहित्य की तरह घटनाओं के स्थितियों के पार की संवेदना को उभारती है, अपने लालित्य के कारण पाठक को आकर्षित करती है, विचारों-भाव के संयोजन से नया संचार रचती है; उद्वेलित, आनंद, प्रेरित करती है, सूचना देती है। इसलिए फीचर लेखन को किसी सीमा में नहीं बांधा जा सकता । इस विधा के लिए कच्चा माल हर कहीं उपलब्ध रहता है। यह एकांत में बैठकर लिखने की चीज नहीं है, अपितु इसके लिए बाहर निकलना पड़ता है, स्थितियों से टकराना पडता है। न यह तुरंत-फुरत का लेखन है न समाचारों की तरह चटपटा या नीरस सूचनात्मक गद्यखंड। दूसरी ओर न साहित्य की तरह केवल मनोरंजक, कल्पनात्मक, रसात्मक या प्रज्ञात्मक अपितु दोनों क्षेत्रों का संतुलित समायोजन फीचर में निहित रहता है। इसलिए फीचर लेखन लेखक के लिए एक शक्ति-परिक्षण से कम नहीं होता।''

३) डेनियल आर. विलियमसन :

''फीचर दरअसल अभिव्यक्ति ऐसा रूप हो जिसमें ज्ञान, कल्पना; यथार्थ, घटनाओं, चमत्कार, कोतूहल, समस्या आदि सभी कुछ भावना - प्रधान एवं रसमय गद्य में बना रहता है। दृश्यात्मकता इसका एक आवश्यक गुण हैं। यानी फीचर पढ़ते समय पाठक के सामने उस लोकल की एक तस्वीर भी उभर आए।"

४) अनिल सिन्हा के अनुसार :

फीचर शब्द से ही ध्वनित होता है कि किसी भी विषयवस्तु के बारे में सजीव चित्रण जो सकारात्मक उत्तेजना पैदा करें। इसलिए अखबारों में फोटो फीचर का चलन शुरू हुआ। एक किसी घटना विशेष की तस्वीरें उसके परिचय के साथ छापकर उस घटना का पूरा रूप व तथ्य पाठकों के सामने उपस्थित कर दिया जाता है। भूकंप के समय की तबाही के कई चित्र अगर चित्र परिचय के साथ छाप दिए जाए तो भूकंप जैसी भयावह घटना का पूरा संदर्भ, आदि स्पष्ट हो जाएगा।''

६.६.२ फीचर लेखन का स्वरूप:

निम्न परिभाषाओं के माध्यम से हम फीचर लेखन को समझते हैं? फीचर लेखन जन समूह के मनोरंजन एवं आत्मीयता का विषय बना है। इसी दृष्टिकोण से आज फीचर लेखन लिखा जा रहा है। यह मानना गलत नहीं होगा कि फीचर लेखन एक विधा बन गयी है। फीचर लेखन का अपना स्थान निश्चित एवं महत्वपूर्ण बन गया है। फीचर लेखन का स्वरूप महत्व, आशय एवं नियमितता सुस्पष्ट एवं प्रभावी बना है। समाचार - पत्र जैसे ही हाथ में आता है पाठक सब से पहले फीचर अर्थात संवाद लेखन को देखते है। संवाद, पढ़ते ही रूचि के अनुरूप फीचर के संपूर्ण लेखन को भी फुरसत से पठन करते हैं।

अक्सर फीचर फुरसत से और खाली समय में अधिकांध पढ़े जाते हैं। फीचर- लेखन में जानकारी, सत्यता एवं निर्देशन जितना महत्त्वपूर्ण है उतनी ही रोचकता भी जरुरी है। फीचर-लेखन का आकार निश्चित नहीं होता। पाँच-आठ सौ शब्दों में भी फीचर प्रभावी हो सकता है और किसी पत्रिका में प्रकाशित तीन- चार हजार शब्द में भी। फीचर नयी घटना पर

आधारित होता है तो पाठको की रूचि अधिक होती है। पौराणिक घटना पर आधारित फीचर लेखन में लेखक को रोचकता पर ध्यान देना जरूरी होता है। फीचर लेखन की शैली या तरीका अनन्य हो सकता है। किंतु उद्देश्य मात्र शैली या कथा के अनुरूप होनी चाहिए। फीचर- लेखन में जानकारी जितनी जरुरी है उतना ही लेखक का स्वयं ज्ञान, अनुभव भी। अपने अनुभव और ज्ञान के माध्यम से लेखक फीचर लेखन का स्वरूप अधिक से अधिक मौलिक एवं नया बना सकता है।

फीचर आकर्षक और सुगठित होना चाहिए। शुरुआत नयेपन से होनी चाहिए। फीचर- लेखन में परिचय न के बराबर होता हैं। अगर आप किसी पौराणिक घटना पर आधारित कहानी सुना रहे है तो आपकी शुरूआत क्या हो सकती है? इसी सवाल की रोचकता ही फीचर-लेखन की सफलता है। फीचर के शुरू का कथा-सार प्रभावी होना चाहिए जिससे पाठक की रूची अंत तक बनी रहे। जैसे उदाहरण के लिए- 'कोविड २०२० के बाद भारत की नयी उड़ान इस शीर्षक में पाठक अंत तक नये उडान की रूचि से बनकर रहे।

फीचर- लेखन में संक्षिप्तता या काट-छाँट नहीं होती। अगर फीचर लेखन में काट छांट की जाती है तो वह सफल फीचर लेखन नही होगा। इसलिए फीचर-लेखन का स्वरूप अक्सर घटना पर आधारित होता हैं। लेखक घटना या कहानी के अनुसार शैली का उपयोग करता है। इन शैलियों में कथा शैली, कथोपकथन शैली, जासूसी कथा शैली वर्णनात्मक शैली या अन्य किसी विकसित शैली का भी उपयोग कर सकता है। फीचर कहानी या गल्प नही है इसलिए लेखक से उम्मीद होती है कि वो केवल तथ्यों के संकल न पर ही जोर दे। फीचर न ही निवेदन है और न ही कोई रिपोर्ट। फीचर में उदात्तता और उपदेश होना चाहिए जो की आराम से और खाली समय में पढ़े जायें। फीचर-लेखन में संवदेना, भाव एवं कान्ता सम्मत शैली का प्रभाव होना अनिवार्य है। निबंध लेखन के अनुरूप सभी प्रभावी शैलियों का बराबर उपयोग होना जरूरी है। अलंकारो का सीधा एवं सरल उपयोग होना चाहिए। संज्ञा, क्रिया और विशेषणों का सीधा प्रयोग होना चाहिए। इससे पाठक को घटना- विषय के प्रति कभी अवरोध निर्माण न हो सके सशक्त एवं सुनियोजित क्रियापदों का उपयोग फीचर लेखन की महत्ता को अधोरेखित करता है। इसमें फीचर की प्रभावीशक्ति का संचार होता है। अनेकानेक पर्यायी शब्दों का क्रियापदों का उपयोग करना महत्वपूर्ण है। वाक्यों के दरम्यान मुहावरों का उपयोग प्रभावी होता है। स्पष्ट रूप से संज्ञा या विशेषण का उपयोग करने से उपर्युक्त व्यक्ति जीव, जगह, स्थान की जानकारी आसान होती है। इन बातों से अर्थपूर्ण एवं महत्वपूर्ण विश्लेषण व्यक्त हो जाता है। अलंकार मुहावरो, लोकोक्तियों उपमाओं के साथ-साथ नये शब्दों का निरंतर प्रयोग करना अत्यंत जरूरी है।

अर्थहीन एवं रट्टा मार लेखन से पाठक उत्साहित नहीं होता | निरस्त या बेकार शब्द का उपयोग करने से पाठक जैसे- तैसे जबरदस्ती में पढ़ने की कोशिश करता है। इसलिए फीचर में घूमा-फिराकर बात करने से बेहतर है सीधे एवं सरल रूप में बात करे। वाक्य छोटे और अर्थपूर्ण हो। नाटकीयता एवं उत्सुकता आवश्य हो लेकिन आवंतरता और घुमाव नहीं होना चाहिए। अगर फीचर में घूमाव एवं आवंतरता होती है तो पाठक उत्साहहीन होकर ऊब जाता है। सुस्पष्टता एवं क्रमान्वय के बगैर पाठक के मन में कौतूहल नहीं जगता। फीचर- लेखन ऐसा हो कि पाठक के सामने घटना, कथा, विषय का आशय साफ उभरे। फीचर लेखन में

गति और ताल होना चाहिए। ताल और गति में भी विविधता के साथ-साथ सुस्पष्टता होनी चाहिए।

फीचर लेखन में सबसे जरूरी अगर है तो वह है पाठक एवं लेखन संवाद की एकरूपता। लेखक का संयम है सटीक क्रम एवं उचित संवाद से घटना के उद्देश्य को बरकरार रखना। व्यक्तियों के अनुभवो, सुझावों और उनके जीवन की घटनाओं से वह फीचर - लेखन जीवंत बनाता है। फीचर लेखन में मध्यम वचनी पुरुष का (तुम प्रयोग करना बेहद फायदेमंद है। कर्ता, कर्मनय, या दर्शक की तरह जोड़ना जरूरी है। स्थिति, व्यक्ति, आँकडे, और चित्र से फीचर - लेखन को मूर्तरूप प्रदान करने का प्रयास होना चाहिए। इससे पाठक लेख पढ़ते समय महसूस करें कि सब कुछ उसके प्रत्यक्ष सामने हो रहा है। फीचर लेखन शुरू से अंत तक एक जैसे समान चक्के की तरह होना चाहिए। जिससे जब भी वो चले तो चक्के जैसी समानता हो। मतलब यह है कि आपका निष्कर्ष आलेख में शुरुआत से संबद्ध हो।

हमारे देश में फीचर- लेखन के विषयों के लिए कोई कमी नहीं है। भारत देश का सांस्कृतिक गौरव, इतिहास, पुराण वेद, आयुर्वेद अनेक पौराणिक ग्रंथ आदि विषय महत्वपूर्ण है। किसान, नेता, आदिवासी जीवन आदि विषय भी महत्वपूर्ण है। इन विषयों को फीचर- लेखन में तब्दील करने का सामर्थ्य होना चाहिए। यदि किसी घटना के पर्दे के पीछे पहुंच सके तो निश्चय ही वह अच्छा फीचर लेखन हो सकता है। प्रत्येक असाधारण घटना एवं कहानी पर एक उत्तम फीचर लेखन बन सकता है। यह तभी सफल है जब फीचर लेखक प्रत्येक विषय में अपने अनुभव, ज्ञान और प्रतिभा का उपयोग करें। यह फीचर लेखन सफल और सामर्थ्यशील है।

६.६.३ फीचर लेखन के प्रकार:

क) संवाद फीचर:

किसी नये संवाद, कथा-कथन का आधार बनाकर संवाद फीचर-लेखन लिखे जाते हैं। किसी भी नयी घटना के बारे में मात्र थोडी जानकारी होती है इसे फीचर में लिखकर पाठक के जानकारी में वृद्धी की जाती है। उनका मनोरंजन किया जाता है। संवाद फीचर समय के अनुरूप होने के कारण अधिक पसंदीदा होते हैं। संवाद फीचर की जानकारी समाचार-पत्रों संवाद के रूप में प्रकाशित होती है। संवाद फीचर को बनाने में फीचर लेखन की किसी भी ऐसी शैली का उपयोग किया जा सकता है। पाठक के रूचि के अनुरूप लेखक शैली का इस्तेमाल कर सकता है। कोरोना काल के किसी 'कोरोना योद्धा' पर संवाद फीचर लिखे गये है।

ख) व्यक्तिगत फीचर:

व्यक्ति प्रधान फीचर बहुत प्रिय है। लेकिन यह फीचर बनाना कठीन कार्य है। किसी व्यक्ति का संपूर्ण चरित्र व्यक्तिगत फीचर में होता है। उसके गुण-दोषों का जिक्र करना एक लेखक को कठिन तो होता ही है किंतु साधकता एवं संयम के साथ इसे लिखना पढ़ता है। व्यक्तिगत फीचर में उस व्यक्ति के संपूर्ण जानकारी को सत्य रूप में प्राप्त करना पडता है। सगे सम्बन्धियों से लेकर रिश्तेदार तथा मित्रों से मिलना होता है। इस घटनाक्रम में उस व्यक्ति का महत्व और कार्य समाज के लिए महत्वपूर्ण है। इसे ध्यान में रखकर ही लेखन करना

पड़ता है व्यक्ति को काम करते दिखना ही उसका सबसे अच्छा परिचय है। उसके दोषों को ढककर गुणों को स्पष्ट करना जरूरी होता है। व्यक्ति जीवन के उन अनमोल क्षणों को चुने जिससे उसको प्रेरणा मिली हो। व्यक्तिगत फीचर क्यो लिख रहे हैं? यह सबसे पहले स्पष्ट करें। अंततः उस व्यक्ति को आरोपी न बनाकर सच्चे नागरिक के रूप में विश्लेषित करें।

घ) सूचक फीचर:

सूचक फीचर में कल्पना एवं आधार का महत्व नहीं होता इसमें न मनोरंजन होता है और नहीं किसी के कार्य का आवलोकन। केवल सूचक जानकारी देना ही इस फीचर का उद्देश्य होता है। इसे लिखने के लिए आवश्यक तथ्य, भेटवार्ता, ग्रंथालय आदि से जानकारी प्राप्त की जाती है। इसमें मन जैसी बातें या आशावाद नही होता। केवल अर्थता एवं प्रामाणिक तथ्य ही हो।

ग) विशिष्टता आधारित फीचर:

इस विषय के फीचर का स्वरूप साधारणतः भेंटवार्ता शैली के होते हैं। यह फीचर किसी अदभूत अनुभव, असाधारण सफलता, अचानक घटित प्रसंग पर आधारित होते है। तथ्य तथा व्यक्ति का परिचय अतिरंजित नहीं होता है।

घ) चिंतनशील फीचर:

इस फीचर में किसी घटित विषय, न्याय-अन्याय आदि के बारे में चितंनशील लेख होता है।

च) विचित्र विषयानुरूप फीचर :

इस फीचर में अक्सर ताजी घटना का संहार किया जाता है। इस फीचर की शैली प्रभावी होती है। इसमें मनोरंजन की अधिक संभावना होती है। यह फीचर अधिक शब्दों के नहीं होते। ऐसे फीचर जीवन, जंतु, व्यक्ति, स्थान, वस्तु आदि के बारे में लिखे जाते हैं? ये फीचर अधिकतर मानवीय सही-गलत की परख पर होते हैं। इस फीचर के लिए निरंतर खोज करनी पड़ती है इस फीचर में पाठक हँसता भी है और रोता भी है। जिस घटना को देखकर सहानुभूति का भाव जागता हो या जो घटना आपको असाधारण जान पड़े वह विचित्र विषय का फीचर बन सकता है। गाय को हुए तीन बछडे,मरा हुआ जिंदा मनुष्य, जन्में हुए बच्चे का १५ किलो वजन, 'गाँव का पहला टेलिफोन झोपड़ी में, आदि विषय फीचर के हो सकते है।

नगर, नदी, पहाड़, आभूषण, परिधान, आदि से लेकर पर्यावरण तक विषय हो सकते है। अंततः फीचर लिखते समय लेखक को नियत संहिता में लिखना अनिवार्य है। इससे पाठक की मन:स्थिति विचलित न हो जाए। कथोपकथान कोई घटना, नया विषय, ऐतिहासिक घटना के क्रमानुरूप संकेत करें। किसी अच्छे गजल, कविता या मुहावरे से शुरुआत करें। घटना से संबंधित पात्रों को उधृत करे।

फीचर की कई बातें पाठक को सोचने पर मजबूर करे किंतु अंत में उसे भी सुलझाये। ज्यादा अधिक लंबा न खीचे, अनावश्यक बाते न जोड़े। उपदेशक नहीं, निर्देशक बने। अधिक भावुकता का प्रदर्शन न करके सत्यता और संयम पर जोर देकर फीचर रोचक बनाये। यही सफल फीचर लेखन की प्रविधि है।

६.६.४ फीचर लेखन की विशेषताएँ:

१) फीचर - लेखन मनोरंजक होना चाहिए

२) फीचर - लेखन में ज्ञान होना चाहिए।

३) फीचर- लेखन में मनुष्य के हित की आवधारणा हो ।

४) फीचर-लेखन में रोचक एवं विचित्रता का होना चाहिए।

५) फीचर -लेखन तथ्य और अर्थपूर्ण चाहिए।

६) कल्पना के साथ-साथ भावात्मकता भी होनी चाहिए।

७) फीचर लेखन की कला अविश्वसनीय होनी चाहिए।

८) फीचर लेखन अधिक विस्तृत एवं घिसा-पिटा न हो

९) तर्कसंगत एवं गतिशिलता की शैली अनिवार्य है

१०) सबसे महत्वपूर्ण फीचर लेखन में ज्ञान एवं भावना और साथ ही संवेदना जगाने की कला जरूरी है।

६.७ सारांश

समाचार-लेखन आज हर व्यक्ति के जीवन का अनिवार्य अंग बना है। 'समाचार आज लगभग हर व्यक्ति की जरूरत बनी है।' समाचार लेखन हा आज एक उमदी कला बनी है। जिसमें मनुष्य - जीवन से जुड़े घर घटना समय, परिवर्तनीय विषय की जानकारी दी जाती है। क्योंकि समाचार पढ़ने वाले को कोई संशय मन में न रहे। समाचार आज व्यक्ति जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। जिसे पढ़कर व्यक्ति सजग, सहज और ज्ञानवर्धक बन जाता है। हमारे जीवन से जुड़े हर बातों को हम समाचार- लेखन के माध्यम से समझ सकते हैं। जैसे पर्यावरण - समाचार, राजनीति- समाचार, खेल-समाचार, क्षेत्रीय समाचार, राज्य-समाचार, राष्ट्र - समाचार और देश विदेश समाचार आदि।

समाचार - लेखन के अलावा फीचर लेखन भी बहुत महत्वपूर्ण है। फीचर लेखन के द्वारा लुप्त एवं छूटे हुए विषयों पर प्रकाश डाला जाता है। फीचर - लेखन ही पाठकों की जरूरत बना है। फिचर लेखन में पाठकों की रुची निरंतर बढ़ती जा रही है।

६.८ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१) समाचार का अर्थ स्पष्ट करते हुए स्वरूप का विवेचन कीजिए।

२) समाचार की भाषा शैली एवं तत्व को स्पष्ट कीजिए।

३) समाचार के प्रकार लिखिए।

४) समाचार-लेखन का स्वरूप स्पष्ट कीजिए

५) जनसंचार माध्यम या मीडिया की भाषा विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

६) फीचर लेखन के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

७) फीचर लेखन के प्रकार की स्पष्ट कीजिए।

८) फीचर- लेखन एक कला है स्पष्ट कीजिए।

६.९ लघुत्तरीय प्रश्न

१) इन्टरनेट के कारण समाचार मिलने के कौन-कौनसे साधन प्राप्त हुए है?

उत्तर : मोबाईल, ई-मेल, इंस्टाग्राम, फॅक्स, व्हाट्सअप, ट्वीटर आदि।

२) NEWS शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तर : N - नार्थ, E - ईस्ट, W - वेस्ट, S - साउथ |

३) किसने कहा है कि 'समाचार जल्दी से लिखा गया इतिहास है'?

उत्तर : जार्ज एच. मोरीस|

४) समाचार किस भाव से लिखे जाने चाहिए?

उत्तर: समाचार निड़रता के भाव से लिखे जाने चाहिए|

५) समाचार लेखन की भाषा कैसी होनी चाहिए?

उत्तर : समाचार लेखन की भाषा सीधी, सरल, आसान होनी चाहिए।

६.१० संदर्भ सूचि

१) जनसंचार और पत्रकारिता विविध आयाम- डॉ. ओमप्रकाश शर्मा

२) हिंदी पत्रकारिता : सरल परिचय - डॉ. मीना राजपूत

३) जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता - डॉ. अर्जुन तिवारी

४) प्रयोजनमूलक हिन्दी सिद्धान्त और प्रयोग-दंगल झाले

५) जनसंचार माध्यम एवं पत्रकारिता - प्रेमनाथ राय

६) प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका- कैलाश नाथ पाण्डेय

७) मीडिया: समग्र डॉ. अर्जुन तिवारी

*****

७

पत्रकारिता के प्रकार

इकाई की रुपरेखा

७.१ इकाई का उद्देश्य

७.२ प्रस्तावना

७.३ पत्रकारिता के प्रकार

७.३.१ खोजी पत्रकारिता

७.३.२ वाचडॉग पत्रकारिता

७.३.३ एडवोकेसी पत्रकारिता

७.३.४ पीत पत्रकारिता

७.३.५ पेज थ्री पत्रकारिता

७.३.६ खेल पत्रकारिता

७.३.७ महिला पत्रकारिता

७.३.८ बाल पत्रकारिता

७.३.९ आर्थिक पत्रकारिता

७.३.१० रेडियो पत्रकारिता

७.३.११ व्याख्यात्मक पत्रकारिता

७.३.१२ विकास पत्रकारिता

७.३.१३ संसदीय पत्रकारिता

७.३.१४ टेलीविजन पत्रकारिता

७.३.१५ विधि पत्रकारिता

७.३.१६ फोटो पत्रकारिता

७.३.१७ विज्ञान पत्रकारिता

७.३.१८ शैक्षिक पत्रकारिता

७.३.१९ सांस्कृतिक-साहित्यिक पत्रकारिता

७.३.२० अपराध पत्रकारिता

७.३.२१ राजनैतिक पत्रकारिता

७.४ सारांश

७.५ लघुत्तरी प्रश्न

७.६ दीर्घोत्तरी प्रश्न

७.७ संदर्भ ग्रन्थ

७.१ इकाई का उद्देश्य

- इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे:
- पत्रकारिता के प्रकारों को भली भाँति समझ सकेंगे

७.२ प्रस्तावना

संसार में पत्रकारिता का इतिहास बहुत पुराना नहीं है लेकिन इक्कीसवीं सदी शताब्दी में यह एक ऐसा सशक्त विषय के रूप में उभरा है जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती है| आज इसका क्षेत्र बहुत व्यापक हो चुका है और विविधता भी लिए हुए है| शायद ही कोई क्षेत्र बचा हो जिसमें पत्रकारिता की उपादेयता को सिद्ध न किया जा सके| इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि आधुनिक युग में जितने भी क्षेत्र हैं, सब के सब पत्रकारिता के भी क्षेत्र हैं, चाहे वह राजनीति हो या कार्यालय, विज्ञान हो प्रौद्योगिकी हो या शिक्षा, साहित्य हो या संस्कृति, खेल हो या अपराध, विकास हो या कृषि या गाँव, महिला हो बाल विकास हो या समाज, पर्यावरण हो या अन्तरिक्ष खोज| इन सभी क्षेत्रों में पत्रकारिता की महत्ता एवं उपादेयता को सहज ही महसूस किया जा सकता है| दूसरी बात यह है कि लोकतंत्र में इसे चौथा स्तंभ भी कहा जाता है| इस तरह से पत्रकारिता की पहुँच हर क्षेत्र में हो जाती है| इस बहुआयामी पत्रकारिता के कितने प्रकार हैं उस पर आगे विस्तृत रूप से आगे चर्चा की जाएगी|

७.३.१ खोजी पत्रकारिता:

खोजी पत्रकारिता वह है जिसमें आमतौर पर सार्वजनिक महत्त्व के मामले जैसे भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों की गहराई से छानबीन कर सामने लाने की कोशिश की जाती है| स्टिंग ऑपरेशन खोजी पत्रकारिता का ही एक नया रूप है| खोजपरक पत्रकारिता भारत में अभी भी अपने शैशवकाल में है| इस तरह की पत्रकारिता में ऐसे तथ्य जुटाकर सामने लाये जाते हैं जिन्हें आमतौर पर सार्वजनिक नहीं किया जाता है| लेकिन एक ऐसा भी वर्ग है जो यह मानता है कि खोजपरक पत्रकारिता कुछ है ही नहीं क्योंकि कोई भी समाचार खोजी दृष्टि के बगैर लिखा ही नहीं जा सकता है| लोकतंत्र में जब ज़रूरत से ज्यादा गोपनीयता बरती जाने लगे और भ्रष्टाचार चरम पर हो तो खोजी पत्रकारिता ही उसे सामने लाने का एकमात्र विकल्प होती है|

खोजी पत्रकारिता से जुड़ी पुरानी घटनाओं पर नज़र डालें तो माई लार्ड काण्ड, वाटरगेट काण्ड, एंडरसन का पेंटागन पेपर्स जैसे अंतर्राष्ट्रीय काण्ड तथा सीमेंट घोटाला काण्ड, बोफोर्स कांड, ताबूत घोटाला काण्ड जैसे राष्ट्रीय घोटाले खोजी पत्रकारिता के चर्चित उदहारण हैं| संचार क्रान्ति, इन्टरनेट या सूचना अधिकार जैसे प्रभावशाली अस्त्र अस्तित्त्व

में आने के बाद तो घोटाले उजागर होने का जैसे दौर ही शुरू हो गया| इसका परिणाम यह है कि पिछले दिनों 2जी स्पेक्ट्रम घोटाला,, कॉमनवेल्थ गेम घोटाला, आदर्श घोटाला आदि उल्लेखनीय हैं| समाज की भलाई के लिए खोजी पत्रकारिता अवश्य एक अंग है लेकिन इसे भी मर्यादित ही होना चाहिए|

७.३.२ वाचडॉग पत्रकारिता:

लोकतंत्र में पत्रकारिता को चौथा स्तंभ माना गया है| इस लिहाज से इसका मुख्य कार्य सरकार के कामकाज पर निगाह रखना है और कहीं भी कोई गड़बड़ी हो तो उसका पर्दाफाश करना है| इसे परंपरागत रूप से वाचडॉग पत्रकारिता कहा जा सकता है| दूसरी ओर सरकारी सूत्रों पर आधारित पत्रकारिता है| इसके तहत मीडिया केवल वही समाचार देता है जो सरकार चाहती है और अपने आलोचनात्मक पक्ष का परित्याग कर देता है| इन दो बिन्दुओं के तालमेल के माध्यम से ही मीडिया और इसके तहत काम करने वाले विभिन्न समाचार संगठनों की पत्रकारिता का निर्धारण होता है|

७.३.३ एडवोकेसी पत्रकारिता:

एडवोकेसी अर्थात पैरवी करना| किसी ख़ास मुद्दे या विचारधारा के पक्ष में जनमत बनाने के लिए लगातार अभियान चलाने वाली पत्रकारिता को एडवोकेसी पत्रकारिता कहा जाता है| मीडिया व्यवस्था का ही एक अंग है, और उस व्यवस्था के साथ तालमेल बिठाकर चलने वाली मीडिया को मुख्यधारा मीडिया कहा जाता है| दूसरी ओर कुछ ऐसी वैकल्पिक सोच रखने वाले मीडिया होते हैं जो किसी विचारधारा या किसी ख़ास उद्देश्य की पूर्ति के लिए निकाले जाते हैं| इस तरह की पत्रकारिता को एडवोकेसी अर्थात पैरवी पत्रकारिता कहा जाता है | जैसे राष्ट्रीय विचारधारा, धार्मिक विचारधारा से जुड़ी पत्र पत्रिकाएँ |

७.३.४ पीत पत्रकारिता:

पाठकों को लुभाने के लिए झूठी अफवाहों, आरोपों, प्रत्यारोपों, प्रेम संबंधों आदि से संबंधित सनसनीखेज समाचारों से संबंधित पत्रकारिता को पीत पत्रकारिता कहा जाता है| इसमें सही समाचारों की उपेक्षा करके सनसनी फैलाने वाले समाचार या ध्यान आकृष्ट करने वाले शीर्षकों का बहुतायत में प्रयोग किया जाता है| इसे समाचार पत्रों की बिक्री बढ़ाने, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की टी आर पि बढ़ाने का घटिया तरीका माना जाता है| इसमें किसी समाचार खासकर ऐसे सार्वजनिक क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति द्वारा किया गया कुछ आपत्तिजनक कार्य, घोटाले आदि को बढ़ा-चढ़ाकर सनसनी बनाया जाता है| इसके अलावा पत्रकार द्वारा अव्यावसायिक तरीके भी अपनाए जाते हैं|

७.३.५ पेज थ्री पत्रकारिता:

पेज थ्री पत्रकारिता उसे कहते हैं जिसमें फैशन, अमीरों की पार्टियों, महिलाओं और जाने-माने वाले लोगों के निजी जीवन के बारे में विस्तार पूर्वक बताया जाता है|

७.३.६ खेल पत्रकारिता:

खेल से जुडी पत्रकारिता को खेल पत्रकारिता कहा जाता है| खेल आधुनिक हों या प्राचीन खेलों में होने वाले अद्भुत कारनामों को जग जाहिर करने तथा उसका व्यापक प्रचार-प्रसार करने में खेल पत्रकारिता का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है | आज पूरी दुनिया में खेल यदि लोकप्रियता के शिखर पर है उसका काफी कुछ श्रेय खेल पत्रकारिता को भी जाता है | खेल केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं बल्कि अच्छे स्वास्थ्य, शारीरिक दमखम और बौद्धिक क्षमता का भी प्रतीक है | यही कारण है कि पूरी दुनिया में अत्यंत ही प्राचीनकाल से ही खेलों का प्रचलन रहा है| आज आधुनिक काल में प्राचीन खेलों के अलावा इनसे मिलते-जुलते खेलों तथा अन्य आधुनिक स्पर्धात्मक खेलों ने पूरी दुनिया में अपना वर्चस्व कायम रखा है| आज स्थिति यह है कि समाचार पत्र तथा पत्रिकाओं के अलावा किसी भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का स्वरूप भी तब तक परिपूर्ण नहीं माना जाता जब तक उसमें खेल का भरपूर कवरेज न हो| दूसरी बात यह है कि आज भारत ही नहीं पूरी दुनिया में आबादी का एक बड़ा हिस्सा युवा वर्ग का है जिसकी पहली पसंद विभिन्न खेल स्पर्धाएँ हैं| शायद यही कारण कि पत्र-पत्रिकाओं में अगर सबसे अधिक कोई पन्ने पढ़े जाते हैं तो वह खेल से संबंधित होते हैं| प्रिंट मीडिया के अलावा टी.वी चैनलों का भी एक बड़ा हिस्सा खेल प्रसारण से ही जुड़ा होता है| दूसरी ओर कुछ खेल चैनल हैं जो चौबीसों घंटे कोई न कोई खेल लेकर हाजिर ही रहते हैं| पाठकों और दर्शकों की खेल के प्रति दीवानगी का ही परिणाम है कि खेल की दुनिया में अकूत धन बरस रहा है| आज धन चाहे विज्ञापन के रूप में हो चाहे पुरस्कार राशि के रूप में न तो लुटाने वालों की कमी है और न पाने वालों की| खेलों में धन वर्षा का प्रारंभ कार्पोरेट जगत के इसमें प्रवेश से हुआ है| खेलों में धन की बरसात की कोई बुराई नहीं है लेकिन उसका एक बदसूरत पहलू भी है| खेलों में गलाकाट स्पर्धा के कारण इसमें फिक्सिंग और डोपिंग जैसी बुराइयां न खिलाडियों के हित में हैं न खेलों के| खेल पत्रकारिता की यह जिम्मेदारी है कि वह खेलों में पनप रही उन बुराईयों के खिलाफ लगातार आवाज उठाती रहे| खेल पत्रकारिता से यह अपेक्षा की जाती है कि खेल में खेल भावना की रक्षा हर कीमत पर होनी चाहिए | खेल पत्रकारिता से यह उम्मीद भी की जानी चाहिए कि आम लोगों से जुड़े खेलों को भी उतना ही महत्त्व और प्रोत्साहन मिले जितना अन्य लोकप्रिय खेलों को मिल रहा है |

७.३.७ महिला पत्रकारिता:

स्त्री पुरुष समानता के इस दौर में महिलाएँ अब घर की दहलीज लांघ कर बाहर आ चुकी हैं| प्रायः हर क्षेत्र में महिलाओं की उपस्थिति और भागीदारी नज़र आ रही है| ऐसे में पत्रकारिता के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी भी देखी जाने लगी है| दूसरी बात यह है कि शिक्षा ने महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाया है अब महिलाएं भी अपने करियर के प्रति सचेत हैं महिला जागरण के साथ-साथ महिलाओं के प्रति अत्याचार और अपराध के मामले भी बड़े हैं महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बहुत सारे कानून बने हैं महिलाओं का सामाजिक सुरक्षा दिलाने में महिला पत्रकारिता की अहम भूमिका रही है आज महिला पत्रकारिता की अलग से जरूरत ही इसीलिए है कि उसमें महिलाओं से जुड़े हर पहलू पर गौर किया जाए और महिलाओं के सर्वांगीण विकास में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके|

वर्तमान दौर में राजनीति, प्रशासन, सेना, शिक्षण, चिकित्सा, विज्ञान, तकनीकी, उद्योग, व्यापार, समाजसेवा आदि सभी क्षेत्रों में महिलाओं ने अपनी प्रतिभा और दक्षता के बलबूते अपनी राह खुद बनाई है। कई क्षेत्रों में तो कड़ी स्पर्धा और चुनौती के बावजूद महिलाओं ने अपना शीर्ष मुकाम बनाया है। विकास के निरंतर तेज गति से बदलते दौर ने महिलाओं को प्रगति का समान अवसर प्रदान किया लेकिन पुरुषों की तुलना में अपनी प्रतिभा और लगन के बलबूते पर समाज के हर क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ने का जो सिलसिला शुरू किया है वह लगातार जारी है। इसका उदाहरण भारत की इंदिरा नूई. नैना किदवाई, चंदा कोचर, नंदिनी भट्टाचार्य, साक्षी मलिक, पीवी सिंधु आदि के रूप में देखा जा सकता है। आज के दौर में कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं जहां महिलाओं की उपस्थिति महसूस नहीं की जा रही हो। ऐसे में पत्रकारिता भी कहां पिछे रहेगी। मृणाल पांडे, विमला पाटील, बरखा दत्त, सीमा मुस्तफा, तवलीन सिंह, मीनल बहोल, सत्य शरण, दीना वकील, सुनीता ऐरन, कुमुद संघवी चावरे, स्वेता सिंह, पूर्णिमा मिश्रा, मीमांसा मल्लिक, अंजना ओम कश्यप, नेहा बाथम, मिनाक्षी कंडवाल आदि महिला पत्रकारों के आने से देश के हर लडकी को अपने जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिल रही है। महिला पत्रकारिता की सार्थकता महिला सशक्तिकरण से जुडी है, क्योंकि नारी स्वातंत्र्य और समानता के इस युग में भी आधी दुनिया से जुड़ ऐसे अनेक पहलू हैं जिनके महत्व को देखते हुए महिला पत्रकारिता की अलग विधा की जरूरत महसूस की जा रही है।

७.३.८ बाल पत्रकारिता:

एक समय था जब बच्चों को परीकथाओं, लोककथाओं, पौराणिक, ऐतिहासिक, धार्मिक कथाओं के माध्यम से बहलाने फुसलाने के साथ साथ उनका ज्ञानवर्धन किया जाता था। इन कथाओं का बच्चों के चारित्रिक विकास पर भी गहरा प्रभाव होता था। लेकिन आज संचार क्रांति के इस युग में बच्चों के लिए सूचनातंत्र काफी विस्तृत और अनंत हो गया है। कंप्यूटर और इंटरनेट तक पहुंच ने उनके बाल मन स्वभाव के अनुसार जिज्ञासा को असीमित बना दिया है। ऐसे में इस बात की आशंका और गुंजाइश बनी रहती है कि बच्चों तक वे सूचनाएं भी पहुंच सकती है जिससे उनके बालमन के भटकाव या विकृती भी संभव है। ऐसी स्थिति में बाल पत्रकारिता की सार्थक सोच बच्चों को सही दिशा की ओर अग्रसर कर सकती है। क्योंकि बाल मन स्वभावतरू जिज्ञासु और सरल होता है। जीवन की यह वह अवस्था है जिसमें बच्चा अपने माता पिता, शिक्षक और चारों तरफ के परिवेश से ही सीखता है। बच्चे पर किसी भी घटना या सूचना की अमिट छाप पड़ती है। बच्चे के आसपास का परिवेश उसके व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ऐसे में उसे सही दिशा दिखाना का काम पत्रकारिता ही कर सकता है। इसलिए बाल पत्रकारिता की महसूस की जाती है।

७.३.९ आर्थिक पत्रकारिता:

आर्थिक पत्रकारिता में व्यक्तियों, संस्थानों, राज्यों या देशों के बीच होनेवाले आर्थिक या व्यापारिक संबंध के गुण-दोषों की समीक्षा और विवेचन की जाती है। जिस प्रकार आमतौर पर पत्रकारिता का उद्देश्य किसी भी व्यवस्था के गुण दोषों को व्यापक आधार पर प्रचारित प्रसारित करना है ठीक उसी तरह आर्थिक पत्रकारिता अर्थ व्यवस्था के हर पहलू पर सूक्ष्म

नजर रखते हुए उसका विश्लेषण कर समाज पर पड़नेवाले उसके प्रभावों का प्रचार प्रसार करना होना चाहिए। दूसरी बात यह भी है कि आर्थिक पत्रकारिता को आर्थिक व्यवस्था और उपभेक्ता के बीच सेतू की भूमिका निभानी पड़ती है।

आर्थिक उदारीकरण और विभिन्न देशों के बीच आपसी व्यापारिक संबंधों ने पूरी दुनिया के आर्थिक परिदृश्य को बहुत ही व्यापक बना दिया है। आज किसी भी देश की अर्थ व्यवस्था बहुत कुछ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संबंधों पर निर्भर हो गई है। दुनिया के किसी कोने में मची आर्थिक हलचल या उथल पुथल अन्य देशों की अर्थ व्यवस्था को प्रभावित करने लगी है। सोने और चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं, कच्चे तेल, यूरो, डॉलर, पांड, येन जैसी मुद्राओं की कीमतों में उतार चढ़ाव का प्रभाव पूरी दुनिया पड़ने लगी है। कहने का मतलब यह है कि हर देश अपनी अर्थ व्यवस्थाओं के स्वयं नियामक एवं नियंत्रक हों लेकिन विश्व के आर्थिक हलचलों से अछूते नहीं हैं। पूरा विश्व एक बड़ा बाजार बन गया है। इसलिए उसकी गतिविधियों से देश की अर्थ व्यवस्था निर्धारित होने लगी है। ऐसे में पत्रकारिता एक प्रमुख भूमिका निर्वाह कर रही है। उस पर एक बड़ी जिम्मेदारी है कि विश्व की अर्थ व्यवस्था को प्रभावित करनेवाले विभिन्न कारकों का निरंतर विश्लेषण करने के साथ साथ उसके गुण दोषों के आधार पर एहतियाती उपायों की चर्चा करे। इसमें लेकिन विश्व का आर्थिक परिवेश को जानने समझने की एक बड़ी चुनौती होती है। इयके अलावा कर चोरी, कालाधन और जाली नोट की समस्या को उजागर करना भी एक चुनौती होती है। विकसित और विकासशील देशों में कालाधन सबसे बड़ी चुनौती है। कालाधन भ्रष्टाचार से उपजता है और भ्रष्टाचार को ही बढ़ावा देता है। भ्रष्टाचार देश के विकास में बाधक बनती है। इसलिए आर्थिक पत्रकारिता की जिम्मेदारी है कि कालाधन और आर्थिक अपराधों को उजागर करनेवाली खबरों का व्यापक प्रचार प्रसार करे। दूसरी ओर व्यापार के परंपरागत क्षेत्रों के अलावा रिटेल, बीमा, संचार, विज्ञान एवं तकनीकी व्यापार जैसे आधुनिक क्षेत्रों ने आर्थिक पत्रकारिता को नया आयाम दिया है।

७.३.१० रेडियो पत्रकारिता:

मुद्रण के आविष्कार के बाद संदेश और विचारों को शक्तिशाली और प्रभावी ढंग से अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचना मनुष्य का लक्ष्य बन गया। इसीसे रेडियो का जन्म हुआ। रेडियो के आविष्कार के जरिए आवाज एक ही समय में असंख्य लोगों तक उनके घरों को पहुंचने लगा । इस प्रकार श्रव्य माध्यम के रूप में जनसंचार को रेडियो ने नये आयाम दिए । आगे चलकर रेडियो को सिनेमा और टेलीविजन और इंटरनेट से कड़ी चुनौतियां मिली लेकिन रेडियो अपनी विशिष्टता के कारण आगे बढ़ता गया और आज इसका स्थान सुरक्षित है। रेडियो की विशेषता यह है कि यह सार्वजनिक भी है और व्यक्तिगत भी। रेडियो में लचीलापन है क्योंकि इसे किसी भी स्थान पर किसी भी अवस्था में सुना जा सकता है। दूसरा रोडियो समाचार और सूचना तत्परता से प्रसारित करता है । मौसम संबंधी चेतावनी और प्राकृतिक विपत्तियों के समय रेडियो का यह गुण शक्तिशाली बन पाता है। आज भारत के कोने-कोने में देश की ९७ प्रतिशत जनसंख्या रेडियो सुन पा रही है। रेडियो समाचार ने जहां दिन प्रतिदिन घटित घटनाओं की तुरंत जानकारी का कार्यभार संभाल रखा है वहीं श्रोताओं के विभिन्न वर्गों के लिए विविध कार्यक्रमों की मदद से सूचना और शिक्षा दी जाती है। जैसे युवाओं, महिलाओं, बच्चों, किसान, गृहिणी, विद्यार्थियों के लिए अलग अलग समय

में कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। इस तरह हर वर्ग जोड़े रखने में यह एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरकर सामने आया है।

७.३.११ व्याख्यात्मक पत्रकारिता:

पत्रकारिता केवल घटनाओं की सूचना देना नहीं है। पत्रकार से अपेक्षा की जाती है कि वह घटनाओं की तह तक जाकर उसका अर्थ स्पष्ट करे और आम पाठक को बताए कि उस समाचार का क्या महत्व है। पत्रकार इस महत्व को बताने के लिए विभिन्न प्रकार से उसकी व्याख्या करता है। इसके पीछे क्या कारण है। इसके पीछे कौन था और किसका हाथ है। इसका परिणाम क्या होगा। इसके प्रभाव से क्या होगा आदि की व्याख्या की जाती है। साप्ताहिक पत्रिकाओं, संपादकीय लेखों में इस तरह किसी घटना की जांच पड़ताल कर व्याख्यात्मक समाचार पेश किए जाते हैं। टीवी चैनलों में तो आजकल यह ट्रेंड बन गया है कि किसी भी छोटी सी छोटी घटनाओं के लिए भी विशेषज्ञ पेनल बिठाकर उसकी सकारात्मक एवं नकारात्मक व्याख्या जाने लगी है।

७.३.१२ विकास पत्रकारिता:

लोकतंत्र का मूल उद्देश्य है लोगों के लिए शासन लोगों के द्वारा शासन। इस लोकतंत्र में तीन मुख्य स्तंभ है। इसमें संसदीय व्यवस्था, शासन व्यवस्था एवं कानून व्यववस्था। इन तीनों की निगरानी रखता है चौथा स्तंभ पत्रकारिता। लोकतंत्र का मूल उद्देश्य है लोगों के लिए। शासन द्वारा लोगों का जीवन स्तर सुधारने के लिए सही ढंग से काम किया जा रहा है या नहीं इसका लेखा जोखा पेश करने की जिम्मेदारी मीडिया पर है। इसका खासकर भारत जैसे विकासशील देशों के लिए और भी अहम भूमिका है। देश में शिक्षा, स्वास्थ्य, बेरोजगारी, कृषि एवं किसान, सिंचाई, परिवहन, भूखमरी, जनसंख्या बढ़ने, प्राकृतिक आपदा जैसी समस्याएं हैं। इन समस्याओं से निपटने सरकार द्वारा क्या क्या कदम उठाए जा रहे हैं। कोई योजना बनी तो उसका फायदा लोगों तक पहुंच पा रहा या नहीं या उसे सही ढंग से लागू किया जा रहा है या नहीं उस बारे में पत्रकार विश्लेषण कर समाचार पेश करने से शासक की आंखें खुल सकती है। कहने का तात्पर्य यह कि क्या इन सरकारी योजनओं से देश का विकास हो रहा है या नहीं उसका आकलन करना ही विकास पत्रकारिता का कार्य है। विकास पत्रकारिता के जरिए ही इसमें यथा संभव सुधार लाने का मार्ग प्रशस्त होगा।

७.३.१३ संसदीय पत्रकारिता:

लोकतंत्र में संसदीय व्यवस्था की प्रमुख भूमिका है। संसदीय व्यवस्था के तहत संसद में जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि पहुंचते हैं। बहुमत हासिल करनेवाला शासन करता है तो दूसरा विपक्ष में बैठता है। दोनों की अपनी अपनी अहम भूमिका होती है। इनके द्वारा किए जा रहे कार्य पर नजर रखना पत्रकारिता की अहम जिम्मेदारी है क्योंकि लोकतंत्र में यही एक कड़ी है जो जनता एवं नेता के बीच काम करता है। जनता किसी का चुनाव इसलिए करते हैं तो वह लोगों की सुख सुविधा तथा जीवनस्तर सुधारने में कार्य करे। लेकिन चुना हुआ प्रतिनिधि या सरकार अगर अपने मार्ग पर नहीं चलते हैं तो उसको चेताने का कार्य पत्रकारिता करती है। इनकी गतिविधि, इनके कार्य की निगरानी करने का कार्य पत्रकारिता करती है।

७.३.१४ पत्रकारिता:

समाचार पत्र एवं पत्रिका के बाद श्रव्य माध्यम का विकास हुआ। और इसके बाद श्रव्य दृश्य माध्यम का विकास हुआ। दूर संचार क्रांति में सेटेलाईट, इंटरनेट के विकास के साथ ही इस माध्यम का इतनी तेजी से विकास हुआ कि आज इसके बिना चलना मुश्किल सा हो गया है। इसे मुख्यतः तीन वर्गों में रखा जा सकता है जिसमें सूचना, मनोरंजन और शिक्षा। सूचना में समाचार, सामयिक विषय और जनसंचार उद्घोषणाएं आते हैं। मनोरंजन के क्षेत्र में फिल्मों से संबंधित कार्यक्रम, नाटक, धारावाहिक, नृत्य, संगीत तथा मनोरंजन के विविध कार्यक्रम शामिल हैं। इन कार्यक्रमों का प्रमुख उद्देश्य लोगों का मनोरंजन करना है। शिक्षा क्षेत्र में टेलीविजन की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। पाठ्य सामग्री पर आधारित और सामान्य ज्ञान पर आधारित दो वर्गों में शैक्षिक कार्यक्रमों को बांटा जा सकता है। आज उपग्रह के विकास के साथ ही समाचार चैनलों के बीच गलाकाट प्रतिस्पर्धा चल पड़ी है। इसके चलते छोटी सी छोटी घटनाओं का भी लाइव कवरेज होने लगा है।

७.३.१५ विधि पत्रकारिता:

लोकतंत्र के चार स्तंभ में विधि व्यवस्था की भूमिका महत्वपूर्ण है। नए कानून, उनके अनुपालन और उसके प्रभाव से लोगों को परिचित कराना बहुत ही जरूरी है। कानून व्यवस्था बनाए रखना, अपराधी को सजा देना से लेकर शासन व्यवस्था में अपराध रोकने, लोगों को न्याय प्रदान करना इसका मुख्य कार्य है। इसके लिए निचली अदालत से लेकर उच्च न्यायालय, सर्वोच्च न्यायालय तक व्यवस्था है। इसमें रोजाना कुछ न कुछ महत्वपूर्ण फैसले सुनाए जाते हैं। कई बड़ी बड़ी घटनाओं के निर्णय, उसकी सुनवाई की प्रक्रिया चलती रहती है। इसबारे में लोग जानेन की इच्छुक रहते हैं, क्योंकि कुछ मुकदमें ऐसे होते हैं जिनका प्रभाव समाज, संप्रदाय, प्रदेश एवं देश पर पड़ता है। दूसरी बात यह है कि दबाव के चलते कानून व्यवस्था अपराधी को छोड़कर निर्दोष को सजा तो नहीं दे रही है इसकी निगरानी भी विधि पत्रकारिता करती है।

७.३.१६ फोटो पत्रकारिता:

फोटो पत्रकारिता ने छपाई तकनीक के विकास के साथ ही समाचार पत्रों में अहम स्थान बना लिया है। कहा जाता है कि जो बात हजार शब्दों में लिखकर नहीं की जा सकती है वह एक तस्वीर कह देती है। फोओ टिप्पणियों का असर व्यापक और सीधा होता है। दूसरी बात ऐसी घटना जिसमें सबूत की जरूरत होती है वैसे समाचारों के साथ फोटो के साथ समाचार पेश करने से उसका विश्वसनीयता बढ़ जाती है।

७.३.१७ विज्ञान पत्रकारिता:

इक्कीसवीं शताब्दी को विज्ञान का युग कहा गया है। वर्तमान में विज्ञान ने काफी तरक्की कर ली है। इसकी हर जगह पहुंच हो चली है। विज्ञान में हमारी जीवन शैली को बदलकर रख दिया है। वैज्ञानिकों द्वारा रोजाना नई नई खोज की जा रही है। इसमें कुछ तो जनकल्याणकारी हैं तो कुछ विध्वंसकारी भी है। जैसे परमाणु की खोज से कई बदलाव ला दिया है लेकिन इसका विध्वंसकारी पक्ष भी है। इसे परमाणु बम बनाकर उपयोग करने से विध्वंस होगा। इस तरह विज्ञान पत्रकारिता दोनों पक्षों का विश्लेषण कर उसे पेश करने का

कार्य करता है। जहां विज्ञान के उपयोग से कैसे जीवन शैली में सुधार आ सकता है तो उसका गलत उपयोग से संसार ध्वंस हो सकता है।विज्ञान पत्रकारों को विस्तृत तकनीकी और कभी कभी शब्दजाल को दिलचस्प रिपोर्ट में बदलकर समाचार पाठक दर्शक की समझ के आधार पर प्रस्तुत करना होता है। वैज्ञानिक पत्रकारों को यह निश्चिय करना होगा कि किस वैज्ञानिक घटनाक्रम में विस्तृत सूचना की योग्यता है। साथ ही वैज्ञानिक समुदाय के भीतर होनेवाले विवादों को बिना पक्षपात के और तथ्यों के साथ पेश करना चाहिए।

७.३.१८ शैक्षिक पत्रकारिता:

शिक्षा के बिना कुछ भी कल्पना करना संभव नहीं है। पत्रकारिता सभी नई सूचना को लोगों तक पहुंचाकर ज्ञान में वृद्धि करती है। जब से शिक्षा को औपचारिक बनाया गया है तब से पत्रकारिता का महत्व और बढ़ गया है। जब तक हमें नई सूचना नहीं मिलेगी हमें तब तक अज्ञानता घेर कर रखी रहेगी। उस अज्ञानता को दूर करने का सबसे बड़ा माध्यम है पत्रकारिता। चाहे वह रेडियो हो या टेलीविजन या समाचार पत्र या पत्रिकाएं सभी में नई सूचना हमें प्राप्त होती है जिससे हमें नई शिक्षा मिलती है। एक बात और कि शिक्षित व्यक्ति एक माध्यम में संतुष्ट नहीं होता है। वह अन्य माध्यम को भी देखना चाहता है। यह जिज्ञासा ही पत्रकारिता को बढ़ावा देता है तो पत्रकारिता उसकी जिज्ञासा के अनुरूप शिक्षा एवं ज्ञान प्रदान कर उसकी जिज्ञासा को शांत करने का प्रयास करता है। इसे पहुंचाना ही शैक्षिक पत्रकारिता का कार्य है।

७.३.१९ सांस्कृतिक-साहित्यिक पत्रकारिता:

मनुष्य में कला, संस्कृति एवं साहित्य की भूमिका निर्विवादित है। मनुष्य में छिपी प्रतिभा, कला चाहे वह किसी भी रूप में हो उसे देखने से मन को तृप्ति मिलती है। इसलिए मनुष्य हमेशा नई नई कला, प्रतिभा की खोज में लगा रहता है। इस कला प्रतिभा को उजागर करने का एक सशक्त माध्यम है पत्रकारिता। कला प्रतिभाओं के बारे में जानकारी रखना, उसके बारे में लोगों को पहुंचाने का काम पत्रकारिता करता है। इस सांस्कृतिक साहित्यिक पत्रकारिता के कारण आज कई विलुप्त प्राचीन कला जैसे लोकनृत्य, लोक संगीत, स्थापत्य कला को खोज निकाला गया है और फिर से जीवित हो उठे हैं। दूसरी ओर भारत जैसे विशाल और बहु संस्कृतिवाले देश में सांस्कृतिक साहित्यिक पत्रकारिता के कारण देश की एक अलग पहचान बन गई है। कुछ आंचलिक लोक नृत्य, लोक संगीत एक अंचल से निकलकर देश, दुनिया तक पहचान बना लिया है। समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं प्रारंभ से ही नियमित रूप से सांस्कृतिक साहित्यिक कलम को जगह दी है। इसी तरह चौनलों पर भी सांस्कृतिक, साहित्यिक समाचारों का चलन बढ़ा है।

एक अध्ययन के अनुसार दर्शकों के एक वर्ग ने अपराध व राजनीति के समाचार कार्यक्रमों से कहीं अधिक अपनी संस्कृति से जुड़े समाचारों व समाचार कार्यक्रमों से जुड़ना पसंद किया है। साहित्य व संस्कृति पर उपभेक्तावादी संस्कृति व बाजार का प्रहार देखकर केंद्र व प्रदेश की सरकारें बहुत बड़ा बजट इन्हें संरक्षित करने व प्रचारित प्रसारित करने में खर्च कर रही है। साहित्य एव संस्कृति के नाम पर चलनेवाली बड़ी बड़ी साहित्यिक व सांस्कृतिक संस्थाओं के बीच वाद प्रतिवाद, आरोप-प्रत्यारोप और गुटबाजी ने साहित्य संस्कृति में मसाला समाचारों की संभावनाओं को बहुत बढ़ाया है।

७.३.२० अपराध पत्रकारिता:

राजनीतिक समाचार के बाद अपराध समाचार ही महत्वपूर्ण होते हैं। बहुत से पाठकों व दर्शकों को अपराध समाचार जानने की भूख होती है। इसी भूख को शांत करने के लिए ही समाचारपत्रों व चौनलों में अपराध डायरी, सनसनी, वारदात, क्राइम फाइल जैसे समाचार कार्यक्रम प्रकाशित एवं प्रसारित किए जा रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार किसी समाचार पत्र में लगभग पैंतीस प्रतिशत समाचार अपराध से जुड़े होते हैं। इसी से अपराध पत्रकारिता को बल मिला है। दूसरी बात यह कि अपराधिक घटनाओं का सीधा संबंध व्यक्ति, समाज, संप्रदाय, धर्म और देश से होता है। अपराधिक घटनाओं का प्रभाव व्यापक होता है। यही कारण है कि समाचार संगठन बड़े पाठक दर्शक वर्ग का ख्याल रखते हुए इस पर विशेष फोकस करते हैं।

७.३.२१ राजनैतिक पत्रकारिता:

समाचार पत्रों में सबसे अधिक पढ़े जानेवाले और चैनलों पर सर्वाधिक देखे सुने जानेवाले समाचार राजनीति से जुड़े होते हैं। राजनीति की उठा पटक, लटके झटके, आरोप प्रत्यारोप, रोचक रोमांचक, झूठ-सच, आना जाना आदि से जुड़े समाचार सुर्खियों में होते हैं। राजनीति से जुड़े समाचारों का पूरा का पूरा बाजार विकसित हो चुका है। राजनीतिक समाचारों के बाजार में समाचार पत्र और समाचार चौनल अपने उपभेक्ताओं को रिझाने के लिए नित नये प्रयोग करते नजर आ रहे हैं। चुनाव के मौसम में तो प्रयोगों की झडी लग जाती है और हर कोई एक दूसरे को पछाड़कर आगे निकल जाने की होड़ में शामिल हो जाता है। राजनीतिक समाचारों की प्रस्तुति में पहले से अधिक बेबाकी आयी है। लोकतंत्र की दुहाई के साथ जीवन के लगभग हर क्षेत्र में राजनीति की दखल बढ़ा है और इस कारण राजनीतिक समाचारों की मी संख्या बढ़ी है। ऐसे में इन समाचारों को नजरअंदाज कर जाना संभव नहीं है। राजनीतिक समाचारों की आकर्षक प्रस्तुति लोकप्रिया हासिल करने का बहुत बड़ा साधन बन चुकी है।

मीडिया के इतिहास में प्रसारण एक क्रांतिकारी विकास है। इसके पूर्व लोगों को संगीत कार्यक्रमों को सुनने उस स्थल पर जाना पड़ता था, जहाँ कार्यक्रम हो रहे थे, परन्तु रेडियो के अविष्कार के बाद अबे अपने घर बैठे संगीत का आनन्द ले सकते हैं। यहाँ तक कि खेलकूद थिएटरों में चल रहे संगीत कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण सुन सकते हैं। मूक फिल्मों के युग में भी रेडियो जीवंत था। यदि ध्वनि की रिकार्डिंग नहीं की जाती तो आज तो हम फिल्मों में संगीत का जितना आनन्द लेते हैं, उतना नहीं ले पाते। ध्वनि के द्वारा जीवन है। संगीत और ध्वनि के माध्यम से ही हमारे आसपास जीवन जीवंत हो उठता है। अब तो तार द्वारा केवल ध्वनि ही नहीं बल्कि फोटो भी भेजे जाते हैं, केवल हट्र्ज ही नहीं और भी कई आविष्कार है; जिन्होंने प्रसारण को सुविधाजनक और आसान बनाया|

७.४ सारांश

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी पत्रकारिता के सभी प्रकारों से पूरी तरह अवगत हुए है |विद्यार्थियों ने सभी पत्रिकाओ के विषय में विस्तृत जानकारी हासिल कर पत्रिका के प्रकारों से सम्बन्धित सभी प्रश्नों के उत्तर आसानी से दे सकेंगे |

७.५ लघुत्तरी प्रश्न

१. लोकतंत्र के चार स्तंभ में कौनसी व्यवस्था की भूमिका महत्वपूर्ण है।

२. कौनसी पत्रकारिता ने छपाई तकनीक के विकास के साथ ही समाचार पत्रों में अहम स्थान बना लिया है।

३. परीकथाओं, लोककथाओं, पौराणिक, ऐतिहासिक, धार्मिक कथाओं का समावेश किस प्रकार की पत्रकारिता में होता है ?

४. इक्कीसवीं शताब्दी को किसका युग कहा गया है।

५. समाचार पत्र एवं पत्रिका के बाद कौनसे माध्यम का विकास हुआ।

७.६ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१. पत्रकारिता के प्रकारों का वर्णन कीजिए |

२. 'पत्रकारिता सभी क्षेत्रों की जानकारी मिलने का सशक्त माध्यम है' इस विषय पर विस्तार से लिखिए |

३. दैनिक जीवन में पत्रकारिता का महत्व स्पष्ट कीजिए

७.७ संदर्भ ग्रन्थ

१. पत्रकार और पत्रकारिता – डॉ. रमेश जैन

२. जनसंचार और पत्रकारिता – डॉ. अर्जुन तिवारी

३. पत्रकारिता :नया दौर नये प्रतिमान – संतोष भारतीय

*****

८

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता

इकाई की रूपरेखा

८.१ इकाई का उद्देश्य

८.२ प्रस्तावना

८.३ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता

८.३.१ रेडियो

८.३.२ आकाशवाणी

८.३.३ समाचार सेवा विभाग

८.३.४ केन्द्रीय समाचार कक्ष

८.३.५ विदेश प्रसारण सेवा प्रभाग

८.४ रेडियो प्रसारण की विभिन्न विधाएँ

८.५ रेडियो पत्रकारिता

८.५.१ रेडियो पत्रकारिता का स्वरूप एवं उसके प्रकार

८.५.२ हेम रेडियो

८.५.३ सेटेलाईट रेडियो

८.६ टीवी पत्रकारिता

८.६.१ ब्रिटेन

८.६.२ आस्ट्रेलिया

८.७ समाचार वाचन कला

८.७.१ कुशल समाचार वाचक की विशेषताएँ

८.७.२ शारीरिक जागरूकता

८.७.३ स्टूडियो निर्देश

८.७.४ स्टूडियो में वाचक द्वारा बरती जाने वाली आवश्यक सावधानियाँ

८.८ पीस टू कैमरा

८.९ विडिओ और पत्रकारिता

८.१० आधुनिक रेकार्डिंग मिडिया

८.११ मल्टी मिडिया पत्रकारिता

८.१२ इंटरनेट पत्रकारिता

८.१३ केबल पत्रकारिता

८.१४ सारांश

८.१५ दीर्घोत्तरी प्रश्न

८.१६ लघुत्तरी प्रश्न

८.१७ संदर्भ पुस्तके

८.१ इकाई का उद्देश्य

- इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे:
- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता को जानने में;
- इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को जानने, समझने में सहायक सिद्ध होगा;

८.२ प्रस्तावना

विकसित राष्ट्रों ने मीडिया को हमेशा शीतयुद्ध के एक सशक्त हथियार के रूप में उपयोग किया। हालांकि एशियाई और अफ्रीकी देश मीडिया का कूटनीति औजार के रूप में अधिक प्रभावी ढंग से प्रयोग नहीं कर पाए। मैकब्राइड रिपोर्ट में सूचना के एकतरफा और असंतुलित प्रवाह के बारे में भी आगाह किया गया था। टेलीविजन के मामले में प्रवाह की यह दिशा आज भी आसानी से देखने को मिल सकती है। विकासशील देशों में बनने वाले देरी टेलीविजन कार्यक्रम या तो अमेरिकी या ब्रिटिश कार्यक्रमों की सीधी नकल होते हैं अथवा उनसे आइडिया चुराया गया होता है। दुनिया में जिस प्रकार तेजी से मीडिया कंपनियों के बड़े समूह आपस में हाथ मिला रहे हैं उससे प्रतीत होता है कि आने वाले दशों में टेलीविजन जगत की दिशा दुनिया की कुछ बहुराष्ट्रीय कंपनियों ही तय करेंगी। स्वाभाविक है कि इन कंपनियों में अधिकांश पश्चिम की हैं। लगभग इसी प्रकार दुनिया भर में सूचना प्रवाह को नियंत्रित करने वाली कुछ न्यूज एजेंसियों पश्चिम की है। टेलीविजन जगत में असमानता के समीकरण का अगले कुछ सालों में कम होने का अनुमान तो लगाया जा सकता है, लेकिन ऐतिहासिक विषमता समाप्त हो जाएगी यह कहना मुश्किल है।

८.३ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता

८.३.१ रेडियो:

"मार्कोनी" द्वारा तरंगों को पकड़ लेने की अद्भुत खोज रेडियो के नाम से जानी गई। इसके माध्यम से संदेशों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेज सकते हैं। उन स्थानों पर भी जहाँ समाचार पत्रों एवं चिड्डियों का पहुँचना मुश्किल है। रेडियो संदेश भेजने के लिए मुख्यतः दो केन्द्र आवश्यक है एक तौ यो संदेशों को प्रसारित करता है दूसरा जो संदेशों को ग्रहण करता है।" ध्वनि तरंगों को रेडिया तरंगों के संकेतों के रूप में बदला जाता है प्रसारित तरंग को

स्थान-स्थान पर स्थापित ग्रहण केन्द्रों द्वारा ग्रहण किया जाता है। रेडियो में लगे यंत्र इन्हें ध्वनि तरंगों में परिवर्तित कर देते हैं जो हमें स्पीकर के माध्यम से सुनाई देती है। जैसा कि हम जानते हैं कि तरंगें कई प्रकार की होती है और विभिन्न तरंग तरंगदैर्ध्य भी अलग- अलग होता है इसलिए आवृति भी अलग-अलग होती है। इसी आधार पर रेडियो को बैंडों में विभक्त किया जाता है। छोटा (Wavelength) वेवलेंध तथा अधिक (Frequency) फ्रिक्वेशी पर आधारित बैंड को शॉर्टवेव तथा कम (frequency) फ्रिक्वेशी पर आधारित बैंड को मिडियम वेद (medium wave) कहते हैं। संदेश भेजने वाले प्रत्येक सेना की अलग फ्रिक्वेशी होती है अतः श्रोता अपने अनुसार अपने रेडियो पर कार्यक्रम व्यवस्थित कर लेता है। कई निजी कंपनियों ने भी पदार्पण कर अपने अपने एफ एम की शुरुआत की है। परन्तु १९९८ में एफ एम पर सभी निजी कार्यक्रमों को बंद कर दिया गया। १९९९ में सरकार ने देश में ४० शहरों में १५० निजी एक एम रेडियो स्टेशनों को मान्यता दी और सन् २००० में इसने देश के १७% भूभाग में, २१ % आबादी पर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। भारत के सूचना प्रसारण मंत्रालय ने देश भर में ३३० निजी एफ एम रेडियो स्टेशनों को मंजूरी दे दी है जो कि देश के ९० शहरों में काम करेंगे। इन स्टेशनों की एक मुश्त अदायगी के अलावा सरकार के साथ ४% राजस्व की हिस्सेदारी निभानी होगी। निजी एफ एम स्टेशनों को २०% तक की एफ डी आई की इजाजत होगी। निजी एफ एम खिलाड़ी को एक ही शहर में दो से ज्यादा लाइसेंस नहीं मिलेंगे। सूचना प्रसारण के मुताबिक भारत में ३००० अतिरिक्त रेडियो स्टेशन शुरू करने की है। इस समय १८५ से ज्यादा एफ एम स्टेशन हैं जिनमें से १३९ विविध भारती चलाता है। सामुदायिक रेडियो भी सरपट दौड़ते है। इस दिशा में अन्य विश्वविद्यालय भी पहल कर चुके हैं और अब जामिया मिलिया इस्लामिया और भारतीय जनसंचार संस्थान इस दिशा में प्रयासरत हैं। संचार की सामान्य प्रणाली पर विभिन्न केन्द्रों के प्रसारण भी सुने जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त हमारी आवाज, है दूसरे हम प्रसारकों तक पहुँचती है।

सन १८८९-८७ में जर्मन भौतिक वैज्ञानिक हेनरिक रोडाल्फ हर्ज ने सिद्ध किया कि ऊर्जा को तारों के प्रयोग बिना ही प्रक्षेपित किया जा सकता है। इस खोज ने रेडियों के खोज को सकारात्मक दिशा प्रदान की। इन्हीं दिनों इटली के भौतिक वैज्ञानिक गुगलीतमो मार्कोनी ने रेडियो की खोज का कार्य प्रारंभ किया। लेकिन इटली में उन्हें कोई सहायता और प्रोत्साहन नहीं मिला। इसलिए वे इंग्लैण्ड चले गए। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें सहयोग दिया और एक अनुबंध के बाद उन्होंने "मार्कोनी वायरलैस टेलीग्राफी कंपनी की स्थापना की।" १८२५ में मार्कोनी ने एक यंत्र बनाया जिसके द्वारा इलेक्ट्रॉनिक सिग्नल को हवा के द्वारा बदला जा सकता था। इस खोज ने रेडियो के शुरुआत की आधारशिला रखी। १८९६ में उन्होंने अपने पहले प्रयोग को पेटेन्ट कराया। मार्कोनी ने हर्दूज तथा अन्य वैज्ञानिकों के आविष्कार के आधार पर अपने प्रयोग द्वारा पहला वायरलैस सिग्नल १९०२ में अटलांटिक के उस पार भेजने में सफलता पाई। इसके बाद इस दिशा में लगातार खोज और विकास होता रहा। १९०६ तक आते-आते अमेरिकी वैज्ञानिक ली डी फॉरेस्ट ने ऑडियान तैयार किया जो जॉन फ्लेमिंग के वैक्यूम ट्यूब की तकनीक पर आधारित था।

१९०३ में मैसाचुसेट्स में मार्कोनी स्टेशन की स्थापना की गई। १९०६ में US Weather Burasy ने रेडियो की सहायता से मौसम की स्थिति का आकलन किया। इसी वर्ष १९०६ में मार्कोनी ने न्यू जर्सी में एक शक्तिशाली रेडियो स्टेशन की स्थापना की, इसे १९१७ में अमेरिकी सरकार ने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान संचार के लिए ले लिया। १९१० में मार्कोनी

ने नियमित अमेरिकन यूरोपियन रेडियो टेलीग्राफ की सेवा की शुरुआत की। सन् १९१४ में प्रथम विश्वयुद्ध होने के बाद इंग्लैण्ड तथा जर्मनी ने नौसेना और थलसेना को सन्देश भेजने के लिए शक्तिशाली वायरलैस केन्द्र की स्थापना की। अमेरिका की Generay Electronic company ने और ATT American Telephone & Telegraph ने उन संदेशों को प्राप्त करने के लिए हजारौ रेडियो सेट्स का निर्माण किया। १९२० में सोवियत वैज्ञानिक के एक व्यक्ति के स्वर को रेडियो चैव के द्वारा प्रसारित करने में सफलता हासिल किया। १९२१ में रसिया में एक शक्तिशाली स्टेशन स्थापित किया गया। १९२२ में मास्को में दुनिया का सबसे शक्तिशाली रेडियो प्रसारण स्टेशन था। १९२५ में दुनिया का पहला शॉर्ट वेव रेडियो स्टेशन मास्को में स्थापित हुआ। १९२० में अमेरिका में पहला कॉमर्शियल रेडियो स्टेशन की स्थापना की गई। १९२२ के अन्त तक अमेरिका में ६७० रेडियो स्टेशन को लाइसेंस प्रदान किया गया। इससे रेडियो की लोकप्रियता में काफी वृद्धि हुई। इधर जजू ने रेडियो पर विज्ञापन के लिए इच्छुक कम्पनियाँ को Airtime Sell करने का निर्णय लिया। जनता में इस निर्णय के विरोध के चलते १९२७ में संकट उत्पन्न हो गया। अतः संकट को ध्यान में रखते हुए एफ आर सी की स्थापना की गई और यह ध्यान रखा गया की प्रसारण, जनता के हित में हो। इस प्रकार १९१० से १९५४ के बीच बी बी सी आर सी ए, रसियन ब्रॉडकास्टिंग कंपनी, वॉयस ऑफ जर्मनी, रेडियो जर्मनी (Russian Brodcasting company, voice of Germany. Radio germany) जापान की एन एच आर (निपौन होसो क्योकार्ड जापान) आदि राष्ट्रीय प्रसारण संस्थाओं की नवंबर १९२२ में बी बी सी की स्थापना हुई। मार्कोनी कंपनी ने कई कम्पनियों के सहयोग से इसकी स्थापना की। एक साल के अन्दर बी बी सी का प्रसारण पूरे ब्रिटेन में होने लगा। १९२४ में ब्रिटेन के पार्लियामेंट से रॉयल जारी किया गया। इसके तहत-

१. बी बी सी के कार्यक्रम जनहित में प्रसारित किए जाएँ।

२. बी बी सी किसी मुददे पर अपनी राय नहीं देगी।

३. बी बी सी में कोई प्रायोजिल कार्यक्रम प्रसारित नहीं होगा।

१९९५ में बी बी सी की फंडिग ब्रिटानी सरकार करती थी। १९९५ में बी बी सी को पुनःस्थापित कर इसे ३ भागों में बाँटा गया।

१. बी बी सी रिसोर्स यह बी बी सी की उप कम्पनी है। बी बी सी का मुख्यालय, बुश हाउस इसके नियंत्रण में है। यह बी बी सी को उपकरण, फर्नीचर, स्टूडियो किराये पर देती है।

२. बी बी सी प्रोग्राम इस विभाग का काम कार्यक्रम का निर्माण करना है।

३. बी बी सी मार्केटिंग इस विभाग का काम प्रोग्राम की ब्रॉडकास्टिंग एवं मार्केटिंग करना है। इसके बाद बी बी सी की आय में १२० करोड़ पौण्ड की आय में वृद्धि हुई। बी बी सी ने पूरी दुनिया में रेडियो के विकास में अहम भूमिका निभाई। भारत सहित एशिया के कई देशों और अफ्रीकी देशों में रेडियो के विकास को गति प्रदान की। नवंबर १९२२ में बी बी सी की शुरुआत हुई थी। मार्कोनी से इसकी स्थापना की थी। एक साल के अन्दर पूरे ब्रिटेन में बी बी सी का प्रसारण होने लगा। उस समय तत्कालीनं

जर्नल मैनेजर थे- जे.सी. डब्लू राईट इन्हें बीबीसी का निर्माता व संस्थापक माना जाता है। इसकी लोकप्रियता का आलम यह था कि यह जनता के विचारों का माध्यम बन चुका था। १९२७ में ब्रिटेन के लोकसभा ने रायल चार्टर जारी किया। इस कानून के अन्तगर्त बीबीसी को पब्लिक ट्रस्ट, व स्वायत्तशासी संस्था माना गया। इस रॉयल चार्टर के अन्तगर्त बीबीसी की कार्य की सीमाएँ तय की गई भी जो निम्न है-

१. बी बी सी के कार्यक्रम जनहित में प्रसारित किए जाएँगे।

२. बी बी सी किसी भी मुद्दे पर राय नहीं देगी।

३. बी बी सी में संस्था कोई धार्मिक संदेश नहीं देगी।

४. इस पर कोई प्रायोजित कार्यक्रम प्रसारित नहीं होगा अर्थात् विज्ञापन भी नहीं।

८.३.२ आकाशवाणी:

आकाशवाणी के प्रमुख, महानिदेशक होते हैं। जिनकी सहायता के लिए कई उपमहानिदेशक कार्यक्रम निर्माण और प्रबंधन संबंधी मामलों में कार्य करते हैं। तकनीकी मामलों में महानिदेशक की सहायता के लिए इंजीनियर इन चीफ और कई अन्य अधिकारी होते हैं। ७ दिसंबर २००१ में की गई गणना के अनुसार, आकाशवाणी के २०८ स्टेशन हैं। देश का ८९.५१% क्षेत्रफल तकरीबन २३२ ट्रांसमीटरों द्वारा कवर किया जा रहा है।

८.३.३ समाचार सेवा विभाग:

आकाशवाणी का समाचार सेवा विभाग प्रतिदिन ३९ घंटे और ३२ मिनिट की कुल अवधि के ३१६ समाचार बुलेटिन प्रसारित करते हैं। इनमें से ८४ समाचार बुलेटिन धरेलू सेवा के लिए आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र से प्रसारित किए जाते हैं। दिल्ली केन्द्र से प्रसारण की कुल अवधि १२ घंटे २० मिनट तय है। इसके अलावा ४५ क्षेत्रीय समाचार केन्द्र, ६४ भाषाओं और बोलियों में कुल १७ घंटे ५६ मिनट अवधि के १३९ समाचार बुलेटिन प्रतिदिन प्रसारित करते हैं। विदेश प्रसारण सेवा के तहत आकाशवाणी द्वारा २५ भाषाओं (भारतीय और विदेशी) में कुल ८ घंटे ४७ मिनट अवधि के ६४ समाचार बुलेटिन प्रसारित किया जाता है। समाचार सेवा विभाग दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई के एफ एम चैनलों से समाचारों के २९ मिनट अवधि के बुलेटिन प्रसारित करता है। प्रतिदिन हर घंटे हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में समाचार बुलेटिन दिल्ली से प्रसारित किए जाते हैं। इसके अलावा अन्य तीन आकाशवाणी केन्द्रों से एफ एम चैनलों पर संबंधित क्षेत्रीय भाषा में बुलेटिन प्रसारित किए जाते हैं।

आकाशवाणी विशेष बुलेटिन, जैसे खेलकूद और युवाओं से संबंधित बुलेटिन भी प्रसारित करता है। दिल्ली से दो युवा बुलेटिन हिन्दी और अंग्रेजी में, आकाशवाणी से बंगला भाषा में युवाओं के लिए दो बुलेटिन प्रसारित किये जाते हैं। इसके अलावा समाचार सेवा प्रभाग हिन्दी और अंग्रेजी में समाचार आधारित कार्यक्रम और समीक्षाएँ भी प्रसारित करता है।

८.३.४ केन्द्रीय समाचार कक्ष:

केन्द्रीय समाचार कक्ष दिल्ली में समाचार प्रभाग के अन्तर्गत कार्य करता है। जनरल न्यूज रूम यानी जी एन आर १९९१ के पहले तक अकेला समाचार कक्ष था, जो हिन्दी और अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के लिए समाचार जुटाता था, परन्तु इसका माध्यम अंग्रेजी ही था और समाचार की प्रथम प्रति अंग्रेजी भाषा में ही होती थी, जिसे सुविधानुसार अन्य भाषाओं के लिए अनूदित कर लिया जाता था। परन्तु १९९१ के बाद अंग्रेजी और हिन्दी में समाचार बुलेटिन अलग-अलग तैयार होते हैं। लेकिन महत्त्वपूर्ण जी एन आर था जनरल न्यूज रूम ही है. जहाँ लगभग सभी भाषाओं के बुलेटिन तैयार किए जाते हैं।

यह संपूर्ण क्रियाकलाप पूल में विभाजित होता है। यहाँ एक एडिटर इन्चार्ज होता है जिसके पास सभी सूर्गे से प्राप्त समाचार होते हैं। इनमें एजेंसियों से प्राप्त समाचार, विभिन्न राजनीतिक दलों का सरकारी अथवा गैर सरकारी संस्थानों की विज्ञप्तियाँ, संवाददाता द्वारा भेजी गई खबरें और विशेष स्थानों पर की गई| रिकॉर्डिंग का वितरण होता है। कुल मिलाकर तीन पूल होते हैं। जिनमें एक मार्निंग पूल, दूसरा डे पूल और तीसरा ईवनिंग पूल होता है। इसके अलावा संसद चालू होने पर संसद पूल और चुनाव के समय इलेक्शन पूल बना दिया जाता है। पूल एक में हमारे देश की खबरें होती हैं और पूल दो में विदेशी खबरों को रखा जाता है। खबरों के संपादन के पश्चात् मुख्य समाचारों की प्रति तैयार कर एडिटर इन्चार्ज, बुलेटिन एडिटर के पास भेजता है। बुलेटिन एडिटर इसे न्यूज रीडर के साथ बैठकर मिलान करता है तथा न्यूज एडिटर को आने वाली दिक्कतों को समझकर उसे ठीक करवाता है। इनमें किसी विशेष शब्द का उच्चारण बुलेटिन की अवधि, प्राप्त समाचार कम या अधिक अवधि के होने संबंधी कठिनाइयों प्रमुख रूप से होती हैं। ऐसे में बुलेटिन एडिटर समाचार की अंतिम पंक्तियों को निश्चित करता है। उदाहरण के तौर पर खेल के समाचारों को अधिकतर समाचारों के अन्त में स्थान दिया जाता है। यदि समाचार अवधि से अधिक होते हैं, तो बीच में से कोई कम महत्त्व का समाचार छोड़ देते हैं या स्थान देने के बाद प्रमुख समाचारों या सुर्खियों को बढ़ा दिया जाता है। एडिटर इन्चार्ज की तैयार की गई प्रति सभी भाषा के लिए एडिटर को भी प्राप्त होती है। इसकी एक प्रति हिन्दी समाचार कक्ष को और एक प्रति दूरदर्शन को भेज दी जाती है।

हिन्दी समाचार कक्ष अपना हिन्दी बुलेटिन स्वयं तैयार करता है, लेकिन अंग्रेजी समाचार बुलेटिन की प्रति प्राप्त होने पर हिन्दी बुलेटिन में ले लेता है। प्रकारान्तर से वह अंग्रेजी और हिन्दी बुलेटिन का मिलान कर लेता है, जिससे कि समाचार की प्राथमिकता को आघात न पहुंचे।

रेडियो नेटवर्क बहुत विस्तार वाला है तथा रेडियो के अंशकालिक संवाददाताओं के अतिरिक्त इसके पूर्णकालिक संवाददाता भी सभी जगह फैले हुए हैं। आकाशवाणी समाचारों की प्रामाणिकता के लिए एडिटर इन्चार्ज कई बार एजेंसी से प्राप्त समाचारों को अपने पूर्णकालिक संवाददाता के साथ मिलान करने के बाद ही प्रसारण योग्य समझता है, क्योंकि कई बार एजेंसियों से प्राप्त समाचार अतिशयोक्तिपूर्ण अथवा संक्षिप्त होते हैं।

८.३.५ विदेश प्रसारण सेवा प्रभाग:

आकाशवाणी का विदेश प्रसारण सेवा विभाग भारत और अन्य देशों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य कर रहा है। यह विभाग १०० देशों के लिए २६ भाषाओं में कुल ७१ घंटे प्रसारण करता है। जिनमें १६ विदेशी भाषाएँ भी शामिल हैं। विदेश प्रसारण सेवा प्रत्येक शनिवार को संयुक्त राष्ट्र के लिए समाचार प्रसारित करता है। इसके अलावा सार्क देशों, मध्य पूर्व व दक्षिण पूर्व एशिया के लिए इसके प्रसारणों में रात ९ बजे अंग्रेजी का राष्ट्रीय समाचार बुलेटिन प्रसारित किया जाता है। यह विभाग सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत लगभग १०० देशों की संगीत और स्पोकन वई कार्यक्रमों की रिकॉर्डिंग भी उपलब्ध कराता है।

समाचार सेवा प्रभाग की प्रमुख छः इकाइयों निम्नलिखित हैं-

१. जनरल न्यूज स्म यह वह कक्ष है जहाँ राष्ट्रीय एवं बाहरी सेवाओं के अंतर्गत प्रसारित किए जाने वाले समाचार बुलेटिनों का चयन एवं संपादन होता है। इसमें पूल डेस्क होता है। जिसका इंजार्च पूल एडिटर महत्त्वपूर्ण व्यक्ति होता है। इस पूल में निम्नलिखित स्रोतों से समाचार आते हैं-

(अ) देश विदेश में नियुक्त आकाशवाणी संवाददाताओं द्वारा भेजी जाने वाली खबरें।

(ब) समाचार समिति द्वारा आने वाले समाचार।

(स) विभिन्न दूतावासों द्वारा प्रेषित सामग्री।

(द) मॉनीटरिंग यूनिट द्वारा भेजी गई समाचार सामग्री।

२. संवाददाता मूनिट इस यूनिट में विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित संवाददाताओं द्वारा भेजे गए समाचार सामग्री का संग्रह किया जाता है। बाद में इसे जेनरल न्यूज स्ग में भेज दिया जाता है।

३. भारतीय भाषाएँ यूनिट इस यूनिट में जेनरल न्यूज रूम द्वारा संपादित समाचार-कॉपी आती है। जिन-जिन भारतीय भाषाओं में राष्ट्रीय सेवा के तहत समाचार प्रसारित किए जाते हैं. उन सभी आषाओं की पृथक् यूनिट अथवा समूह (ग्रुप) में उसका अनुवाद सम्बद्ध भाषा में कर लिया जाता है। जेनरल न्यूज रूम से प्राप्त समाचार-कॉपी अंग्रेजी में होली है।

४. हिन्दी यूनिट हिन्दी यूनिट भारतीय भाषाओं की यूनिट से एक स्वतंत्र यूनिट है। हिन्दी भाषा में प्रसारित किए जाने वाले समाचार बुलेटिनों का चयन और संपादन किया जाता है। इस यूनिट में अलग से विभिन्न समाचार एजेंसियों के टेलीप्रिंटर लगे रहते हैं।

५. न्यूज रील यूनिट इस यूनिट में न्यूज रील का निर्माण होता है। इसके प्रसारण की अवधि सामान्यतः १५ मिनट की होती है। इस विभाग में समाचारों के अतिरिक्त

कमेंट्री और इंटरव्यू भी होते हैं। इस यूनिट का प्रभारी एक वरिष्ठ तथा अनुभवी समाचार संपादक होता है। जिसके साथ दो अन्य सहयोगी संपादक होते हैं।

६. मॉनीटरिंग यूनिट इस यूनिट में लगभग ४० देशों के करीब २०० समाचार बुलेटिनों को मानीटर किया जाता है। टेप रिकोर्डिंग के पश्चात् इनकी टंकित प्रतियाँ निकाल ली जाती हैं। इनमें एक तो, आकाशवाणी समाचार बुलेटिन की तैयारी एवं प्रसारण, रेडियो समाचार के बुलेटिन तैयार करने एवं बुलेटिन प्रसारित करने का कार्य एक 'टीमवर्क है। इसलिए इस काम से जुड़े सभी सदस्यों का आपस में अच्छा तालमेल रहना चाहिए। लिखे हुए समाचार 'पूल' में रखे जाते हैं। यह एक तरह से समाचारों का 'भण्डारण गृह' है। पूल (समाचार- सरोवर) प्रायः दो हिस्सों में होता है- पहला हिस्सा देशी समाचारों के लिए, दूसरा हिस्सा विदेशी समाचारों के लिए। विदेशी समाचारों के साथ पहले खेलकूद संबंधी समाचार भी हुआ करते थे। अब इन समाचारों के लिए स्वतंत्र पूल की व्यवस्था की गई है। यह पूल सुबह, दिन, शाम और रात इन चार हिस्सों में घंटे होते हैं। इन्हीं के अनुसार इनको क्रमशः मॉर्निंग पूल, डे-पूल, ईवनिंग पूल तथा नाइट पूल कहते हैं। संक्षेप में इनको संकेताक्षरों से इस तरह व्यक्त किया जाता है- एम.पी.ए (मार्निंग पूल, यानी सुबह का वह पूल जिसमें देश के समाचार है)। एम.पी. यानी सुबह का वह पूल जिसमें विदेश के (और आवश्यक हुआ तो खेलकूद के औ) समाचार है। इसी तरह डी.पी. ए.डी.पी, ई.पी. पू. ई.पी. एन.पी. ए. एन.पी. है। संसंद का सत्र चल रहा हो, उन दिनों एक पूल अलग से बना दिया जाता है। इसमें डी.पी.पी., डे पार्लियामेंट पूल' भी होता है। शाम को ईवनिंग पार्लियामेंट पूल' (ई.पी.पी.) और यथावश्यक स्पोर्ट पूल' बनाए जाते हैं।

समाचार-प्रभाग के प्रायः वरिष्ठ संपादक ही सुबह आठ तथा सवा आठ के समाचार बुलेटिन तैयार करते हैं। शाम को मुख्य बुलेटिन आठ पैंतालीस बजे हिन्दी में और नौ बजे अंग्रेजी में प्रसारित होते हैं। इन बुलेटिनों को भी अनुभवी वरिष्ठ संपादक तैयार करते हैं। सहयोगी संपादों के लिए अपने सुयोग्य, अनुभवी और वरिष्ठ संपादकों का कार्य एक अनुकरणीय आदर्श होता है। इसलिए वरिष्ठ संपादक बहुत जिम्मेदारी से अपना कार्य करते हैं। वे अपने घर पर भी हो तो भी प्रसारित होने वाले समाचार बुलेटिनों को प्यान से सुनते हैं। यदि किन्हीं कारणों से यह संभव नहीं हो पाता तो वे उन बुलेटिनों को पढ़ते हैं. जो उनकी पिछली ड्यूटी के बाद प्रसारित हुए थे।

अपनी ड्यूटी पर आते ही सभी समाचार संपादक सबसे पहले सर्विस रिपोर्ट' पढ़ते हैं। यह रिपोर्ट प्रत्येक प्रभारी संपादक (इंचार्ज) अपनी ड्यूटी पूरी करने के बाद उत्तराधिकारी संपादक के लिए छोड़ जाता है। इसमें वे बातें लिखी होती हैं, जो अगली ड्यूटी में संपादकों को करनी हैं। इसी में उन निर्देशों की भी चर्चा होती है, जो 'ऊपर से दिए गए हैं। इससे पता चल जाता है कि संपादक को अपनी ड्यूटी में किन बालों का ध्यान रखना है, क्या करना है, क्या नहीं करना है। इसके बाद संपादक 'पूल को पढ़ता है। उदाहरण के लिए जो संपादक प्रातः ८ बजे और सवा आठ बजे का बुलेटिन करता है, उसे शाम के सारे पूल पढ़ने होते हैं और देखना होता है कि कोई महत्त्वपूर्ण समाचार शाम को छूट तो नहीं गया था। इसी तरह उसे 'नाइट पूल' पढ़ना होता है। 'मार्निंग पूल तो उसके सामने आते ही रहते हैं। वह एक कागज पर लिखता जाता है कि उसे कौन सी संख्या का कौन-सा समाचार 'ईवनिंग पूल'

और 'नाइट मूल' से लेना है। इसी तरह 'मार्निंग पूल' को देखते हुए वह उसमें से अपने उपयोग के समाचार चुनता जाता है।

संपादक को चाहिए कि वे पूल को पढ़ते समय साथ के उपयोगी समाचारों के शीर्षक नोट करते जाएँ। इससे महत्त्वपूर्ण समाचार या उनके 'शीर्षक' (हैडलाइंस) छूटने की आशंका नहीं रहती। कुछ संपादक इस काम को बुलेटिन प्रसारित होने से आधे घंटे पहले करते हैं। ऐसा करने में असुविधा हो सकती है।

पूल से उपयोगी 'आइटम (समाचार) चुनने के बाद संपादक समाचार को बुलेटिन की आवश्यकता के अनुकूल सुधार कर पुनः लिखता है। उसकी काया में काट-छाँट करता है और आवश्यकता होने पर उसे बोल कर देखता तथा फिर से लिखता है। बुलेटिन की जीवंतता, सफलता और प्रभावपूर्णता संपादक की प्रतिभा, कुशलता, अनुभव और क्षमता पर निर्भर करती है।

समाचार बुलेटिन को पाँच हिस्से में बाँटा जाता है:-

१. मोंटाज

२. हैडलाइन

३. बुलेटिन में जाने वाला समाचार

४. ब्रेक

५. रिपीट हैडलाइन

रेडियो में पाँच, दस और अधिकतम पन्द्रह मिनट का बुलेटिन प्रसारित किया जाता है। बड़े बुलेटिन में दो ब्रेक होते हैं। दस मिनट के बुलेटिन में एक ब्रेक और पांच मिनट के बुलेटिन में कोई ब्रेक नहीं होता है। ब्रेक से दो फायदे होते हैं- एक तो समाचार वाचक को आराम मिल जाता है और दूसरा संपादक हर ब्रेक के बाद नए क्रम में समाचार दे सकता है। रेडियो और समाचार पत्रों के लेखन में बहुत अंतर होता है। रेडियो मैं समय कम होने के कारण समाचारों को संक्षेप में लिखा जाता है। जिस प्रकार अखबार के पहले पेज में सबसे महत्त्वपूर्ण समाचार होते हैं उसी तरह रेडियो बुलेटिन में पहली खबर का सबसे ज्यादा महत्त्व होता है। समाचार पत्र की तरह रेडियो लेखन में अगले पृष्ठ पर या उपरोक्त जैसे शब्दों का उपयोग नहीं किया जाता। रेडियो समाचार में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि समाचार श्रृंखला बिखरने न पाए। बुलेटिन की शुरुआत में हैडलाइन्स पढ़ी जाती हैं, बाद में यही समाचार श्रोताओं के सामने विस्तार से बता दिए जाते हैं। ५ मिनट के रेडियो बुलेटिन में कोर्ड हैडलाइन नहीं होती, जबकि १० मिनट के बुलेटिन में ३ से ४ और १५ मिनट के बुलेटिन में ५ से ६ हैडलाइन समाहित होती हैं। समाचारों के लेखन और क्रमबद्ध तरीके से लगाते समय हैडलाइन्स और समय का विशेष ध्यान रखा जाता है। आम तौर पर बुलेटिन की शुरुआती खबर राजनीतिक और आखिरी मौसम संबंधी होती है।

रेडियो प्रोग्राम फार्मेट

८.४ रेडियो प्रसारण की विभिन्न विधाएँ

१. रेडियो उद्घोषणा:

रेडियो ऑन होते ही हमारे घर में हमारे साथ एक और व्यक्ति उपस्थित हो जाता है. जिसे हमने देखा नहीं होता। जिससे हमारा कोई प्रत्यक्ष परिचय नहीं होता, पर फिर भी वह हमै अपरिचित नहीं लगता। वह हमसे बातचीत नहीं कर रहा होता, पर फिर भी लगता है जैसे बातचीत हमसे हो रही हो। वह व्यक्ति उद्घोषक होता है। उद्घोषक प्रसारण की सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी होता है जो सारे प्रसारण तंत्र को श्रोताओं से जोड़े रखता है। एक सफल उद्घोषक में निम्न अर्हताएँ होनी चाहिए-

१. उपयुक्त स्वर

२. भाषा का जान

३. भाषा प्रयोग एवं लेखन में कुशलता

४. उच्चारण की शुद्धता

५. विभिन्न विषयों में जान एवं रुचि

६. पूर्वाभ्यास

७. परिचर्चा

८. प्रतिभागी

९. संचालक

२. कॉम्पेयरिंग:

कॉम्पेयर का मतलब प्रस्तुतकर्ता होता है जो कार्यक्रम में अनौपचारिकता एवं आत्मीयता भरने का कार्य करता है। कम्पोजिट कार्यक्रमों में वार्ता, भेंटवार्ता और संगीत जैसे कई प्रोग्राम होते हैं। कम्पेयर में निम्न गुण होने चाहिए-

१. कार्यक्रम के स्वरूप और लक्षित श्रोता से परिचय

२. प्रस्तुत करने वाले कार्यक्रम की सम्पूर्ण जानकारी

३. कार्यक्रम में रोचकता लाने का प्रयास

४. कार्यक्रम की समयावधि में प्रोग्राम समाप्त करने की क्षमता

५. कम्पेयर को अचानक उत्पन्न स्थितियों को संभालने की कला आनी चाहिए।

३. वार्ता:

रेडियो प्रसारण में उपयोग होने वाली विधाओं में वार्ता सबसे प्रचलित विधा है। यह विधा सबसे नीरस मानी जाती है। इसीलिए इसमें लेखन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। वार्ता का अर्थ लेख या भाषण नहीं बल्कि संवाद और बातचीत होता है। रेडियो प्रसारण की इस विधा में दो पक्ष होते हैं एक वार्ताकार और दूसरा श्रोता। वार्तालेखन में निम्न बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए-

१. लेखन में बातचीत की भाषा का उपयोग होना चाहिए।

२. वार्ता पढ़ने वाले को स्वयं लिखना चाहिए।

३. विषय की प्रस्तुति सरल होनी चाहिए।

४. सामान्यतः वार्ता ८ से १० मिनट की होती है। अतः लिखते वक्त समय का ध्यान रखना चाहिए।

५. लेखन में तारतम्यता और क्रमबद्धता होनी चाहिए।

४. रूपक या फीचर:

पाश्चात्य विद्वान मित्तगुज के अनुसार 'कोई कार्यक्रम जो मूलतः नाटक नहीं है पर श्रोताओं के लिए प्रस्तुती में नाटक जैसी तकनीक का प्रयोग करता है, रूपक है। अंग्रेजी में फीचर के लिए डॉक्यूमेंट्री शब्द का प्रयोग किया जाता है। रूपक निम्न प्रकार के होते हैं-

१. संगीत रूपक इसमें आलेख पद्य में होता है तथा उसे संगीत में निबद्ध कर उसकी प्रस्तुति की जाती है या फिर आलेख गद्य में होता है, जिसमें काव्य के अंश भी होते हैं।

२. सोदाहरण रूपक इस तरह के रूपक में, आलेख में विभिन्न तरह के उद्धरणों का प्रयोग होता है। ये उद्धरण कविता, लोकगीत या किसी के कथन के रूप में हो सकते हैं। विषय के अनुसार, उपयुक्त स्थान पर आलेख में इनका समावेश कर लिया जाता है।

३. इति वृत्तात्मक रूपक इस तरह के रूपक व्यक्ति विशेष पर आधारित रहते हैं। इसमें व्यक्ति के कृतित्व, व्यक्तित्व, संस्मरण, घटनाओं आदि का समावेश रहता है।

४. विषय रूपक सामयिक घटनाओं पर आधारित रहते हैं।

५. रेडियो नाटक:

रेडियो नाटक प्रसारण की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं लोकप्रिय विधा है। रेडियो एक श्रव्य माध्यम है, जबकि नाटक दृश्य प्रधान विधा है। रेडियो नाटक में मंच पर कोई घटना नहीं घटती, जिसे देखा जा सके बल्कि संवादों को कुछ इस तरह से लिखा और बोला जाता है कि श्रोताओं को सुनते समय ऐसा लगे कि उनके समक्ष कोई रंगमंच पर नाटक खेला जा रहा

है। रेडियो नाटक में अच्छा आलेख, कुशल निर्देशक, अच्छा कलाकार और उत्कृष्ट तकनीकी सुविधाएँ प्रस्तुति के लिए आवश्यक है।

१. रेडियो नाटक के विषय असीमित हैं लेकिन पौराणिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, पारिवारिक, सामयिक और मानवीय विषयों पर कई नाटक रेडियो पर प्रसारित किए जाते हैं।

२. रेडियो नाटक लेखन के लिए लेखक के मस्तिष्क में श्रव्य माध्यम की समझ होनी चाहिए।

३. आलेख तैयार करने से पहले लेखक को प्रस्तुतकर्ता के साथ संवाद कायम करना चाहिए।

४. पात्रों का चित्रण विश्वसनीय तरीके से होना चाहिए।

५. संवाद की भाषा में प्रवाह होना चाहिए।

६. संवाद छोटे एवं नाटकीयता की संभावना से परिपूर्ण होना चाहिए।

७. नाटक विधा में ध्वनि का विशेष महत्त्व होता है। अतः इसका चयन सोच-समझ कर किया जाना चाहिए|

६. खेल कार्यक्रम:

खेलों की लोकप्रियता बढ़ाने में रेडियो की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। रेडियो से प्रसारित खेल कमेंट्री एवं समाचार काफी सुने जाते हैं। रेडियो प्रसारण के अधिकांश केन्द्र होली पर विशेष कार्यक्रम खेल-पत्रिका के रूप में प्रसारित करते हैं। इन कार्यक्रमों में खिलाड़ियों, विशेषज्ञों से भेटवार्ता, किसी विशेष खेल की जानकारी, खेल प्रश्नोत्तरी से श्रोताओं को रूबरू करवाया जाता है।

७. आँखों देखा विवरण:

रेडियो प्रसारण के विकास ने रेडियो की विधाओं में नए-नए आयाम जोड़े हैं। आरंभिक दिनों में प्रसारण स्टूडियों से होता था तथा घटनाएँ समाचार के रूप में श्रोता तक पहुँचती थी। कॉमेट्री या आँखों देखा विवरण ऐसी विधा है, जो श्रोता को उस स्थान पर उपस्थित रहने जैसा आनंद देती है। यह जीवंत प्रसारण होता है जिसमें पल-पल नया घटित होता है. दृश्य बदलता है, नए विवरण जुड़ते हैं, अतः इसमें सामान्य प्रसारण से भिन्न तरह की परिस्थितियों तथा आवश्यकताएँ होती हैं-

किसी घटना, समारोह या खेल का आँखों देखा विवरण देते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए-

१. समारोह का अधिकारिक क्रमवार विवरण प्राप्त करें।

२. समारोह या आयोजन का पिछला इतिहास, आयोजन के उद्देश्य आदि की जानकारी।

३. प्रतिभागियों तथा आयोजकों के संबंध में विस्तृत एवं तथ्यात्मक जानकारी।

४. सहायक सोती, समाचार-पत्र तथा अन्य संदर्भ सौतों से आयोजन का पूर्व तथा वर्तमान विवरण।

५. समारोह स्थल तथा आस-पास के क्षेत्र का विवरण एकत्र करें। आयोजन स्थल से जुड़े ऐतिहासिक या भौगोलिक तथ्य यदि कोई हो तो उसके संबंध में सूचना प्राप्त करें। संभव हो तो स्वयं आयोजन स्थल पर कार्यक्रम से पूर्व पहुँच जाएँ।

६. कार्यक्रम से जुड़े विस्तृत विवरण, जैसे संगीत, वक्ता, विभिन्न प्रस्तुतियों या अगर खेल की कमेंट्री हो तो खिलाड़ियों के विवरण, पुराने रिकॉर्ड आदि की जानकारी प्राप्त करें।

७. अपने स्तर पर सभी बातों की समुचित तैयारी कर लें।

८. सूचनाओं एवं जानकारी का एक व्यवस्थित क्रम बनाएँ।

९. खेल की कमैट्री में खिलाड़ियों के विवरण, उनके नाम के अनुसार वर्णमाला के क्रम में लगाए जा सकते हैं।कमेंटेटर को भाषा पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। अभिव्यक्ति स्पष्ट होनी चाहिए तथा बोलने में प्रवाह होना चाहिए। उसे हमेशा पूर्व निर्धारित विषय तथा क्रम में नहीं बोलना होता। विशेषकर खेलों में हर पल दृश्य बदलता है। शब्दों का चयन उपयुक्त होना चाहिए तथा वाक्य संरचना सौधी होनी चाहिए। अभिव्यक्ति भाव एवं शब्द चयन अवसर के अनुकूल होना चाहिए। समारोह या घटना के पूर्व समारोह स्थल, आयोजन, आयोजको आदि की जानकारी श्रोताओं को दे देनी चाहिए। उपयुक्त अवसर पर चुप रहकर, अंतराल देकर घटनास्थल की गतिविधिर्या को, हलचल को श्रीता तक ध्वनियों के माध्यम से विवरण देते समय सलामी का आदेश, किसी लोक नर्तक जत्थे का संगीत के साथ गुजरना, संगीत के साथ बच्चों का नृत्य, आकाश में विमान का उड़ना, विभिन्न अवसरों का आँखो देखा हाल रिकॉर्ड किया जाना चाहिए, क्योंकि इससे त्रुटियों को दूर किया जा सकता है। महत्त्वपूर्ण अवसरों की रिकॉर्डिंग का आर्काइब्ज के लिए भी महत्व है।

८.५ रेडियो पत्रकारिता

संचार के आधुनिक माध्यमों में रेडियो ने अपने वर्चस्व और महत्व को बरकरार रखा है। रेडियो अपनी विकास यात्रा के स्वर्णिम चरणों को पूरा करता हुआ आज एक नए मुकाम को हासिल कर चुका है। रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का श्रोताओं पर सबसे ज्यादा और सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। भारत जैसे विकासशील देश में आज भी ८० प्रतिशत जनसंख्या गांव में निवास कर रही है। जहाँ रेडियो ही जान, सूचना और मनोरंजन का सबसे सुलभ, सस्ता और आसान साधन है।

८.५.१ रेडियो पत्रकारिता का स्वरूप एवं उसके प्रकार:

पत्रकारिता एक बहुआयामी विषय है। अतः इसके विविध स्वरूपौ तथा प्रकारों के अनुभव भावोत्पादक फोटो पत्रकारिता में प्रभावी हो सकती है। इसका संक्षिप्त जान प्रदान करने हेतु

पत्रकारिता के स्वरूप तथा इसके विविध प्रकारों की सूक्ष्म व्याख्या निम्न प्रकार प्रस्तुत की जा रही है-

१. राजनीतिक पत्रकारिता:

राजनीतिक पत्रकारिता का प्रारम्भ स्वाधीनता पूर्व हो चुका था। भारतीयों द्वारा प्रकाशित कोई भी पत्र ऐसा नहीं था, जिनमें अंग्रेजी हुकूमत की ज्यादतियों का चित्रण न हो। सभी भारतीय समाचार-पत्र 'स्वाधीनता मिशन' से प्रेरित थे। वह देश को राजनीतिक रूप से गुलाम नहीं रखना चाहते थे। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद देश में लोकतन्त्र की स्थापना हुई। शासन की इस व्यवस्था में पत्रकारिता का राजनीतिक दायित्व बहुत बढ़ गया। समाचार पत्र वस्तुतः शासक और शासित के मध्य की एक अटूट कड़ी बन गए। शासक दल की नीतियों से जन-मानस को रू-ब-रू करवाना और जन-मानस की भावनाओं को शासक दल तक पहुँचाना पत्रकारों का प्रमुख दायित्व हो गया। वर्तमान में सभी समाचार पत्र-पत्रिकाएँ व सूचना के अन्य साधन अपने इस उत्तरदायित्व को भली प्रकार निभा रहे हैं। इसका सम्पूर्ण श्रेय पत्रकारिता को जाता है। राजनीतिक समाचारों के लिए प्रमुख पत्रिकाओं में इण्डिया टुडे, द वीक, आउटलुक, द टाइम आदि प्रमुख हैं।

२. सामाजिक पत्रकारिता:

सामाजिक कुरीतियाँ व अन्धविश्वासों पर जहाँ पत्रकारिता ने कठोरतम वार किए हैं, वहीं लोगों को एक नई जीवन शैली में दालने का कार्य भी किया है। सामाजिक आस्थाओं-अनास्थाओं, समानताओं-विषमताओं और सामाजिक संकीर्णताओं का विशद् विश्लेषण और प्रसारण रेडियो एवं समाचार पत्रों द्वारा निरंतर हो रहा है। इसी विश्लेषण का परिणाम है कि लोगों के जीवन मूल्य परिवर्तित हुए हैं। उनके विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन आए हैं। उनके सोचने और कार्य करने का ढंग बदला है। लेकिन अभी भी सामाजिक सौहार्दता स्थापित करने की दिशा में पत्रकारिता के समक्ष गम्भीर चुनौतियाँ हैं।

३. आर्थिक पत्रकारिता:

विश्व में औद्योगिक क्रान्ति के बाद ही पूँजीवाद, समाजवाद और साम्यवाद जैसे नए चिन्तन ने विश्व के विभिन्न देशों को विशिष्ट राजनीतिक विचार धारा के तहत लामबन्द किया और अपने दर्शन के प्रचार व प्रसार हेतु समाचार पत्रों को माध्यम बनाया। औद्योगिक युग में किसी राष्ट्र अथवा व्यक्ति विशेष की सफलता, अर्थ के समुचित नियोजन और प्रबन्धन से सम्भव है और यह कार्य समाचार-पत्र और पत्रिकाओं के माध्यम से जितने प्रभावी होगे उतना किसी अन्य माध्यम से नहीं।

४. धार्मिक पत्रकारिता:

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् धार्मिक पत्रकारिता में अमूलचूल परिवर्तन हुआ। बृहद स्तर पर अनेक धार्मिक पत्रिकाएँ जैसे अखण्ड ज्योति, वेद अमृत, साधना-पथ, ओशी टाइम्स, मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र आदि पत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन आरम्भ हुआ। ये पत्रिकाएँ आज भी लोकप्रिय हैं और इनके पाठकों की संख्या अच्छी है।

५. फिल्मी पत्रकारिता:

आरम्भ में फिल्म या चलचित्र सम्बन्धी समाचारों के लिए दैनिक, साप्ताहिक या अन्य पत्रिकाओं में कुछ पृष्ठ निर्धारित होते थे। कालान्तर पर चलचित्रों के विकास एवं उनकी बढ़ती लोकप्रियता के समक्ष स्थापित प्रकाशन संस्थानों ने अलग से साप्ताहिक और मासिक फिल्म पत्रिकाओं का प्रकाशन अंग्रेजी, हिन्दी व अन्य भाषाओं में प्रारम्भ कर दिया। आज फिल्मी पत्रिकाओं में फिल्म फेयर, स्टार-डस्ट, शो-टाइम और सिने ब्लिट्ज आदि प्रमुख हैं। रेडियो पर फिल्मी गाने और वालीबुड की जानकारी देने वाले कई कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं।

६. खेल-पत्रकारिता:

रेडियो पर खेल का अपना एक अलग महत्त्व है। किसी भी महत्त्वपूर्ण मैच का आनंद लोग रेडियो कमेंटरी से लेते हैं। इसके अलावा खेलों के बारे में समीक्षा भी रेडियो पर पेश किया जाता है। आज कल एक एम पर स्पोर्टस स्कैन नामक एक प्रोग्राम प्रसारित होता है, इसमें देश विदेश की तमाम खेल ख़बरों पर चर्चा होती है।

७. शिक्षा पत्रकारिता:

शिक्षा सम्बन्धी समाचारों का संकलन और उनका प्रकाशन वर्तमान में पत्रकारिता की एक स्वतन्त्र और सशक्त विधा या बौट बन गई है। दैनिक समाचार-पत्र में लो बेसिक, माध्यमिक उच्च एवं तकनीकी शिक्षा से सम्बन्धित समाचार देखने को मिलते ही हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा पर अलग से मासिक पत्रिकाएँ जैसे एजुकेशन टुडे, वर्ल्ड ऑफ बी स्कूल भी नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है। अब शिक्षा भी पत्रकारिता का एक अभिन्न अंग बन गई है। रेडियो पर कई शैक्षणिक कार्यक्रम प्रसारण के साथ-साथ जानवाणी जैसा एक रेडियो चैनल स्वतंत्र कार्यरत है।

८. साहित्यिक पत्रकारिता:

स्वाधीनता से पूर्व साहित्यिक पत्रकारिता का जन्म हो चुका था। हिन्दी के विद्वान जैसे-भारतेन्दु हरिश्चन्द, हजारी प्रसाद द्विवेदी, बालकृष्ण भट्ट तथा प्रताप नारायण मिश्र आदि ने मासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन साहित्य-सृजन को गति देने की दृष्टि से किया। विशुद्ध रूप से साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएँ पाठकों को रास नहीं आई और धीरे-धीरे धनाभाव के कारण यह लुप्त होती गई। लेकिन पिछले दो दशकों में साहित्यिक पत्रिकाओं की बाढ़-सी आ गई है।

९. औद्योगिक पत्रकारिता:

उद्योग पत्रकारिता का विकास डेढ़ दशक पहले हुआ है। पूर्व में उद्योग संबंधी समाचार दैनिक अखबारों और पत्रिकाओं में जरूरत के हिसाब से छापे जाते थे। लेकिन वर्तमान में व्यापार संबंधी समस्त समाचारों के लिए एक या दो पेज रिजर्व कर दिए गए। इसके अलावा वर्तमान में कई अखबार व्यापार समाचार के लिए प्रकाशित किए जा रहे हैं। हालाँकि अभी तक रेडियो में इन समाचारों को कोई अलग स्थान नहीं दिया गया फिर भी रेडियो बुलेटिन में व्यापार समाचार को समाहित करने का चलन बदस्तूर जारी है।

१०. चिकित्सा पत्रकारिता:

वर्तमान में सभी समाचार पत्र अपने पाठकों को उनके स्वास्थ्य, रोगों और निदान के बारे में प्रतिदिन जागरूक करने का कार्य कर रहे हैं। रेडियो की बात करें तो आकाशवाणी पर लगभग रोजाना स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। हालांकि बुलेटिन में बड़ी खबर होने पर ही इस तरह की चिकित्सकीय समाचारों को सम्मलित किया जाता है। रेडियो पर स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम स्रोताओं के हित में बनाए जा रहे है।

११. कृषि पत्रकारिता:

जैसा कि माना जाता है कि हमारा देश एक कृषि प्रधान राष्ट्र है और रेडियों के दो तिहाई श्रोता भी कृषक है। आकाशवाणी पर फसलों की बुवाई, कटाई, मिजाई और फसलों को खराब करने वाले रोगों एवं कीटनाशकों की जानकारी प्रसारित की जाती है। इसके अलावा जमीन की उपजाऊ क्षमता बढ़ाना, खरपतवार कम करना, खेती या बौज के लिए लोन लेना आदि बातों की जानकारी के लिए कृषक वर्ग रेडियो पर ही आश्रित हैं।

१२. खोजी पत्रकारिता:

पत्रकारिता की यह विधा शुरुआती दौर में अखबारी में उपयोग में लाई जाती थी। बाद में टीवी में इसका प्रयोग होने लगा। हालांकि रेडियो बुलेटिन में खोजी खबरे न के बराबर होती है।

१३. पर्यावरण पत्रकारिता:

पर्यावरण से संबंधित खबरें और लेख समाचार पर्न्ने और पत्रिकाओं में तो आते ही हैं लेकिन रेडियो में इन्हें विशेष स्थान दिया जाता है। हेडियो पर पर्यावरण संबंधी कई तरह की जानकारी कार्यक्रमों के रूप में श्रोताओं के लिए प्रसारित की जाती है। रेडियो बुलेटिन के अंत में गौसम संबंधी जानकारी प्रतिदिन दी जाती है। रेडियो पर मर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने एवं पर्यावरण पर पड़ रहे प्रतिकूल प्रभाव से लोगों को अवगत कराने के लिए कई प्रोग्राम प्रसारित किए आ रहे है।

८.५.२ हैम रेडियो:

जब भूकंप आदि बड़ी आपदाएँ आती हैं. तो पल भर में सब कुछ तहस-नहस हो जाता है। ऐसी स्थिति में संचार के सफल साधन के रूप में हम रेडियों काम आता है। २६ जनवरी, २००१ को गुजरात में आए विनाशकारी भूकंप के दौरान यह संचार माध्यम बखूबी काम आया। अब वह दिन दूर नहीं, जब घर-घर नवस्थापित हैम रेडियो स्टेशन होंगे और उन पर देश-विदेश के दूसरे हैम रेडियो सैट्स से वार्तालाप हुआ करेगा। सैलाब, भूकंप आदि अनेक प्राकृतिक आपदाओं के समय हैम रेडियो विश्व भर में बेहतर संचार का कारगर माध्यम सिद्ध हुआ है। विश्व में हैम पद्धति भी उतनी ही पुरानी है जितनी पुरानी रेडियो संचार की सामान्य प्रणाली है। हैम रेडियो संचार की सामान्य प्रणाली है। हैम रेडियो पर विभिन्न केन्द्रों के प्रसारण भी सुने जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त हमारी आवाज दूसरे हैम प्रसारकों तक पहुँचती है। रेडियो तरंगों के क्षेत्र में तीन महारथी बहुत प्रसिद्ध थे- हर्ट्ज (Hertz), आर्मस्ट्रॉग

तथा मार्कोनी इन्हीं तीन वैज्ञानिकों के नाम के प्रथमाक्षरों- एच, ए, तथा एम को मिलाकर हैम शब्द बना है। रेडियो के लिए शॉर्ट वेव बैंड में १.२ से ३० मेगाहर्ट्ज तक, वी एच एफ बैंड में ३० मेगाहर्ट्ज तक और यू एच एफ बैंड में ३०० से ३,००० हर्ट्ज तक विभिन्न आवृत्तियों का आवंटन किया जाता है। मुख्यतः शॉर्टवेब का प्रयोग अधिक किया जाता है, क्योंकि इसकी तरंगें शीघ्र ही विश्व भर में पहुँच जाती हैं। इन रेडियो तरंगों को किसी उपग्रह की आवश्यकता नहीं होती है। संचार के क्षेत्र में आई क्रांति के कारण शीघ्र ही हैम रेडियो का देशव्यापी नेटवर्क शुरू हो जाएगा।

८.५.३ सेटेलाइट रेडियो:

सेटेलाइट रेडियो संचार उपग्रह द्वारा क्रियान्वित होता है। टीवी चैनल की तरह रेडियो चैनल के सिग्नल औ पृथ्वी से सेटेलाइट पर अपलिंक किए जाते हैं। जहाँ से वापिस सिग्नल को बूस्ट करके पृथ्वी पर भेज दिया जाता है। सामान्यतः रेडियो चैनल ए एम या एफ एम सिद्धांत पर कार्य करते हैं। लेकिन इनकी सीमा निश्चित है! को होती है। इस समस्या से निजात पाने के लिए सेटेलाइट रेडियो का अविष्कार किया गया। सेटेलाइट तकनीक द्वारा श्रोता कहीं भी बैठकर दुनिया में चल रहे सभी रेडियो चैनल का लुत्फ उठा सकता है। अमेरिका जैसे कई देशों में सेटेलाइट रेडियो काफी प्रचलित है। वर्तमान में साइरस, एक्स एम और वर्ल्डस्पेस जैसी कई कम्पनियाँ यह सुविधा दे रही हैं। इस तकनीक में उपयोग किए जाने वाले रिसीवर में एक डिश एंटीना और डीकोडिंग सिस्टम लगा रहता है।

सेटेलाइट रेडियो का उपयोग:

१. अमेरिका जैसे विकसित देशों में होटल, रेस्टोरेन्ट और बाजार में लोगों के मनोरंजन के लिए संगीत प्रसारण किया जाता है।

२. जहाज पोतों के दिशा निर्देशन में।

३. सेना के मार्गदर्शन में।

विशेषताएँ:

१. वृहद् क्षेत्र में प्रसारण क्षमता

२. डिजिटल साउंड क्वालिटी

३. तीन सौ से ज्यादा चैनल

४. चौबीस घंटे प्रसारण

६. रिसीवर सेंट का छोटा आकार

७. न्यूनतम मासिक शुल्क

८.६ टीवी पत्रकारिता

विश्व में टेलीविजन का विकास असमान रूप से हुआ है। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि औद्योगिक क्रांति के बाद पश्चिमी देश जिस प्रकार तकनीक एवं उत्पादन में एशियाई और अफ्रीकी देशी से काफी आगे निकल गुए हैं। उसकी भरपाई करना औपनिवेशिक देशों के लिए इतना आसान नहीं था। टेलीविजन का विकास तकनीक और धन की उपलब्धता दोनों से सीधा जुड़ा रहा है। इसलिए अमीर विकसित देशी-ब्रिटेन, अमेरिका, रूस और आपान में टेलीविजन काफी पहले ३० के दशक में ही आरंभ हो गया ताकि गरीब एशियाई-अफ्रीकी देशों में इसे शुरु होने में आधी सदी निकल गई। इनमें भी जिन देशों की सरकारों ने टेलीविजन के प्रसार में अधिक रुचि दिखाई, वहाँ पर ही टेलीविजन जल्दी पनप पाया। अधिकांश विकासशील देशों में धनाभाव के चलते सरकारों का टेलीविजन के प्रति रवैया कुल-मुल रहा। अधिकांश पिछड़े देशों में विदेशी मदद से ही टेलीविजन शुरू हो पाया। टेलीविजन का जो रूप आज अमेरिका, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में है, उसकी तुलना में एशियाई और अफ्रीका देशों में टेलीविजन की तस्वीर कहीं भी मुकाबले में नहीं ठहरती। जब भी टेलीविजन के विकास की बात होती है तो उसका आशय होता है- टेलीविजन की तकनीक, टेलीविजन रिसीविंग सेट, टेलीविजन ट्रांसमीटर, वीडियो कैमरे, एडीटिंग तकनीक इत्यादि टेलीविजन सॉफ्टवेयर, टेलीविजन कार्यक्रम और टेलीविजन विशेषर्जी, टेलीविजन की समझ रखने वाले कार्यक्रम निर्माता-निर्देशकों का विकास। विकासशील देशों में टेलीविजन तकनीक के रूप में तो काफी पहले ५० और ६० के दशक में स्थापित हुआ लेकिन ८० के दशक तक टेलीविजन कार्यक्रम निर्माण तकनीक उपलब्ध न होने के कारण बड़ी संख्या में इन देशों को टेलीविजन कार्यक्रमों का आयात करना पड़ता था। ये कार्यक्रम अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, जापान आदि देशों से मंगाए जाते थे और देशज भाषा में डब करके इन्हें दिखाया जाता था। इससे पूरी दुनिया के विकासशील देशों में एक बिल्कुल नए किस्म का सांस्कृतिक संकट उत्पन्न होने लगा। टेलीविजन के माध्यम से सांस्कृतिक हमले का यह नया रूप था। अधिकांश पिछडे देश इसके शिकार बन रहे थे। सन् १९८० में प्रकाशित प्रसिद्ध मैकब्राइड कमीशन की रिपोर्ट में भी इस बात का उल्लेख किया गया है कि विकासशील देश यदि अपने देशज टेलीविजन तकनीक भी अपना लें तो से उनका भला नहीं बल्कि नुकसान ही अधिक होगा। भारत में भी श्री जोषी की अध्यक्षता में बनी एक समिति ने अपनी रिपोर्ट में भारत में टेलीविजन के भारतीय चेहरे को तराशने पर बल दिया।

८.६.१ ब्रिटेन:

दुनिया में सबसे पहले इंग्लैंड में टेलीविजन की शुरुआत हुई। आज भी ब्रिटिश टेलीविजन अपनी तकनीक और कार्यक्रमों के मामले में विश्व भर में माना जाता है। ऐतिहासिक दृष्टि से ब्रिटेन में टेलीविजन काफी नियंत्रित और संतुलित रूप में विकसित हुआ है। ब्रिटेन में पब्लिक सर्विस और व्यावसायिक टेलीविजन का मिला-जुला रूप है और दोनों के बीच स्वास्थ्य प्रतिस्पर्धा भी देखने को मिलती है। वर्तमान में बीबीसी के चार प्रमुख चैनलों में से तीन और चैनल ४ जनहित कार्यक्रमों को समर्पित हैं। अल्पसंख्यकों और विशेष उद्देश्यों के लिए कार्यक्रम प्रसारित करते हैं ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कंपनी नाम बी बी सी का गठन अक्टूबर १९२२ में मारकोनी सहित ब्रिटेन के प्रमुख वायरलेस निर्माताओं ने किया था।

इसी साल १४ नवम्बर को मारकोनी के लंदन स्थित स्टूडियो से बीबीसी रेडियो का पहला प्रसारण हुआ। अगले दिन बर्मिंघम और मैनचेस्टर में भी रेडियो प्रसारण किया गया। एक साल के अंदर ही बीबीसी रेडियो पूरे इंग्लैंड में सुना जाने लगा। अपने पहले जनरल मैनेजर जॉन रीड की अगुवाई में बीबीसी इस दौरान नाटक के लोकप्रिय कंसर्ट, शास्त्रीय संगीत, वार्ताएँ और वैराइटी शोज का प्रसारण करता था। सन् १९२६ में पहली बार देशव्यापी हड़ताल के दौरान बीबीसी और ब्रिटेन की सरकार आमने-सामने आ गए। बीबीसी को सरकार के नियंत्रण में लाने की चर्चा होने लगी।

सन् १९२७ में ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कंपनी को सरकार ने रॉयल चार्टर देकर ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन बना दिया और जॉन रीड को स्नाइट्स प्रदान कर इसका पहला डायरेक्टर जनरल नियुक्त कर दिया गया। बीबीसी के नियंत्रण की जिम्मेदारी बारह गवर्नरों के हाथ में होती है। न्यासी के रूप में ये गवर्नर समाज के शिक्षा, इतिहास, कला, संस्कृति, राजनीति आदि क्षेत्रों में से चुने जाते हैं। इनकी नियुक्ति ब्रिटेन के प्रधानमंत्री की सिफारिश पर महारानी द्वारा की जाती है। बीबीसी की स्वायतत्ता बरकरार रखने के लिए इन्हें हटाने की प्रक्रिया को काफी कठिन बनाया गया है। फिर भी ये गवर्नर संसद के प्रति उत्तरदायी होते हैं और इन्हें वार्षिक रिपोर्ट संसद में पेश करनी पड़ती है।

बीवीसी ने अपनी टेलीविजन सेवा-२ए नवम्बर १९३६ को उत्तरी लंदन के अलेक्जेंडर पैलेस से आरंभ की। इस प्रसारण को लोगों ने १० इंच के टेलीविजन पर देखा। सन् १९३६-३९ के दौरान टेलीविजन का विकास तेजी से हुआ। १२ मई १९३७ को जार्ज छठे के राज्याभिषेक जुलूस के प्रसारण और इसी साल जून महीने मैं विंबल्डन की कवरेज ने टेलीविजन को लोगों के बीच काफी लोकप्रिय बना दिया। सितम्बर १९३९ का द्वितीय विश्वयुद्ध आरंभ हो गय्या। इस समय मिक्की माउस का कार्टून कार्यक्रम दिखाया जा रहा था। बैंक दिया गया और सात साल बाद ७ जून १९४६ को इसी कार्टून को दिखाकर पुनः टेलीविजन प्रसारण शुरू किया गया। टेलीविजन प्रसारण रोकने का एक कारण युद्ध में इसको नुकसान पहुँचाने का डर था, साथ ही अधिकांश इंजीनियर भी युद्ध संबंधी कार्यों में लगे थे। इसलिए यह काल टेलीविजन के विकास के लिए काफी झटका देनेवाला रहा।

जॉन रीड टेलीविजन के प्रति अधिक उत्साहित नहीं थे लेकिन १९५२ में जब सर इयान जैकब बीवीसी के डायरेक्टर बने तो उन्होंने बीबीसी टेलीविजन को महत्व देना शुरू कर दिया। २ जून १९५३ की घटना ने ब्रिटेन में टेलीविजन के इतिहास को सदा के लिए बदल दिया। महारानी की ताजपोशी के टेलीविजन प्रसारण को लगभग २ करोड़ २० लाख लोगों ने देखा। दर्शकों ने इस घटना को देखने के लिए टेलीविजन सेट खरीदे या फिर पड़ोसियों के घर जाकर टेलीविजन देखा। दरअसल यह टेलीविजन युग की शुरुआत कही जा सकती है। जैसे-जैसे टेलीविजन के सितारे लोकप्रिय होने लगे। इनमें डेविड एटनबी, इमोन एंड्र्यूज और जैक वार्नर प्रमुख थे।

सन् १९५४ में बनाए गए 'द टेलीविजन एक्ट' ने इंडिपेंडेंट टेलीविजन नामक विज्ञापन पोषित सेवा शुरु करने की अनुमति दे दी। सितंबर १९५५ में शुरु हुए आई. टीवी, ने बीबीसी को कड़ी टक्कर देना शुरू कर दिया। आई टीवी देश भर की विभिन्न कंपनियों का एक मिला-जुला चैनल था। इसने पहली बार विभिन्न विषयों और पसंदों को पहचानना शुरु कर

दिया। इसकी प्रस्तुति का अंदाज भी बीबीसी की तुलना में अधिक अनौपचारिक था। यही कारण था कि इसे आम लोगों का चैनल कहा जाने लगा। सन् १९५७ के दर्शक आँकड़े बताते हैं कि आई टीवी, के कारण बीबीसी के दर्शकों में २८ प्रतिशत तक की कमी आ गई थी। इसी दशक के अंत में वीडियो टेप के कारण घटनाओं की विडियो रिकॉर्डिंग संभव हो पाई। इस सुविधा ने टेलीविजन प्रोडक्शन को बदलकर रख दिया।

सन् १९६७ में बीबीसी ने अपना दूसरा चैनल बीबीसी-२; २१ अप्रैल को आरंभ किया। २ दिसंबर १९६७ को पहली बार बीबीसी ने रंगीन प्रसारण शुरू किया। ६० का दशक ब्रिटेन में नए किस्म के टेलीविजन के लिए जाना जाता है। अब बँधे-बंधाए नियमों को तोड़कर लीक से थोड़ा हटकर कार्यकम बनने लगे। आधुनिकता की बहस में परंपरागत सीमाओं और मर्यादाओं की आलोचना की जाने लगी। टेलीविजन पर सच्चाई को दिखाने का दबाव बढ़ा। नतीजे में गहरे राजनीतिक व्यंग्य लिए और बनाए गए। बेघर और विस्थापित लोगों के दुख को दर्शाने वाले नाटक भी दर्शकों द्वारा खूब पसंद किए गए। इसी दशक में लोगों ने राजघराने के लोगाँ को टेलीविजन पर साक्षात्कार देते हुए देखा। सन् १९६९ में दर्शकों ने चंद्रमा पर पहले व्यक्ति के पहुँचने की तस्वीर भी टेलीविजन पर देखी।

७० के दशक को ब्रिटिश टेलीविजन का स्वर्णिम काल कहा जा सकता है। इस दौरान टेलीविजन सेटों की संख्या तेजी से बढ़ी और इसी के साथ ही विज्ञापनों एवं लाइसेंस फीस से टेलीविजन की आय में भी बढ़ोतरी हुई। यह दशक अपने शानदार वृत्तचित्रों के लिए जाना जाता है। रोमियो जूलियट, १९७४ का पहला रिएलिटी शो कहा जाता है। वैरायटी शोन के अलावा इस दशक में रोमियो और जूलियट, १९७८ से शुरू करके शेक्सपीयर के अनेक नाटकों का टेलीविजन रुपांतरण दिखाया गया जो काफी लोकप्रिय भी रहा।

८० के दशक में बीबीसी को सरकार की ओर से अनेक दिक्कतों का सामना करना पड़ा। अन्नान कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में बीबीसी पर मानसिक संतुलन बिगड़ने और सांगठनिक धुंध बढ़ने का आरोप लगाया। कमेटी की रिपोर्ट के बाद सन् १९८२ में चैनल ४ आरंभ किया। चैनल ४ संसद में कानून पारित करके शुरू किया गया था। लेकिन सरकार की ओर से इसे कोई मदद नहीं मिलती बल्कि व्यावसायिक गतिविधियों से ही इसकी आमदनी होती है। इस चैनल के कार्यक्रमों का फोकस ब्रिटेन में रह रहे एशियाई और अफ्रीकी अल्पसंख्यकों की सांस्कृतिक पहचान को बनाया गया। यह चैनल लगभग ३०० स्वतंत्र टेलीविजन निर्माताओं से कार्यक्रम बनवाता है। चैनल ४ समूह अनेक मनोरंजक चैनल चलाता है। ८० का दशक बीबीसी के रिपोर्टरों के लिए काफी चुनौती भरा रहा इस दौरान दुनिया भर में अनेक ऐसे संकट आए जिनकी रिपोर्टिंग करने के लिए बीबीसी ने अपने संवाददाता घटनास्थल पर भेजे। उत्तरी आयरलैंड की घटना, धीन के ध्येन आनमान चौक पर छात्र आंदोलन, पूर्वी यूरोप के कम्युनिस्ट देशों और सोवियत संघ का विघटन, कोयला खनिकों की हड़ताल ऐसे घटनाक्रम थे, जब बीबीसी के रिपोर्टरों ने शानदार रिपोर्टिंग की। इस दशक में अनेक लोकप्रिय समाचार और सम-सामयिक घटनाओं पर आधारित कार्यक्रम शुरु हुए। इसके अलावा मनोरंजक कार्यक्रम काफी लंबे समय तक चर्चित रहे।

८० के दशक में ही ब्रिटेन के तीसरे प्रमुख चैनल ने अपने पैर पसारे। रूपर्ट मर्डोक ने १९८३ में लंदन स्थित एक कंपनी सैटेलाइट टेलीविजन लिमिटेड के ६५ प्रतिशत शेयर

खरीद लिए। यह कंपनी यूरोप के पहले सैटेलाइट चैनल को एक साल पहले से ही पश्चिमी यूरोप में प्रसारित कर रही थी। मौंक ने जनवरी १९८४ में इसे स्काई चैनल के रूप में पुनः लॉन्च कर दिया। उस समय तक ब्रिटेन में केवल १०,००० के करीब घर ऐसे थे जिनमें केबल टेलीविजन का कनेक्शन था। लेकिन सन् १९८७ तक आते-आते स्काई टीवी ने लगभग ११ प्रतिशत घरों में अपनी पहुँच बना ली। ब्रिटिश सरकार ने मॉक को जब सैटेलाइट से प्रसारण करने की अनुमति नहीं दी तो उसने बाहर के एक उपग्रह से तीन चैनलों का एक पैकेज ब्रिटेन में प्रसारित करना शुरू कर दिया।

रौनेड़ा टीवी भी ब्रिटेन का एक प्रमुख टेलीविजन समूह है। इसने अपना प्रसारण ५ मई, १९५६ को शुरु किया। पहले यह समूह सिनेमा और थिएटर चलाता था। इसे ब्रिटेन के पहले सौप ओपेरा प्रसारित करने का श्रेय प्राप्त है। इसके अलावा काफी लोकप्रिय समसामयिक मुद्दों का कार्यक्रम भी ग्रेनेडा टेलीविजन पर ही दिखाया गया था। इंडिपेंडेंट टेलीविजन न्यूज पहले एक न्यूज कंपनी के रूप में स्थापित की गई थी। इसने अपना पहला बुलेटिन २२ सितंबर, १९५५ को प्रसारित किया। ९० के दशक में ब्रिटेन ने अपने आपको नई डिजिटल तकनीक के अनुरुप दालना शुरू कर दिया। कार्यक्रम निर्माण ही नहीं, प्रसारण में डिजिटल तकनीक को अपना लिया गयी इसका परिणाम यह हुआ कि पिक्चर और साउंड की क्वालिटी बढ़ी। साथ ही एनीमेशन, आधारित कार्यक्रमों के जरिए बनाना संभव नहीं था। इनमें विज्ञापन और प्राकृतिक इतिहास संबंधी कार्यक्रम काफी लोकप्रिय हुए। सन् २००० के बाद बीबीसी ने अपने विशेष दर्शकों के लिए कुछ चैनल शुरु किए। इसके अलावा विबंडलन २००१ के दौरान इंटरएक्टिव टेलीविजन सेवा भी आरंभ की गई।

मई २००३ में बीबीसी सरकार के साथ एक विवाद में उलझ गई। बीबीसी ने इराक युद्ध के बाद एक खबर दिखाई, जिसके अनुसार इराक में व्यापक संहार, हथियार होने के तथ्य के साथ ब्रिटिश सरकार ने खिलवाड किया है। प्रधानमंत्री टोनी मपेयर ने बीबीसी से खबर का खंडन करने को कहा, जिसे बीबीसी के बोर्ड ऑफ गवर्नर ने नकार दिया। जुलाई महीने से सरकार के प्रमुख शस्त्र सलाहकार डेविड केली ने कथित रूप से आत्महत्या कर ली। इसको लेकर सरकार ने लार्ड हट्टन की अध्यक्षता में एक जाँच समिति गठित की।

जाँच की रिपोर्ट आने के बाद बी बी सी चेयरमैन नैविन इवीस ने २८ जनवरी, २००४ को अपने पद से इस्तीफा दे दिया। इस सारे मामले में भले ही सरकार की जीत हुई हो लेकिन उस दौरान के सर्वेक्षण बताते हैं कि लोगों ने थी बी सी की खबर पर अधिक भरोसा जताया। अमेरिका- न्यूयॉर्क में आयोजित विश्व व्यापार मेले में पहली बार १३ अप्रैल, १९३९ को आम जनता के लिए टेलीविजन का प्रदर्शन किया गया। उसके बाद कोलंबिया ब्रॉडकास्ट कॉरपोरेशन ने अमेरिका में दो घंटे का प्रसारण शुरु कर दिया। ब्लैक एंड व्हाइट पर आरंभ में खाना बनाने की विधियों, हास्य एवं कठपुतली जैसे रोचक कार्यक्रम दिखाए गए। मैले में रेडियो कॉरपोरेशन ऑफ अमेरिका के स्टॉल से लोगों को ५ इंच स्क्रीनवाला टेलीविजन सेट ६०० डॉलर में मिलने लगा। दो साल बाद अमेरिका के फेडरल कम्युनिकेशन कमीशन ने टेलीविजन कॉमर्शियल स्टेशन खोलने की अनुमति दे दी। लेकिन टेलीविजन को लेकर सारा उत्साह द्वितीय विश्व युद्ध के कारण ठंडा पड़ गया। युद्ध के समय टेलीविजन की सभी विस्तार योजनाएँ रोक दी गई। अमेरिका की सबसे पुरानी टेलीविजन कंपनियों में कोलंबिया ब्रॉडकास्टिंग सिस्टम, नेशनल ब्रॉडकास्टिंग कंपनी और अमेरिका ब्रॉडकास्टिंग कंपनी

प्रमुख हैं। इन्हीं तीन प्रमुख कंपनियों का अमेरिका टेलीविजन जगत पर काफी लंबे समय तक कब्जा रहा। सन् १९५२ में जब टेलीविजन दोबारा शुरु किया गया तो इसका विस्तार तेजी से हुआ और निजी कंपनियों के अलावा सरकार ने भी इसमें विशेष रुचि दिखाई। ५० के दशक ने अमेरिकी टेलीविजन में कुछ ऐसे कार्यक्रम दिए जिन्होंने लोकप्रियता का इतिहास रचा। इनमें से अधिकांश कार्यक्रम निजी प्रोडक्शन हाउस से बनवाए गए थे। ६० का दशक अमेरिका में टेलीविजन पत्रकारिता की दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण रहा। सन् १९६० में कैनेडी और निक्सन के बीच की टेलीविजन बहस को पूरे देश ने देखा। इसी साल २ नवंबर को राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या की घटना की चार दिन तक की गई टेलीविजन कवरेज ने सारे राष्ट्र को टेलिविजन के और करीब ला दिया। इसी प्रकार की कवरेज नागरिक अधिकारों के लिए लड़नेवाले नेता मार्टिन लूथर किंग की हत्या के समय भी की गई। इसी दौरान वियतमान युद्ध में अमेरिकी सेना और उसके विरोध में शांति आंदोलनों ने टेलीविजन के लिए भरपूर समाचार उपलब्ध कराए। ६० के दशक के अंत में अमेरिका के ९२ प्रतिशत घरों में टेलीविजन पहुँच चुका था।

८.६.२ ऑस्ट्रेलिया:

सन् १९५० में कंजर्वेटिव फेडरल सरकार ने सत्ता सँभालते ही सोशलिस्ट सरकार की नीतियाँ को पलटते हुए देश में व्यावसायिक आधार से ही पब्लिक सर्विस और व्यावसायिक टेलीविजन के साथ-साथ अपना विस्तार किया है। ऑस्ट्रेलिया में टेलीविजन प्रसारण की शुरुआत १६ सितंबर, १९५६ को हुई। टेलीविजन का आरंभ ऑस्ट्रेलिया के दो प्रमुख शहर सिडनी और मेलबोर्न में एक साथ हुआ। जबकि ब्रिसबेन और एडिलेड टेलीविजन में प्रसारण सन् १९५९ में शुरू हो पाया। वैसे तो सन् १९३२ में ही ऑस्ट्रेलिया ब्रॉडकास्टिंग कमीशन बना दिया गया था, लेकिन ऑस्ट्रेलिया ब्रॉडकास्टिंग कमीशन को अपना टेलीविजन शुरू करने में काफी देर हो गई। सन् १९५३ में रॉयल कमीशन ने सिफारिश की कि देश में ब्रॉडकास्टिंग कमीशन को अपनी टेलीविजन सेवा भी शुरू करनी चाहिए।

८.७ समाचार वाचन कला

यह दुनिया एक रंगमंच है। हर इंसान अपनी भूमिका अच्छी या बुरी अवश्य निभाता है। प्रत्येक व्यक्ति लगभग हर समय अपने को ही उजागर करता रहता है। लेकिन दुनिया में अभिनेताओं की भरनार के साथ- साथ अभिनय आलोचकों की भी कमी नहीं। आमतौर पर हर व्यक्ति दूसरे के काम पर आसानी से टीका- टिप्पणी कर देता है या कर सकता है। यह वाक्य तो आपने भी कहा या सुना होगा आई अपनी उम्र के हिसाब से बात करो या आपकी भूमिका समय तथा परिस्थिति के अनुरूप नहीं है। यहाँ प्रश्न यह है कि यदि सारी दुनिया अभिनय कर रही है तो इसमें सौखने या पढ़ने की क्या जरूरत है। पहला जवाब यह है कि अभिनय करने का मतलब हमेशा यह नहीं होता कि अच्छा अभिनय किया जा रहा है। दूसरे यह कि हर व्यक्ति में अभिनय प्रतिभा नहीं होती। यह व्यक्ति विशेष में निहित प्राकृतिक गुण है जिसे पहचान कर मार्गदर्शन, प्रशिक्षण अथवा प्रयास तथा वास्तविक प्रदर्शन द्वारा निखारा जा सकता है।

अभिनय मूलरूप में दो तरह का होता है। एक, जब व्यक्ति को स्वयं पता नहीं होता कि वह किसी अन्य व्यक्ति की भूमिका निभा रहा है। दूसरे, जब वह जानबूझ कर ऐसा करने का प्रयास करता है। दोनों ही स्थितियों में प्रभावी और सफल होने के लिए व्यक्तित्व, परिधान, आवाज़ और शब्दों का चयन समय, भूमिका तथा श्रीता व दर्शक की मनःस्थिति के अनुरूप होना जरूरी है।

अधिकतर पढ़े लिखे लोगों को टीवी के पर्दे पर वाचक-वचिका का कार्य आकर्षक और आसान लगता है। अतः वे समाचार पढ़ने का काम करना चाहते हैं। इसमें संदेह नहीं कि लगातार पर्दे पर आने से व्यक्ति की पहचान तो बनती ही है वह हर मान सम्मान आसानी से हासिल कर लेता है। यहाँ हम ऐसे ही इच्छुक लोगों को सीधे सम्बोधित करते हुए आवश्यक तथा आधारभूत जानकारी दे रहे हैं। रंगमंच, माइक्रोफोन और कैमरे का सामना करते समय अभिनेता व वक्ता को अपने शरीर तथा आवाज के बारे में पूरा जान तथा उसके उचित उपयोग पर नियन्त्रण होना भी बहुत जरूरी है, अन्यथा प्रदर्शन प्रभावकारी नहीं होगा। समाचार वाचन में शरीर और आवाज दोनों का ही प्रयोग होता है लेकिन शरीर का कम और आवाज़ का ज्यादा। यहाँ हम दोनों के बारे में अलग-अलग बात करेंगे। इस तरह आप न केवल अपने बारे में बल्कि दूसरों के बारे में भी कुछ जान सकेंगे। साथ ही साथ दूसरों से सम्पर्क स्थापित करने के तरीकों का भी जान होगा क्योंकि आपका उद्देश्य दूसरों के साथ एक तरफा संचार करना ही है। श्रोता व दर्शक को जाने व समझे बिना आप अपनी परफारमेन्स को प्रभावी नहीं बना सकते, क्योंकि जब आप वक्ता और अभिनेता दोनों की समन्वित भूमिका अदा करने में दक्ष होंगे तभी अपने उद्देश्य में सफल कहलायेंगे। ऐसा करते समय आपको यह मानना होगा कि आप स्वयं के अलावा भी कुछ और हैं। समाचार पढ़ते या प्रस्तुत करते समय आपको यह मान लेना होगा कि आप एक निश्चित अवधि के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण किरदार निभा रहे हैं। खबर में कितनी विश्वनसनीयता है यह वाचक के चेहरे के उतार-चढ़ाव, परिधान और आवाज पर निर्भर करता है।

८.७.१ कुशल समाचार वाचक की विशेषताएँ:

जागरुक वर्तमान युग लाइव टेलीकास्ट का है। अतः एंकर को ज्यादा जागरूक होना चाहिए। सजीन प्रसारण में किसी का इंटरव्यू लेते वक्त या संवाददाता से बात करते समय एंकर को कई बार स्वयं ही प्रश्न पूछने पड़ते हैं। जबकि आज से कुछ वर्ष पहले एंकर रीडर की भूमिका अदा करता था। वह सिर्फ टेलीप्राम्पटर पर दिखने वाली खबरों को पढ़ देता था।

व्यक्तिगत जानकारी एंकर को अपने शरीर, हाव-भाव, आवाज और सामान्य जानकारी के बारे में सब कुछ मालूम होना चाहिए। एंकर को व्यक्तिगत जानकारी होने से वह अपने आप में कई सुधार कर अपनी छवि को दर्शकों के बीच में और अधिक मजबूत बना सकता है। किसी चैनल की छवि को एंकर बनाता था बिगाडता है। इसीलिए एंकर अपने आप में पूरी तरह से परिपक्व होना चाहिए।

८.७.२ शारीरिक जागरुकता:

१. आदत:

किसी बात की आदत बचपन से ही पड़ जाती है और उसे बदलना आसान नहीं होता। जैसे कि आँखों का बार-बार घुमाना, बड़ी करना, जीभ बाहर निकालना, बहुत ज्यादा हाथ हिलाकर बात करना, बैठे होने पर पैर हिलाना आदि। इन सब आदतों से एंकर को बचना चाहिए। कई बार इन आदतों के शिकार लोगों को पता ही नहीं चलता कि उनकी इस तरह की गतिविधियों से दर्शकों पर क्या प्रभाव पड़ रहा होगा। कई एंकर की आदत में बार-बार सिगरेट पीना भी सुमार होता है। जिसके चलते वह पूर्वाभ्यास के लिए ज्यादा समय नहीं दे पाते। इस कारण उनकी परफार्मेंस कमजोर होती जाती है।

२. सांस्कृतिक मजबूरी:

किसी व्यक्ति, घटना या क्षेत्र विशेष से संबंधित समाचार पढ़ते समय एंकर यदि उससे जुड़ जाता है तो उसके हाव-भाव में घटना का असर जाहिर हो सकता है। अतः एंकर को किसी समाचार विशेष से व्यक्तिगत नहीं जुड़ना चाहिए।

३. हाव-भाव:

कभी-कभी कोई हाव-भाव या शरीर का हिलना-डुलना आपकी भावनाओं को व्यक्त कर देता है। इसका सही जगह पर उचित ढंग से इस्तेमाल किया जाना वक्तव्य में न केवल जान डाल देता है बल्कि विजुअल कम्युनिकेशन में भी मदद करता है, लेकिन गलत या जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल करने पर दर्शकों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अतः एंकर के लिए यह आवश्यक है कि समाचार पढ़ते समय वह अपने हाव-भाव का विशेष ध्यान रखे। प्रत्येक समाचार का एक विशेष मूड और शब्दावली होती है, जिसका एंकर को विशेष ध्यान रखना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति की आवाज अलग-अलग होती है। आवाज की गुणवत्ता का मूल्यांकन उसकी गति, तुक मिलाना, उच्चारण, तारत्व, स्वरायतन और शब्द चयन से की जाती है।

८.७.३ स्टूडियो निर्देश:

किसी भी स्टूडियो में डायरेक्टर या प्रोड्यूसर और फ्लोर मैनेजर के बीच में एक काँच की दीवार होती है। इस दीवार के दोनों ओर बैठे व्यक्ति एक दूसरे को देख तो सकते हैं लेकिन सुन नहीं सकते। कई बार दूरी अधिक होने के कारण देखने में भी कठिनाई होती है। इसीलिए फ्लोर मैनेजर कैमरे के सामने हाथ से इशारा कर डायरेक्टर से कम्युनिकेशन करता है। सामान्यतः स्टूडियो में उपयोग होने वाला टाकबैंक सिस्टम प्रोड्यूसर, डायरेक्टर और फ्लोर पर कार्य करने वाले लोगों को आपस में जोड़ता है। डायरेक्टर द्वारा दिए गए निर्देश फ्लोर मैनेजर तक इसी सिस्टम द्वारा पहुँचते हैं, लेकिन कैमरे के सामने बैठे एंकर को निर्देशित करने का काम फ्लोर मैनेजर द्वारा किया जाता है। जब रिकार्डिंग शुरु होने वाली होती है उस दौरान फ्लोर मैनेजर एंकर को इशारा कर तैयार रहने का निर्देश देता है।

समाचार प्रसारण के समय सबसे पहले आवाज को चेक किया जाता है। वाचक लेपल माइक लगाने तथा कुर्सी पर ठीक तरह से बैठ जाने के बाद कैमरे में देखकर कुछ बोलता है ताकि

उसके स्वर के स्तर को देखा और संयोजित किया जा सके। यह कार्य ठीक होने पर फ्लोर मैनेजर अपने हेड फोन पर प्रस्तुतकर्ता का निर्देश सुन कर जोर से बोलकर कहता है। अब स्टूडियो के अन्दर सब लोग चुप हो जाएँगे और हर तरह का संचार संकेत आषा में होगा। समाचार शुरु करने के लिये फ्लौर मैनेजर कैमरे और वाचक के बीच सीधी रेखा से जरा हटकर या नीचे बैठकर प्रस्तुतकर्ता से मिलने वाले निर्देशों को संकेत द्वारा वाचक तक संप्रेषित करता है।

१. क्यू किसी भी कार्यक्रम को शुरू करने के लिए यह पहला संकेत होता है। इसमें हाथ को उपर से नीचे की ओर लाया जाता है। वाचक यह संकेत मिलते ही लगभग तीन सेकंड बाद बोलना शुरू कर देता है।

२. होल्ड इस कमांड का उपयोग विशेषतः समाचार के पैकेज फार्मेट में किया जाता है। समाधार वाचक जब खबर का इंट्रो पढ़ लेता है उस समय वाचक को रोकने के लिए होल्ड कमांड दे कर वाइस ओवर और दृश्यों को चलाया जाता है।

३. क्यू समाचार वाचक को होल्ला कमांड के बाद पुनः क्यू कमांड दी जाती है ताकि वह दूसरे समाचार का इंट्रो पढ़ सके। होल्ड कमांड के दौरान वाचक अगले समाचार को पढ़ने का अभ्यास करने के साथ-साथ मेकअप और ड्रेसअप को ठीक करने का कार्य करता है।

४. समाचार कम होने और समय ज्यादा होने की स्थिति में प्रोड्यूसर वाचक को धीरे पढ़ने का निर्देश देता है। इस निर्देश को फ्लोर मैनेजर अपने दोनों हाथी को धीरे-धीरे एक दूसरे के करीब लाता है। यह कमांड मिलने के बाद वाचक समाचार पढ़ने की गति को धीरे-धीरे कम कर देता है।

५. तेज पढ़ना समय की कमी या विज्ञापन कम होने पर प्रोड्यूसर यह कमांड देता है। इस निर्देश में फ्लोर मैनेजर दोनो हथेलियों को एक दूसरे के ऊपर रखकर हार्थों को तेजी से ऊपर उठाता है। यह निर्देश मिलने के बाद वाचक अपनी समाचार पढ़ने की गति को धीरे-धीरे तेज करता है और पढ़ते समय बिराम देर से लेता है।

६. समाप्ति समाचार समाप्त करने का संकेत फ्लौर मैनेजर अपने हाथ को गोल घुमाकर देता है। यह कमाण्ड मिलने के बाद वाचक अपनी आवाज को धीरे-धीरे कम करते हुए समाचार की हेड लाइन पढ़कर सुना देता है।

७. गलार्थाटू यह कमाण्ड उस समय दी जाती है जब समाचार समाप्त होने में पांच से दस सेकंड बचे हाँ। यह निर्देश देने के लिए फ्लोर मैनेजर अपने मुँह पर हाथ रखकर गले को काटने का या दोनों हाथों का क्रास बनाकर वाचक को इशारा करता है। इस दौरान कंट्रोल पैनल पर बैठा प्रोड्यूसर फ्लोर पर उपस्थित सभी तकनीकी लोगों को कट माइक की कमांड देता है ताकि एंकर के पास लगे लेपल माइक और कंट्रोल रूम के बीच का संपर्क बंद कर दिया जाए। तत्पश्थात् एंकर चुपचाप अपनी जगह पर अगला निर्देश मिलने तक बैठा रहता है। ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि प्रोड्यूसर को समाचार संकेत ध्वनि या क्रेडिट कैप्शन प्रसारित करने का समय मिल जाए।

८.७.४ स्टूडियो में वाचक द्वारा बरती जाने वाली आवश्यक सावधानियाँ:

१. स्टूडियो में अपना स्थान ग्रहण कर लेपल माइक लगा है।

२. कुर्सी पर इस तरह सीधे बैठे कि पैरों की एड़ियों और पंजे पूरी तरह जमीन पर हों।

३. बैठते समय कोहनियाँ शरीर के पास और हाथ सामने टेबिल पर हो।

४. बुलेटिन सामने टेबिल पर रखकर देख लें कि आटो क्यू पर उसकी इमेज ठीक आ रही है या नहीं।

५. अपने ध्यान को आस-पास हो रही हलचल या किसी गतिविधि से अलग कर लें।

६. कम से कम चार-पांच बार गहरी सांस लैनै ताकि समाचार पढ़ते समय सांस न फूले।

७. ओठों को पानी पीकर या जीभ फैरकर गीला कर लें।

८. अपने आप को शांत और तत्पर दिखाने का प्रयत्न करें।

९. फ्लोर मैनेजर गा कैमरामैन से कुछ बात कर लें ताकि आपके और उनके बीच के सामने का दृश्य स्थापित हो जाए।

१०. टेलीपाम्पटर पर न्यूज पढ़ते समय अपनी आँख को स्थिर रखें ताकि दर्शकों को ऐसा न लगे कि आप उनकी तरफ देखकर बार-बार अपनी आँखों को हिला-ठुला रहे हैं।

११. समाचार के बीच में कंट्रोल रूम से मिलने वाले निर्देश को ध्यान पूर्वक सुनें लेकिन निर्देशों को सुनने के चक्कर में विचलित न हो।

१२. कई बार तकनीकी खराबी या जल्दबाजी के चलते ब्रेक के दौरान एंकर को स्क्रीन पर दिखा दिया जाता है अतः एकर जब तक स्टूडियो में है तब तक उसे सचेत रहना चाहिए।

१३. उच्चारण या भाषा गंलत बोलने पर एंकर को दर्शकों से क्षमा मांगकर पुनः गलत हुए शब्द को पढ़ना चाहिए।

८.८ पीस टू कैमरा

किसी खबर की समीक्षा या सारांश जब रिपोर्टर द्वारा दिया जाता है तो उसे पीस टू कैमरा कहते हैं। टेलीविज़न समाचार रिपोर्टिंग के लिए दरकार तकनीकी कौशलों में पीस टू कैमरा या स्टैंड-अपर का इस्तेमाल बहुत ज्यादा होता है। यद्यपि यह तकनीक पुराने फैशन की हो चुकी है और अनेक अनुभवी रिपोर्टर मानते हैं कि इसे अपनाने से वे सफल नहीं होंगे, फिर भी यह तकनीक या तरीका लाजमी तौर पर वीडियो पर दृश्यात्मक समाधार है. जो कि किसी भी विवरण को प्रभावी और सरल ढंग से बलाने का एक निश्चित तरीका माना गया है।

देखने से पता चल जाता है कि रिपोर्टर मौके पर मौजूद था या है, इसको अपनाया जाना या अमल करना सबसे आसान है इसे तेजी से और कम समय में काम में लाया जा सकता है या

किसी भी पूर्वनियोजित मुश्किल व्यवस्था का विकल्प भी आसानी से बनाया जा सकता है। इसकी मिशाल चाँद पर पहुँचने वाले व्यक्ति से की जा सकती है। यानी नील आर्मस्ट्रांग ने चाँद पर कदम रखने के बाद पहला काम यहीं किया था कि सामने पड़ी धूल मिट्टी को जमा कर लिया था क्योंकि यह संभावना थी कि शायद उसे जल्दी वापस लौटना पड़े तो कम से कम चाँद की मिट्टी का नमूना पृथ्वीवासियों को मिल जाएगा। बाद में इस नमूने का जगह-जगह प्रदर्शन किया गया। इसकी प्रस्तुति सादा और आसान तरीके से की जाती है। रिपोर्टर बोल-चाल की भाषा में आलेख तैयार कर कैमरे के सामने बोल देता है।

पीस टू कैमरा निम्न उद्देश्यों से किया जाता है-

१. समाचार की विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए।

२. दृश्यों की कमी होने पर उस जगह को पीटूसी के माध्यम से दिखाया जाता है।

३. खबर का संक्षेप में ब्यौरा देने के लिए।

४. अधिकांश पौस टू कैमरा स्टोरी रिपोर्टर द्वारा खड़े होकर की जाती है इसीलिए इसे स्टैंड अपर का नाम भी दिया जाता है।

५. पौस टू कैमरा रिकार्ड करते समय बैकग्राउंड में लोकेशन दिखाई जाती है, जिससे दर्शकों को उस जगह का अंदाजा लग जाता है जहाँ से प्रसारण किया जा रहा है।

६. घटना, खबर और दृश्यों की विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए।

७. रिपोर्टर को हाईलाइट करने के लिए।

८. चैनल के दर्शकों की संख्या बढ़ाने के लिए।

९. समाचार को बड़ा करने के लिए।

१०. एक्सक्लुसिव समाचार देने के लिए।

पीटूसी की विशेषताएँ:

१. पीटूसी में सरल भाषा और छोटे वाक्यों का प्रयोग किया जाता है।

२. इसके शुरुआत में कोई बहुप्रचलित मुहावरा, लोकोक्ति का प्रयोग अच्छा माना जाता है।

३. रिपोर्टर की वेश-भूषा बैकग्राउंड के हिसाब से चयन की जाती है।

४. कैमरे के ठीक नीचे आलेख को लिखकर टांग दिया जाता है, ताकि रिपोर्टर जब उसे देखकर पढ़े तो दर्शकों को ऐसा लगे कि वो उनकी तरफ देखकर बोल रहा है।

५. पीटू भी किसी ऐसी जगह पर खड़े होकर किया जाता है कि जहाँ शोरगुल या अवरोध की संभावना कम हो।

६. पीटूसी केवल बड़ी और महत्वपूर्ण खबरों में दिया जाता है।

७. इससे रिपोर्टर की ख्याति बढ़ती है, अतः बिना हिचकिचाए तारतम्यता में पौटूसी किया जाना चाहिए।

८. लाइव टेलीकास्ट में दिया जाने वाला पीटूसी तथ्यों को बिना तोड़-मरोड़े दिया जाता है।

टेलीप्रॉम्पटर:

सन् १९५० में फ्रेड बॉरटन, हर्बर्ट और इरबिन्ण बरलिन ने टेलीप्रॉम्टर कंपनी की शुरुआत की थी। बॉरटन एक एक्टर थे जिन्होंने स्क्रिप्ट को कम समय में याद रखने वाली एक मशीन का कॉन्सेप्ट दिया था। ताकि बॉरटन को डायलॉग याद करने में दिक्कत नहीं हो। सन् १९८२ में पहला कम्प्यूटर आधारित टेलीप्रॉम्पटर कॉरटनी एम-गुडबिन और लॉरेन्स अवेम द्वारा बनाया गया। इसी कम्पनी का नाम बाद में प्रो- प्रॉस्ट इन कार्पोरेशन कर दिया गया। पिछले छब्बीस सालों से यह कंपनी सफलता पूर्वक टेलीप्रॉम्टर सर्विस देने में अग्रणी है। इसके अलावा क्यू टीवी और टेलीस्क्रिप्ट कंपनियों भी टैलीप्रॉस्टर बनाने का काम कर रहीं हैं। पहली बार सन् १९९२ में बनी एक फिल्म में टेलीप्रॉम्टर का उपयोग किया गया।

टेलीप्रॉम्टर:

टेलीप्रॉम्टर में आगे की और लगे स्क्रीन पर लिखित स्क्रिप्ट विपरीत दिशा में होती है। इस स्क्रीन के ऊपर एक ग्लास लगा होता है, जिस पर स्क्रीन पर दिखने वाला मैटर सीधा दिखाई देता है। इस ग्लास के पीछे तरफ एक कैमरा जुड़ा रहता है जो एंकर को रिकॉर्ड करता है। समाचार पढ़ते समय एंकर अपने सामने लगे टेलीप्रॉम्टर पर देखकर पढ़ता है और प्रॉक्टर के पीछे लगा कैमरा विजुअल को रिकॉर्ड कर प्रोडक्शन रूम में भेज देता है। टेलीपॉम्टर में लगे क्यू डिवाइस का कंट्रोल एंकर के हाथ में होता है, जिससे वह अपने अनुसार स्क्रिप्ट को गति देने का कार्य करता है।

८.९ विडिओ और पत्रकारिता

कैमकॉर्डर (वीडियो कैमरा रिकॉर्डर) एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है जिसमे डिजिटल कैमरा और डिजिटल वीडियो रिकॉर्डर को एक इकाई में शामिल किया जाता है। प्रतीत होता है कि उपकरण निर्माताओं के पास इस शब्द के उपयोग के लिए कोई सवल दिशा-निर्देश नहीं है। विपणन सामग्रियों में एक वीडियो रिकॉर्डिंग उपकरण को कैमकॉर्डर के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है लेकिन सुपुर्दगी पैकेज में सामग्री को वीडियो कैमरा रिकॉर्डर के रूप में ही पहचान दी जाएगी। कैमकॉर्डर को अन्य उपकरणों से अलग करने के लिए जो वीडियो रिकॉर्डिंग में सक्षम होते हैं, जैसे कि मोबाइल फोन और डिजिटल कॉम्पेक्ट कैमरा, एक कैमकॉर्डर की पहचान आमतौर पर एक पोर्टेबल, स्वसम्पूर्ण उपकरण के रूप में पहचाना जाता है जिसका प्राथमिक कार्य वीडियो कैप्चर और रिकॉर्डिंग करना होता है।

प्रारम्भिक कैमकोर्डर, वीडियो टेप पर एनालॉग रिकॉर्डिंग करता था। टेप-आधारित कैमकोर्डर, वीडियो कैसेट के रूप में हटाने योग्य भीडिया का उपयोग करता है। आजकल

डिजिटल रिकॉर्डिंग आदर्श बन गया है और धीरे-धीरे टेप की अन्य मीडिया द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया है जैसे कि आंतरिक फ्लैश मेमोरी, हार्ड ड्राइव, और एसडी कार्ड। यथा जनवरी २०११, अंतर्राष्ट्रीय कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक शो, २००१ में घोषित एक भी नए उपभोक्ता-वर्गीय कैमकॉर्डर में टेप पर रिकॉर्ड नहीं किया जाता है। कैमकोर्डर जो कि चुंबकीय टेप का इस्तेमाल नहीं करते उन्हें अक्सर टेप्लेस कैमकॉर्डर कहा जाता है, जबकि कैमकॉर्डर जो एकाधिक प्रकार के माध्यम के इस्तेमाल की अनुमति देते हैं जैसे हार्ड डिस्क ड्राइव और मेमोरी कार्ड में अन्तर्निहित, उन्हें कभी-कभी हाइब्रिड १९८५ में, पैनासोनिक (Panasonic), आरसीए (RCA) और हिताची (Hitachi) ने कैमकॉर्डर बनाना चालू किया जिसमें पूर्ण आकार वीएचएस कैसेट रिकॉर्ड किया जाता था और लगभग ३ घंटे के रिकॉर्ड की पेशकश की। कंधे पर रखे जाने वाले कैमकोर्डर ने वीडियो के शौकीनों, औद्योगिक वीडियोग्राफरों और कॉलेज टीवी स्टूडियो के बीच अपनी जगह बनाई। सुपर वीएचएस पूर्ण आकार कैमकोर्डर को १९८७ में जारी किया गया जिसमें अत्यधिक प्रसारण गुणवत्ता और एक समाचार खंड जमा करने या वीडियोग्राफी करने का एक सस्ता तरीका प्रदान करने की विशेषता थी। २००३ में सोनी ने एक्स डीसीएएम की शुरुआत की जो कि पहला टेपलेस वीडियो प्रारूप था, जिसमें रिकॉर्डिंग मीडिया के रूप में प्रोफेशनल डिस्क का प्रयोग किया जाता था। उसके बाद अगले वर्ष पैनासोनिक ने इसकी शुरुआत की और डीवीसीपीआरओ एचडी वीडियो के लिए रिकॉर्डिंग माध्यम के रूप में पीटू सॉलिड स्टेट मेमोरी की पेशकश की। २००६ में पैनासोनिक और सोनी ने सस्ते और उपभोक्ता स्तर के टैपलेस उच्च गुणवत्ता वाले वीडियो प्रारूप की शुरुआत की जिसका नाम एवीसीएचडी था। वर्तमान में एवीसीएचडी कैमकोर्डर का उत्पादन सोनी, पैनासोनिक, केनोन, जेवीसी और हिताची द्वारा किया जा रहा है।

२००७ में सोनी ने एक्सडीसी एएम इण्क्स की शुरुआत की जो कि एक्ससीएमएचडी की ही तरह रिकॉर्डिंग मोड की पेशकश की, लेकिन SxS स्मृति कार्ड पर ही रिकॉर्डिंग की अनुमति दी। फाइल-आधारित डिजिटल स्वरूप के प्रसार के साथ ही रिकॉर्डिंग मीडिया और रिकॉर्डिंग प्रारूप के बीच संबंध पहले से कहीं ज्यादा कमजोर हो गए। एक ही प्रकार का वीडियो विभिन्न मीडिया पर तैयार किया जा सकता था। टेपलेस स्वरूपों के साथ, डिजिटल फाइलों के लिए रिकॉर्डिंग मीडिया एक भंडारण युक्ति अर्थात् वीडियो और कंप्यूटर उद्योगी का अभिसरण वाचक बन गया। उच्चतम गुणवत्ता वाले डिजिटल प्रारूप जैसे डिजिटल बिटाकैम और डीवीसीपीआरओ एचडी, को एनालॉग पर लाभ होता है ओ कि रिकॉर्डिंग, डबिंग और संपादन (एमपीइजी-२ और एमपीइजी-४ केवल संपादन प्रक्रिया में पीढी नुकसान उठाते हैं) में एनालॉग के थोडे पीढ़ी के नुकसान को उठाते हैं। जबकि केबल, एम्प्लीफायर्स और मिक्सर्स से संबंधित शोर और बैंडविड्थ समस्या एनालॉग रिकॉर्डिंग को काफी प्रभावित करते हैं, वैसी समस्याएँ डिजिटल स्वरूपों में काफी कम होती हैं और इनमें डिजिटल कलेक्शन (आम तौर पर IEEE १३९४, SDI/SDTI, या HDMI) का इस्तेमाल किया जाता है।

एनालॉग और डिजिटल दोनों अभिलेखीय समस्याओं से ग्रस्त हो सकते हैं, हालांकि डिजिटल में अधिक नुकसान होने की संभावना होती है। सैद्धांतिक रूप से डिजिटान जानकारी डिजिटल भंडारण उपकरण (जैसे एक हार्ड ड्राइव) पर ज़ोरो गिरावट के साथ अनिश्चित काल के लिए भंडारण किया जा सकता है, हालांकि जबसे कुछ डिजिटल प्रारूप

(जैसे MiniDV) अक्सर केवल १० माइक्रोमीटर्स अपार्ट (VHS के लिए versus ५०० μm) ट्रैक दनाव करता है, एक डिजिटल रिकॉर्डिंग टैप जो कि डिजिटल डेटा के कई स्थायी दृश्य को मिटा सकता है, में झुर्रियों या खींचने के लिए अधिक असुरक्षित होता है लेकिन टेप पर अतिरिक्त ट्रेकिंग और त्रुटि सुधार आमतौर पर अधिकांश दोष की क्षतिपूर्ति करती है। एनालॉग मीडिया पर वीडियो में समान कति मुश्किल से 'शौर' होता है, फिर भी एक खराब लेकिन देखने लायक वीडियो होता है। केबल सीमा यह है कि इस वीडियो को पूर्ण रूप से एनालॉग दृश्य प्रणाली में देखा जाना चाहिए, नहीं तो टेप किसी भी नुकसान और सिंक्रनाइजेशन समस्याओं के कारण वीडियो प्रदर्शित नहीं करेगा। यहाँ तक कि डीवीडी पर होने वाली डिजिटल रिकॉर्डिंग डीवीडी खराबी से गुजर सकती है जो कि स्थायी रूप से बड़ी मात्रा डेटा को मिटा देती है। इस मामले में एनालॉग का जो एक लाभ प्रतीत होता है वह यह है कि एक एनालॉग रिकॉर्डिंग तब भी इस्तेमाल योग्य होता है जब उसे धारण करने वाली मीडिया गंभीर रूप से खराब हो गई हो जबकि ऐसा देखा गया है कि डिजिटल रिकॉर्डिंग में थोड़ी सी भी मीडिया गिरावट उन्हें "पूर्ण अथवा शून्य' खराब कर देती है यानी कि डिजिटल रिकॉर्डिंग अत्यंत महंगी मरम्मत के बिना चलने में अक्षम हो जाती है।

८.१० आधुनिक रेकार्डिंग मिडिया

जबकि कुछ पुराने डिजिटल कैमकॉर्डर माइक्रोड्राइव्स और कम आकार के DVD-RAM या DVD-R पर वीडियो रिकॉर्ड करती है. २०११ तक हाल के कैमकॉर्डर एमपीइजी-१, एमपीइजी २ या एमपीइजी-४ का इस्तेमाल करते हुए फ्लैश मेमोरी और छोटे हार्ड डिस्क पर वीडियो रिकॉर्ड करते हैं। तथापि, क्योंकि इन कोडेक्स के संपादन का उपयोग अंतर-फ्रेम सम्पीडन, फ्रेम विशेष जानकारी की आवश्यकता- फ्रेम पुनर्जनन के अतिरिक्त जो प्रसंस्करण तस्वीर को हानि पैदा कर सकता है।

अन्य डिजिटल उपभोक्ता कैमकॉर्डर टेप पर डीवी या HDV प्रारूप में रिकॉर्ड करते हैं और फायरवायर (कुछ USB २.० का भी इस्तेमाल करते हैं) से एक कंप्यूटर में ट्रांसफर करते हैं, जहाँ अधिकांश मात्रा में फाइलों (DV के लिए, PAL/NTSC रिजुलेशन में ४ से ४.६ मिनट के लिए १GB) को संपादित, परिवर्तित किया जा सकता है और (कई कैमकॉर्डर के साथ) साथ ही टेप के लिए भी रिकॉर्ड किया जा सकता है। रियल टाइम में हस्तांतरण किया जाता है, तो ६० मिनट के टेप के लिए ६० मिनट हस्तांतरण की जरुरत होती है और केवल रॉ फूटेज के लिए १३GB डिस्क स्पेस की आवश्यकता होती है इसके अलावा रेंडर फाइल और अन्य मीडिया के लिए कई स्पेस की आवश्यकता होती है। पोस्ट प्रोडक्शन (संपादन) में तात्कालिक "मैजिक" मूवीज से अलग सर्वश्रेष्ठ शॉट का चयन करने और कट करने के लिए खर्च किए गए समय कई घंटो का थकाऊ चयन, व्यवस्था और रेंडरिंग है।

केबल सीमा यह है कि इस वीडियो को पूर्ण रूप से एनालॉग दृश्य प्रणाली में देखा जाना चाहिए, नहीं तो टेप किसी भी नुकसान और सिंक्रनाइजेशन समस्याओं के कारण वीडियो प्रदर्शित नहीं करेगा। यहाँ तक कि डीवीडी पर होने वाली डिजिटल रिकॉर्डिंग डीवीडी खराबी से गुजर सकती है जो कि स्थायी रूप से बड़ी मात्रा डेटा को मिटा देती है। इस मामले में एनालॉग का जो एक लाभ प्रतीत होता है वह यह है कि एक एनालॉग रिकॉर्डिंग तब भी इस्तेमाल योग्य होता है जब उसे धारण करने वाली मीडिया गंभीर रूप से खराब हो गई हो

जबकि ऐसा देखा गया है कि डिजिटल रिकॉर्डिंग में थोड़ी सी भी मीडिया गिरावट उन्हें "पूर्ण अथवा शून्य' खराब कर देती है यानी कि डिजिटल रिकॉर्डिंग अत्यंत महंगी मरम्मत के बिना चलने में अक्षम हो जाती है।

आधुनिक रिकॉर्डिंग मीडिया:

जबकि कुछ पुराने डिजिटल कैमकॉर्डर माइक्रोड्राइव्स और कम आकार के DVD-RAM या DVD-R पर वीडियो रिकॉर्ड करती है. २०११ तक हाल के कैमकॉर्डर एमपीइजी-१, एमपीइजी २ या एमपीइजी-४ का इस्तेमाल करते हुए फ्लैश मेमोरी और छोटे हार्ड डिस्क पर वीडियो रिकॉर्ड करते हैं। तथापि, क्योंकि इन कोडेक्स के संपादन का उपयोग अंतर-फ्रेम सम्पीडन, फ्रेम विशेष जानकारी की आवश्यकता- फ्रेम पुनर्जनन के अतिरिक्त जो प्रसंस्करण तस्वीर को हानि पैदा कर सकता है। अन्य डिजिटल उपभोक्ता कैमकॉर्डर टेप पर डीवी या HDV प्रारूप में रिकॉर्ड करते हैं और फायरवायर (कुछ USB २.० का भी इस्तेमाल करते हैं) से एक कंप्यूटर में ट्रांसफर करते हैं, जहाँ अधिकांश मात्रा में फाइलों (DV के लिए, PAL/NTSC रिजुलेशन में ४ से ४.६ मिनट के लिए १GB) को संपादित, परिवर्तित किया जा सकता है और (कई कैमकॉर्डर के साथ) साथ ही टेप के लिए भी रिकॉर्ड किया जा सकता है। रियल टाइम में हस्तांतरण किया जाता है, तो ६० मिनट के टेप के लिए ६० मिनट हस्तांतरण की जरुरत होती है और केवल रॉ फूटेज के लिए १३GB डिस्क स्पेस की आवश्यकता होती है इसके अलावा रेंडर फाइल और अन्य मीडिया के लिए कई स्पेस की आवश्यकता होती है। पोस्ट प्रोडक्शन (संपादन) में तात्कालिक "मैजिक" मूवीज से अलग सर्वश्रेष्ठ शॉट का चयन करने और कट करने के लिए खर्च किए गए समय कई घंटो का थकाऊ चयन, व्यवस्था और रेंडरिंग है।

वीडियो कैप्चर क्षमता के साथ अन्य उपकरण:

वीडियो कैप्चर क्षमता कैमकोर्डर तक ही सीमित नहीं है। सेलफोन, डिजिटल एकल लैस रिफ्लेक्स और कॉन्पैक्ट डिजिकैम, लैपटॉप और पर्सनल मीडिया प्लेयर्स में अक्सर वीडियो कैप्चर की क्षमता के कुछ रूप को देखा जाता है। सामान्यतः, ये बहुउद्देशीय-उपकरण एक पारंपरिक कैमकॉर्डर की तुलना में वीडियो कैप्चर की कम कार्यक्षमता को प्रदान करते हैं। मैनुअल समायोजन, बाह्य ऑडियो इनपुट का अभाव होता है और यहाँ तक कि बुनियादी प्रयोज्य कार्य (जैसे ऑटोफोकस और लेंस जूम) आम सीमाएँ हैं। कुछ ही मानक टीवी-वीडियो प्रारूप (480p60, 720p60, 1080p30) कैप्चर कर सकते हैं और गैर-टीवी रिजुलेशन (३२०x२४०, ६४०x४८०, आदि) या धीभी फ्रेम दर (15fps, 30fps) के बजाए रिकॉर्ड कर सकते हैं। जब एक कैमकॉर्डर की भूमिका में इसे इस्तेमाल किया जाता है, एक बहुउद्देशीय उपकरण इन्फेरियर हैंडलिंग और ऑडियो/वीडियो प्रदर्शन की पेशकश के लिए माँग होती है, जो विस्तारित और/या प्रतिकूल स्थितियों शूटिंग के लिए अपने प्रयोज्य सीमा प्रदान करता है। हालांकि, कैमरे के रूप में सुसज्जित सेलफोन अब सर्वव्यापक हो रहे हैं, वीडियो से सुसज्जित इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की संभावना सामान्य हो जाएगी और लॉ-एड कैमकोर्डर के लिए बाजार की जगह ले रही है।वीडियो कैप्चर क्षमता कैमकोर्डर तक ही सीमित नहीं है। सेलफोन, डिजिटल एकल लैस रिफ्लेक्स और कॉन्पैक्ट डिजिकैम, लैपटॉप और पर्सनल मीडिया प्लेयर्स में अक्सर वीडियो कैप्चर की क्षमता के

कुछ रूप को देखा जाता है। सामान्यतः, ये बहुउद्देशीय-उपकरण एक पारंपरिक कैमकॉर्डर की तुलना में वीडियो कैप्चर की कम कार्यक्षमता को प्रदान करते हैं। मैनुअल समायोजन, बाह्य ऑडियो इनपुट का अभाव होता है और यहाँ तक कि बुनियादी प्रयोज्य कार्य (जैसे ऑटोफोकस और लेंस ज़ूम) आम सीमाएँ हैं। कुछ ही मानक टीवी-वीडियो प्रारूप (480p60, 720p60, 1080p30) कैप्चर कर सकते हैं और गैर-टीवी रिज़ुलेशन (320x240, 640x480, आदि) या धौभी फ्रेम दर (15fps, 30fps) के बजाए रिकॉर्ड कर सकते हैं।

मीडिया:

कैमकोर्डर के इस्तेमाल को इलेक्ट्रोनिक समाचार संगठन से लेकर टीवी/करेंट अफेयर प्रोडक्शन तक इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लगभग सभी भागों में पाया गया। एक वितरण की बुनियादी सुविधाओं से दूर स्थानों में, कैमकोर्डर प्रारंभिक वीडियो अधिग्रहण के लिए अमूल्य रहे हैं। बाद में, वीडियो प्रसारण केन्द्र के लिए इलेक्ट्रॉनिक रूप से स्टूडियो/प्रोडक्शन में फैलता गया। सरकारी प्रेस सम्मेलनों में, जहाँ एक वीडियो बुनियादी ढाँचा आसानी से उपलब्ध है या अग्रिम में आसानी से उपलब्ध किया जा सकता है, जैसे अनुसूचित घटनाएँ, अभी भी स्टूडियो के वीडियो कैमरों के द्वारा कवर हैं।

होम वीडियो:

आकस्मिक उपयोग के लिए, कैमकोर्डर अक्सर शादी, जन्मदिन, स्वागत समारोह, बढ़ते बच्चों और अन्य व्यक्तिगत घटनाओं को कवर करता है। ८० के दशक के उत्तरार्थ से लेकर मध्य तक उपभोक्ता कैमकॉर्डर के उदय के साथ ही पैसे कार्यक्रमों का निर्माण हुआ जो काफी लंबा चले जैसे अमेरिकाज़ फनिएस्ट होम वीडियो, जहाँ लोग घरेलू रूप से निर्मित वीडियो दृश्यों को प्रदर्शित कर सकते थे।

राजनीति:

राजनैतिक प्रदर्शनकारियों ने जिन्होंने मीडिया कवरेज के महत्त्व को भुनाया है, वे उन चीजों को फिल्माने के लिए कैमकॉर्डर का इस्तेमाल करते हैं जिसे वे अन्यायपूर्ण मानते हैं। पशु अधिकार प्रदर्शनकारियों ने जो फैक्ट्री, फार्म और पशुओं की प्रयोगशालाओं में घुसे, उन्होंने पशुओं की स्थितियों की जानकारी के लिए कैमकॉर्डर का इस्तेमाल किया। गैर-शिकारी प्रदर्शनकारी लोमड़ी शिकार के लिए कैमकोर्डर का उपयोग करते हैं। राजनीतिक अपराध की संभावना देखने वाले लोग सबूत इकट्ठा करने के लिए, निगरानी करने के लिए कैमरे का उपयोग करते हैं। कार्यकर्ताओं के वीडियो अक्सर इंडीमीडिया पर दिखाई देते हैं। खेल घटनाओं के दौरान दंगा, विरोध प्रदर्शन और औड़ का फिल्मांकन करने के लिए पुलिस, कैमकोर्डर का उपयोग करती है। इस फिल्म का इस्तेमाल हुल्लडबाजों को पकड़ने के लिए किया जाता है जिस पर अदालत में मुकदमा चलाया जा सकता है।

डीवीडी (१९९५):

यह या तो मिनी डीवीडी-र था डीवीडी रैम उपयोग करता है। यह एक बहु-निर्माता मानक है जो कि वीडियो के ३० मिनट के लिए ८ सेमी डीवीडी डिस्क का प्रयोग करता है। डीवीडी-

आर को उपभोक्ता डीवीडी प्लेयर्स पर चलाया जा सकता है लेकिन उससे जोड़ा नहीं जा सकता है या एक बार देखने के लिए अंतिम रूप से रिकॉर्ड की जाती है। डीवीडी रैम को उससे जोड़ा जा सकता है और/या रिकॉर्ड किया जा सकता है, लेकिन कई उपभोक्ता डीवीडी प्लेयर्स पर चलाया नहीं जा सकता है और दूसरे रिकॉर्ड करने योग्य डीवीडी मीडिया के अन्य प्रकारों से काफी महंगी है। DVD-RW एक और विकल्प है जो उपयोगकर्ता को फिर से रिकॉर्ड करने की अनुमति देता है, लेकिन केवल एक पंक्ति में रिकॉर्ड करती है और देखने के लिए अंतिम रूप दिया जाना चाहिए। डिस्क की कीमत डीवीड-आर प्रारूप से अधिक होती है जो केवल एक बार रिकॉर्ड करती है। डीवीडी डिस्क में भी खरोंच का जोखिम रहता है। आमतौर पर डीवीडी कैमकोर्डर का डिजाइन कुछ इस प्रकार किया जाता है जिससे वह संपादन कार्यों के लिए कंप्यूटर्स से कनेक्ट हो सके, हालांकि कुछ हाई-एंड डीवीडी इकाइयों सराउंड साउंड को रिकॉर्ड करती हैं, एक ऐसी सुविधा जो एक DV उपकरण के साथ मानक नहीं है।

एमपीइजी-२ कोडेक आधारित स्वरूप है, जो टेपलेस मौडिया के विभिन्न प्रकारी (हार्ड डिस्क, सोलीड स्टेट मेमोरी, आदि) के लिए एमपीइजी-२ प्रोग्राम स्ट्रीम या एमपीइजी २ ट्रांसपोर्ट स्ट्रीम रिकॉर्ड करती है। दोनों के लिए स्टैंडर्ड डेफीनेशन (जेवीसी, पैनासोनिक) और हाई डेफीनेशन (जेवीसी) रिकॉर्डिंग करती है। H-२६४, संकुचित वीडियो के लिए आशुलिपि, जिसमें H-२६४ कोडेक का इस्तेमाल किया गया जो कि टेपलेस मीडिया के लिए सामान्य रूप से स्टोर एमपीइजी-४ फाइल का एमपीइजी ४ स्टैंडर्ड है।

वीडियो रिकॉर्डिंग विभिन्न परिस्थितियाँ में उपयोगी नोट लेने का उपकरण हो सकता है, जिनमें मीटिंग्स, समाचार संकलन और व्याख्यान शामिल है। उदाहरण के लिए, आप किसी ऑडियो रिकॉर्डिंग का उपयोग कक्षा में लिए गए नोट्स को सत्यापित करने के लिए कर सकते हैं। आप वीडियो रिकॉर्डिंग का उपयोग किसी महत्त्वपूर्ण प्रदर्शन को कैप्चर करने के लिए कर सकते हैं। यदि आप बहुत शोध करते हैं, तो ऑडियो और वीडियो रिकॉर्डिंग साइड नोट के साथ भी अच्छी तरह कार्य करती है। जब आप वेब से शोध जानकारी को साइड नोट में खींचते हैं, तो आप प्रत्येक आइटम को किसी ऑडियो रिकॉर्ड किए गए नोट के साथ आइटम को उसके महत्त्व के बारे में आपको याद दिलाने हेतु एनोटेट कर सकते हैं।

आज के युग में वीडियों का पत्रकारिता में खूब प्रयोग हो रहा है। खुफिया कैमरा से तरह-तरह की तस्वीरें और रेकॉर्डिंग करके बहुत सारे को बेनकाब किया जा सका है। किसी भी घटना का रिकार्ड भविष्य में कभी भी किया जा सकता है। एक बात जरूर है पत्रकारों को यह छूट दी गयी है के वह अपने काम को स्वतंत्र और निर्भीक हो कर करें, लेकिन दूसरी तरफ यह ज़रूरी है की वह वीडियो और कैमरे की आड़ में किसी को ब्लैकमेल न करे। ऐसा करना पत्रकारिता के एथिक्स के खिलाफ भी है।

मल्टीमीडिया:

मल्टीमीडिया (multimedia) अंग्रेजी के multi तथा media शब्दों से मिलकर बना है। Multi का अर्थ होता है 'बहु' या 'विविध' और Media का अर्थ है 'माध्यम'। मल्टीमीडिया एक माध्यम होता है जिसके द्वारा विभिन्न प्रकार की जानकारियों को विविध प्रकार के माध्यमों जैसे कि टैक्स्ट, ऑडियो, ग्राफिक्स, एनीमेशन, वीडियो आदि का संयोजन

(combine) कर के दर्शकों/श्रोताओं (audience) तक पहुँचाया जाता है। आजकल मल्टीमीडिया, मीडिया का प्रयोग अनेक क्षेत्रों जैसे कि मल्टीमीडिया प्रस्तुतीकरण (Multimedia Presentation), मल्टीमीडिया, गेम्स (Multimedia Games) में बहुतायत के साथ होता है क्योंकि मल्टीमीडिया किसी वस्तु के प्रस्तुतीकरण का सर्वोत्तम साधन है।

मल्टीमीडिया का व्यावसायिक प्रयोग:

रचनात्मक उद्योगों में (In Creative Industries) रचनात्मक उद्योग ज्ञान, कला, मनोरंजन, पत्रकारिता आदि के लिये मल्टीमीडिया का प्रयोग करते हैं।

व्यापार में (In Trade) व्यापारी विज्ञापन के लिये मल्टीमीडिया का प्रयोग करते हैं।

खेल तथा मनोरंजन में (In Games and Entertainment यह तो हम सभी जानते हैं कि खेलों के लिये वीडियो गेम्स के रूप में मल्टीमीडिया का प्रयोग अत्यन्त लोकप्रिय है। सिनेमा जैसे मनोरंजन के क्षेत्र में स्पेशल इफैक्ट देने के लिये मल्टीमीडिया का प्रयोग किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में (In Education) विद्यार्थियों को आसानी के साथ कम से कम समय में शिक्षा प्रदान करने के लिये मल्टीमीडिया एक वरदान साबित हुई है। ये तो मल्टीमीडिया के प्रयोग के मात्र कुछ ही उदाहरण हैं वरना आज ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं होगा जिसमें मल्टीमीडिया का प्रयोग न किया जाता हो।

८.११ मल्टी मिडिया पत्रकारिता

पत्रकारिता जगत में इतनी ज्यादा प्रतियोगिता है कि एक औसत पत्रकार मात्र एक एक्सक्लुसिव खबर के लिए सारे सिद्धांतों को ताक पर रखने को तैयार बैठा रहत. यह सच्चाई पत्रकारिता के हर स्तर के बारे में है। मतलब भारत के एक कस्बाई पत्रकार से लेकर लंदन या न्यूयॉर्क में बैठा अंतर्राष्ट्रीय स्तर का पत्रकार तक, हर कोई किसी ख़ास ख़बर के बदले अपने तथाकथित सिद्धांतों की पोटली का सौदा करने को तैयार है। लेकिन इस माहौल में भी कुछ पत्रकार ऐसे हैं जिनका जिक्र होने पर मन में उनके प्रति सम्मान भाव जाग उठता है। निश्चय ही हर इंसान की तरह इन सच्चे पत्रकारों के भी अपने पूर्वाग्रह होंगे, अपनी पसंद- नापसंद होगी। लेकिन जिन खासियतों के कारण ये कलमधिस्सुओं की जमात में अलग नज़र आते हैं. उनमें शामिल हैं- इनकी निडरता, निष्पक्षता, सम्यक भाव, व्यापक दृष्टि, सच्चाई तक पहुँचने की जिजीविषा, समाज के प्रति जवाबदेही का भाव और मानव मात्र के कल्याण की भावना।

भीड़ से अलग दिखने वाले मुट्ठी भर पत्रकारों में से एक है केविन साइट्स । टेलीविज़न पत्रकारिता के क्षेत्र में बड़ा नाम है। अमरीका के दो बड़े टीवी नेटवर्क एनबीसी और सीएनएन के लिए दुनिया के खतरनाक क्षेत्रों से साहसिक रिपोर्टिंग करके नाम कमा चुके हैं। ब्लॉग जगत के लिए विशेष खुशी की बात ये है कि अफ़ग़ानिस्तान और इराक में अपनी ड्यूटी के दौरान उन्होंने नियमित रूप से ब्लॉगिंग के लिए भी समय निकाला। लेकिन आज केविन साइट्स का दुनिया भर में जिस कारण नाम है वो है उनका पत्रकारिता की एक नई विद्या को अपनाना। यह है मल्टीमीडिया जर्नलिज्म की विधा। जाहिर है मल्टीमीडिया जर्नलिज्म

सबसे ज्यादा चुनौतियाँ वाली पत्रकारिता है। इसमें आपको वीडियो, ऑडियो, फ़ोटो और टेक्स्ट सब कुछ जुटाना होता है। नए जमाने की नई विधा होने के कारण मल्टीमीडिया जर्नलिज्म से जुड़ी कुछ अनजानी दिक्कते भी हो सकती है और जब पत्रकार केविन साइट्स हो, तो पत्रकारिता की विधा कुछ भी हो वो 'बाड़ डिफ़ॉल्ट' खतरों के बीच से ही रिपोर्टिंग करना चाहेगा।

केविन साइट्स छह महीने पहले एक खतरनाक यात्रा पर निकल पड़े। इस यात्रा में उन्होंने दुनिया के उन सभी इलाकों से रिपोर्टिंग करने की ठानी है जो बारुद के ढेर पर माने जाते हैं, संघर्ष के केंद्र माने जाते हैं, अशांत और खतरनाक माने जाते हैं। साइट्स खुद को 'सोजों' कहते हैं यानि 'सोलो जर्नलिस्ट', मतलब 'वन मैन आर्मी।

८.१२ इंटरनेट पत्रकारिता

गाँवी से लेकर शहरों तक, झोपड़ियों से लेकर राजमहलों तक तथा धरती से लेकर अंतरिक्ष तक सूचना ने नई तकनीकों के सहारे हर जगह अपने पांव फैला दिए है। सूचना तकनीकी के क्षेत्र में टेलीफोन, मोबाईल, रेडियो व टेलीविजन ने जिस नये युग का श्रीगणेश किया कम्प्यूटर के आगमन ने उसमें क्रान्ति ला दी। रेडियो, टेलीविजन व भोबाईल जैसे सशक्त संचार माध्यमों के पश्चात् एवं लम्बे अन्तराल तक गहरी नींद मैं सोए संचार को जगाने का बौड़ा कप्यूटर ने बखूबी उठाया है। संचार के विस्तृत क्षेत्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए तीन सूक्ष्म शब्दों 'डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू ने संचार की गति को अत्यधिक तीव कर दिया। एक उंगली के इशारे पर मीलों की दूरियों को पलक झपकने के साथ ही तय कर सूचना क्रांति ने एक नये युग का सूत्रपात किया। कहा जाता है कि वर्तमान में यह व्यक्ति सबसे श्रेष्ठ है जिसके पास ज्यादा सूचनाएँ हैं और सूचना आदान-प्रदान करने की संसार की सबसे बड़ी कड़ी है इन्टरनेट। इन्टरनेट आज एक सर्वव्यापी सत्ता बन कर उभरा है। यह एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी सैन्य सामग्री को प्रयोग किये बिना विश्व को जीता जा सकता है। अलादीन के चिराग की तरह तेज सूचना संवाहक के रूप में इन्टरनेट ने सारे विश्व के ज्ञान के खजाने को समय व दूरी की सीमाओं को लांघकर हमारे समक्ष प्रस्तुत कर दिया है.

१९६९ में जब अमेरिका रक्षा विभाग ने कुछ कप्यूटरों को जोड़कर एक नेटवर्क तैयार किया तब शायद उन्हें यह अनुमान नहीं था कि उनके द्वारा बौया गया यह अदना बौज एक दिन सम्पूर्ण विश्व को वट वृक्ष की भाँति अपनी छाया से ओतप्रोत कर देगा।

९० के दशक के प्रारंभ से इंटरनेट का तेजी से विकास हुआ और इसने विश्व भर के लाखौं प्रयोक्ताओं को एक-दूसरे से जोड़ा और व्यक्तिगत आधार के अलावा व्यावसायिक उद्यमों और सरकारी एजेंसियों को भी एक-दूसरे से जोड़ने की अपनी क्षमता के कारण इंटरनेट अभूतपूर्व रूप से योग्यता प्राप्त कर चुका है। इलेक्ट्रॉनिक मेल (Electronic mail) अथवा ई-मेल को पहली बार १९७२ में प्रस्तुत किया गया था। १९७६ में क्वीन एलिजाबेथ ने अपना पहला ई-मेल भेजा था। १६-१८ नवम्बर, २००५ को ट्यूनिश (ट्यूनीशिया) में आयोजित विश्व इंफॉरमेशन सोसायटी शिखर सम्मेलन के दूसरे चरण में इंटरनेट के अधिक से अधिक लोकतंत्रीकरण और भूमंडलीकरण पर बल दिया गया, ताकि सूचना प्रौद्योगिकी की इस

क्रांति का लाभ एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के दूरस्थ क्षेत्रों तक भी पहुँच सके। ट्यूब सम्मेलन में इस बात पर सर्वसम्मति व्यक्त की गई कि डिजिटल क्रांति का लक्ष्य विभिन्न महाद्वीपों के साधनहीन और साधनसंपन्न वर्ग के बीच सेतु की भूमिका निभाना होना चाहिए न कि उनके बीच की खाई को और गहरा करना। पूर्व संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री कोफी अन्नान भी यह संदेश उस साधनसंपन्न वर्ग को देना चाहते थे, जो प्रौद्योगिकीय क्रांति पर अपना एकाधिकार समझता है और इसे किसी के साथ बांटना नहीं चाहता। उनका कहना है, "डिजिटल क्रांति की स्वतंत्रता ही उसकी प्राणशक्ति है और आज विश्व को उसकी आवश्यकता है, ताकि इसके माध्यम से आम लोगों की वास्तविक क्षमताओं को विकसित किया जा सके।" वर्ष २००४ में अमेरिका में इंटरनेट सर्च इंजनों का प्रयोग करने वाले लोगों की संख्या तेजी से बढ़ी और ऑनलाइन कार्यों में ई-मेल के बाद इसे दूसरा स्थान प्राप्त हो गया। वर्ष २००५ में ९४ मिलियन अमेरिकी व्यस्क जनसंख्या में ६३ प्रतिशत लोगों ने सर्च इंजन का प्रयोग किया, जबकि जून २००४ में यह संख्या ५६ प्रतिशत थी। यह जानकारी २० नवम्बर, २००५ को प्यू इंटरनेट और अमेरिकी लाइफ परियोजना ने दी। इन प्रयोगकर्ताओं में साधन-संपन्न और सुशिक्षित लोगों तथा ब्रॉडबैंड कनेक्शंस रखने वाले लोगों की संख्या सर्वाधिक थी। फिर भी ई-मेल अभी भी सर्वाधिक लोकप्रिय इंटरनेट कार्य है, जिसका प्रयोग ७७ प्रतिशत जनसंख्या द्वारा किया जाता है। यद्यपि हमारे पास इस बात की सही जानकारी तो नहीं है कि भारत में इंटरनेट सुविधा का प्रयोग करने वालों की संख्या कितनी है, किंतु हम यह अवश्य जानते हैं कि आने वाले दस वर्षों में यह तकनीक भारतीय जीवन के हर पहलू को प्रभावित करने वाली है। इंटरनेट युग शिक्षा, चिकित्सा, संचार, सार्वजनिक सेवा और प्रशासन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका के साथ अपने प्रभुत्व का प्रमाण दे रहा है।

संचार के सबसे शक्तिशाली व तीव्र माध्यम के रूप में इन्टरनेट ने संचार के सभी परम्परागत मॉडलों व प्रक्रियाओं की गौण बना दिया है। विश्व संचार की इस नई तकनीक ने हमें अपना दास बना लिया है और इसी कारण इंटरनेट में किसी भी प्रकार का व्यवधान हमें चितित कर देता है। अगर कहा जाए कि आण्विक शक्ति के विकास के बाद इंटरनेट विश्व की सबसे बड़ी उपलब्धि है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

पिछले कुछ समय तक हमारे पास सूचना के तीन माध्यम थे पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो और टेलीविजन परन्तु अब कलम विहीन पत्रकारिता के रूप में साइबर जर्नलिज्म का अविर्भाव हुआ है। जिस समाचार के लिए कुछ समय पहले तक घन्टों इंतजार करना पड़ता था, वह अब पल भर में हमारे दृश्य पटल पर होता है। इसे विस्तार से पढ़ा भी जा सकता है तथा संग्रहित भी किया जा सकता है। इसके द्वारा रोजमर्रा के रूटीन समाचारों से लेकर सिनेमा, फैशन, जीवनशैली, शिक्षा, समाज, विज्ञान, रहस्य-रोमांच से लेकर ज्योतिष तक सभी विषयों पर ताजा तथा उपयोगी सामग्री प्राप्त की जा सकती है। महत्वपूर्ण राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय समाचार पत्रों के इन्टरनेट संस्करणों ने एक नई प्रणाली ई-जर्नलिज्म की शुरुआत की है।

एक सूचना को विश्व के कोने-कोने में पहुँचाने के लिए एक संदेश एक भाषा से दूसरी, दूसरी से तीसरी और तीसरी से चौथी भाषा की गोद में कूदता हुआ विश्व के सभी उन्नत भाषाओं की गोद में खेलने लगा है। सात हजार वर्ष पूर्व सांकेतिक भाषा के रूप में संचार के प्रयोग को

भाषा रूपौ साधन ने अपनी शरण देकर सार्थक बनाया। भारत ने इन्टरनेट पत्रकारिता में लगभग दस साल पहले दस्तक दी। कुछ समय पहले तक जहाँ हमें अपने समाचार पढ़ने सम्बंधी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समाचार पत्र, समाचार सुनने के लिए रेडियो तथा समाचार देखने के लिए टेलीविजन पर निर्भर रहना पड़ता था वहीं अब समाचार पढ़ने, सुनने व देखने का एक स्थान इन्टरनेट समाचार पोर्टल के रूप में विकसित हो चुका है। इन्टरनेट पत्रकारिता पर काफी लम्बे समय तक अंग्रेजी भाषा का कब्ज़ा रहा है। परन्तु गत पांच-छह वर्षों से हमारी मातृ-आषा हिन्दी का प्रयोग समाचार पोर्टल के रूप में किया जाने लगा है।

"नई दुनिया" अखबार द्वारा "वेब दुनिया" के नाम से हिन्दी भाषा में पहला इन्टरनेट पोर्टल शुरू होने के साथ ही हिन्दी समाचारों का वेबकरण हुआ। इसके पश्चात् "नेट जाल' नामक ई समाचार पोर्टल ने अपनी उपस्थिति इन्टरनेट पर दर्ज कराई। हिन्दी समाचार पोर्टल के बढ़ते आकर्षण को देखते हुए कुछ अंतर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे गूगल, रेडिफ, बीडीसी, सत्यम इन्फोलाइन तथा याहू जैसे बड़े-बड़े पोर्टलों ने भी हिन्दी समाचार सेवा शुरु की।

इंटरनेट समाचार सेवा को अपनी प्रतिष्ठा का प्रतीक मानकर अधिकतर हिन्दी समाचार पर्वी ने इंटरनेट समाचार पोर्टल शुरु किए। अभी हाल ही में याहू व जागरण के मध्य हुए करार ने हिन्दी समाचार पोर्टल के भविष्य को चार चाँद लगा दिए हैं। हमारी भातृ-भाषा में ताजा-तरीन समाचारों से लैस वेबसाइटों ने समाचारों की रुपरेखा को नया आयाम प्रदान किया है। हिन्दी समाचार पोर्टल के रुप में जागरण डॉट कॉम ने विश्व की प्रमुख समाचार वेबसाइटों में उच्च स्थान पाकर भारत के मस्तक को और ऊँचा कर दिया है। प्रमुख दैनिक समाचार पर्नें दैनिक भास्कर, राष्ट्रीय सहारा, दैनिक ट्रिब्यून, अमर उजाला, राजस्थान पत्रिका, नवभारत टाइम्स, हिन्दी मिलाप, नई दुनिया, स्वतन्त्र चेतना, प्रभा साक्षी के अतिरिक्त समाचार चैनलों आजतक, एनडीटीवी, सीएनबीसी आवाज, टोटल टीवी, आइबीएन सेवन, आदि ने भी हिन्दी इन्टरनेट समाचार पोर्टलों के माध्यम से हिन्दी का मान सम्मान बढ़ाया है। वास्तव में सूचना प्रौद्योगिकी और आधुनिक संचार क्रांति के इस युग में यदि हम यह स्वीकार कर लें कि भारत की एक सम्पर्क भाषा आवश्यक है और वह केवल हिन्दी हो सकती है. तो हिन्दी उस चुनौती का सामना करने में समर्थ हो जायेगी जो उसके सामने मुँह बाए खड़ी है। इन्टरनेट एक ऐसा मंच है जहाँ से हम अपनी मातृ भाषा को अंतर्राष्ट्रीय पटल पर चमका सकते हैं।

वर्तमान समय में हिन्दी के लगभग २,५०० दैनिक तथा १०,००० के आस-पास साप्ताहिक समाचार पत्र प्रकाशित हो रहे हैं परन्तु इन समाचार पत्रीं में से दो दर्जन के भी इन्टरनेट के संस्करण नहीं है। चौथी दुनिया तथा पंचजन्य के अलावा अन्य कोई साप्ताहिक समाचार वेब साइट प्रचलन में नहीं है। विडम्बना की बात तो यह है कि इनमें से अधिकतर समाचार पत्रों की वेबसाइटों पर अखबारों की खबर ही ज्यों की त्यौ परोसी जाती है। इन वेब साइटों में समाचारों को अपडेट करने वाले वेब पोर्टलों की संख्या न के बराबर है। इसका एक सीधा कारण यह है कि इन वेब साइटों को विज्ञापन के रूप में मिलने वाली कमाई बहुल कम है। बाज़ारवाद व प्रतिस्पर्धा की दौड़ में धन के बिना इन्टरनेट पोर्टल को समय के साथ चलाना काफी कठिन है

समाचार पोर्टलों पर समाचार पढ़ने के साथ-साथ कुछ अंतर्राष्ट्रीय समाचार संगठनों ने हिन्दी में समाचार सुनाने की सुविधा भी प्रदान की है। इसमें ऑल इंडिया रेडियो, बीबीसी। हिन्दी व वाइस आफ अमेरिका का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है।

जहाँ तक समाचार सुनने के साथ देखने का सवाल है विभिन्न हिन्दी चैनलों की साइट पर महत्त्वपूर्ण समाचारों के वीडियो देखे भी जा सकते हैं। इनमें आजतक, आई बी एन सेवन, एन डी टीवी आदि के नाम प्रमुखता से लिए जा सकते हैं। इन चैनलों की साइट पर फ्लैश फाइल के रूप में वीडियो समाचार उपलब्ध है।

दुनिया भर में हिन्दी की महत्त्वपूर्ण समाचार वेब साइटों से समाचार एकत्रित करके एक स्थान पर उपलब्ध करवाकर गुगल, सौफी व याहू ने पाठक का काम आसान कर दिया है। इन तीनों संगठनों की समाचार पोर्टल पर महत्त्वपुर्ण ऑनलाइन समाचार साइटों के खण्ड बने होते हैं जिन्हें पाठक अपनी पसंद के अनुरुप मुख्य पृष्ठ पर ही व्यवस्थित कर सकते हैं। हिन्दी पत्रकारिता से जुड़े विभिन्न ऑनलाइन संस्करणों के समाचार अपनी पसंद के अनुरुप आर एस एस यानी रियल सिंपल सिंडिक्शन की सहायता से अपनी निजी वेब साइट, ई-मेल अथवा ब्लाग पर एकत्रित कर पढ़ा, सुना व देखा जा सकता है। इन समाचार साइटों से अपने मोबाइल पर अपडेट समाचार संदेश प्राप्त किया जाना हमारी त्वरित सूचना पाने की इच्छा की पूर्ति करता है।

एक लघु शोध के द्वारा जब यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या लोग इन्टरनेट पर हिन्दी समाचार पत्रों को पढ़ते हैं तो स्तब्ध करने वाले तथ्य सामने आए। जो लोग (६० प्रतिशत) रोजाना कम से कम १ से लेकर ३ घण्टे तक इंटरनेट का इस्तेमाल करते हैं, उनमें से केवल ७ प्रतिशत लोग इंटरनेट पर समाचार पढ़ते हैं, पर हिन्दी समाचार पढ़ने वालों की सख्या ४ प्रतिशत पाई गई। हिन्दी पत्रकारिता के लिए सुखद बात यह है कि यह संख्या अंग्रेजी समाचार पाठकों से ज्यादा है। ई-समाचार पढ़ने वाले लोर्गों में से अधिकतर ने माना कि वे शेयर बाजार के भाव जानने के लिए इंटरनेट समाचार पत्रों का इस्तेमाल करते हैं।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि भले ही इंटरनेट पर समाचार पत्रों को कम पढ़ा जाता है परन्तु काफी अल्प समय में हिन्दी के ई-समाचार पत्रों ने जिस प्रकार से सफलता के नये प्रतिमान स्थापित किये हैं. उससे हिन्दी पत्रकारिता के इस नये रूप का भविष्य अवश्य ही उज्जवल होगा। परन्तु साथ ही साथ है- जर्नलिज्म का विकास प्रिंट मीडिया के लिए भी खतरनाक हो सकता है। ब्रिटेन व अमेरिका में उनके प्रिंट समाचार पत्र की बजाए ई-समाचार पत्र के प्रयोगकर्ता ज्यादा होना वहाँ के मीडिया जगत के लिए चिंता का विषय बन गया है। भारत में ऐसी स्थिति ना आये इसके लिए प्रयास किया जाना चाहिए ताकि वेब पत्रकारिता से धनार्जन भी किया जा सके, साथ ही साथ वेब समाचार पत्रों को ज्यादा आकर्षक, विचारशील व ताजा सूचनाओं के द्वारा समयानुकूल बनाये जाने की आवश्यकता है। समाचार पत्रों के प्रिंट संस्करणों की ओर देखें तो वहाँ भी हिन्दी समाचार पर्चा खासकर दैनिक भास्कर और दैनिक जागरण देश के शीर्ष समाचार पत्रों के रूप में उभरे हैं। इन्होने अंग्रजी के धुरंधर समाचार पत्रों को भी पटखनी दी है।

मीडिया विशेषज्ञों की माने तो अंग्रेजी पत्रों के प्रसार में कमी का एकमात्र कारण इन पत्रों की कवरेज प्रायः राष्ट्रीय विषयों तक सीमित रहना है। इसका सीधा फायदा हिन्दी पत्रकारिता

के प्रिंट व वेब संस्करण उठाते नजर आ रहे हैं जो राष्ट्रीय मुर्दा के साथ-साथ प्रादेशिक व स्थानिय समाचारों को कवरेज दे रहे हैं। हिन्दी वेब पत्रकारिता की कुछ प्राथमिक समस्याओं का समाधान हो जाए तो यह अत्यधिक सकारात्मक भविष्य का उद्घाटन कर सकती है।

पहला यह कि हिन्दी समाचार वेबसाइट का अंग्रेजी समाचार की साइटों की तरह अपडेशन।

दूसरा इसके द्वारा अतिरिक्त आय प्राप्त होने के उपाय।

तीसरा ई-पत्रों हेतु अलग से विज्ञापन व मार्केटिंग इकाई का गठन।

चौथा प्रशिक्षित लोगों का चयन।पांचवाँ अंग्रेजी समाचार पत्रों की तरह ऐसे केन्द्रीय (एकमात्र) फोन्ट का चयन जिससे एक फोल्ट का इस्तेमाल करके हिन्दी समाचार साइटों का इस्तेमाल किया जा सके, क्योंकि वर्तमान में प्रत्येक हिन्दी वेबसाइट का फॉट (अक्षर) एक-दूसरे से अलग है।

इसके अतिरिक्त वेच समाचार पत्र को ज्यादा रचनात्मक, शिक्षाप्रद व सूचनात्मक बना कर इसके रास्ते में आने वाले पत्थरों को समय रहते हटाया जा सकता है।

८.१३ केबल पत्रकारिता

असल में तकनीक ने मीडिया को जो विस्तार दिया है उतना विस्तार पत्रकारों का नहीं हुआ है और मीडिया का यह तकनीकी विस्तार ही असल में आज की पत्रकारिता है और राजनीति को प्रभावित करने वाला चौथा स्तंभ भी। कह सकते हैं कि आज चौथे स्तंभ की परिभाषा में पत्रकार या पत्रकारिता कोई मायने नहीं रखते हैं। लेकिन विगई चैनलों को सुधारने की जो बात राजनीति करती है उसमें राजनीतिक धंधे के तहत चैनल कैसे चलते हैं यह समझना ज्यादा जरूरी है। किसी भी राष्ट्रीय समाचार चैनल को शुरू करने के लिए चालीस या पचास करोड़ से ज्यादा नहीं चाहिए और फैलते बाजारवाद में विज्ञापन से कोई भी चैनल साल में औसतन बीस-पचीस करोड़ आसानी से कमा सकता है। जो चैनल सबसे आगे होता है उसकी सालाना कमाई सौ करोड़ से ऊपर होती है। मंदी में भी यह कमाई सौ करोड़ से कम नहीं होती।

जाहिर है, खबरिया चैनल का धंधा प्रिंट मीडिया से अधिक मुनाफे वाला है, क्योंकि एक साथ छह करोड़ घरों में कोई अखबार नहीं पहुँच सकता। किसी नेता की सार्वजनिक सभा में कितने लोग जुट सकते हैं? लेकिन कोई बड़ी खबर अगर ब्रेक हो तो बहुत बड़ी तादाद में एक साथ लोग उसे देख-सुन सकते हैं। जाहिर है, बीते एक दशक मैं खबरिया चैनलों ने जो उड़ान भरी उसने एक राजनीतिक सत्ता की जड़े भी हिलाई जो बिना सरोकार के देश को चलाने में गर्व महसूस करती हैं। मगर राजनीतिक सत्ता के सामने इन चैनलों की क्या बिसात। इसलिए राजनीति ने समाचार चैनलों को अपनी कोख में ही बाँधने का फार्मूला अपनाया। केबल नेटवर्क पर राजनीति ने खुद को काबिज कर एक नया पिंजरा बनाया और इसमें समाचार चैनलों को कैद कर दिया। किसी भी राष्ट्रीय समाचार चैनल को केबल से देश भर में जोड़ने के लिए उसके पास सालाना पैतीस से चालीस करोड़ रुपए लुटाने की ताकत होनी चाहिए, तभी कोई नया चैनल आ सकता है। क्योंकि हर राज्य में केबल नेटवर्क से तभी कोई चैनल जुड़ सकता है जब वह फीस चुकता कर दे।

यह रकम सफेद नहीं हो सकती क्योंकि इसका बंटवारा राजनीतिक दल नहीं, राजनीतिक सत्ता को देखता है। सबसे ज्यादा फीस महाराष्ट्र में आठ करोड़ है, फिर गुजरात में पांच करोड़। बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड, उत्तराखंड में सालाना तीन से चार करोड़ केवल नेटवर्क पर खर्च आता है। मजेदार तथ्य यह है कि केबल नेटवर्क को ही चैनलों की टीआरपी से जोड़ा जाता है और टीआरपी के आधार पर ही चैनलों को विज्ञापन मिलता है। यहीं से ब्रांड और धंधे का खेल शुरु हो जाता है। टीआरपी और विज्ञापन को इस तरह जोड़ा गया है कि जो केबल नेटवर्क पर करोड़ों जुटा सकता है वही विज्ञापन के जरिए करोड़ों कमा सकता है। करोड़ों के वारे-न्यारे का यह खेल ही उपभोक्ताओं के लिए एक ऐसा ब्रांड बनाता है जिसमें किसी प्रोडक्ट की कोई भी कीमत देने के लिए एक तबका तैयार हो जाता है।

कोई पत्रकार समाचार चैनल ला तो सकता है लेकिन उसे केबल नेटवर्क के जरिए दिखाने के लिए फिर उसी राजनीति के सामने नतमस्तक होना पड़ना है जिस पर नजर रखने के ख्याल से खबरिया चैनल का जन्म होता है। कमोवेश हर राज्य में सत्ताधरी दल के बड़े नेताओं ने केबल पर कब्जा कर लिया है। यानी जो लोग पहले चैनलों के मालिकों या संपादकों से गुहार लगाते थे कि उनके खिलाफ जाने वाली खबरै न दिखाई जाएँ, अब वही यह कहने से नहीं चूकते कि आपको जो खबरें दिखानी हो दिखाइए लेकिन वे राज्य में नहीं दिखेगी क्योंकि केबल पर हम आपका चैनल आने ही नहीं देंगे। यानी केबल नेटवर्क परं सत्ता का कब्जा राजनीति का नया मंत्र है।

इसके शुरुआती प्रयोग छत्तीसगढ़ में अजीत जोगी ने किया तो ताजा प्रयोग दिवंगत राजशेखर रेड्डी के बेटे जगन मोहन रेड्डी ने मुख्यमंत्री की कुर्सी पाने के लिए किया। आंध्र में केबल नेटवर्क पर अगन का ही कब्जा है। यह अलग बात है कि वे मुख्यमंत्री पद पाने में सफल नहीं हो पाए। छत्तीसगढ़ में केबल पर अब रमन सिंह का कब्जा है और पंजाब में बादल परिवार का।

लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में सिनेमा की हत्या भी हुई। फ़िल्में अब उसी तबके के लिए बनने लगी जो दो घंटे में मनोरंजन की नई व्याख्या करता है। ऐसे में सिनेमा सरोकार पैदा नहीं करता। उसी तरह खबरें भी सरोकार की भाषा नहीं समझती क्योंकि उनका मुनाफा जनता से नहीं सत्ता से जोड़ दिया गया है और इस दौड में डीटीएच कोई मायने नहीं रखता। डीटीएच से चैनल घरों में जरूर दिखाई देता है मगर विज्ञापन की वह पूँजी नहीं जुगाड़ी जा सकती जो कैबल के जरिए टीआरपी से होती हुई चैनलों तक पहुँचती है।

किसी भी नए चैनल की मुश्किल यही होती है कि वह खुद को केबल और टीआरपी के बीच फिट कैसे करे, किस राज्य की सत्ता या किस राजनेता के जरिए मुनाफे की अर्थव्यवस्था में हिस्सेदारी करे। जबकि पुराने चैनलों की केबल कनेक्टिविटी और टीआरपी में कभी बड़ा उलटफेर या परिवर्तन चार हफ्तों तक भी नहीं टिकता है, चाहे कोई पैनल कुछ भी दिखाए। यह स्थिति हर किसी को बाजार में कथित स्पर्धा से जोड़े रखते हुए सभी की महत्ता बरकरार रखती है।

८.१४ सारांश

मीडिया के इतिहास में प्रसारण एक क्रांतिकारी विकास है। यहाँ तक कि खेलकूद थिएटरों में चल रहे संगीत कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण सुन सकते हैं। संगीत और ध्वनि के माध्यम से ही हमारे आसपास जीवन जीवंत हो उठता है। "मार्कोनी" द्वारा तरंगी को पकड़ लेने की अद्भुत खोज रेडियो के नाम से जानी गई। इसके माध्यम से संदेशों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेज सकते हैं। उन स्थानों पर भी जहाँ समाचार पत्रों एवं चिठ्ठियों का पहुँचना मुश्किल है। दुनिया में सबसे पहले इंग्लैंड में टेलीविजन की शुरुआत हुई। आज भी ब्रिटिश टेलीविजन अपनी तकनीक और कार्यक्रमों के मामले में विश्व भर में जाना जाता है। भारत में इस तरह की सेवा की शुरू करने के लिए इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाईजेशन ने इनसेट नाम की सेटेलाइट श्रृंखला को शुरू किया। इसके अंतर्गत इनसेट ४ए. इनसेट २ई. इनसेट उसी और इनसेट ३ ई उपग्रह छोड़े गए। हिन्दुस्तान में डीडी डायरेक्ट प्लस, डिश टीवी और टाटा स्काई ने डीटीएच की सुविधा प्रारंभ की। २००३ में सोनी ने एक्स डीसीएएम की शुरुआत की जो कि पहला टेपलेस वीडियो प्रारूप था, जिसमे रिकॉर्डिंग मीडिया के रूप में प्रोफेशनल डिस्क का प्रयोग किया जाता था। आकस्मिक उपयोग के लिए, कैमकोर्डर अक्सर शादी, जन्मदिन, स्वागत समारोह, बढ़ते बच्ची और अन्य व्यक्तिगत घटनाओं को कवर करता है। मल्टीमीडिया एक माध्यम होता है जिसके द्वारा विभिन्न प्रकार की जानकारियों को विविध प्रकार के माध्यमों जैसे कि टैक्स्ट, ऑडियो, ग्राफिक्स, एनीमेशन, वीडियो आदि का संयोजन (combine) कर के दर्शकों/श्रोताओं (audience) तक पहुँचाया जाता है।

इन्टरनेट आज एक सर्वव्यापी सत्ता बन कर उभरा है। यह एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी सैन्य सामग्री को प्रयोग किये बिना विश्व को जीता जा सकता है। अलादीन के चिराग की तरह तेज सूचना संवाहक के रूप में इन्टरनेट ने सारे विश्व के जान के खजाने को समय व दूरी की सीमाओं को लांघकर हमारे समक्ष प्रस्तुत कर दिया है। तकनीक ने मीडिया को जी विस्तार दिया है उतना विस्तार पत्रकारों का नहीं हुआ है और मीडिया का यह तकनीकी विस्तार ही असल में आज की पत्रकारिता है और राजनीति को प्रभावित करने वाला चौथा स्तंभ भी।

८.१५ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१. रेडियो के आविष्कार एवं विकास के बारे में विस्तार से समझाएँ।

२. आकाशवाणी का विदेश प्रसारण सेवा विभाग किसे कहते हैं? इसके प्रमुख इकाइयों का वर्णन करें।

३. रेडियो प्रसारण की विभिन्न विधाओं का विस्तृत वर्णन करें।

४. रेडियो पत्रकारिता के स्वरूप एवं प्रकारी का वर्णन करें।

५. टीवी पत्रकारिता से क्या समझते हैं? इसके आरंभ तथा विकास पर प्रकाश डालें।

६. इंटरनेट पत्रकारिता पर एक निबंध लिखे।

७. कैमकोर्डर या वीडियो पत्रकारिता का विस्तृत वर्णन करें।

८.१६ लघुत्तरी प्रश्न

१. विकसित राष्ट्रों ने मिडिया का उपयोग किस प्रकार किया?

उत्तर : शीत युद्ध के सशक्त हथियार के रुप में|

२. तरंगो को पकड़ने की अद्भूत खोज किस नाम से जानी जाती है?

उत्तर : रेडियो के नाम से|

३. बी. बी. सी. की स्थापना कब हुई?

उत्तर : नवंबर १९२२ में|

४. ''विकसनशील देश यदि अपने देशज टेलीविजन तकनीक को अपना ले तो उनका भला नहीं नुकसान ही होगा।'' यह किसकी रिपोर्ट में कहा गया?

उत्तर : १९८० प्रकाशित प्रसिद्ध मैकब्राईड कमीशन की रिपोर्ट में |

५. बीबीसी ने अपनी टेलीविजन सेवा कब और कहाँ से शुरू की?

उत्तर : २१ नवम्बर १९३६ को उत्तरी लंदन के अलेक्जेंडर पैलेस से आरंभ की|

८.१७ संदर्भ पुस्तके

१. पत्रकार और पत्रकारिता – डॉ. रमेश जैन

२. जनसंचार और पत्रकारिता – डॉ. अर्जुन तिवारी

३. पत्रकारिता :नया दौर नये प्रतिमान – संतोष भारतीय

*****

९

समकालीन पत्रकारिता का महत्त्व एवं उपयोगिता

इकाई की रूपरेखा

९.१ इकाई का उद्देश्य

९.२ प्रस्तावना

९.३ पत्रकारिता का महत्व

९.४ पत्रकारिता की उपयोगिता

९.५ सारांश

९.६ लघुत्तरी प्रश्न

९.७ दीर्घोत्तरी प्रश्न

९.८ संदर्भ ग्रन्थ

९.१ इकाई का उद्देश्य

- इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे:
- पत्रकारिता के महत्त्व को जानने में;
- पत्रकारिता की उपयोगिता को जानने, समझने में सहायक सिद्ध होगा;

९.२ प्रस्तावना

भारत में पत्रकारिका का उदय बहुत सामान्य रूप में हुआ। नारद मुनि को पत्रकारों का पूर्वज माना जाता है। महर्षि नारद अपने समय में विश्व के सभी स्थानों का भ्रमण करके सामाचार संचय और प्रचार- प्रसार का कार्य करते थे, जिससे संबंधित व्यक्ति तद्नुसार अपना कार्य-सम्पादक कर सके। नारद के कार्य में जनहित की भावना ही रहती थी। वास्तविक पत्रकारिता में हर बात को अभिव्यक्त मिलनी चाहिए, जिसे जनता सोचती है। इसी कारण अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जनता का मूल अधिकार माना गया है। प्रेस वास्तव में ही जन-विचारधार का प्रतिनिधित्व करता है। इसी संदर्भ में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था." समाचार-पत्र का एक उद्देश्य जनता की इच्छाओं- विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है, दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जाग्रत करना और तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना है।"

वास्तव में समाचार-पत्र वर्तमान इतिहास का मुख्य प्रवक्ता होता है और इतिहास हर उस कार्य से बनता है जो जनता के हित मे है, जिसकी ओर जनता का ध्यान आकर्षित होता है

एवं जिससे जनता की रूचि परिष्कृत होती है। नैपोलियन का यह कथन कि पत्रकारिता के क्षेत्र मे कार्य करने वाले लोग शिकायतखोर, टीकाकार, सलाहकार, बादशाहों के प्रतिनिधि और राष्ट्र के शिक्षक होते है। चार विरोधी अखबार हजार संगीनों से अधिक खतरनाक माने गये है । प्रसिद्ध शायर अकबर इलाहाबादी का यह शेर अखबार के महत्व को प्रतिपादित करता है- "खींचो न कमानों को न तलवार निकालों, जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालों।"

९.३ पत्रकारिता का महत्व

जेफर्सन ने तो समाचार- पत्र जगत् को इतना महत्वपूर्ण स्थान दिया है कि, अगर उनको एक समाचार-विहीन शासन-व्यवस्था तथा शासनविहीन समाचार-पत्र वाले समाज में से चुनने को कहा जाये तो वह निःसंदेह समाचार-पत्र वाली व्यवस्था को अंगीकार करेगा।" शारीरिक अथवा सामाजिक दंड की सीधी शक्ति न रखते हुये भी सिर्फ लोकमत के बल पर वर्तमान पत्र इतने सशक्त होते है कि उन्हें 'फोर्थ एस्टेट', 'पावर बिहाइंट दी थ्रोन' 'आल पावर फुल' आदि नामों से पुकारा जाता है। बर्क ने पत्रकारिता को 'चौथी सत्ता कहा है, तो ऑस्कर वाइल्ड कहते है कि 'आज तो प्रेस ही एकमात्र रियासत है।"

जनसत्ता के संपादक श्री प्रभात जोशी ने कहा है."न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका तथा प्रेस में चौथा खंभा हूं तो पत्रकार होने के नाते मेरा अधिकार तथा कर्तव्य है कि इन तीनों खंभों को मैं जज करूं।" स्पष्ट है श्री जोशी ने पत्रकारिता को अत्यंत महत्वपूर्ण माना है। 'जनसत्ता' के संपादक श्री प्रभात जोशी ने कहा है," न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका तथा प्रेस में मैं 'चौथा खंभा हूं तो पत्रकार होने के नाते मेरा अधिकार तथा कर्तव्य है कि इन तीनों खंभों को मैं 'जज करूं।" स्पष्ट है श्री जोशी ने पत्रकारिता को अत्यंत महत्वपूर्ण माना है।

इन्द्र विद्यावाचस्पति इसे 'वर्तमान युग का सबसे प्रभावशाली आविष्कार' मानते है। श्री विद्यालंकार इसे 'पांचवां वेद स्वीकार करते है। प्रसिद्ध शायर अकबर इलाहाबादी ने तो यहां तक कह डाला कि 'जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।' समाचार-पत्र समाज के सामने एक समस्या के कई विकल्प प्रस्तुत करने है। इससे समाज को निर्णय करने और अपना रास्ता चुनने में आसानी होती है। इन सब कारणों से ही राजेन्द्र ने समाचार-पत्र को 'श्री जनसाधारण की संज्ञा दी है। दैनिक समाचार पत्रों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे समूचे विश्व का दर्पण मनुष्य के हाथों में सौंप देता है। संप्रेषण के माध्यमों के विकास ने पत्रकारिता को इतना व्यापक बना दिया है कि आज हम घटनाओं को देखते हुए देख व सुन सकते समाचार-पत्र समाज के सामने एक समस्या के कई विकल्प प्रस्तुत करते है। इससे समाज को निर्णय करने और अपना रास्ता चुनने में आसानी होती है। इन सब कारणों से ही राजेन्द्र ने समाचार-पत्र को 'श्री जनसाधारण' की संज्ञा दी है। दैनिक समाचार-पत्रों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे समूचे विश्व का दर्पण मनुष्य के हाथों में सौंप देता है। संप्रेषण के माध्यमों के विकास ने पत्रकारिता को इतना व्यापक बना दिया है कि आज हम घटनाओं को देखते हुए देख व सुन सकते है। दूरदर्शन अर्थात् 'टेलीविजन' हम हजारों सैकड़ो किलोमीटर की दूरी की चीजों को आमने-सामने देख सकते है। इसी के माध्यम से हम बच्चे, युवा, बूढ़े, पढ़े- अनपढ़, सभी को घर बैठे-बैठे ही तरह-तरह की शिक्षाप्रद जानकारी दे सकते है। पं. कमलापति त्रिपाठी लिखते है कि, ज्ञान और विज्ञान, दर्शन और साहित्य, कला और

कारीगरी, राजनीति और अर्थनीति, समाजशास्त्र और इतिहास, संघर्ष तथा क्रांति, उत्थान और पतन, निर्माण और विनाश, प्रगति और दुर्गति के छोटे-बड़े प्रवाहों को प्रतिबिंबित करने में पत्रकारिता के समान दूसरा कौन सफल हो सकता है।

१. समाज का दर्पण:

पत्रकारिता समाज का दर्पण है। समाज में कब, कहां, क्यों, कैसे, क्या हो रहा है? इन प्रश्नों का उत्तर पत्रकारिता है। 'पत्रकारिता वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने मस्तिष्क में उस दुनिया के बारे में समस्त सूचनाएं संकलित करते है, जिसे हम स्वतः कभी नहीं जान सकते। पत्रकारिता सामाजिक जीवन की सत्- असत्, दृश्य-अदृश्य तथा शुभ-अशुभ छवियों का दर्पण है। समाज में फैली कुरीतियों, अंधविश्वासों रूढ़ियों आदि के प्रति भी पत्रकारिता संघर्ष छेड़ती है तथा समाज से इन बुराइयों को मिटाने का प्रयत्न करती है।

२. सूक्ष्म शक्ति:

पत्रकारिता के माध्यम से परिवेश का सर्वांगीण निरूपण होता है। आज हमारा जीवन पर्याप्त जटिल तथा संकुल हो गया है। प्रतिपल घटने वाली करूणाजनक, भयावह तथा कंपा देने वाली घटनाओं से मनुष्य आश्चर्यचकित हो जाता है। मानवीय संबंधों मे आज परिवर्तन हो रहा है। उन संबंधो का सूक्ष्म निरूपण तथा प्रस्तुतीकरण अनेक बार हमें समाचार- पत्रों से मिलती है। पत्रकार समाज के सजग प्रहरी के रूप में समाज में घटित घटनाओं को गहराई से समझता है। बदलते हुये परिवेश और मानव संबंधों की जटिलता के कारणों, प्रतिक्रियाओं तथा परिणामों का विश्लेषण करता है। पत्रकारिता परिवेश के शरीर अर्थात् स्थूल घटनाचक्र के साथ-साथ मन अर्थात् सूक्ष्म संबंधों तक को उजागर करती है।

३. सर्जनात्मकता:

स्वस्थ पत्रकारिता का लक्षण नीर-क्षीरवत् विवेचन एवं निर्णय का काम होता है। जो पत्रकारिता गहराई तक अपनी पहुंच रखती है, उसे मात्र निषेधात्मक मानना औचित्यपूर्ण है, क्योंकि एक 'पत्रकार भविष्यदृष्टा होता है। वह समस्त राष्ट्र की जनता की चित्तवृत्तियों, अनुभूतियों और आत्मा का साक्षात्कार करता है। पत्रकार किसी को ब्रह्मज्ञानी नही बना सकता, परन्तु मनुष्य की भांति जीते रहने की प्रेरणा देता है। जहां उसे अन्याय, अज्ञान, उत्पीड़न, प्रवंचना, भ्रष्टाचार, कदाचार दिखाई देता है, वह उनका ताल ठोककर विरोध करता है तथा आशातीत आत्मविश्वास एवं दृढ़ता से प्राणी- प्राणी में शांति एवं सद् भाव की स्थापना करता है। सच्चा पत्रकार निर्माण क्रांति की लपटों से, समाज की बुराइयों को भस्म करने का आयोजन करता है।"

४. सामाजिक मूल्यों की विधायिका:

पत्रकारिता स्वस्थ्य सामाजिक मूल्यों की नियामिका है। देश व समाज में व्याप्त असंतोष, भले ही वह देश, जाति, धर्म के रूप में क्यों न हो, पत्रकारिता उसका सही विश्लेषण करती है। उदाहरणार्थ, आपातकाल के दौरान देश में परिवार नियोजन के प्रति लोगों में आक्रोश पैदा हुआ और उसकी जो भी प्रतिक्रिया हुई उसका विस्तार ब्यौरा प्रकाशित करके मनुष्य को उसके प्रति अच्छी तथा बुरी बातें बताकर उसने उसका मार्ग प्रशस्त किया। यह राष्ट्र में

घटने वाली सभी महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में चिंतन की प्रक्रिया को जन्म देकर उसे सही दिशा में अग्रसर होने में सहायता करती है। वास्तविक पत्रकारिता तो एक मार्गदर्शिका, जीवन निर्मात्री तथा सामाजिक मूल्यों की विधायिका है।

५. परिवेश से साक्षात्कारः

पत्रकारिता परिवेश से रूबरू कराती है। पत्रकारिता मनुष्य को उसके परिवेश से अंतरराष्ट्रीय घटनाचक्र से जोड़ देती है। पत्रकारिता मनुष्य को उसके चारों तरफ हो रहे घटनाचक्रों से परिचित कराती है। पत्रकारिता के माध्यम से न सिर्फ हम अपने परिवेश से परिचित होते है, बल्कि दूरवर्ती देशों से भी हमारा साक्षात्कार कुछ ही क्षणों में हो जाता है। यही क्यों, कहीं कुछ घटित हुआ कि नही इसकी खबर हम न केवल पढ़ ही पाते है, अपितु टेलीविजन जैसे वैज्ञानिक उपकरण के द्वारा उस घटना का आंखों देखा चित्र भी देख लेते है।

६. विविधात्मकता:

पत्रकारिता का क्षेत्र न केवल विविधात्मक है वरन् व्यापक भी है। जीवन का कोई भी विषय या कोई भी पक्ष पत्रकारिता से अछूता नही। आज प्रत्येक विषय से संबंधित पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होती है। प्रत्येक समूह का व्यक्ति अपने विषय के संबंध में नवीनतम जानकारी और ज्ञान के लिए पत्रकारिता को ही माध्यम बनाते है। पत्रकारिता का क्षेत्र अब व्यापक हो गया है। वह समाचारों या राजनीति की सीमा से परे है, बल्कि साहित्य, फिल्म, खेल-कूद, वाणिज्य, व्यवसाय, विज्ञान, धर्म, हास्य, व्यंग्य तथा ग्रामीण क्षेत्र में भी प्रवेश कर चुकी है।

७. विकृति विनाशक:

पत्रकारिता समाज की विकृतियों का निर्ममता से पर्दाफाश करके उन्हें समूह नष्ट करने का प्रयास करती है। पत्रकार की नजर तीखी व तेज होती ही है, वरन् शिव जैसी तीसरी आंख भी होती है। यही कारण है कि पत्रकार परिवेश के शरीर में दौड़ते हुए रक्त या उसके रक्तचाप की परीक्षा करता है, उसकी धड़कनों का हिसाब रखता है। जब वह अधिक विकृत होने लगता है, तब पत्रकार कुशलतापूर्वक सामाजिक परिवेश की एक्स-रे-रिपोर्ट भी प्रस्तुत कर देता है।

८. संप्रेषण का सशक्त माध्यम:

पत्रकारिता संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। रेडियों, टेलीविजन, फिल्म, समाचार-पत्र आदि ऐसे माध्यम है, जिनके द्वारा समाज में किसी भी क्षेत्र में घटित घटनाएं हमें तुरंत ही मिल जाती है। पत्रकारिता जनता को सचेत करती है साथ ही उसे शिक्षित करती हुई उसे सुरुचिपूर्ण मनोरंजन भी प्रदान करती है। यही वह साधन है, जो हमें विश्व मे होने वाले, संपूर्ण नवीन आविष्कारों, घटनाओं और अनुसंधानों से परिचित कराकर प्रभावित करता है।

पत्रकारिता आधुनिक जगत में एक व्यवसाय करने का भी मुख्य कार्य करती है पत्रिकायें भी व्यवसाय के रूप में हमें देखने को मिलती है। पत्रकारिता में खबरों, समाचारों जानकारियों का विषेष रूप से एकत्रीकरण होता है। यही एकत्रीकरण को संपादक अपनी लेखन शैली एवं

भाषा शैली के माध्यम से सरलता पूर्वक पाठकों तक प्रस्तुतीकरण कर पत्र-पत्रिका, मैगजीन, समाचार-पत्रों अखबारों के द्वारा पत्रकारिता को सम्पादित करने का कार्य करता है। वर्तमान में या आज के समय में पत्रकारिता के ओर भी माध्यमों को माना जाता है जैसे कि रेडियों, दूरदर्षन, क्षेत्रिय भाषा की पत्र-पत्रिकायें, नेट, सोषल मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया, वेब पत्रकारिता, इंटरनेट आदि अनेकों पत्रकारिता के माध्यम माने गये है। समय समय पर इनके मूल्यों का भी बदलाव होता गया है। यदि हम १८५७ के बाद की पत्र पत्रिकाओं पर नजर डालें तो हमें देखने में आता है कि वे पत्रिकायें राष्ट्र प्रेम व स्वतंत्रता क्रांति पर आधारित हैं तथा उनका मुख्य उद्वेष्य स्वतंत्रता प्राप्ति का था। परन्तु अब समय बदल गया है इनके तत्वों में भी बदलाव आता चला गया है आज के युग की मांग पत्रकारिता में कुछ प्रमुख तत्वों को स्थान देने का काम करती है। जैसे कि समाचार पत्र लेखन में विषेष रूप से संक्षिप्ता हो, सत्यता हो, स्पष्टता हो, नवीनता हो, चिंतनता मननता हो, गंभीरता हो, संवेदनषीलता हो, सकारात्मकता हो. इन सब तत्वों का समावेष आधुनिक हिन्दी पत्रकारिता का विषेष महत्व दर्शाता है।

९.४ पत्रकारिता की उपयोगिता

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ भी कहा जाता है। इसने लोकतंत्र में यह महत्वपूर्ण स्थान अपने आप हासिल नहीं किया है बल्कि सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति पत्रकारिता के दायित्वों के महत्व को देखते हुए समाज ने ही यह दर्जा दिया है। लोकतंत्र तभी सशक्त होगा जब पत्रकारिता सामाजिक जिम्मदारियो के प्रति अपनी सार्थक भूमिका निर्वाह करे। पत्रकारिता का उद्देश्य ही यह होना चाहिए कि वह प्रशासन और समाज के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी की भूमिका निर्वाह करे।

समय के साथ पत्रकारिता का मूल्य बदलता गया है। इतिहास पर नजर डाले तो स्वतंत्रता के पवूर की पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्ति ही लक्ष्य था। स्वतंत्रता के लिए चले आंदोलन और स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता ने अहम और सार्थक भूमिका निभाइर् है। उस दौर में पत्रकारिता ने परे देश को एकता के सूत्र में बांधने के साथ साथ पूरे समाज को स्वाधीनता की प्राप्ति के लक्ष्य से जोड़े रखा।

आजादी के बाद निश्चित रूप से इसमें बदलाव आना ही था। आज इंटरनेट और सूचना अधिकार ने पत्रकाकारिता को बहु आयामी और अनंत बना दिया है। आज को 'इ भी जानकारी पलक झपकते उपलब्ध करा 'इ जा सकती है। पत्रकारिता वर्तमान समय में पहले से कई गुना सशक्त, स्वतंत्र और प्रभावकारी हो गया है। अभिव्यक्ति की आजादी और पत्रकारिता की पहुंच का उपयोग सामाजिक सरोकारों और समाज की भलाई के लिए हो रहा है लेकिन कभी कभार इसका दुरुपयोग भी होने लगा है। आर्थिक उदारीकरण का प्रभाव भी पत्रकारिता पर खूब पड़ा है। विज्ञापनो से होनवे वाली अथाह कमाइ ने पत्रकारिता को एक व्यवसाय बना दिया है। और इसी व्यवसायिक ष्टिकोण का नतीजा यह हो चला है कि उसका ध्यान सामाजिक जिम्मेदारियों से कहीं भटक गया है। आज पत्रकारिता मुद्दा के बदले सूचनाधर्मी होता चला गया है। इंटरनेट एवं सोशल मीडिया की व्यापकता के चलते उस तक सार्वजनिक पहुंच के कारण उसका दुष्प्रयोग भी होने लगा है। इसके कुछ उपयोगकर्ता निजी भड़ास निकालने और आपत्तिजनक प्रलाप करने के लिए इस माध्यम का गलत इस्तेमाल

करने लगे हैं। यही कारण है कि इस पर अंकुश लगाने की बहस छिड़ जाती है। लोकतंत्र के हित में यही है कि जहां तक हा सके पत्रकारिता को स्वतंत्र और निर्बाध रहने दिया जाए। पत्रकारिता का हित में यही है कि वह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उपयोग समाज और सामाजिक जिम्मेदारी निर्वाह के लिए 'इमानदारी से निर्वहन करती रहे।

१. राजनीति में पत्रकारिता की उपयोगिता:

आज राजनीति हमारे जीवन के साथ-साथ अखबारों का भी एक अभिन्न हिस्सा बन चुकी है। इसका सबसे बड़ा कारण है कि आज समाज के हर एक घर में राजनीति का प्रवेश हो चुका है। इसीलिए समाचार पत्रों में राजनीति को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। पत्रकार राजनीतिक समस्याओं को केवल प्रस्तुत ही नहीं करते, अगर राजनीतिक व्यवस्था खराब हो तो उन पर भी करारा व्यंग्य भी करते हैं। सत्ता में स्थित पार्टी के वक्तव्य को जनता के सामने रखते हैं। विपक्षी पार्टी के आरोपों को अपने समाचार पत्र में स्थान देते हैं तथा सत्ताधारी पार्टी से उनके जवाब की अपेक्षा करते हैं। आज के समाज का प्रत्येक व्यक्ति राजनीतिक गतिविधियों से अवगत होना चाहता है। अतः राजनीति की दृष्टि से समाचार पत्र और पत्रकारिता का समाज में विशेष महत्व है।

२. राष्ट्रीय दृष्टि से पत्रकारिता की उपयोगिता:

राष्ट्रीय दृष्टि से पत्रकारिता का विशेष महत्व है, क्योंकि आज पत्रकारिता को लोकतंत्र का आधार स्तंभ माना जाता है। भारतीय लोकतंत्र में पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। हम देखते हैं कि आज संसार में बहुत से देशों में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली है और लोगों को सचेत रखने के लिए समाचार पत्र बहुत जरूरी होते हैं। औपनिवेशिक दौर में हम देखते हैं कि महात्मा गांधी, लाला लाजपत राय, लोकमान्य तिलक आदि नेताओं ने पत्रकारिता के द्वारा ही लोगों को राष्ट्र के प्रति जागरूक किया। समाचार पत्र हमें राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के बारे में बताते हैं जिससे हम उनके प्रति सचेत रह सके।

३. सामाजिक दृष्टि से पत्रकारिता की उपयोगिता:

समाज एक अकेले व्यक्ति से न होकर अनेक लोगों से बनता है। समाज के विकास में पत्रकारिता एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। पत्रकारिता के माध्यम से ही हम समाज की बाधाओं रोडियो और उनकी समस्याओं को जान सकते हैं। पत्रकारिता इन समस्याओं और रूढ़ियों पर प्रकाश डालकर इन को दूर करने में सहयोग करती है।

४. अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से पत्रकारिता की उपयोगिता:

पत्रकारिता ने आज के समय में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी भूमिका को बखूबी निभाया है। हम देखते हैं कि विभिन्न देशों में होने वाले सरकारी समझौतों की जानकारी, विभिन्न देशों की मुद्रा भाव, अलग- अलग देशों का बाजार भाव आदि के समाचार हम पत्रकारिता के माध्यम से घर बैठकर अपने समाचार पत्रों में ही पढ़ सकते हैं। पत्रकारिता के कारण हमें अलग-अलग देशों के विचारों का पता चलता है। इससे विभिन्न देशों के विचार एक दूसरे तक पहुंचते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पत्रकारिता का महत्व एक अलग ही है।

५. शिक्षा में पत्रकारिता का योगदान:

मानव के लिए शिक्षा सबसे जरूरी है। क्योंकि शिक्षा से ही हम आधुनिक युग को अच्छे से समझ सकते हैं। पत्रकारिता को हम देखे तो कह सकते हैं कि समाचार पत्र और पत्रिकाएं एक प्रकार से लोगों को शिक्षित करने का ही कार्य करती है। पत्रकारिता से हमें आधुनिक शिक्षा नीतियों का पता चलता है, शिक्षा में होने वाले बदलाव की जानकारी मिलती है।। हम देखते हैं कि बच्चों से लेकर बड़ों तक तू आजकल शिक्षा संबंधित अनेक पत्र पत्रिकाएं छपते हैं। हम कह सकते हैं कि शिक्षा क्षेत्र में पत्रिकाओं पत्रकारिता और समाचार पत्रों का महत्वपूर्ण योगदान है।

६. खेलों में पत्रकारिता की उपयोगिता:

खेलों में पत्रकारिता सबसे उपयोगी है क्योंकि आगे आने वाले तथा वर्तमान में चल रहे खेल के बारे में हमें पत्रकारिता से ही पता चलता है। आजकल रेडियो और टेलीविजन ने लाइव प्रसारण से खेलों को और अधिक ज्यादा प्रसिद्ध कर दिया है, उन्हें रोचक बना दिया। खेलों के लिए तो समाचार पत्रों में एक अलग से ही पृष्ठ है तथा अलग-अलग

पत्रिकाएं भी निकाली जाती हैं। खेल खिलाड़ी, क्रिकेट सम्राट इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

९.५ सारांश

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी पत्रकारिता के महत्व को समझ सके |साथ ही विभिन्न क्षेत्रो में पत्रकारिता की उपयोगिता को भी जान सके |इस इकाई के अध्ययन के पश्चात पत्रकारिता के महत्व और उपयोगिता के संदर्भ में कोई भी प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी दे सकेंगे |

९.६ लघुत्तरी प्रश्न

१. विद्यावाचस्पती वर्तमान युग का सबसे प्रभावशाली अविष्कार क्या मानते है?

उत्तर : पत्रकारिता को|

२. पत्रकारिता को चौथी सत्ता किसने कहा है ?

उत्तर : बर्क ने|

३. श्री विद्यालंकार पत्रकारिता को किस रूप में स्वीकार करते है ?

उत्तर : पाँचवा वेद |

४. आज हम जनसंचार के कौनसे माध्यम से घटनाओं को देख या सुन सकते है?

उत्तर : टेलिविजन, व्हाटसअप, इन्स्टाग्राम आदि|

४. पत्रकारिता को बहुआयामी किसने बना दिया?

उत्तर : इन्टरनेट और सूचना के अधिकार ने|

९.७ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१. वर्तमान समय में हिंदी पत्रकारिता के सामने किस तरह की चुनौतियां हैं और पत्रकारिता उनका कैसे मुकाबला करे। स्पष्ट कीजिए।

२. मौजूदा पत्रकारिता में लेआउट और डिजाइन का क्या महत्व है। उसका पाठक पर कितना असर पड़ता है। प्रकाश डालिए।

३. समाचार पत्र और विज्ञापन के रिश्ते से आप क्या समझते हैं। हिंदी पत्रकारिता में यह कितना महत्वपूर्ण है।

९.८ संदर्भ ग्रन्थ

१. पत्रकार और पत्रकारिता – डॉ. रमेश जैन

२. जनसंचार और पत्रकारिता – डॉ. अर्जुन तिवारी

३. पत्रकारिता :नया दौर नये प्रतिमान – संतोष भारतीय

*****

Turnitin Originality Report

Processed on: 13-Sep-2024 11:22 IST
ID: 2452756882
Word Count: 81071
Submitted: 1

हिंदी पत्रकारिता By Ma Nep Cdoe

Similarity Index	Similarity by Source	
4%	Internet Sources:	2%
	Publications:	0%
	Student Papers:	3%

1% match (student papers from 15-Nov-2017)
Submitted to Pacific University on 2017-11-15

1% match (Internet from 02-Jul-2019)
http://www.mgahv.in/Pdf/Dist/gen/MAHD-11_hindi_patrakarita.pdf

1% match (Internet from 08-Oct-2022)
https://www.aiirjournal.com/uploads/Articles/158359790464.NATIONAL%20SEMINAR%20ON%20EMPLOYMENT%20OPPORTUNITIES%20IN

< 1% match (student papers from 18-Aug-2018)
Submitted to Pacific University on 2018-08-18

< 1% match (student papers from 22-Sep-2017)
Submitted to Pacific University on 2017-09-22

< 1% match (student papers from 20-Oct-2016)
Submitted to Pacific University on 2016-10-20

< 1% match (student papers from 07-Jan-2019)
Submitted to Pacific University on 2019-01-07

< 1% match (student papers from 07-Jun-2018)
Submitted to Pacific University on 2018-06-07

< 1% match (student papers from 13-Jun-2018)
Submitted to Pacific University on 2018-06-13

< 1% match (student papers from 03-Feb-2018)
Submitted to Pacific University on 2018-02-03

< 1% match (Internet from 02-Jul-2019)
http://www.mgahv.in/Pdf/Dist/gen/MAHD-2_hindi_upanyas_kahani_31_05_17.Pdf

< 1% match (Internet from 05-Feb-2023)
http://www.mgahv.in/pdf/Dist/gen/msw09_11_08_16.pdf

< 1% match (Internet from 03-Feb-2023)
http://www.mgahv.in/Pdf/Dist/gen/shiksha_001_16_03_16.pdf

< 1% match (student papers from 27-Apr-2023)
Class: Quick Submit
Assignment: Quick Submit
Paper ID: 2076994094

< 1% match (student papers from 17-Aug-2022)
Class: Quick Submit
Assignment: Quick Submit
Paper ID: 1883482442

< 1% match (student papers from 17-Nov-2022)
Class: Quick Submit
Assignment: Quick Submit
Paper ID: 1956704206

< 1% match (student papers from 29-May-2023)
Submitted to University of Mumbai on 2023-05-29

< 1% match (student papers from 08-Dec-2022)
Class: Quick Submit
Assignment: Quick Submit
Paper ID: 1975162731

< 1% match (student papers from 24-Jan-2023)
Class: Quick Submit
Assignment: Quick Submit
Paper ID: 1998379720

< 1% match (Internet from 14-Nov-2015)
http://assets.vmou.ac.in/JMBJ04.pdf

< 1% match (Internet from 25-Sep-2022)
http://assets.vmou.ac.in/JMBJ06.pdf

< 1% match (Internet from 30-Sep-2022)
http://assets.vmou.ac.in/MEC07-1.pdf